श्री कल्कि पुराण

महर्षि वेद व्यास

संग्रहकर्त्ता एवम् प्रकाशक :

श्री कल्कि बाल वाटिका

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, गुरुद्वारे के सामने,
दिल्ली–110006 फोन : 23866661, 23973383

वितरक :

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110, चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार
पो.बा. न. 2037, दिल्ली–6 ☎ 23251630, 23273220

अरोड़ा पुस्तक भण्डार

तहसील रोड, सम्भल–244302 ☎ 09412140553

श्री राधे श्याम प्राचीन पुस्तक भंडार,

कालका जी मंदिर प्रांगण, नेहरू प्लेस, दिल्ली

सोनू धार्मिक पुस्तक व सामग्री विक्रेता,

बड़े हनुमान जी कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

मुकेश श्रंगार साहित्य सेंटर,

दानघाटी मंदिर, गोवर्धन, मथुरा (यू.पी.)

कैलाश बुक डिपो,

श्री कल्कि महाराज मंदिर परिसर, सिर ढ्योडी गेट के सामने, हवा महल बाजार, जयपुर

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियां
द्वितीय संस्करण (सजिल्द) : 1000 प्रतियां, सन् 2008
तृतीय संस्करण (संशोधित) : 5000 प्रतियां

मूल्य : 101 रुपए

पुराण-महिमा

यज्ञकर्मक्रियावेदः स्मृतिर्वेदो गृहाश्रमे॥
स्मृतिर्वेदः क्रियावेदः पुराणेषु प्रतिष्ठितः।
पुराणपुरुषाज्जातं यथेदं जगदद्भूतम॥
तथेदं वाङ्मयं जातं पुराणेभ्यो न संशयः।
न वेदे ग्रहसंचारो न शुद्धिः कालबोधिनी।
तिथिवृद्धिक्षयो वापि पर्वग्रविनिर्णयः॥
इतिहासपुराणैस्तु निश्चलोऽयं कृतः पुरा।
यन्न दृष्टं हि वेदेषु तत्सर्वं लक्ष्यते स्मृतौ॥
उभयोयज्ञात्न दृष्टं हि तत्पुराणैः प्रगीयते।

—श्रीनारद पुराण, उ., अ. 24

यज्ञ एवं कर्मकाण्ड के लिये वेद प्रमाण हैं। गृहस्थों के लिये स्मृतियाँ ही प्रमाण हैं। किंतु वेद और स्मृतिशास्त्र (धर्मशास्त्र) दोनों ही सम्यक् रूप से पुराणों में हैं। जैसे परम पुरुष परमात्मा से यह अद्भुत उत्पन्न हुआ है, वैसे ही सम्पूर्ण संसार का वाङ्मय-साहित्य पुराणों से ही उत्पन्न है, इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है। वेदों में तिथि, नक्षत्र आदि काल-निर्णायक और ग्रह-संचार की कोई युक्ति नहीं बताई गयी है। तिथियों की वृद्धि, क्षय, पर्व, ग्रहण आदि का निर्णय भी उनमें नहीं है। यह निर्णय सर्वप्रथम इतिहास-पुराणों के द्वारा ही निश्चित किया गया है। जो बातें वेदों में नहीं है, वे सब स्मृतियों में हैं और जो बातें इन दोनों में नहीं मिलतीं, वे पुराणों के द्वारा ज्ञात होती हैं।

नाहं वसामि वैकुण्ठे
योगिनां हृदये न च
मद् भक्ता यत्र गायन्ति
तत्र तिष्ठामि नारद

हे नारद
जहाँ मेरे
भक्त
गायन
करते हैं

वहाँ मैं
सदैव
विराजमान
रहता हूँ।

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर
815, चौक श्री कल्कि मन्दिर, चौक कुण्डेवालान
श्री कल्कि मार्ग, अजमेरी गेट, दिल्ली–110006
ऑफिस दूरभाष : 23866646, 23863383

कल्कि अवतार अभी क्यों ?

—महावीर चौधरी 09830334519 (कोलकाता)

हमारे शास्त्र और पुराण प्रमाणित करते हैं—

1. अभी कलियुग चल रहा है जिसकी आयु 4 लाख 32 हजार वर्ष है।

2. कलि के 5090 वर्ष बीत चुके हैं और उसका अभी प्रथम चरण चल रह है।

3. कलियुग के चौथे चरण में भगवान विष्णु का कल्कि अवतार होगा जो कलियुग का नाश कर सत्युग की स्थापना करेगा।

इसका अर्थ यह है कि भगवान विष्णु का कल्कि अवतार होने में अभी लाखों वर्ष का समय शेष है। अब प्रश्न यह उठता है कि जिस अवतार को प्रगट होने में लाखों वर्ष लगेंगे उसको अभी क्यों मानें? उसकी पूजा क्यों करे? उसकी पूजा करके क्या मिलेगा? हम इसके विश्लेषण का प्रयत्न करते हैं— यह जगत नारायण और दैवी शक्तियों का लीला संसार है। इनके द्वारा बहुत सी लीलाएं रची जाती हैं जिनमें सबसे मुख्य है नारायण का अवतार धारण करना (अवतार केवल नारायण धारण करते हैं, ब्रह्मा और शिव नहीं)। नारायण जगत के पालक हैं, धर्म के संरक्षक हैं। पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करना और भक्तों की रक्षा करना उनका प्रथम दायित्व है। इसी दायित्व को निभाने कि लिये वो अवतार धारण करते हैं। सतयुग के आरम्भ से ही उन्होंने अपने अवतार धारण करने की प्रक्रिया को एक ही प्रतिज्ञा में बांधा है जिसका उदघोष उन्होंने गीता में किया है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः

अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यमहम्।

अवतार किसी समय सीमा में बंधा नहीं होता। उसके प्राकट्य के अपने माप-दण्ड होते हैं। नारायण का यह उदघोष अधर्मी और आसुरी

शक्तियों को उनकी ललकार है कि जिस क्षण तुम्हारे अत्याचारों से मेरे द्वारा स्थापित यह माप–दण्ड टूट जाएंगे (जो इस बात का प्रमाण होंगे कि पृथ्वी पाप के बोझ को और नहीं उठा सकती है तथा मेरे भक्त भी अब और अत्याचार नहीं सह सकते हैं) उसी क्षण मैं भी समय की सभी सीमाएं तोड़कर अवतार धारण करूंगा।

आज के दिन यदि हम चारो तरफ नजर डालें तो हम देखेंगे कि शास्त्रों में कलियुग के चौथे चरण के जो लक्षण बताए गए हैं वो सब इस प्रथम चरण में ही पूरे होने के करीब आ गए हैं।* धर्म, सत्य, दया, क्षमा, पवित्रता, आयु का लोप हो गया है, धनी और पाखण्डी ही समाज में श्रेष्ठ हो गए हैं, प्रकृति असंतुलित हो गई है, कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि, चारो तरफ आसुरी शक्तियों के प्रहार से हाहाकार मचा हुआ है। हर आदमी रोग ग्रस्त है, वर्ण व्यवस्था समाप्त हो रही है, धन के लिये पुत्र पिता का भाई भाई का प्राण ले रहा है, स्त्रियों में शालीनता और लज्जा का लोप होता जा रहा है। ये परिस्थितियाँ इस सत्य की ओर संकेत कर रही हैं कि युगावतार भगवान श्री कल्कि के प्रकट होने का समय नजदीक आ रहा है।

इतने कम समय में जो मनुष्य को आज तक नहीं मिला था कल्कि जी के नाम से प्राप्त हो रहा है

नारायण के रामावतार और कृष्णावतार के समय पृथ्वी पर रहते–रहते भी इस समाज ने उन्हें भगवान नहीं माना, उनकी पूजा अर्चना नहीं की। उनके कुछ प्रिय भक्तों, ऋषि और मुनियों को ही ज्ञात था कि वो अवतार हैं।

पर कल्कि अवतार की लीली ही निराली है। अभी वो प्रगट हुए ही नहीं है पर चारों तरफ उनके मंदिर बन रहे हैं, मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा, पूजा व अर्चना हो रही है, भक्त जुड़ते जा रहे हैं क्योंकि भक्तों की झोलियाँ भरती जा रही हैं, उनकी मनोकामना पूरी हो रही है, **इतने कम समय में जो उन्हें आज तक नहीं मिला था, कल्कि जी के नाम से प्राप्त हो रहा है।** यह घटना इस बात का प्रमाण है कि हम दैवी जगत में कल्कि अवतार हो गया है, स्वप्न, जागृत और वाणी अनुभवों के द्वारा वो भक्तों को संदेश दे रहे हैं, उनकी महाशक्तियाँ भक्तों की रक्षा के लिये इस जगत के चारों ओर फैल चुकी हैं** अब केवल प्राकट्य शेष है।

प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। आप कल्कि जी की लीला का अनुभव करना चाहते हैं तो उनके महामंत्र—

जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमा पते

एवं बीज मंत्र— जय श्री कल्कि जय माता दी

एक–एक माला का जाप कीजिए, प्रार्थना के साथ फल समर्पण कीजिए और आप देखेंगे, प्रत्यक्ष, स्वप्न, जागृत और वाणी अनुभवों के द्वारा महसूस करेंगे कि श्री कल्कि जी आपके मानस में प्रकट होकर आपको परेशानियों से निकलने का रास्ता दे रहे हैं, आपकी और आपके परिवार की रक्षा कर रहे हैं।

***निष्कर्ष*—कल्कि अवतार हो गया है, केवल प्राकट्य शेष है।**

**देखें श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कन्ध के द्वितीय अध्याय कलियुग के धर्म —गीताप्रैस गोरखपुर*

*** विस्तार से पढ़ें स्वप्न अनुभव एक संपदा एवम् अनेक भक्तों की आपबीतियाँ उनके मोबाइल नंबरों सहित*

श्रीमद्भागवत के अभिन्न अंग भगवान श्री कल्कि क्यों ?

शुकदेव जी (वैशम्पायन, व्यास जी के पुत्र) पाण्डवों के एकमात्र वंशज अभिमन्यु पुत्र परीक्षित् (विष्णुरात) को जो उपदेश (कथा) सुना रहे थे वह अट्ठारह (18) हजार श्लोकों का समावेश था। महाराज परीक्षित् का सात–दिन में निधन हो जाने से उन सबका उपदेश न हो पाया था। अतः बाद में मार्कण्डेय ऋषियों के आग्रह पर शुकदेव जी ने पुण्याश्रम में उसे पूरा किया था। सूत जी (व्यास जी के शिष्य लोग हर्षण सूत के नाम से प्रसिद्ध हुए जिनकी धारणा शक्ति से प्रसन्न होकर महर्षि व्यास ने उन्हें पुराणों की संहितायें दे दीं) का कहना है कि वे भी वहाँ उपस्थित थे और पुण्यप्रद कथाओं को सुना था। उन्हें ही आप लोगों को सुनाता हूँ। सूत जी ने उन ऋषियों को जो कथा सुनाई वही **श्री कल्कि पुराण के नाम से प्रसिद्ध है।**

प्रोफेसर बृजमोहन चतुर्वेदी

वरिष्ठ प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कल्कि अवतार न होता तो हिन्दू डोडो पक्षी की तरह इतिहास के पन्नों में रह जाता

वेदों, पुराणों, शास्त्रों में जो परमात्मा ने मनुष्य को जीने की कला सिखाई

है उसी के अद्‌भुत ज्ञान से यह दुनिया चलती है। शुरु से विप्रों ने गहन अध्ययन से कंठस्थ करके समाज को खुले दिल से कुटियाओं में रहते हुए आयाचित जो मिला परमात्मा के सहारे उस पर सब्र करते हुए प्रजा को महलों में आनंदपूर्वक रहने, फलने-फूलने के आशीर्वाद दिये अतः सृष्टि के आरम्भ से संसार में ब्राह्मणों, विद्वानों का प्रभुत्व रहा।

उदाहरण के लिये आपने चाणक्य (ब्राह्मण) को देखा जिसने नंद वंश से अपने अपमान का बदला लेने के लिये चंद्रगुप्त बालक को शास्त्रों की विद्या के द्वारा तैयार करके अपने लक्ष्य को पाया। ऐसे ही महाराष्ट्र की जीजाबाई ने रामायण, श्रीमद्‌भागवत के ज्ञान द्वारा शिवाजी को पोषित (पाल) कर मुगलों (मुसलमानों) से हिन्दू जाति के अपमान का बदला लिया।

1857 में एक मंगल पाण्डे द्वारा सैनिक छावनी में केवल यह तथ्य उजागर करने पर विद्रोह हुआ कि कारतूस चलाते वक्त मुँह से एक चमड़े का छर्रा खींचना पड़ता है, जिसमें हिन्दुओं की बंदूक में गाय की चर्बी और मुसलमानों की बंदूकों में सुअर की चर्बी लगी होती है। यह बात अचानक उभर के आने पर विद्रोह हो गया। विद्रोह का असली कारण आर्थिक न था बल्कि धार्मिक भावनाओं पर प्रहार था। अंग्रेजों की ही भारतीय फौज़ों ने अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण जहां कही अंग्रेज मिले उन्हें गाजर मूली की तरह काट लैम्प पोस्टों तक पर लटका दिया।

इस प्रथम धार्मिक स्वतंत्रता संग्राम को अंग्रेजों ने गद्दारी का नाम दिया और अपने देश के विचारकों (Thinkers & Thoughters) के गहन परीक्षण, निरीक्षण करने के बाद यह फैसला लिया कि अब हमें भारतीयों पर हकूमत करने के लिये इन्हें अपने जैसा बनाना होगा।

जिन गौ-ब्राह्मणों गुरुकुलों की वजह से इन में नैतिकता, शक्ति ज्ञान बुद्धि बल बढ़ता है उन्हें खत्म करना होगा और इनकी निगाह से इन्हें गिराना होगा। इसके लिये रिटायर्ड चीफ जस्टिस लॉर्ड मैकाले ने ईस्ट भारत में स्कूलों की नीव रखी और अपने पिता को एक पत्र द्वारा सूचित किया कि हमारे अंग्रेजी स्कूलों की बड़ी आश्चर्य जनक प्रगति हो रही है।

अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी हिन्दू अपने धर्म में विश्वास नहीं रखता है। अब हम हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की योजना के बिना ही अपना मकसद सिद्ध कर सकते हैं। धर्म के नाम पर अब हमारा पहले (1857) की तरह कोई विरोध नहीं होगा। अर्थात अपने त्योहारों के दिन ही इन्हें इनके देवी-देवता याद आऐंगे व सत्कर्म जप पूजा व्रत करेंगे। दूसरे शब्दों में अंग्रेजियत इनके दिलों में उतर गई है।

1947 में फिरंगियों (अंग्रेजों) ने जब भारतवर्ष से विदाई ली तो उन्होंने अपनी गहन कूटनीति से फूट डालो (Divide & Rule) शासन करो की नीति के अनुसार भारत के दो टुकड़े किये। मुसलमानों के लिये पाकिस्तान और हिन्दुओं के लिये हिन्दुस्तान। दोनो जातियों के खैरनुमा तब से ही नहीं आज दिन तक बने हुए हैं। प्रत्यक्ष में न दिखते हुए पीठ पीछे से किस प्रकार हिन्दू बाहुल्य ब्राह्मणों-गाय का सर्वनाश किया है, **जिस कारण हिरण्यकश्यप को मारने वाले भगवान विष्णु ने समय से पहले श्री कल्कि अवतार लिया है।**

900 वर्ष तक हम मुसलमान विदेशियों के शासन में रहे 150 वर्ष अंग्रेजों के और अब काले अंग्रेजों के गुलाम हैं। 1947 में लंदन जाते हुए अंग्रेज हमारे भारत के दो टुकड़े कर गए। हिंदुओं (वैश्य, गुजराती, मराठी, सिंधी, पंजाबी, बिहारी, बंगाली, मलयाली आदि) के लिए हिंदुस्तान और मुसलमानों के लिए पाकिस्तान यह सभी को ज्ञात है कि किस तरह पाकिस्तान से हिंदुओं को खदेड़ा गया जो बचे भी उनकी लड़कियों को उठा कर जबरदस्ती विवाह करवा कर उनका धर्म परिवर्तन करवाया गया, और करवा रहे हैं। ऐसे में किसी हिंदू का वहाँ के प्रशासन में आने का तो सवाल ही नहीं उठता। दूसरी तरफ हिंदुस्तान में से मुसलमान जब पाकिस्तान वापिस भेजे जा रहे थे तब गांधी जी ने भाईचारे की दुहाई देकर जो मुसलमान नहीं जाना चाहते थे उन्हें अपना सुरक्षा कवच प्रदान करके रोक लिया। हमारी धार्मिक मान्यताएं प्रभु श्रीराम की तरह एक पत्नी व्रत हैं जबकि उनकी मान्यताओं में बहु पत्नी प्रथा है।

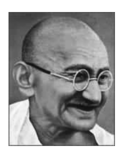

भारत सरकार द्वारा आबादी का नियंत्रण करने के लिए परिवार नियोजन की नीति को बढ़ावा दिया गया जिसके तहत हर परिवार में एक या दो बच्चों का प्रचार किया गया जबकि उनका धर्म इसको नहीं मानता इसका परिणाम यह हुआ कि हम अपने ही हिंदुस्तान में बहुसंख्यक (Ma-

jority) से अल्पसंख्यक (Minority) होते जा रहे हैं। जिसका उल्लेख माननीय हाई कोर्ट ने अपने फैसले में इस प्रकार कहा—

5 अप्रैल 2007 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा कि यू.पी. में मुसलमान अब अल्पसंख्यक नही हैं। लोक सभा में जो अपनी सबसे ज्यादा सीटें रखता है वह आज मुस्लिम बाहुल्य राज्य है। आमदनी के हिसाब से भी देखें तो हिन्दू और मुसलमान आज भाई-भाई हैं। सालाना खर्च के मामले में राष्ट्रीय स्तर पर औसतन मुसलमान परिवार हिन्दू परिवार से ज्यादा खर्च करता है। औसत मुसलमान का लगभग खर्चा 40,327 रुपये है जबकि हिन्दू परिवार को खर्च 40,009 रुपये है। ग्रामीण इलाकों के मुसलमान भी खर्च के मामले में हिन्दुओं से आगे हैं।

आज मुस्लिम और ईसाइयों का दबदबा इस प्रकार है कि ओ.बी.सी. कोटे पर अल्पसंख्यक के नाम पर तमिलनाडू सरकार ने सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में सिर्फ मुसलमानों व ईसाइयों (Muslims & Christians) के लिये एक्सक्लूसिव की घोषणा की है, जबकि अम्बाशंकर कमीशन का गठन राज्य में हिन्दू-मुस्लिम-इसाई समुदाय के पिछड़े वर्ग के लोगों की संख्या का पता लगाने के मकसद से किया गया था।

आज हमारे देश में एक अनोखी घृणित स्वार्थ की राजनीति चल रही है। हमारे नेता अल्पसंख्यक (Minority) राजनीति के नाम पर देश को आधार बनाकर यदि यही गंदी राजनीति करते रहे तो हिन्दू तो रहेगा ही नहीं, वह दिन दूर नहीं जब पूरा देश अग्नि कुण्ड में होगा और कोई चाह कर भी इस देश को नहीं बचा सकेगा।

ऐसे में जो ब्राह्मण, विद्वत समाज ये कह रहे हैं कि अभी कल्कि अवतार कैसे? और क्यों? वह तो 4,32,000 वर्ष बाद होना है तो साथियों तब तक की इंतज़ार तो क्या करोगे, हमारे हिसाब से 200-300 वर्ष बाद ही हिन्दूजाति का व उसका स्वरूप ही शेष नहीं बचेगा। हमारे हिन्दू समाज में तो यदा-कदा वीर राणा प्रताप-शिवाजी-रानी झांसी- तातियां टोपे-वंदा वैरागी निकल कर आते हैं बाकि तो हिन्दू ही अपने को हिन्दू कहने से भी डरते हैं, जरा अपने सीने पर हाथ रखकर तो देखो, वह बिलकुल डोडो पक्षी की तरह है। हिन्दू तो सिर्फ इतिहास के पन्नों में मलेशिया के नीचे दिखाए डोडो पक्षी* की तरह देखने को रह जाता यदि अब श्री कल्कि अवतार न होता।

अंग्रेजों ने हमारे व्यापार पर अधिकार किया, दस्तकारियों पर अधिकार किया, किसान की सारी कमाई पर अधिकार किया। अंत में खेती के धंधों पर कब्जा कर भारतवर्ष को जेल खाने के कैदियों की तरह राशन से तोलकर

7 छंटाक (500 ग्राम गेहूँ) रोटी और नाप कर कपड़ा देकर सारी कमाई इंग्लैंड भेजने का विचार कर रहे थे कि हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म के सर्वनाश का ऐसा उपक्रम (तैयारी) देखकर इस देश के सच्चे स्वामी, हिरण्यकश्यप, रावण, कंस को मारने वाले, गौ ब्राह्मण और धर्म की रक्षार्थ युग-युग में अवतार लेने वाले, क्षीरसागरवासी महाविष्णु गोपाल कृष्ण ने कल्कि रूप को धारण करने का संकल्प करके श्री बालमुकुंद जी के रूप में ब्राह्मण के घर श्री हनुमान जी को जन्म दिया और अपने अवतार धारण करने की रहस्यमयी लीला का अनुभव दिया। कलियुग की बची कुची शेष आयु को काटने के लिये कल्कि भगवान का पूजन व नामोच्चारण और प्रचार करने का आदेश देकर, कल्कि भगवान के नूतन आश्वासन की प्रसन्नता का नगाड़ा बजवाया। भारतवर्ष के महामहिमापूर्ण प्राचीन तीर्थ, पदम् पुराण में वर्णित इंद्रप्रस्थ में हनुमान जी के द्वारा कल्कि भगवान की मूर्ति के पूजन का श्री गणेश करवाया।

अतः हमारा भविष्य उज्वल है कि हम हनुमान जी एवं महा विष्णु के 24 वें, बड़े अवतारों में दसवें अवतार भगवान श्री कल्कि के संरक्षण में हैं जिनकी आराधना (नाम जाप पूजन हवन आदि) से आज के शासकों एवं उनके आकाओं की दमनपूर्ण (Destructive) घृणित, कूटनीतिक, कुचालों (Policies) से बचकर उन्हीं के बनाए सनातन धर्म के सहारे हम रास्ता पा सकेंगे। क्योंकि—

धर्म प्यारा है उन्हें, भक्त प्यारे हैं उन्हें, भक्तों ने ही तो जमी पर उतारा है उन्हें,

देख सकते वह कभी भक्तों को मजबूर नहीं, कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं

अतः अपने में हौंसला (हिम्मत) लाओ कल्कि जी पर विश्वास (Trust him) रखो उन्होंनें तुम्हारे सारे काम ठीक कर दिए हैं और करेंगें।

**डोडो पक्षी मलेशिया में सदियों पहले समुद्र के तट पर पाया जाता था जहाँ मछलियाँ प्रचुर मात्रा में इसे उपलब्ध होती थी जिसका परिणाम यह हुआ कि यह पक्षी बिना परिश्रम के ही शरीर से भारी हो गया। जब कोई उसे पकड़ने जाता तो अपना बचाव नहीं करता था बल्कि गर्दन झुका देता था। इस पर उसकी गर्दन मरोड़कर उसे पकाकर खाया जाता था।*

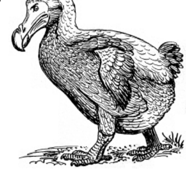

डोडो पक्षी

जागो हिंदू जागो कहीं डोडो पक्षी की तरह हमारी गउ माता भी इतिहास के पन्नों में न रह जाए

भारत एक कृषि प्रधान देश है, ऋषियों मुनियों की तपोभूमि है। गाय और बैल कृषि के साथ साथ आध्यात्मिकता और हमारे दैनिक जीवन से भी जुड़े है। सनातन धर्म में तो द्वापर युग में गै माता और भगवान कृष्ण का इतना स्नेह संबंध रहा कि कृष्ण ने बाल्यकाल से ही गैया चराई और उनका नाम भी गोपाल पड़ गया।

पाश्चात्य शिक्षा के कुप्रभाव से आज नौजवान हिंदू हमारी एक अरब सत्तानवे करोड़ अठहत्तर लाख छियालिस हजार वर्ष पुरानी सनातन संस्कृति जो वेदों में वर्णित है उसकी महत्ता को न समझते हुए पाँच तारा होटलों में गाय का मांस का सेवन कर रहे हैं। विदेशों में धड़ल्ले से गाय के मांस का निर्यात हो रहा है। ऐसी स्थिति में मैट्रो सिटीस (दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई) में तो गाय लुप्त प्राय हो गई है, लगता है 30 -40 वर्षों में गाँवों में भी यही हाल हो जाएगा। यदि हिंदू नहीं जागे तो गांवों में भी आने वाले वर्षों में गाय डोडो पक्षी की तरह इतिहास के पन्नों में रह जाएगी

गो सेवा से राष्ट्र की सुरक्षा एवं सुख संपन्नता संभव है। इतिहास साक्षी है कि जब तक भारत में गौ सेवा रही तब तक भारत भूमि सुरक्षित एवं सुख संपन्न बनी रही। इसी कारण हम प्राचीन गुरूकुल में गौ सेवा को आवश्यक रूप से पाते हैं। गौ सेवा के माध्यम से बालक गौ मूत्र, गोबर और गौ दुग्ध से बनने वाल विभिन्न उत्पादो से परिचित हो जाते थे। अर्थात् कठिन से कठिन परिस्थिति में भी गौ धन से परिवारों की जीविका चल जाती थी इससे आत्महत्या जैसा घिनौना कदम उठाने की आवश्यकता ही नहीं थी।

गाय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बाँझ

होकर, बूढ़ी होकर भी अनुपयोगी नहीं है। बूढ़ी गाय भले ही दूध देना बंद कर दे पर उसके मूत्र और गोबर से अनेक उत्पाद बनाए जा सकते हैं। गाय के गोबर में माँ लक्ष्मी का और मूत्र में माँ गंगा का वास होता है। गाय में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास होता है। गाय के मस्तक से पीठ तक हाथ फेरने से हृदयाघात, ब्लड प्रैशर (बी.पी.) ओर तनाव (डिप्रैशन) जैसी बीमारियों से बचे रह सकते हैं।

विदेशियों की कूटनीति ने हमारे नेताओं (शासकों) को ऐसा समझाया कि सूखा पड़ने पर गाय का चारा कहाँ से लाएं इसलिए इन्हें काटा जाए इस दुष्कृत्य के लिए गाय काटने की मशीनें विदेशों से मंगावाई गईं। और तब से शुरू हुआ यह घिनौना खेल अब तक भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। आजादी से अब तक यदि इन 50 करोड़ गायों को बचा लिया जाता तो आज हमारा भारत देश गाय के मूत्र, गोबर और दूध के उत्पादों से ही इतना समृद्ध राष्ट्र होता कि वह **उधार लेने वाले देशों में से नहीं उधार देने वाले देशों में अग्रणी होता।** हमारे देश में जहाँ गाय की पूजा होती थी वहाँ कितनी नृशंसता से आज वह कटती हैं इस बात का अंदाजा इस सत्य को सुनकर लगाया जा सकता है। कातिल ओर व्यापारी पशुओं को ट्रक में भर कर अधमरी स्थिति में यहाँ लाते हैं और उन्हें इस तरह तड़पाकर मारा जाता है कि कुंभीपाक नरक का वर्णन भी फीका पड़ जाता है। हत्या घर की क्षमता से तीन गुणा अधिक पशु यहाँ कटते हैं। यही मांस पाँच सितारा होटलों में परोसा जाता है।

गाय को शाकाहारी से मांसाहारी बनाया

विदेशों में हमारी गऊ माता के साथ एक और चाल चली गई कि मृत और अक्षम गायों को मार कर पीस कर उनके चूर्ण को जीवित गायों के भोजन में मिला कर खिलाया गया ताकि उनसे ज्यादा दूध प्राप्त किया जा सके। गाय को शाकाहारी से मांसाहारी बना दिया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि विदेशों में मैड काऊ बीमारी फैलने लगी जिसके निवारण के लिए मैड काऊ की दवाई का इंग्लैंड में अविष्कार हुआ।

द्रौपदी ने जब राजसभा में अपने पाँचो पतियों को लाचार पाया तो कृष्ण को दोनों हाथ उपर उठाकर पुकारा तब नारायण ने वस्त्रावतार लेकर द्रौपदी की रक्षा की। आज द्रौपदी की तरह लाचार यह गाय माता अपने

कृष्ण (कल्कि)की ओर निहार रही हैं कि वह आकर इनकी सुध अवश्य लेंगे। और कृष्ण कल्कि रूप में अपनी प्यारी गऊओं की सुध लेने को अवतार ले चुके हैं। निरंतर धर्म का ह्रास होने से 5098 वर्ष में देखते देखते ही गऊ, विप्र, धर्म व सज्जन लोगों रक्षा के लिए श्री हरि कल्कि को अवतरित होना पड़ा। आज कलियुगी कंस और रावण एक नहीं हर घर गली कूचे में विद्यमान है।

विदेशी हटे दास उनके डटे उसी को सभी मान बैठे स्वराज। आज क्यों मूक हैं हम सभी गौमाता के इस निर्मम हत्याकांड पर? कल्कि समुदाय आर्त ह्दय से भगवान कृष्ण को पुकार रहा है कि हे कृष्ण कल्कि रूप में आकर देखिए आपकी गायों पर किस तरह अत्याचार हो रहे हैं।

यहाँ रोज सुबह के होने तक कट जाती हैं लाखों गाय,
कुंज गलियों की रंगरलियों में दिल पत्थर हो तो खो जाए
पुकारें नहीं सुन रहे गाय की तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया
तुम्हीं से पली लाडली का यहाँ तुम्हारें बिना हाल क्या हो गया।
यहाँ अब न माखन यहां अब न घी यहाँ अब न नदियाँ बहें दूध की
न नौ लाख गौए यहाँ नंद की न ब्रज के यहाँ ग्वाल क्या हो गया।

भगवान श्री कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते का कम से कम 21 बार जाप करके प्रार्थना करें कि हे **श्री कल्कि भगवान गौ विप्र धर्म की रक्षा कीजिए, भूमि का भार उतार दीजिए। कलियुग का नाश करके सत्युग की स्थापना कीजिए। हमें सुखी भाव से वैभवता पूर्वक आपका काम करना है।**

नारायण श्री हरि कल्कि पृथ्वी पर्यंत की गौओं की रक्षा के लिए अवतार ले चुके अतः हमें यह संदेश जन जन तक पहुँचाना होगा श्री कल्कि की पुकार ही एक रास्ता है गाय माता,देश और धर्म को बचाने का क्योंकिः

लेन को बदला गोपाल भैया गैया के, आज तीक्ष्ण दृष्टि से सृष्टि को निहारे हैं।

गऊन के बैरियन के बन के बन भस्म होए, उतर जाए भार उनकी ठठ्ा ठिठोली में।

कलियुग में कल्कि जी की स्वप्न अनुभव लीला

त्रेता युग की रामायण कहलाई राम की लीला द्वापर में कान्हा ने खेली माखन लीला

लेखिका : सुश्री इंदु बंसल (09818416191)

प्रश्न : स्वप्नानुभव किसे कहते हैं ?

उत्तर : जब व्यक्ति विशेष भगवान कल्कि की आराधना करना आरंभ करता है तो सोते हुए स्वप्न में कुछ दिखाई देता है अथवा कोई वाणी सुनाई देती है, और वह सो कर उठने के बाद भी उसे पूरी तरह से याद रहती है। इन स्वप्नों अथवा वाणी में उस व्यक्ति के जीवन में आने वाला उत्थान अथवा परेशानियों से निकलने के लिए मार्ग दर्शन रहता है। कई बार भक्त की जाग्रत आँखों के आगे से कोई घटनाक्रम साकार रूप में एक झलक की तरह दिख कर अदृश्य हो जाता है। इन्हें कल्कि भक्त स्वप्न, वाणी, मानसिक एवं जागृत अनुभव कहते हैं।

प्रश्न : ये अनुभव बनते कैसे हैं ? इन्हें देता कौन है एवं ये याद क्यों रहते हैं ?

उत्तर : संपूर्ण ब्रह्मांड का संचालन करने वाली ब्रह्म शक्ति वास्तव में निराकार है जो दूसरे शब्दों में विशाल सूर्य की तरह चमचमाता ज्योति पुंज है। जब इस कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि (विशाल ज्योति पुंज) से भक्त की भक्ति जुड़ती है तो वह निराकार ब्रह्म भगवान श्री कल्कि जी के निर्देश हम विभिन्न मानव रूप एवं प्राकृतिक रूप धारण करके हमें संकेत के रूप में दिखते हैं। अपने से प्रेम करने वाले भक्तों के दुख दूर करने के लिए, सुख देने के लिये भगवान श्री कल्कि हमें दिखाते हैं। भगवान विष्णु के पहले नौ अवतार इस बात के प्रमाण हैं।

विशाल ज्योति पुंज ब्रह्मांड

महाविष्णु के इस कलियुग के अवतार प्रभु श्री कल्कि हैं। उनका अवतार हो चुका है, प्रकट होना शेष है। जो भी भक्त उनका नाम जाप, हवन, पाठ और प्रचार का कार्य (सत्संग व साहित्य द्वारा) करता है, उसे भाग्य में लिखे हर दुख व परेशानी से बचाने व धन, सम्पन्नता, वैभवता के लिए, कल्कि भगवान उस भक्त को उसकी पिछली व अबकी क्षमता (शक्ति) के अनुकूल अपनी अनुभव लीला (स्वप्न, जाग्रत, वाणी अनुभव) द्वारा दिखाकर बताकर रास्ता देते हैं।

भक्त अनुभव लीला द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन पिछले जन्मों के पाप कर्मों का भुगतान कर सुख-समृद्धि प्राप्त कर सकता है, ताकि अनुभव याद रहे समझदार, अनुशासित, ज्ञानी भक्त याद बने रहने और उनका अर्थ जानने व उपचार करने के लिये उसी दिन तुरन्त कॉपी/रजिस्टर में लिख लेते हैं। बहुतों का माानना यह भी होता है कि लिखने की कोई जरूरत नहीं है, हमें सब याद रहता है तो उनके लिए कोई टिप्पणी (नो कमेंट्स) नहीं है।

प्रश्न : अनुभव शरीर में कहाँ पर आता है ?

उत्तर : स्त्रियाँ जहाँ बिंदी लगाती हैं, उस जगह हर व्यक्ति का तीसरा नेत्र होता है, जो सुप्तावस्था में होता है। जब व्यक्ति युग के अवतार के प्रति भक्ति भाव से जुड़ता है तो उस त्रिनेत्र का तेज जाग्रत होने लगता है। जैसे जैसे भक्त की भक्ति बढ़ती है, वैसे वैसे उसके तीसरे नेत्र का तेज बढ़ता है और उस तेज से पूर्ण ब्रह्म नारायण के साथ के ज्योति पुंज से संबंध जुड़ने लगता है। उस ज्योति पुंज के द्वारा प्रभु स्पष्ट-अस्पष्ट अनुभव तो देते ही हैं कभी कभी उसी में उपचार भी देते हैं। तब प्रभु द्वारा भेजा गया संदेश स्पष्ट होने लगता है।

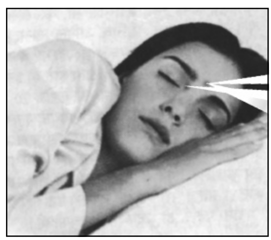

त्रिनेत्र पर स्वप्न अनुभव

प्रश्न : अनुभव में जो दिखता है, वह कई बार बहुत स्प्ष्ट व अस्पष्ट होता है। मामाजी एवं अनुभव का अर्थ बताने वाले पैनल सदस्य जो अनुभव का अर्थ बताते हैं, वह द्रष्टा का मानस एकदम स्वीकार नहीं कर पाता है। ऐसा क्यों होता है ?

उत्तर : श्री गुरूजी ने कई बार बताया, अनुभव रेत मिली बूरा होती है। भगवान कल्कि भक्त के कल्याण के लिए स्वयं अथवा दैवी शक्तियों द्वारा तत्काल संदेश भिजवाते हैं, ताकि कलियुग की आसुरी शक्तियाँ उसमें विघ्न न डालें। इसलिए स्वप्नानुभव कई बार कोड वर्ड में भी होते हैं। (यदि हमें रेत मिली बूरा में से रेत और बूरा को अलग करना है तो उसमें पानी मिला कर कपड़े से छानना पड़ेगा, तभी मीठा पानी और रेत अलग हो पाएगी।)

अतः मामाजी अथवा अन्य पैनल सदस्य अनुभवों का जो अर्थ बताते हैं, उसमें उनकी अपनी मरजी या विचार नहीं होते हैं। भगवान के दिखाए गए अंतर्जगत से पहले जटिल समस्याओं में से निकालने के लिये (स्वप्न जागृत वाणी, मानसिक) लिखित अनुभवों के अधार पर अथवा अब की परिस्थितियों के आधार पर जो अर्थ उनके मानस पटल में अंतर्जगत की शक्तियाँ देती हैं, वही बताया जाता है।

कल्कि भगवान ने यह बात कई बार अनुभवों द्वारा भी स्पष्ट की है कि जब भक्त अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अनुभवों का गलत अर्थ बताएंगे और लगाएंगे तो स्वप्न द्रष्टा तो गिरेगा ही, गलत अर्थ बताने वाला भी गिरेगा अर्थात् कालंतर में शक्तिहीन हो जाएगा। हम ही नहीं आप भी ऐसे कई सदस्यों को जानते होंगे।

ऐसे पचासों उदाहरण हमारे पास हैं जिसमें जब मामाजी व अनुभव पैनल ने किसी भक्त के अनुभव का अर्थ उसकी मर्जी के विपरीत बताया तो स्वप्नद्रष्टा ने अपने जनों को नाराजगी जताई, उस अर्थ को गलत माना। बाद में बताई गई परेशानी आने पर या दुबारा उसी की अथवा उसके परिवार वालों के स्वप्नानुभवों में भगवान श्री कल्कि ने उसी अर्थ की पुष्टि करी। मामाजी अथवा पैनल मैंबर द्वारा बताया गया अर्थ सही था।

प्यारे बच्चों मामाजी अथवा पैनल मैंबर में अनुभव देने की शक्ति तो नहीं है? आज श्री कल्कि बाल वाटिका कल्कि जी द्वारा स्वपनानुभवों में दिए गए निर्देशों का अपनी मरजी थोपे बिना ईमानदारी से पालन कर रही है। हजारों बालक व बालिकाएं 1989 से विभिन्न दिल्ली व दिल्ली से बाहर चल रही वर्कशॉपों द्वारा कहाँ से कहाँ पहुँच

गए , कुछ तो कहने वाले हमेशा मिलते ही रहेंगे—**हम देखते ही रह गए कारवां निकल गया।** तभी एक के बाद एक अनेकों विशिष्ट कार्य भगवान श्री कल्कि जी के पूर्ण हो रहे हैं। महाविष्णु का पहला चमत्कारी अवतार भगवान श्री कल्कि जिनकी प्रकट होने से पहले मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है। देखते ही देखते महज 26 वर्षों में कल्कि भगवान की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैल रहा है। अनेकों सिद्धपीठों में भगवान श्री कल्कि की मूर्तियाँ लग रही हैं व विधि विधान से पूजा हो रही है। बन पड़े तो एक बार अवश्य देखें, सुनें **www.jaikalki.com** भजन व आपबीतियों के लिये **type merekalki on youtube.com join kalki group real on facebook** अधिक जानकारी के लिये : कुमार विष्णु 9968066625 (सुपुत्र सुश्री मेघना गोयल) कुमार अनिरुद्ध 9873523985 (सुपुत्र सुश्री पूजा गुप्ता)

प्रश्न : दृष्टा के स्वपनानुभवों का अर्थ किस आधार पर लगाया जाता है ?

उत्तर : जिस समय दृष्टा का अनुभव पैनल मैंबर एकाग्रचित्त होकर सुनता है तो उसका संबंध अंतर्जगत से होने लगता है तो उसके सामने स्क्रीन पर संदेश आने लगते हैं कि इस तरह की स्थिति किस किस भक्त के ऊपर पहले भी आई है। मामाजी के 50 साल के रिकार्ड रजिस्टरों में कौन से साल में कब भगवान ने इस प्रकार की परेशानी बताई/दिखाई हल बताया और सफलता प्रदान की। इससे पैनल मैंबर द्रष्टा को सही रास्ता दे पाता है। भगवान श्री कल्कि किसी का बुरा नहीं करते लेकिन उपचारों द्वारा बुरों से भक्तों का बचाव अवश्य करते हैं, तभी द्रष्टा परेशानियों से बच पाता है और उनकी भक्ती सुख समृद्धि की ओर अग्रसर होती है।

पैनल मैंबर का संबंध अंतर्जगत से

आज तक टी.वी. न्यूज चैनल ने 14 जून 08 को दिखाया कलियुग का अंत करीब क्या अब आएंगे श्री कल्कि

जब खत्म हो जाएगी नैतिकता, जब मांस-मछली से भरेगा लोगों का पेट। कुदरत देती महाविनाश का संकेत कहीं होगा जल-प्रलय-कहीं बरसेगी आग—कहीं बाढ़ में बह जाएंगी बस्तियां तो कहीं होगा भूख से बेहाल इंसान—रोटी की तलाश में लोग भटकेंगे, दौलत से हारेगा लोगों का जमीर। अब कलियुग का होगा अंत? **पौराणिक ग्रंथों में लिखी बातें सच होने को हैं। क्योंकि दुनिया में घट रहीं हैं घटनाएं, हू-बहू वैसी ही है जिनका जिक्र विष्णु-पुराण, महाभारत, श्रीमद्भागवत पुराण में है।** जब रिश्तों की मर्यादा खत्म हो जाएगी, जब पूरी दुनिया पर छा जाएगा कुदरत का कहर, जब लोग भूख से बेहाल होकर कराहेंगे, नैतिकता दौलत की गुलाम हो जाएगी, चारों तरफ फैल जाएगा आतंक, अपराध, अत्याचार का साम्राज्य तो इसका अर्थ है कि कलियुग में पाप का घड़ा फूटने वाला है। यानि कलियुग का अंत होने वाला है और कलियुग का अंत करने के लिए होने वाला है भगवान विष्णु का दसवाँ अंतिम अवतार, कल्कि अवतार। जिन लोगों को पुराणों की बातें 10 साल पहले काल्पनिक लगती थीं उन्हें भी यकीन हो रहा है कि कल्कि अवतार होने वाला है। ग्रंथ खंगाल कर ढूंढे जा रहे हैं संकेत कि कैसा होगा कलियुग का अंत? कलियुग का अंत करने के लिए कब, कहां होगा महाविष्णु का अवतार?...

अनुक्रम

पुराण महिमा	2
कल्कि अवतार अभी क्यों ?	4
जागो हिंदू जागो..........	7
स्वपनानुभव लीला	14
प्रस्तावना	8
प्राक्कथन	15
कलियुग की सबसे बड़ी पहचान	22
आभार	23
पुराण-श्रवण-काल में पालनीय धर्म	25
सिद्ध मंत्रों का म्युजिक बॉक्स	29
श्री कल्कि पुराण	
पहला अंश	**49**
पहला अध्याय	49
दूसरा अध्याय	54
तीसरा अध्याय	60
चौथा अध्याय	66
पाँचवाँ अध्याय	71
छठवाँ अध्याय	74
सातवाँ अध्याय	79
दूसरा अंश	**85**
पहला अध्याय	85
दूसरा अध्याय	90
तीसरा अध्याय	95
चौथा अध्याय	100
पाँचवाँ अध्याय	106
छठा अध्याय	111
सातवाँ अध्याय	116
तीसरा अंश	**123**
पहला अध्याय	123
दूसरा अध्याय	128
तीसरा अध्याय	134
चौथा अध्याय	143
पाँचवाँ अध्याय	147
छठा अध्याय	149
सातवाँ अध्याय	155
आठवाँ अध्याय	159
नौवाँ अध्याय	164
दशवाँ अध्याय	168
ग्यारहवाँ अध्याय	172
बारहवाँ अध्याय	177
तेरहवाँ अध्याय	181
चौदहवाँ अध्याय	185
पन्द्रहवाँ अध्याय	189
सोलहवाँ अध्याय	192
सत्रहवाँ अध्याय	198
अठारहवाँ अध्याय	204
उन्नीसवाँ अध्याय	207
बीसवाँ अध्याय	212
इक्कीसवाँ अध्याय	215
परिशिष्ट	
टिप्पणी/Refrences	221
श्री कल्कि अवतार : कुछ अन्य विशिष्ठ उल्लेख	231
भगवान श्री कल्कि की जन्मभूमि संभल	238
श्री कल्कि पुराण चित्रावली	
भगवान् श्री कल्कि	
का 24वाँ अवतार	257
कल्कि जी से संबंध	261
कल्कि जी का खजाना	264
भगवान् श्री कल्कि के मन्दिर	265
श्री कल्कि साहित्य	275
श्री कल्कि बाल वाटिका के प्रभारी प्रोजेक्ट में	277
संस्कार देने वाली श्री कल्कि	280
बाल वाटिका वर्कशॉप	

प्रस्तावना

पुराणविद्या भी वेदविद्या की तरह ही अनादिकाल से चली आ रही सनातन है। द्वापर युग के अन्त में भगवान् व्यास ने इसे पुनः जीवन दिया और अठ्ठारह पुराणों की रचना की तथा पुराण विद्या के प्रचार एवं प्रसार का भार अपने पट्ट शिष्य सूतजी पर डाला। इसके बहुत दिनों के बाद नैमिषारण्य में अठ्ठासी हजार ऋषियों की सभा में महर्षि शौनक के आग्रह पर सूतजी ने ये पुराण ऋषियों को सुनाए।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि व्यासजी के शिष्य लोमहर्षणः सूत के नाम से प्रसिद्ध हुए जिनकी धारणा शक्ति से प्रसन्न होकर महर्षि व्यास ने उन्हें पुराणों की संहितायें दे दीं—

प्रख्यातो व्यासशिष्योऽभूत् सूतो वै लोमहर्षणः।
पुराणसंहितास्तस्मै ददौ व्यासो महामुनिः॥

नैमिषारण्य में भृगुवंशी महर्षि शौनक जी के पूछने पर कि 'कलि कौन है ? वह कहाँ पैदा हुआ और किस प्रकार संसार का स्वामी हो गया ? उसने उस धर्म का भी विनाश कर दिया जो नित्य अर्थात् सनातन है; पर किस प्रकार ? इस विकराल काल के विनाश के लिए भगवान् विष्णु ने कल्कि अवतार लिया। हम उनके पूर्ण चरित का वर्णन सुनना चाहते हैं जिसमें भगवान् कल्कि के द्वारा कलि का नाश कर धर्म पुनः स्थापना का निरूपण हो,' सूतजी ने ऋषियों को बताया कि कलि और कल्कि के चरितों के विषय में देवर्षि नारद ने ब्रह्मा जी से जानकारी पाकर व्यास जी को बताया था। व्यास जी ने यह रहस्य अपने पुत्र ब्रह्मरात शुक को बताया। शुकदेव जी को वैशम्पायन भी कहा जाता है। शुकदेव जी ने पाण्डवों के एकमात्र वंशज अभिमन्यु पुत्र विष्णुरात को, परीक्षित के नाम से जाने जाते हैं, यह सुनाया। उस उपदेश में भगवान् के आख्यान का अट्ठारह हजार श्लोकों का समावेश था। महाराज

परीक्षित का सात दिन में निधन हो जाने से उन सब का उपदेश न हो पाया था। अतः बाद में मार्कण्डेय आदि ऋषियों के आग्रह पर शुकदेव जी ने पुण्याश्रम में उसे पूरा किया था। सूतजी का कहना है कि 'वे भी वहाँ उपस्थित थे और उन पुण्यप्रद कथाओं को सुना था। उन्हें ही आप लोगों को सुनाता हूँ।' सूत जी ने उन ऋषियों को जो कथा सुनाई वही कल्कि पुराण के नाम से प्रसिद्ध है।

कल्कि पुराण में कुल ३५ अध्याय हैं जो तीन अंशों में विभाजित हैं। प्रथम अंश सात अध्यायों में है। प्रथम अध्याय में कलि के वंश–वृक्ष का वर्णन करते हुए बताया गया है वह ब्रह्मा के पीठ की मैल से उत्पन्न अधर्म का वंशज है, जो उसकी भार्या मिथ्या की कोख से जन्मे पुत्र दंभ और पुत्री माया की सन्तान लोभ एवं निकृति के पुत्र क्रोध की सन्तान है जिसे क्रोध ने अपनी ही सगर्भा हिंसा से पैदा किया था। कलि ने भी अपने पिता एवं पितामह की तरह ही अपनी सहोदरा दुरुक्ति से भय नामक पुत्र एवं मृत्यु नामक कन्या को जन्म दिया जिनकी सन्तान निरय (नरक) है जिसने धर्म के साधक गौ, ब्राह्मण एवं यज्ञ–यागादि तत्त्वों के विनाश का बीड़ा उठाया।

कलि के पूरे परिवार ने लोक जीवन को जकड़ लिया और उसे अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार के चंगुल में फँसा दिया। कलि से पीड़ित पृथ्वी जब कलि के पाप का भार सहन करने में असमर्थ हो गई तो वह देवताओं की सहायता से ब्रह्मा के पास अपना दुखड़ा रोने पहुँची।

ब्रह्मा अन्य देवताओं के साथ पृथ्वी को लेकर भगवान् नारायण के पास वैकुण्ठ धाम पहुँचे। उनकी व्यथा–कथा सुनकर भगवान् विष्णु ने आश्वासन दिया कि वे संभल में विष्णुयश की पत्नी सुमति की कोख से जन्म लेकर म्लेच्छों एवं दुराचारियों का विनाशकर कलि का अन्त करेंगे और धर्म की पुनः स्थापना द्वारा गौ, ब्राह्मण एवं सज्जनों का प्रतिपालन करेंगे।

तदनुसार भगवान् विष्णु के संभल में जन्म लेने तथा उनके उपनयन आदि संस्कारों का वर्णन इसी प्रथम अंश में हुआ है। इसी अंश में सिंहल द्वीप के राजा बृहद्रथ के यहाँ उनकी रानी कौमुदी के गर्भ से लक्ष्मी जी का पद्मा के नाम से अवतरित होने का भी वर्णन हुआ है।

द्वितीय अंश में कल्कि-भगवान का सिंहल जाकर पद्माजी से विवाह तथा उनके साथ संभल आकर दाम्पत्य जीवन बिताते हुए दो संतानों की उत्पत्ति का विवरण दिया गया है तथा अंश के अन्तिम सप्तम अध्याय में मगध के बौद्ध राजा जिन के साथ युद्ध एवं उसके पराजय का वर्णन हुआ है।

कल्कि पुराण का तृतीय अंश इक्कीस अध्यायों का है जिसमें निकुम्भ नामक दानव की लोकविनाशकारिणी कुथोदरी नामक भयंकर आकृति वाली पुत्री के वध का वर्णन किया गया है। आगे भगवान राम का समूचा चरित तथा सूर्य एवं चन्द्र वंशी राजाओं की वंशावली का निरूपण किया गया है। सूर्यवंश के राजा मरु एवं चन्द्रवंशी राजा देवापि के क्रिया-कलापों का भी वर्णन हुआ है। इसी तृतीय अंश में कलि के साथ संग्राम का भी वर्णन है जिसमें सहचरों सहित कलि का विनाश और धर्म की स्थापना की गई है। शशिध्वज नामक विष्णु-भक्त राजा के साथ संग्राम एवं उसके साथ उसके घर जाकर उसकी भक्त पत्नी सुशान्ता द्वारा अर्चना तथा उनकी सन्तान रमा के साथ कल्कि के द्वितीय विवाह का वर्णन हुआ है। यहीं द्विविदोपाख्यान के प्रसंग में भगवान् श्री कृष्ण के चरित का भी वर्णन हुआ है। इसी अंश के चौदहवें अध्याय में विषकन्या-वृतान्त वर्णित है। अनन्तर भगवान् कल्कि पुन संभल लौट आते हैं और सत्ययुग का समारम्भ होता है। अब राजसूय यज्ञ का आयोजन होता है जिसमें नारद एवं परशुराम प्रभृति ऋषि पधारते है। यहाँ जीव एवं माया का संवाद वर्णित है जो दार्शनिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण एवं निखिल

वेदान्त का निचोड़ है। रमा जी को रुक्मिणी व्रत से पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी देवता संभल में आते हैं और भगवान् कल्कि वैकुण्ठ के लिए प्रस्थान कर जाते हैं।

कल्कि पुराण में सभी पुराणों एवं वेदादि शास्त्रों की सामग्री अत्यन्त संक्षेप में वर्णित है। इसके कुछ स्थल तो बहुत ही महनीय हैं जैसे—

1. प्रथम अंश के प्रथम अध्याय में वर्णित कलि की कुल-परम्परा जिसका स्मरण करने मात्र से कलिकाल का दोष नहीं लगता।
2. प्रथम अंश के तृतीय अध्याय में स्वयं भगवान् कल्कि के द्वारा की गई विल्वोदकेश्वर महादेव की स्तुति जिस के नित्य पाठ से सर्वार्थासिद्धि होती है।
3. द्वितीय अंश के प्रथम अध्याय में राजकुमारी पद्मा द्वारा भगवान नारायण की नख शिख वर्णन पूर्वक सर्वागं पूजा का विधान।
4. द्वितीय अंश के तृतीय अध्याय के भगवान कल्कि के दर्शन से पुनः पुरुषत्व को प्राप्त राजकुमारों के द्वारा भगवान विष्णु के प्रसिद्ध दश अवतारों का वर्णन।
5. तृतीय अंश के तृतीय अध्याय में सूर्यवंशी राजा मरु के द्वारा अपने पूर्वज श्रीराम के चरित का वर्णन।
6. दशम अध्याय में भक्तराज शशिध्वज की भक्त पत्नी सुशान्ता का भाव भरा गीत।
7. त्रयोदश अध्याय में द्विविदोपाख्यान के प्रसंग में भगवान कृष्ण के चरित का वर्णन।
8. चतुर्दश अध्याय में विषकन्या का उद्धार एवं उसके द्वारा भगवान कल्कि की स्तुति।
9. षोडश अध्याय में जीव और माया के संवाद के माध्यम से जीवन मरण के रहस्य का वर्णन। यह संवाद वेदान्त का सार है।

10. सप्तदश उध्याय में रुक्मिणी व्रत का विधान जिसको करने से पुत्र की प्राप्ति अवश्यंभावी है।
11. विंश अध्याय में भगवती गंगा जी की स्तुति जिसके पाठ से सभी पापों का क्षय हो जाता है।

इनके अतिरिक्त कल्कि पुराण में कई महत्त्वपूर्ण विषयों का स्पष्टीकरण प्राप्त होता है, जैसे वेदों की महिमा, भक्ति का मर्म, असली ब्राह्मण का लक्षण, सन्त की महत्ता, साध्वी स्त्री के चरित्र का बल, देवताओं का स्थान, देहात्मवाद की दुःखद परिणति, आदि।

कल्कि पुराण में बताया गया है कलियुग की सबसे बड़ी पहचान लोगों की शिश्नोदरपरायणता है जिसका आशय यह है कि जब लोग केवल पेट–पूजा और काम–भोग में ही निमग्न रहने लगें तो समझना चाहिए कि कलियुग का प्रभाव पूर्ण रूप से छा रहा है। कलियुग के प्रथम चरम में लोग भगवान् कृष्ण के चरित्र की निन्दा करने लग जाते हैं। द्वितीय चरण में भगवान् का नाम भी नहीं लेते। तृतीय चरण का लक्षण है वर्णसंकरता तथा चतुर्थ चरण में सभी मनुष्य केवल एक ही जाति के हो जायेंगे और परमेश्वर का नाम लेने वाला शायद ही कोई बचेगा।

भगवान् विष्णु ने जब माता सुमति के गर्भ से कल्कि के रूप में जन्म लिया तो नदियाँ, समुद्र, पर्वत तथा स्थावर–जंगम समस्त प्राकृतिक जगत्, ऋषि, मुनि एवं देवता, सभी हर्ष से गद्गद् हो उठे। सभी आनन्द विभोर हो उठे।

बालक कल्कि के पूछने पर उनके पूज्य पिता विष्णुयश ने बताया कि वेद भगवान् की वाणी है। सावित्री (गायत्री मंत्र) से ही वेद उत्पन्न हुए हैं अतः वह वेदो की माता हैं—**वेदो हरे र्वाक् सावित्री वेदमाता प्रतिष्ठिता॥ 1/2/37/** भगवान् कल्कि का वचन है कि 'वेद ही यह बताते हैं कि इस जगत् का नियन्ता परमेश्वर स्वरूप' मैं ही हूँ जो अव्यक्त होते हुए भी कभी–कभी

व्यक्त हो जाता हूँ। अर्थात् निर्गुण एवं निराकार होते हुए भी सगुण एवं साकार रूप धारण कर लेता हूँ। वेद ब्राह्मण के मुख में बसते हैं अतः ब्राह्मण मुझे अत्यन्त प्रिय हैं।'

भगवान नारायण का ध्यान अपने हृदय रूपी कमल के पुष्प के बीच में प्रसन्न मुद्रा में विराजमान रूप में करना चाहिए तथा उनके चरण के नखुन से लेकर सिर के बालों तक क्रमशः प्रत्येक अंग पर ध्यान जाना चाहिए। इससे भक्तों को अभीष्ठ फल की प्राप्ति होती है—

ध्यायेत् पाददि केशान्तं हृदयाम्बुजमध्यगम्।
प्रसन्नवदनं देवं भक्ताभीष्टफलप्रदम्॥

(1/7/10)

भगवान् कल्कि कृष्णवर्ण के हैं तथा उनकी प्रिया पद्मा गौरवर्ण वाली हैं। पर कल्कि भगवान् के पीताम्बर एवं पद्मा जी के नीलाम्बर (साड़ी) पहनने से दोनों का वर्ण एक हो गया। (2/3/19) जीवात्मा ही गृहस्थ है जिसका घर यह शरीर है। बुद्धि उसकी पत्नी तथा मन उसक अनुचर है, इन्द्रियाँ बुद्धिरूपी भार्या की दासियाँ हैं।

जीवस्यापि गृहस्थस्य देहो गेहं मनोऽनुगः।
बुद्धिर्भार्या तदनुगा वयमित्यवधारय॥

(2/5/34)

मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है उसे वश में रखने के लिए भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए। भक्ति से ही ज्ञात–अज्ञात सभी कर्मों का नाश हो जाता है और परमसुखरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है—

तस्मानमनोनिगृहार्थं विष्णुभक्तिं समाचार।
सुखमोक्षप्रदा नित्यं दाहिका सर्वकर्मणाम्॥

(2/5/36)

साधुओं (सज्जनों) का हृदय ही धर्म है, उनके वचन ही

अनादिकाल से आ रहे सनातन देवता है, उनके क्रिया-कलाप से अनन्त जन्मों के कर्मों का क्षय हो जाता है। अतः साधु अर्थात् सज्जन व्यक्ति तो साक्षात् हरि ही होता है—

साधूनां हृदय धर्मो वाचो देवाः सनातनाः।
कर्मक्षयणि कर्माणि अतः साधुर्हरिः स्वयम्॥

(3/16/29)

सभी शास्त्रों को पढ़कर उनपर पुनः पुनः विचार करने के उपरान्त यही निष्कर्ष निकलता है कि सदा भगवान् नारायण का ध्यान करना चाहिए। इसीलिए क्या वेद, क्या पुराण, क्या रामायण तथा महाभारत, सर्वत्र आदि, मध्य और अन्त में हरि (भगवान्)का ही गुणगान किया गया है—

वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।
आदावंते मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते॥

(3/21/38)

प्रोफेसर ब्रजमोहन चतुर्वेदी
वरिष्ठ प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

विश्व में प्रचार की नई राह पर

www.jaikalki.com
join kalki group (real) on facebook
for bhajans type merekalki on youtube

प्राक्कथन

कल्कि पुराण की गणना उप–पुराणों में है। कल्याण के हिन्दू संस्कृति अंक में प्रकाशित 'हिंदू संस्कृति और पुराण' शीर्षक लेख में २७ पुराणों की सूची दी गई है। इस लेख के अनुसार इनमें से कुछ तो महापुराणों के परिशिष्ट हैं, जैसे हरिवंश पुराण, महाभारत का परिशिष्ट है। बृहन्नारदीय पुराण, नारद महापुराण का परिशिष्ट प्रतीत होता है। इस सूची में कल्कि पुराण का स्पष्ट उल्लेख है। इसी अंक में डॉ. अ. द. पुसालकर का भी एक लेख छपा है। इसमें उप–पुराणों की संख्या 18. मानी है। दोनों सूचियों में काफी अन्तर है, पर कल्कि पुराण का उल्लेख इस सूची में भी है। महापुराणों की भाँति उप–पुराणों के रचयिता भी पराशर के पुत्र महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ही माने जाते हैं।

इसी परम्परा के अनुरूप वर्तमान में उपलब्ध कल्कि पुराण को भी महर्षि वेदव्यास प्रणीत ही माना गया है। प्रथम अध्याय में इसकी परम्परा सीधे पुराणों के वाचक सूतजी और कथास्थल नैमिषारण्य से जोड़ी गई है। सम्पूर्ण कल्कि पुराण का जो उपलब्ध पाठ है वह तीन अंशों में विभक्त है। अंशों को अध्यायों में विभक्त किया गया है। श्लोक संख्या और अध्यायों का क्रम इस प्रकार है:

अंश	*अध्याय*	*श्लोक*
1	7	284
2	7	302
3	21	773
कुल योग	35	1359

इस प्रकार इसमें 35 अध्याय और 1359 श्लोक हैं। किंतु 21 वें अध्याय के 28वें श्लोक में इसकी संख्या 6100 बताई गई है। श्लोकैः षट् सहस्त्रंशताधिकम (श्लोक संख्या में) न्यूनाधिकता

प्रतीत होती है। श्लोक प्रत्येक मूल ग्रन्थ में नहीं है।; स्पष्ट है कि कल्कि पुराण का पूरा पाठ उपलब्ध नहीं है। पूरा कल्कि पुराण 6100 श्लोकों का रहा होगा, क्योंकि इसी 21वें अध्याय में इसे पुराण पंच लक्षणम् कहा गया है। पुराणों के पाँच लक्षण प्रसिद्ध हैं—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च, वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव, पुराणं पंच लक्षणम्॥

अर्थात पुराण में मुख्य रूप से पाँच विषय होने चाहिए:

(1) सर्ग (सृष्टि), (2) प्रति सर्ग (पुनः सृष्टि और प्रलय), (3) वंश (देवताओं, नागों, गन्धर्वों आदि की वंशावलि), (4) मन्वन्तर, और (5) वंशानुचरित (मानव राजवंशों का इतिहास)। कल्कि पुराण में इन विषयों का अपेक्षित विस्तार अवश्य ही रहा होगा।

कल्कि पुराण के वर्तमान पाठ में भगवान् विष्णु के अंतिम अवतार श्री कल्कि देव के जन्म, नामकरण, यज्ञोपवीत, महेन्द्र पर्वत पर परशुरामजी से शिक्षा प्राप्ति, युद्ध, दिग्विजय और स्वर्गारोहण का विशद वर्णन है। इसके अतिरिक्त भी रामावतार की कथा भी विस्तार से दी गई है।

श्री मद्भागवत महापुराण का वर्णन : महापुराणों में श्रीमद्भागवत की लोक मान्यता सर्वाधिक है। श्रीमद्भागवत महापुराण में भगवान विष्णु के अवतारों की कथाएँ विस्तार से वर्णित है। प्रथम स्कन्ध के तृतीय अध्याय में भगवान के 22 अवतारों का उल्लेख है। इस सूची में 21 वाँ क्रम बुद्ध के अवतार का है और 22 वाँ कल्कि का।

भगवान के अवतारों की दूसरी सूची में 24 अवतारों का उल्लेख है। यह श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध के सातवें अध्याय में वर्णित है। इसमें भी 23 वें क्रम पर बुद्ध और 24 वें पर कल्कि का उल्लेख है।

इसके बाद बारहवें स्कन्ध के द्वितीय अध्याय में भगवान के कल्कि अवतार की कथा कुछ विस्तार से दी गई है। कहा गया है कि शम्भल ग्राम में विष्णुयश श्रेष्ठ ब्राह्मण के पुत्र के रूप में भगवान् कल्कि का जन्म होगा। वे देवदत्त नाम के घोड़े पर आरूढ़ होकर अपनी कराल करवाल (तलवार) से दुष्टों का संहार करेंगे। तभी सत्युग का प्रारम्भ होगा।

शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किःप्रादुर्भविष्यति॥

श्रीमद्भागवत के इन तीनों स्थलों पर भविष्य काल की क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। यह स्पष्ट है कि इस वर्णन के अनुसार कलियुग की समाप्ति के निकट भगवान् कल्कि का अवतार होगा। अभी कलयुग का प्रथम चरण चल रहा है। उसके 5095 वर्ष बीत चुके हैं। कलियुग का मान 4, 32,000 वर्षों का है। इस हिसाब से कल्कि अवतार में अभी भी 4, 26, 900 से अधिक वर्ष शेष हैं। सर्वसाधारण की प्रचलित मान्यता है।

भूत कालीन क्रिया पदः किन्तु कल्कि पुराण में सर्वत्र भूत कालिक क्रिया पदों का प्रयोग किया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने से इस बात में कोई सन्देह नहीं रह जाता कि इस में उस कल्कि अवतार की कथा है जो बहुत पहले हो चुका है। ग्रन्थ के अनुसार भगवान् कल्कि के स्वर्ग–गमन के पूर्व ही उनके समक्ष सत्युग का आरम्भ हो गया था। तृतीय अंश के पंचम अध्याय में कृतयुग के आगमन का वर्णन है। 21वें अध्याय के अन्त में कहा गया है:

प्रलयान्ते हरिमुखात निःसृत लोक–विस्तृतम्॥ (3.21.29) **अहोव्यासेने कथितं द्विजरूपेण भूतले।** (3.21.30)

प्रलयान्त में स्वयं श्री हरिमुख से यह कथा निसृत हुई और श्री वेदव्यासजी ने इसका बखान किया। निश्चय ही कल्कि पुराण में वर्णित कल्कि अवतार की कथा किसी पूर्व मन्वन्तर की है। क्योंकि प्रत्येक कलियुग के अन्त में भगवान् कल्कि का अवतार

होता रहा है। अनेक बार कल्कि अवतार हो चुका है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने जिस रामकथा का वर्णन किया है वह 27 कल्प पूर्व की है। **कल्पभेद हरि चरित सुहाये। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाये,** (बालकाण्ड 33.4), **हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता** (बालकाण्ड 140.3)

भविष्ये भविष्यं: उपरोक्त प्रतिपादन में भी शंका गुंजाइश इसलिए है कि कल्कि पुराण की पुष्पिका में प्रत्येक अध्याय के अन्त में कहा गया है इति श्री कल्कि पुराणेऽनुभागवते भविष्ये। प्रथम अध्याय के 4 वें श्लोक में श्रणुध्वमिद्माख्यानं भविष्यं परमाद्भुतम् पद आये हैं। इसी अध्याय में 12 वें श्लोक में भविष्या: कथयामीह पुण्या भागवती: शुभा: प्रयोग है ? ये प्रयोग किस तथ्य की ओर इंगित करते हैं। भविष्य, भविष्ये, शब्दों का बार-बार प्रयोग और सम्पूर्ण घटना क्रम भूत काल में—यह एक उलझन भी समस्या है। इस समस्या का क्या समाधान हो सकता है। भविष्य पुराण: इस समस्या के समाधान के लिए हमें भविष्य पुराण पर ध्यान देना होगा। भविष्य पुराण-महापुराणों में परिगणित है। महापुराणों के क्रम में इसका स्थान 9 वां है। श्रीमद्भागवत में 18 महापुराणों की सूची दी है। उसके अनुसार इस पुराण में 14, 500 श्लोक होने चाहिए। मत्स्य पुराण, देवी भागवत, अग्नि पुराण और वायु के अनुसार भी इसकी श्लोक संख्या 14,500 होनी चाहिए। किन्तु खेमराज श्रीकृष्णदास द्वारा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से सर्वप्रथम प्रकाशित भविष्य पुराण में लगभग 23,000 श्लोक हैं। एक संस्करण नवल किशोर प्रेस से भी छपा है। कोई चार संस्करण भविष्य पुराण के प्रचलित हैं और उनमें पर्याप्त भेद है। भविष्य पुराणों में सम्राट् विक्रमादित्य की कथा बड़े विस्तार से दी गयी है। आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्क, मध्व, श्रीधर, चैतन्य महाप्रभु आदि का विवरण भी इस पुराण में है। यहाँ तक कि आल्हा और ऊदल की कथा भी दी गयी है। किन्तु एक बात जो

उल्लेखनीय हे वह है भूत कालिक क्रियाओं का प्रयोग। बुद्धावतार के प्रसंग में प्रतिसंग में प्रतिसर्ग पर्व के अन्तर्गत निम्न श्लोक ध्यान देने योग्य हैं—

जिनो नाम द्विजः कश्चित्, तत्पत्नी जयंती स्मृता।
कश्यपाद् दितेरंशात् जातौ तौ कीकटे स्थले॥
तयो सकाशा-संजाता आदित्या लोक हेतवे॥
तभौष्य बौद्ध शास्त्राढ़याश्चक्रु शास्त्रार्थमुतमम्॥

कोई जिन नामक ब्राह्मण थे, उनकी पत्नी थी जयंती। ये दोनों कश्यप और अदिति के अंश से कीकट देश में उत्पन्न हुए थे। उनके द्वारा बारह आदित्यों ने (देवताओं ने) लोकहित के लिए जन्म लिया। बौद्ध शास्त्रों को अध्ययन प्रवर्तन कर उत्तम शास्त्रार्थ किया।

श्रीमद्भागवत में भी भगवान् बुद्ध को जिन सुत कहा गया है और कीकट देश में उनका जन्म माना गया है। पर श्रीमद्भागवत में जहाँ भविष्य काल का प्रयोग किया गया है, वहाँ भविष्य पुराण में भूतकाल का बुद्दो नाम्ना जिन सुतः कीकटेषुभविष्यति (श्रीमद्भागवत)।

इस रहस्य का उद्घाटन करने में नारद पुराण का उल्लेख सहायक होगा। नारद पुराण के अनुसार भविष्य पुराण में अघोर कल्प की कथा है। अघोर कल्प वृत्तान्तं नानाश्चर्य समन्वितम–मत्स्य पुराण में भी ऐसा ही कहा गया है। वर्तमान में यह श्वेत बाराह कल्प चल रहा है, जिसका सातवाँ मन्वन्तर वैवस्वत मन्वन्तर है और उसके अन्तर्गत यह 28 वाँ कलियुग चल रहा है। अर्थात् 27 चुतर्युगी इस मनवन्तर की और 6 x 71 = 426 चतुर्युगी पिछले छः मन्वन्तरों की बीत चुकी जब श्वेत बाराह कल्प चालू हुआ। भविष्य पुराण की कथाएँ उसके भी पहले पहले की हैं।

यह कल्कि पुराण भी भविष्य पुराण का परिशिष्ट सा ही प्रतीत होता है, जैसा कि इसकी पुष्पिको से ध्वनित होता है।

इसलिए कल्कि पुराण की कथा भी तुलसीदास जी की राम-कथा की भाँति पूर्व कल्प की ही कथा है।

जयदेव का गीत गोविन्दः मधुरातिमधुर रससिक्त भक्ति गीत गीत गोविन्द महाकवि जयदेव की अनुपम कृति है। महाकवि जयदेव क दशावतार स्तुति 'जय जगदीश हरे' के नाम से प्रसिद्ध हैं। जयदेव वैष्णव सम्प्रदाय के अन्तर्गत श्री कृष्ण भक्ति के अनुगामी हैं। इस कृष्ण भक्ति परम्परा में भगवान् श्री कृष्ण ने समय-समय पर अवतार ग्रहण किये। ये दशावतार इस स्तुति में वर्णित है। श्री राम के बाद बलराम को 7वाँ अवतार माना गया है। श्री कृष्ण तो स्वयं अवतारी हैं, उन्होंने ही दस रूप धारण किये केशव धृत दशविधरूप। दशम अवतार के रूप में कल्कि अवतार का वर्णन किया गया है। केशव धृत कल्कि शरीर—यहाँ ''भूतकालिक क्रिया है। कल्कि पुराण में द्वितीय अंश के तृतीय अध्याय में दश अवतारों का जो वर्णन है वह जयदेव के वर्णन से पूरी तरह मिलता है। इस गद्यात्मक स्तुति में अष्टम अवतार के रूप में वसुदेवतात्मजो रामावतारों बलभद्रस्त्वमासि कह कर बलभद्र जी का ही वर्णन किया गया है। महाप्रभु चैतन्य देव ने भी इसी परम्परा को मान्यता दी है। कल्कि पुराण और महाकवि जयदेव के गीत गोविन्द में कल्कि अवतार का वर्णन भूतकालीन क्रिया पदों से किया गया है।

कल्कि पुराण का यह विवरण इस प्रकार अर्वाचीन-प्राचीन दोनों है। भगवान् नारायण महाविष्णु के कलिमल विध्वंसक अंतिम अवतार के रूप में कल्कि भगवान की पावन गाथा का इसमें बखान किया गया है।

सत्युग का प्रारम्भ—कल्कि अवतार के साथ सत्युग के आरंभ की कथा भी जुड़ी है। श्रीमद्‌भागवत महापुराण के अनुसार जब सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति पुष्य नक्षत्र में एकत्र होते हैं तब सत्युग—कृतयुग का प्रारम्भ होता है।

यदा सूर्यश्च चन्द्रश्च, तथा तिष्य बृहस्पतिः।
एक राशौ समेष्यन्ति प्रपत्स्यति तदा कृतम्॥

सूर्य और चन्द्रमा तो प्रतिवर्ष श्रावणी अमावस्या के दिन पुष्य नक्षत्र पर होते ही हैं। सूर्य और चन्द्र एक नक्षत्र पर होते हैं, चन्द्रमा का लोप हो जाता है, अमावस्या होती है। बृहस्पति एक राशि पर 355 दिन और एक नक्षत्र पर लगभग 157 दिन रहते हैं। इन तीनों ग्रहों का पुष्य नक्षत्र पर एकत्रीकरण श्रावण कृष्ण अमावस्या वि. सं. 2,000 दिनांक 1 अगस्त 1943 को हुआ था। ऐसा योग प्रायः प्रति एक हजार वर्ष पर होता है। विक्रम संवत् के प्रारम्भ में भी ऐसा ही योग था, इसीलिए विक्रम संवत् को कृत संवत् भी कहा गया है।

सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को परास्त कर भारत भूमि को स्वाधीन किया और अपना नवसंवत्सर चलाया। इस लिए उन्हें कृतयुग का प्रारंभकर्त्ता भी मान लिया गया। हम विक्रमीय संवत की इक्कीसवीं शताब्दि की अर्धशती पूरी कर चुके हैं। सत्युग-कृतयुग के प्रारम्भ के संबंध में यह एक दृष्टिकोण है।

श्री धनश्याम देवड़ा

सम्पादक, अमृतकुम्भ

कलियुग की सबसे बड़ी पहचान

कल्कि पुराण में बताया गया है कि जब लोग केवल पेट पूजा ओर काम भोग में ही निमग्न (व्यस्त) रहने लगें तो समझना चाहिये कि कलियुग का प्रभाव पूर्ण रूप से छा रहा है। कलियुग के पहले चरण में लोग भगवान कृष्ण के चरित्र की निन्दा करने लग जाते हैं। दूसरे चरण में भगवान का नाम भी नहीं लेते। तीसरे चरण में वर्ण संकरता (वर्णभेद हटेगा–आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अन्य वर्ण शूद्रों के कार्यों में लिप्त होंगें) चौथे चरण में सभी मनुष्य केवल एक ही जाति के हो जाएंगे और परमेश्वर का नाम लेने वाला शायद ही कोई बचेगा।

सर्वत्र नारायण की वन्दना

प्रतिदिन के क्लेशों से बचने का उपाय क्या है?

वैद रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।
आदावन्ते मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते॥

(3/21/38)

सभी शास्त्रों को पढ़कर उन पर पुनः–पुनः विचार करने के उपरान्त यही निष्कर्ष निकलता है कि सदा भगवान नारायण का ध्यान करना चाहिये। इसलिये क्या वेद क्या पुराण क्या रामायण तथा क्या महाभारत, सर्वत्र आदि मध्य और अन्त में हरि (भगवान) का ही गुणगान किया गया है।

चाहे तो कल्कि जी के फलदायी सिद्ध मन्त्रों के रटने वाले यन्त्र का प्रयोग करके सरलता से मन नहीं आत्मा द्वारा भी भगवान का गुणगान कर सकते हैं। देखें पेज नं. 29

आभार

महर्षि
बालमुकुन्द जी

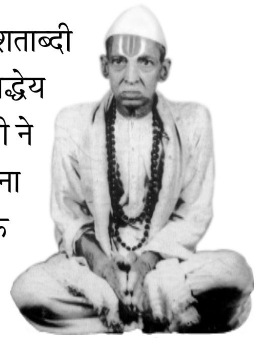

गुरूवर लक्ष्मी नारायण

इस युग में बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ही परम श्रद्धेय महर्षिकल्प श्री बालमुकुन्दजी ने कल्कि-मण्डल की स्थापना और भगवान् विष्णु के अन्तिम अवतार भगवान् कल्कि के नाम, महिमा एवं भक्ति का प्रचार शुरू किया। अनन्तर परमहंस रामकृष्ण के अवतार-रूप आयुर्वेदाचार्य श्रद्धेय पं. श्री लक्ष्मी नारायण जी ने विभिन्न कल्कि मण्डलों की स्थापना की और शिष्यों तथा कल्कि भक्तों का समुचित मार्गदर्शन किया जिससे उनमें पाखण्ड और ढ़कोसला न आ पाये। इन्हीं दोनों महापुरुषों की प्रेरणा से भगवान् कल्कि संकीर्तन, भजन एवं सत्संग होने लगे जो आज भी संपन्न होते हैं। उन्हीं महापुरुषों के आशीर्वाद तथा श्री कल्कि बाल वाटिका के सहयोग से ही भगवान् व्यास द्वारा प्रणीत कल्कि पुराण का हिन्दी अनुवाद कर यह संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

सुश्री अल्का गोयल ने श्री सुमित किंग्सटन (Kingston) द्वारा कल्कि पुराण के प्रसंगों के महत्त्व के अनुरूप 22 चित्र बनवाए जो इस कल्कि पुराण में लगे हुए हैं। सुश्री रश्मि गोयल ने सर्व प्रथम प्रूफ रीडिंग की फिर श्री पदम गोयल ने प्रूफ रीडिंग की

सुश्री अल्का गोयल, श्री आदर्श कुमार सिंघल ने कवर पेज व अन्दर के चित्रों की डिजाइनिंग, कम्प्यूटर का काम श्री राजकमल जी एवं जे.के. प्रिंटोग्राफर्स में श्री नीरज गोयल एवं श्री विकास गोयल से कराया। श्री नीरज गोयल ने ही श्री उमेश शर्मा से हमें मिलवाया जिन्होंने श्लोकों में लिखा कल्कि पुराण (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी) में से हिन्दी

अनुवाद को धारा प्रवाह रूप दिया ताकि भक्तों को पढ़ने में रूचि बनी रहे और कल्कि भगवान् में असीम आस्था बने। श्री नीरज गोयल एवं श्री विकास गोयल ने कम्पोजिंग एवं लेजर प्रिन्ट्स और स्थान-2 पर अपनी सलाह देकर इसे सफलता प्रदान की। श्री सतीश शर्मा जी से संस्कृत के श्लोकों की प्रूफ रीडिंग की।

सुश्री मेघना गोयल व उनके सुपुत्र विष्णु गोयल ने कल्कि पुराण के इस प्रकाशन में डिजाइनिंग और करैक्शन करके अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री महावीर चौधरी, सुश्री इंदू बंसल, श्री राजन चौधरी ने अमूल्य लेखों के द्वारा कल्कि पुराण को संजोने में मदद की।

प्रातः स्मरणीय सुरेन्द्र अग्रवाल (हरिकथा) जिन्होनें कांपते हाथों को प्रभु गाथा लिखना सिखाया हमारी तोतली भाषा को स्वर व्यंजन दिए।

इस महनीय पुराण के प्रकाशन में हम कल्कि भक्तों की भावना यही रही है कि भगवान् कल्कि की आराधना से जैसे हम लाभान्वित हो रहे हैं वैसे ही सभी लोगों को भगवान् की कृपा का लाभ मिले। भगवान् कल्कि से हमारी यही कामना है कि 'हे भगवन्! आपके भक्तों को जो सुख, शान्ति और आपके चरणों का स्नेह मिला है वह सब उन सभी लोगों को भी प्रदान करने की कृपा करें जो इस कल्कि पुराण को पढ़ने-पढ़ाने तथा सुनने-सुनाने में रुचि लें।'

—श्री कल्कि बाल वाटिका (समस्त) दिल्ली

पुराण-श्रवण-काल में पालनीय धर्म

श्रद्धाभक्तिसमायुक्ता नान्यकार्येषु लालसाः।
वाग्यताः शुचयोऽव्यग्राः श्रोतारः पुण्यभागिनः॥
अभक्त्या ये कथां पुण्यां श्रृण्वन्ति मनुजाधमाः।
तेषां पुण्यफलं नास्ति दुःखं स्याज्जन्मजन्मनि॥
पुराणं ये च सम्पूज्य ताम्बूलाद्यैरुपायनैः।
श्रृण्वन्ति च कथां भक्त्याऽदरिद्राः स्युर्न संशयः॥
कथायां कीर्त्यमानायां ये गच्छन्त्यन्यतो नराः।
भोगान्तरे प्रणश्यन्ति तेषां दाराश्च सम्पदः॥
सोष्णीष्मस्तका ये च कथां श्रृण्वन्ति पावनीम्।
ते बलाकाः प्रजायन्ते पापिनो मनुजाधमाः॥
ताम्बुलं भक्षयन्तो ये कथां श्रृण्वन्ति पावनीम्।
स्वविष्ठां खादयन्त्येतान् नयन्ति यमकिंकराः॥
ये च तुङ्गासनारुढाः कथां श्रृण्वन्ति दाम्भिकाः।
अक्षयनरकान् भुक्त्वा ते भवन्त्येव वायसाः॥
ये वै वरासनारूढा ये च मध्यासनस्थिताः।
श्रृण्वन्ति सत्कथां ते वै भवन्त्यर्जुनपादपाः॥
असम्प्रणम्य श्रृण्वन्ति विषभक्षा भवन्ति ते।
तथा शयानाः श्रृण्वन्ति भवन्त्यजगरा नराः॥
यः श्रृणोति कथां वक्तुः समानासनसंस्थितः।
गुरुतल्पसमं पापं सम्प्राप्य नरकं व्रजेत्॥
ये निन्दन्ति पुराणज्ञां कथां वै पापहारिणीम्।
ते वै जन्मशतं मर्त्याः सूकराः सम्भवन्ति हि॥
कदाचिदपि ये पुण्यां न श्रृण्वन्ति कथां नराः।
ते भुक्त्वा नरकान् घोरान् भवन्ति वनसूकराः॥
ये कथामनुमोदन्ते कीर्त्यमानां नरोत्तमाः।
अश्रृण्वन्तोऽपि ते यान्ति शाश्वतं परम पदम्॥
कथायां कीर्त्यमानायां विघ्नं कुर्वन्ति ये शठाः।
कोट्यब्दं नरकान् भुक्त्वा भवन्ति ग्रामसूकराः॥

ये श्रावयन्ति मनुजान् पुण्यां पौराणिकीं कथाम्।
कल्पकोटिशतं साग्रं तिष्ठिन्ति ब्रह्मणः पदे॥
आसनार्थं प्रयच्छन्ति पुराणज्ञस्य ये नराः।
कम्बलाजिनवासांसि मञ्चं फलकमेव च॥

जो लोग श्रद्धा और भक्ति से सम्पन्न, अन्य कार्यों की लालसा से रहित, मौन, पवित्र और शांतचित्त से (पुराण की कथा को) श्रवण करते हैं, वे ही पुण्य के भागी होते हैं। जो अधम मनुष्य भक्तिरहित होकर पुण्यकथा को सुनते हैं, उन्हें पुण्यफल तो मिलता नहीं, उल्टे प्रत्येक जन्म में दुःख भोगना पड़ता है। जो ताम्बूल, पुष्प, चन्दन आदि पूजन-सामग्रियों द्वारा पुराण की भली भाँति पूजा करके भक्ति पूर्वक कथा सुनते हैं, वे निःसंदेह दरिद्रतारहित अर्थात् धनवान् होते हैं। जो मनुष्य कथा होते समय अन्य कार्यों के लिये वहाँ से उठकर अन्यत्र चले जाते हैं, उनकी पत्नी और सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। जो पापी अधम मनुष्य मस्तक पर पगड़ी बाँधकर (या टोपी लगाकर) पवित्र कथा सुनते हैं, वे बगुला होकर उत्पन्न होते हैं। जो लोग पान चबाते हुए पवित्र कथा सुनते हैं, उन्हें कुत्ते का मल भक्षण करना पड़ता है और यमदूत उन्हें यमपुरी में ले जाते हैं। जो ढोंगी मनुष्य (व्यासासन से) ऊँचे आसन पर बैठकर उत्तम कथा श्रवण करते हैं, वे अक्षय नरकों का भोग करके कौआ होते हैं। जो लोग (व्यासासन से)श्रेष्ठ आसन पर अथवा मध्यम आसन पर बैठकर उत्तम कथा श्रवण करते हैं, वे अर्जुन नामक वृक्ष होते हैं। (जो मनुष्य पुराण की पुस्तक और व्यास को) बिना प्रणाम किये ही कथा सुनते हैं, वे विषभक्षी होते हैं तथा जो लोग सोते हुए कथा सुनते हैं, वे अजगर साँप होते हैं। इसी प्रकार जो वक्ता के समान आसन पर बैठकर कथा सुनता है, वह गुरु-शय्या गमन के समान पाप का भागी होकर नरकगामी होता है। जो मनुष्य पुराणों के ज्ञाता (व्यास) और पापों को हरण करने वाली कथा की निन्दा करते हैं, वे सौ जन्मों तक सूकर-योनि में उत्पन्न होते हैं। जो

मनुष्य इस पुण्य कथा को कभी भी नहीं सुनते, वे घोर नरकों का भोग करके वनैले सूअर होते हैं। जो नरश्रेष्ठ कही जाती हुई कथा का अनुमोदन करते हैं, वे कथा न सुनने पर भी अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं। जो दुष्ट कही जाती हुई कथा में विघ्न पैदा करते हैं, वे करोड़ों वर्षों तक नरकों का भोग करके अन्त में ग्रामीण सूअर होते हैं। जो लोग साधारण मनुष्यों को पुराणसम्बन्धी पुण्य कथा सुनाते हैं, वे सौ करोड़ कल्पों से भी अधिक समय तक ब्रह्म लोक में निवास करते हैं। जो मनुष्य पुराण के ज्ञाता वक्ता को आसन के लिये कम्बल, मृगचर्म,

स्वर्गलोकं समासाद्य त्यक्त्वा भोगान् यथेप्सितान्।
स्थित्वा ब्रह्मादिलोकेषु पंद यान्ति निरामयम्॥
पुराणस्य प्रयच्छन्ति ये वरासनमुत्तमम्।
भोगिनो ज्ञानसम्पन्ना भवन्ति च भवे भवे॥
ये महापातकैर्युक्ता उपपातकिनश्च ये।
पुराणश्रवणादेव ते प्रयान्ति परं पदम्॥
एवंविधिविधानेन पुराणं श्रृणुयान्नरः।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं विष्णुलोकं प्रयाति सः॥
पुस्तक पूजयेत् पश्चाद् वस्त्रालंकरणदिभिः।
वाचकं विप्रसंयुक्तं पूजयीत प्रयस्वान्॥
गोभूमिहे मवस्त्राणि वाचकाय निवेदयेत्।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चान्मण्डलड्डुकपायसैः॥
त्वं व्यासरूपी भगवन् बुद्ध्या चाङ्गिरसोपमः।
पुण्यवान् शीलसम्पन्नः सत्यवादी जितेन्द्रियः॥
प्रसन्नमानसं कुर्याद् दानमनोपचारतः।
त्वत्प्रसादादिमान् धर्मान् सम्पूर्णांश्रुतवानहम्॥
एवं प्रार्थनकं कृत्वा व्यासस्य परमात्मनः।
यशस्वी भवेत्-नित्यं यः कुर्यादेवमादरात्॥
नारदोक्तान्इमान् धर्मान् यः कुर्यात्नियतेन्द्रियः।
कृत्स्त्रं फलमवाप्रोति पुराणश्रवणस्य वै॥

वस्त्र, सिंहासन और चौकी प्रदान करते हैं, वे स्वर्ग लोक में जाकर अभीष्ट भोगों का उपभोग करने के बाद ब्रह्मा आदि के लोगों में निवास कर अन्त में निरामय पद को प्राप्त होते हैं। इसी तरह जो लोग पुराण की पुस्तक के लिये उत्तम श्रेष्ठ आसन प्रदान करते हैं, वे प्रत्येक जन्म में भोगों का उपभोग करने वाले एवं ज्ञानी होते है। जो महापातकों से युक्त अथवा उपपातकी होते हैं, वे सभी पुराण की कथा सुनने से परम पदको प्राप्त हो जाते हैं। जो मनुष्य इस प्रकार के नियम-विधान से पुराण की कथा सुनता है, वह स्वेच्छानुसार भोगों को भोगकर विष्णुलोक को चला जाता है। कथा के समाप्त होने पर श्रोता पुरुष प्रयत्नपूर्वक वस्त्र और अलंकार आदि द्वारा पुस्तक की पूजा करे। तत्पश्चात् सहायक ब्राह्मणसहित वाचक की पूजा करे। उस समय वाचकको गौ, पृथ्वी, सोना और वस्त्र देना चाहिए। तदुपरान्त ब्राह्मणों को मलाई, लड्डू और खीर का भोजन कराना चाहिए। तदनन्तर परमात्मा व्यास से प्रार्थना करे—'आप व्यासरूपी भगवान् बुद्धि में बृहस्पति के समान, पुण्यवान्, शीलसम्पन्न, सत्यवादी और जितेन्द्रिय हैं, आपकी कृपा से मैंने इन सम्पूर्ण धर्मों को सुना है।' इस प्रकार प्रार्थना कर दान, मान और सेवा से उनके मन को प्रसन्न करना चाहिए। जो मनुष्य इस प्रकार आदरपूर्वक कार्य करता है, वह सदा यशस्वी होता है। जितेन्द्रिय मनुष्य देवर्षि नारदद्वारा कहे गये इन धर्मों का पालन करता है, वह पुराण-श्रवण का सम्पूर्ण फल पाता है।

सोई हुई आत्मा को जगाकर तेजोमयी बनाने वाला जिसमें न बिजली का, न कैसेट बार-बार बदलने का झंझट, कभी न थकने वाला सिद्ध मंत्रों का यंत्र

T.V. न्यूज चैनल 'आज तक' ने दिखाया कि आज से 220 वर्ष पूर्व जयपुर के संस्थापक सवाई राजा जयसिंह भगवान श्री कल्कि के महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमापते का सिद्ध मंत्र जपते थे वही अनुभवगम्य मंत्र इस चमत्कारी **Box** में है जिसे 45 वर्षों से कल्कि भक्त जप रहे हैं।

बिजली वाला मात्र 330/–
बिजली एवम् चार्जेबल बैट्री सहित 430/–

कहना, सुनना आसान है कि सदा भगवान का ध्यान करें और गुणगान करें लेकिन कलियुगी आसुरी शक्तियों ने आज की भागदौड़ व आपाधापी भरे जीवन में चौतरफा से ऐसे घेर रखा है कि मन को भगवान का नहीं क्रोध और अहंकार का मन्दिर बना दिया है। सुधारों (**Developments**) के नाम पर बढ़ रही महंगाई के चलते धार्मिक आयोजनों, मन्दिर निर्माण 'संभव नहीं'। इस चमत्कारी **Box** के साथ अपने घर, दुकान, मन और आत्मा में से बुरी शक्तियों एवं विकारों को निकालकर भगवान का मन्दिर बना सकते हैं।

झटके पर झटका

रटने वाले यंत्र की ध्वनियों को ब स्टूडियो में रिकार्डिंग की व्यवस्था कर रहे थे तब श्री कल्कि सदस्यों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसमें भगवान श्री कल्कि, दैवी शक्तियों तथा पितृ शक्तियों ने स्वप्न अनुभवों द्वारा पग-पग पर हमारी मदद करी। उसी का परिणाम—

❖ रटने वाले बॉक्स में भरी हुई ध्वनियों की स्वर लहरियां (Frequencies) अदृश्य रूप से दिमाग और मन को प्रसन्नता तथा शरीर को पुलकित करती है, और सोई हुई आत्मा को जागृत (Activate) करती है।

❖ **यंत्र को चलाने की विधि—**

प्रात: एक बार इस रटने वाले यंत्र को चालू करके सारी ध्वनि सुन लेवें। आपका दिमाग, शरीर, मन व आत्मा जिस ध्वनि को पसन्द करे आज उसी ध्वनि का स्विच दबा दें (जैसें मन भूख न होते हुए भी मनचाहे स्वादिष्ट भोजन ले लेता है)। तो वह यंत्र वही ध्वनि रटता रहेगा। जब मन चाहें दूसरी बदल लें।

❖ शुरू करने के उपरान्त भगवान श्री कल्कि का ध्यान करके प्रार्थना करें कि हे कल्कि भगवान सुबह से रात तक जो यह ध्वनि चलेगी, मैं व मेरा परिवार सुनेगा, उसका सारा फल आपके श्रीचरणों में सादर समर्पित है, इसे स्वीकार करें, गऊ ब्राह्मणों व धर्म की रक्षा कीजिए, शीघ्र प्रकट होईए। मेरे घर व व्यापार से दुराचारी, कलियुगी, आसुरी, तांत्रिक शक्तियों को निकालिए, दैवी शक्तियों को लाईए, फिर अपनी परेशानियां बोलिए··· हमें रास्ता दीजिए, हमें आपका काम करना है···

❖ यंत्र की आवाज (Volume) दिमाग और शरीर को सुहाने के हिसाब से रखें (Adjust)।

❖ अब आप घर व व्यापार के प्रतिदिन की तरह कार्य शुरू कर लेवें। आप पायेंगे कि आपके सारे कार्य सरलतापूर्वक (Smooth) चल रहे हैं। आपके मुँह से नहीं बल्कि आपकी आत्मा में से चल रहे मंत्र की गुनगुनाहट निकलेगी इसीलिए इसे कहा गया है सुप्तात्मा

(सोई हुई आत्मा) को जगाने वाला यंत्र।

❖ समृद्धि (Prosperity) के लिए बन पड़े तो इस यंत्र को **उत्तर पश्चिम कोने में रखकर चलाएं।**

कब कौन सा सिद्ध मन्त्र चलाए

1. **''जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते।''** महामंत्र भगवान श्री कल्कि से सम्बन्ध उजालने वाला। धन वैभव बढ़ाने वाला।
2. **''जय श्री कल्कि जय माता दी''** माँ वैष्णवी भगवती दुर्गा व कल्कि जी की शक्तियों द्वारा बिगड़े हुए कामों को बनाने वाला मंत्र।
3. **''गुरूजी करेंगे कल्कि जी करेंगे, गुरूजी ने किया है कल्कि जी ने किया है।''** हौसला गिर रहा हो—बेचैन-परेशान हो तो क्या कैसे करूं तो (हनुमान जी/लक्ष्मी नारायण जी/आपके अपने गुरू हों) उप पर एवं कल्कि जी पर (राजा-साधु वाली कथा के अनुसार) भला बुरा छोड़कर काम करते चले जाओ। हिम्मत मिलेगी, सफल होंगे।
4. **''ॐ नमः कल्कि फट् स्वाहा''** एक बार इस मन्त्र के उच्चारण से 37500 राक्षस शक्तियों पर मार पड़ती है। घर-व्यापार व अन्य स्थानों से बुरी शक्तियों को निकालने व दैवी शक्तियों को सक्रिय करने में यह मन्त्र अत्यन्त लाभकारी है। खाली कमरे में भी इस मन्त्र के चलने से आसुरी शक्ति हटेंगी, देवी शक्तियां आयेगी, आपको स्वयं फर्क नजर आवेगा।
5. **''सब दुःखो की एक दवाई, हँसना सीखों प्यारे भाई, कल्कि-कल्कि कहना सदा हँसते रहना''** मन का बैठना (Sinking), तनाव (Depression) आदि के लिये यह मन्त्र विशेष फलदायी है।
6. **राम कहो कृष्ण कहो और कहो कल्कि।**
   कल्कि जी का नाम है धार गंगाजल की॥
   भगवान के संकीर्तन से गंगा महारानी तो प्रगट होती ही है वातावरण को भी अपने जैसा अमृत के समान बना देती है। अच्छा खाते-

पीते भी जब सब कुछ होते हुए भी मन में उच्चाहट होने पर विशेष फलदायी।

7. "**करत-करत तव् चरण वन्दना बिगड़ी बनत गई—कल्कि जी मैंने तुम्हारी शरण लई**" अकाल मृत्यु, असाध्य रोगों को काटने वाली इस मन्त्र की माला/हवन नियम से करने से रास्ता मिलता है, कष्ट दूर होते हैं।

कल्कि भगवान कौन हैं ? कलियुग में भगवान विष्णु ने कल्कि रूप में अवतार लिया है, जिनके लिए माँ वैष्णो तप कर रही है, हनुमान जी को गुरू मानकर कल्कि जी की अराधना से स्वप्न, जागृत व वाणी अनुभवों द्वारा रास्ता मिलता है।

सवा लाख महामन्त्र के जाप का संकल्प—महज 108 माला के मनको की तरह 4 घंटे प्रतिदिन "जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते" 108 दिन चलाने से सवा लाख मन्त्रों का जाप हो जाता है।

प्रसंग—मेरे नानाजी कौमा में पड़े हुए थे। श्री गुरूजी रामे बाबू के साथ उन्हें देखने आये थे, इस अवसर पर बोले गए शब्द—दिसम्बर, 1963,

"रामे तुम जो टेपरिकॉर्डर लाए हो उसमें से कल्कि जी के भजनों के जो शब्द निकलते हैं उससे न सिर्फ मन बल्कि आत्मा को भी बल मिलता है। उससे कलियुग की शक्तियां कटती हैं और देवी शक्तियों को बल मिलता है। यहां तक कि वह शब्द ब्रह्माण्ड में जाकर अमर हो जाते हैं।"

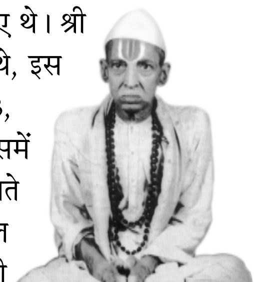

गुरूवर लक्ष्मी नारायण जी

फायदे—जिस प्रकार कमरे में अगरबत्ती के जलने से खुशबू फैल जाती है उसी प्रकार यह रटने वाला यंत्र बुरी शक्तियों को घर व व्यापार से हटाने वाला, तनाव, चिंता, घबराहट, डर, भय, हृदय में हौल (Sinking) को दूर करने वाला, पितृों को शक्ति व संतुष्टि देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला है। इसलिए लिखा है असर न दिखने पर 7 दिन में रसीद दिखाकर पैसा वापिस लेवें। शर्ते लागू।

॥ श्रीः ॥

श्री कल्कि पुराण

पहला अंश

पहला अध्याय

इन्द्र सहित देवतागण, महर्षिगण और लोकपालगण अपने कामों की सफलता के लिए भक्तिपूर्वक जिनकी सदैव उपासना करते हैं, प्राचीन काल से जिनकी वैदिक तथा तान्त्रिक आदि अनेक शास्त्रों द्वारा आराधना की गई है, सब कुछ जानने वाले, सबके आधार, विघ्नों का नाश करने वाले, अनन्त, अच्युत, अजन्मा, उन श्री भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ।

बदरिकाश्रम निवासी प्रसिद्ध ऋषि श्री नारायण तथा श्री नर (अन्तर्यामी नारायण स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण तथा उनके नित्य सखा नर श्रेष्ठ अर्जुन), उनकी लीलाओं को प्रकट करने वाली भगवती सरस्वती और उनकी लीलाओं के वक्ता महर्षि वेदव्यास को नमस्कार कर जय—आसुरी शक्तियों का नाश करके अन्तःकरण पर दैवी शक्तियों को विजय प्राप्त कराने वाले अष्टादश पुराण, रामायण और महाभारत आदि जय नाम से व्यपदिष्ट सद्ग्रन्थों का पाठ/वाचन करना चाहिए।

भयंकर अत्याचार से पृथ्वी की शान्ति का नाश करने वाले राजाओं को जो अपनी भयंकर भुजाओं रूपी भुजंगों (साँपों) की विष की ज्वाला से भस्म करेंगे और जिनकी भयंकर तलवार की तेज़ धार से अत्याचारी राजाओं के शरीर

कुचले जाएँगे, ऐसे ब्राह्मण वंश में उत्पन्न, घोड़े की सवारी करने वाले, सत्यादि युगों में अवतार लेने वाले व जिन्हें धर्म की प्रवृत्ति प्रिय है, ऐसे भगवान् कल्कि, परमात्मा हरि (अथवा वे भगवान् श्री हरि कल्कि रूप में) हमारी रक्षा करें।

नैमिषारण्य में रहने वाले शौनकादि उदार चरित्र वाले महर्षिगणों ने सूत जी के ये वचन सुनकर उनसे पूछा—

'हे सूत जी, सब धर्मों के जानने वाले, लोमहर्षण के पुत्र, तीनों कालों के ज्ञाता, पुराणों को भली प्रकार जानने वाले आप, भगवान् की कथा (हमसे) कहें। हे प्रभु! आप कृपया हमें बताएँ कि कलि कौन हैं ? उसने कहाँ जन्म लिया, वह किस तरह संसार का मालिक बन गया और किस प्रकार उसने (कलि ने) नित्यधर्म का नाश किया ?'

महर्षिगण के इस तरह के वचन सुनकर सूत जी ने भगवान् श्री हरि का ध्यान किया। विष्णु भगवान् का स्मरण करते ही वे पुलकित शरीर वाले उन मुनियों से (अथवा पुलकित अंग होकर) बोले—

'प्राचीन समय में ब्रह्मा जी ने नारद जी के पूछने पर इस अद्‌भुत भविष्य-आख्यान को बतलाया था। आप लोग उसी आख्यान को मुझसे सुनिए। पहले असीम तेजस्वी व्यास जी को श्री नारद जी ने यह आख्यान सुनाया था। बाद में उन्हीं व्यास जी ने अपने बुद्धिमान पुत्र ब्रह्मरात (शुकदेव) जी से यह आख्यान कहा। ब्रह्मरात जी ने अभिमन्यु के पुत्र श्री विष्णुरात (परीक्षित) की सभा में उसी भागवत धर्म को 18,000 श्लोकों में सुनाया। उस समय, एक सप्ताह बीतने पर प्रश्न पूरे भी न हो पाये थे कि विष्णुरात जी ने अपनी लोकयात्रा पूरी की। उसके बाद मार्कण्डेय आदि महर्षियों के पूछने पर पुण्याश्रम में भगवान् शुकदेव ने भागवत धर्म के शेष अंश को बताया। पुण्याश्रम में मैंने जो भावी उपाख्यान

(श्री शुकदेव जी के श्रीमुख से) सुना, उसी भगवान् की पुण्यप्रद (व) कल्याणकारिणी कथा को (मैं) कहता हूँ।

हे महाभाग! भगवान् श्री कृष्ण के अपने वैकुण्ठ धाम चले जाने पर, कलि की उत्पत्ति जिस प्रकार हुई, (उस सबको मैं कहता हूँ) आप लोग निरन्तर सावधान हो कर उसे सुनें।

जगत् के बनाने वाले, लोक के पितामह ब्रह्मा जी ने प्रलय काल के अन्त में अपनी पीठ से घोर मलिन पातक को पैदा किया। उनकी पीठ से पैदा हुआ पातक 'अधर्म' नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस अधर्म वंश के श्रवण, कीर्तन (अथवा रहस्य जानने से) और स्मरण करने से सभी प्राणी समस्त पापों से मुक्ति पाते हैं। तदन्तर बिल्ली के जैसी आँखों वाली (और) अत्यन्त लुभाने वाली 'मिथ्या' नाम की (नारी) उस अधर्म की पत्नी हुई। इस दम्पति का अत्यन्त तेजस्वी और महाक्रोधी 'दम्भ' नाम का पुत्र पैदा हुआ। उसी अधर्म और मिथ्या से 'माया' नाम की एक पुत्री भी पैदा हुई। सगर्भा माया और दम्भ के संयोग से 'लोभ' नाम का पुत्र और निकृति नाम की पुत्री पैदा हुई। फिर इसके बाद लोभ व निकृति के संयोग से 'क्रोध' नाम का एक पुत्र पैदा हुआ। उसी क्रोध की हिंसा नाम की सगर्भा जन्मी। हिंसा और क्रोध के संयोग से 'कलि' का जन्म हुआ। कलि ने बाएँ हाथ में उपस्थ को धारण किया। तेल मिले काजल के समान इस कलि के शरीर की चमकती काली कान्ति थी।

कौवे के से पेट वाले, विकराल और चंचल जीभ वाले तथा भयानक दुर्गंधयुक्त शरीर वाले इस कलि का निवास जुआ, शराब, स्त्री और सोने में हुआ।

कलि की दुरुक्ति नामक भगनी हुई। कलि ने दुरुक्ति के गर्भ से भय नाम का पुत्र और मृत्यु नाम की पुत्री पैदा की। मृत्यु ने भय (अथवा सभय या भयानक) के वीर्य से निरय

नाम का पुत्र पैदा किया। भय और मृत्यु की एक पुत्री पैदा हुई, जिसका नाम यातना था। निरय ने इसी यातना के गर्भ से हज़ारों पुत्र पैदा किए। इस प्रकार कलि के कुल में बहुत-से धर्म निन्दकों का जन्म हुआ। धर्म की निन्दा करने वाले ये लोग मानसिक व शारीरिक रोग, बुढ़ापे, ग्लानि, दुःख, शोक और भय का सहारा लेकर यज्ञ, स्वाध्याय, दानादि, वेद तथा तंत्र आदि का विनाश करने वाले हुए। कलिराज के ये अनुयायी, संसार का नाश करने वाले झुंड-के-झुंड लोगों ने चंचल, क्षणभंगुर और कामुक मनुष्यों का शरीर धारण किया। ये लोग बहुत घमंडी, दुराचारी, माँ-बाप की हिंसा करने वाले ब्राह्मण योनि में जन्म लेकर भी वेद-विहीन व दीन और सदैव शूद्रों की सेवा करने वाले हुए। ये मनुष्य धर्म, वेद, बहुत रस (शराब) और मांस बेचने वाले संस्कारहीन, क्रूर व कुतर्क करने वाले तथा काम-वासना और पेट के गुलाम, अलमस्त (मतवाले) और परस्त्रीगामी एवं नीच, वर्ण-संकर पैदा करने वाले हुए। ये (कलि के सेवकगण मनुष्य) बौने, पाप में डूबे, दुष्ट, मठों में रहने वाले तथा सोलह साल तक की आयु वाले व अपने सालों को सगा बन्धु मानने वाले और नीचों की संगति करने वाले हुए।

बहस और झगड़ों में क्षुब्ध (दुःखी), केश-वेष को ही आभूषण के रूप में सजाने वाले (अथवा केशविन्यास में आसक्त), धनी व ब्याज लेने वाले और कुलीन कहलाने वाले ब्राह्मण कलियुग में पूजनीय समझे गए। संन्यासी लोग घर गृहस्थी के अनुरागी, गृहस्थ लोग अच्छे-बुरे के ज्ञान से रहित, शिष्यगण गुरुओं की निन्दा करने वाले और धर्म की ध्वजा उठाने वाले साधु भले लोगों को ठगने वाले हुए। कलियुग में शूद्र लोग दान लेने वाले और दूसरों का सर्वस्व छीन लेने वाले हुए। स्त्री-पुरुष की सम्मति ही विवाह समझा जाने

लगा। दुष्टों की मित्रता अच्छी समझी जाने लगी (अथवा, मित्र ही शठ हुए)। दान के बदले दान को दानशीलता समझा जाने लगा। न्यायकर्त्ता अपराधियों को दण्ड देने में असमर्थ होकर क्षमाशील हुए। दुर्बल के प्रति उदासीनता दिखाई जाने लगी। बहुत बोलने वाले ही पण्डित कहे जाने लगे। यश पाने की इच्छा से ही लोग धर्म-प्रचार (अथवा धर्म का सेवन) करने लगे।

धनवान् लोगों को ही सज्जन समझा जाने लगा, दूरदेश का जल ही तीर्थ हो गया, केवल जनेऊ पहन लेने से ब्राह्मणत्व माना जाने लगा और संन्यासी का चिह्न (लक्षण) दण्ड-धारण मात्र रह गया।

धरती कम अनाज पैदा करने लगी, नदी किनारे (अथवा अपना किनारा) छोड़कर दूसरे स्थान पर बहने लगी। स्त्रियाँ वेश्याओं जैसी बातचीत में सुख समझने लगीं और उनका अपने पतियों से प्रेम जाता रहा।

दूसरों के अन्न के लालची ब्राह्मण लोग चण्डालों के घरों में यज्ञ कराने लगे। सधवा स्त्रियाँ (अथवा विधवा वैधव्य का आचरण त्यागकर) मनमाना आचरण करने लगीं।

बादलों ने खण्ड वर्षा बरसानी शुरू की, धरती कम अनाज पैदा करने वाली हो गई। राजा लोग प्रजा को ही खाने लगे और प्रजा करों के बोझ से परेशान हो गई। अभागी प्रजा कष्ट से अत्यन्त क्षुब्ध (दुःखी) होकर कन्धे पर बोझ और हाथ (गोद) में पुत्र लेकर पर्वत और गहन वनों का आश्रय लेने लगी। और भी सुनो शराब, माँस, मूल व फलों का आहार जीवन का आधार हुआ। वे लोग भगवान् श्री कृष्ण की निन्दा करने वाले हो गए। कलियुग के प्रथम चरण में लोगों की यह दशा हुई। कलि के दूसरे चरण में लोग भगवान् (श्री कृष्ण) का नाम तक नहीं लेते, तीसरे चरण में वर्णसंकर

संतानों की उत्पत्ति हुई और चौथे चरण में तो सभी वर्ण समाप्त होकर लोग एक ही वर्ण के रह गए। (जाति-पाँति ही कुछ न रही)। लोग (सत्कर्म और) ईश्वर (की आराधना) को भी भूल गए। स्वाध्याय, स्वधा, स्वाहा, वषट् तथा ओंकारादि के लुप्त होने पर सभी निराहार देवतागण ब्रह्मा जी की शरण में गए। देवतागण क्षीण, दीन और चिन्ताशील पृथ्वी को आगे करके ब्रह्मलोक में गए। उन्होंने ब्रह्मलोक को वेद ध्वनि से गूँजता हुआ पाया।

यज्ञ के धुएँ से भरे, मुनिश्रेष्ठों से सेवित, सोने की बनी वेदी में प्रज्ज्वलित दक्षिणाग्नि, यज्ञ के खंभों से सजे हुए और वन के फूलों और फलों से परिपूर्ण उद्यान, जहाँ सरोवर में वायु के झकोरों से चंचल बेलों के बीच फूलों पर बैठे भौंरों (तथा सारस और हंसों) द्वारा मधुर स्वर से मानों प्रणाम, आह्वान या सत्कार द्वारा पथिकों का स्वागत किया जा रहा है। वहाँ से शोकाकुल देवतागण अपने स्वामी इन्द्र के साथ अपने कार्य यानी कलि द्वारा पैदा किए अपने दुःखों को बताने (निवेदन करने) के लिए ब्रह्मसदन के अन्दर गए। वहाँ पहुँच कर सब देवताओं ने सनक, सनंदन तथा सनातन आदि सिद्धों द्वारा पदकमल सेवित (एवं) सदासन पर विराजमान तीनों लोकों के स्वामी भगवान् ब्रह्मा जी को प्रणाम किया।''

दूसरा अध्याय

सूत जी बोले—''ब्रह्म भवन में प्रवेश कर देवतागण ब्रह्मा जी के कहने पर उनके सामने बैठे। फिर कलि के दोष से होने वाली धर्म की हानि का समाचार देवताओं ने आदरपूर्वक ब्रह्मा जी को बताया। दुःखित देवताओं के वचन सुनकर ब्रह्मा जी ने उनसे कहा—'भगवान् विष्णु को प्रसन्न करके हम तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे।' यह कह कर देवताओं

को साथ लेकर ब्रह्मा जी गो-लोकवासी श्री विष्णु भगवान् के पास गए। वहाँ स्तुति कर के देवताओं के मन की कामना उन (श्री विष्णु भगवान्) से निवेदित की।

कमल जैसे नेत्रवाले भगवान् विष्णु देवताओं के दुःख की कथा सुनकर, ब्रह्मा जी से इस प्रकार बोले—'हे विभो, आपके कहने के अनुसार शम्भल ग्राम नामक स्थान में विष्णुयश के यहाँ सुमति नाम की उनकी पत्नी के गर्भ से मैं जन्म लूँगा। (अर्थात् सुमति मेरी माता होगी।) हे देव, हम चारों भाई मिल कर कलि का नाश करेंगे। हमारे भाई-बन्धु के रूप में आप देवतागण भी अपने अंश से अवतार लेंगे। हमारी यह प्रिय लक्ष्मी जी सिंहल देश में राजा बृहद्रथ की

सूत जी कथा कहते हुए

पत्नी कौमुदी के गर्भ से पद्मा नाम से जन्म लेंगी। मरु और देवापि नामक दो राजाओं को भी मैं पृथ्वी पर स्थापित करूँगा। हे देवतागण, तुम अपने-अपने अंश से पृथ्वी पर जाकर अवतार लो। हे ब्रह्मा जी, मैं फिर सतयुग को लाकर और पहले की ही तरह धर्म की स्थापना करके, कलि रूपी सर्प का नाश कर अपने लोक को यानी वैकुण्ठ को वापस आऊँगा।'

देवतागण से घिरे हुए ब्रह्मा जी भगवान् विष्णु के ये वचन सुनकर ब्रह्मलोक वापस आ गए और देवतागण वहाँ से स्वर्ग लोक को चले गए।

हे ऋषिगण! अपनी महिमा से महिमान्वित भगवान् विष्णु इस प्रकार स्वयं अवतार लेने को उद्यत हो शम्भल ग्राम में गए। वहाँ विष्णुयश के द्वारा उनकी पत्नी सुमति के गर्भ में भ्रूण रूप में आए गर्भस्थ भगवान् विष्णु के चरण-कमल की सेवा में ग्रह, नक्षत्र, राशि आदि सब तत्पर थे। यह जानकर कि संसार के स्वामी भगवान् विष्णु ने पृथ्वी पर मानव गर्भ में वास किया है; सभी नदियाँ, समुद्र, पर्वत, लोक, जड़ और चेतन, देवता तथा ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुए। सारे प्राणी विविध

प्रकार से अपने आनन्द को प्रकट करने लगे। पितर लोग आनन्द के मारे नाचने लगे, देवतागण सन्तुष्ट होकर विष्णु भगवान् का यश गाने लगे, गन्धर्व बाजा बजाने लगे और अप्सराएँ नृत्य करने लगीं।

वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी को भगवान् विष्णु ने पृथ्वी पर अवतार लिया। माता-पिता अपने पुत्र के जन्म पर अत्यन्त पुलकित हुए। भगवान् कल्कि का जन्म होने पर भगवती महाषष्ठी ने धात्री (दाई) का काम किया। अम्बिका देवी ने नाल को काटा, भगवती गंगा ने अपने जल से गर्भ-क्लेद को दूर किया और देवी सावित्री भगवान् के शरीर को नहलाने-धुलाने को उद्यत हुई।

भगवान् कृष्ण के जन्म की ही तरह, भगवान् अनन्त विष्णु द्वारा कल्कि के रूप में अवतार धारण करने पर भगवती वसुमती (वसुन्धरा) सुधा-धार (दुग्ध-सुधा) बहाने लगी। माँ भवानी ने (अथवा मातृकाओं ने) मांगलिक वचन कहे (मंगलाचार किया)। विष्णु भगवान् के चतुर्भुज रूप में शम्भल ग्राम में अवतार लेने की बात जानकर ब्रह्मा जी ने शीघ्र चलने वाले पवन को आज्ञा दी—'हे पवन! सूतिका गृह में जा कर तुम विष्णु भगवान् से कहो—हे नाथ! आपकी इस चतुर्भुज मूर्ति का दर्शन तो देवताओं को भी दुर्लभ है। यह विचार कर, हे भगवान्! इस चतुर्भुज रूप को त्याग कर साधारण मनुष्य-सा रूप धारण कीजिए।'

इस प्रकार ब्रह्मा जी के वचन सुन कर शीतल, सुखद, सुगन्धित पवन ने यत्नपूर्वक शीघ्र ही विष्णु भगवान् से सूतिका गृह में जा कर ब्रह्मा के वचन का निवेदन किया। यह (ब्रह्मा जी का संदेश) सुनकर कमलनयन भगवान् विष्णु ने उसी समय दो भुजाओं वाला रूप धारण किया। उस समय भगवान् की यह लीला देख कर उनके माता-पिता आश्चर्य से ठगे-से

रह गए। श्री विष्णु भगवान् की माया से मोहित माता-पिता ने अपने मन में यह समझा कि हमने भ्रमवश ही वैसा समझा था; यानी दो भुजा वाले पुत्र को चार भुजा वाला समझा था। इसके बाद शम्भल ग्राम में सभी प्राणी पापों व क्लेश से मुक्त होकर उत्साहपूर्वक अनेक प्रकार के मंगलाचार करने लगे।

संसार के स्वामी विष्णु जिष्णु (विजयी) भगवान् को पुत्र रूप में पाकर सुमति माता ने, जिस की मनोकामना पूरी हो गई थी, ब्राह्मणों को निमन्त्रित कर सौ गायें दान में दीं। अपने पुत्र विष्णु भगवान् के कल्याण के लिए, शुद्ध चित्त से (पवित्र हृदय वाले) पिता विष्णुयश ने ऋक्, यजुः और सामवेद जानने वाले ब्राह्मणों द्वारा उनका नामकरण कराया। उस समय हरि भगवान् का बाल रूप में दर्शन करने के निमित्त परशुराम, कृपाचार्य, व्यास और द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा भिक्षुक का रूप धारण कर वहाँ आए। सूर्य के समान प्रभा से भरपूर ईश्वर-स्वरूप उन चार आगन्तुकों को देख कर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ विष्णुयश जी के प्रसन्नता से रोंगटे खड़े हो गए और उन्होंने उन आगन्तुकों की पूजा की। भली-भाँति पूजा किए जाने पर उन महर्षियों ने सुखपूर्वक अपने-अपने आसन पर बैठ कर सर्वमूर्ति हरि भगवान् को श्री विष्णुयश की गोद में बैठे देखा। मुनियों में श्रेष्ठ उन जानकार विद्वानों ने मनुष्य रूप धारण किए हुए उस बालक को नमस्कार करके कलि का नाश करने के लिए कल्कि भगवान् ही पैदा हुए हैं, यह जान लिया। फिर वे संस्कार कर्म कर के और उनका नाम कल्कि प्रसिद्ध कर के प्रसन्नचित्त हो कर चले गए।

इसके उपरान्त माता सुमति के लालन-पालन से कंस-शत्रु यानी भगवान् विष्णु शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की भाँति बढ़ने लगे। श्री कल्कि के जन्म लेने से पहले ही माता-पिता को प्रसन्न करने वाले, गुरु-ब्राह्मणों का हित करने वाले तीन

और भाई यानी कवि, प्राज्ञ तथा सुमन्त्रक नाम से पैदा हो चुके थे तथा कल्कि जी के अंश से उनकी ही जाति में कल्कि जी के अनुगामी धर्म-परायण अच्छे स्वभाव वाले गर्ग्य, भर्ग्य और विशाल आदि ने भी पहले ही जन्म ले लिया था। विशाखयूप राजा द्वारा प्रतिपालित ये ब्राह्मण, कल्कि भगवान् को देख कर बहुत आनंदित हुए, मानों उनके सारे संताप मिट गए हों।

इसके बाद, विष्णुयश जी ने कमलनयन सर्वगुण सम्पन्न गंभीर पुत्र कल्कि जी को पढ़ने के योग्य देख कर कहा—'हे प्रिय! मैं तुम्हारा पवित्रतम ब्रह्मसंस्कार यज्ञोपवीत कर गायत्री (सावित्री) सुनवाऊँगा, तब तुम वेदों को पढ़ना।'

'वेद कौन है? सावित्री क्या है? किस प्रकार के यज्ञोपवीत से संस्कारित हो कर मनुष्य संसार में ब्राह्मण नाम से जाना जाता है?—इन सबका भेद, हे पिता! मुझे बताइए।'

पिताश्री ने कहा—'वेद हरि भगवान् का वाक्य है। सावित्री वेद-माता के नाम से प्रतिष्ठित है। त्रिगुणित तीन सूत्रों वाले यज्ञोपवीत को धारण करने पर मनुष्य ब्राह्मण नाम से प्रतिष्ठित होता है। दस यज्ञों द्वारा संस्कारित ब्रह्मवादी ब्राह्मण के पास तीनों लोकों के पोषक वेदों का वास है और भक्तिपूर्वक वैदिक एवं तांत्रिक विधि से संपादित किए गए यज्ञ, अध्ययन, दान तप और स्वाध्याय तथा संयम से ही भगवान् प्रसन्न होते हैं। इसलिए मै चाहता हूँ कि किसी शुभ दिन ब्राह्मणों के द्वारा बन्धु जनों के बीच विधि-विधान से तुम्हारा उपनयन संस्कार कर दूँ।'

पुत्र कल्कि ने प्रश्न किया—'ब्राह्मणों के लिए जो दस संस्कार निश्चित किए गए हैं, वे कौन कौन-से हैं और ब्राह्मण लोग किस विधि से भगवान् विष्णु की आराधना करते हैं?'

पिताश्री ने उत्तर दिया—'ब्राह्मणी के गर्भ में ब्राह्मण

से उत्पन्न गर्भाधानादि संस्कारों से सुसंस्कृत, तीन बार सन्ध्या करने वाला, सावित्री (गायत्री) की पूजा तथा जप में परायण, तपस्वी, सत्यवादी, धीर (और) धर्मात्मा ब्राह्मण विष्णु भगवान् की पूजा की विधि को जानकर सदैव आनन्दपूर्वक संसार की रक्षा करता है।'

पुत्र कल्कि ने पूछा—'वह ब्राह्मण (द्विज) कहाँ है, जो सम्पूर्ण जगत् का उद्धार करता है और जो सन्मार्ग पर चल कर भगवान् को प्रसन्न करता हुआ तीनों लोकों के मनोरथ पूर्ण करता है?'

पिताश्री ने उत्तर दिया—'धर्म का नाश करने वाले, ब्राह्मणों की हिंसा करने वाले, बलवान् कलि के अत्याचार से पीड़ित हो कर वे प्रायः (भारत वर्ष को छोड़कर) दूसरे वर्ष (देश) को चले गए (हैं)। जो थोड़ी तपस्या करने वाले ब्राह्मण कलियुग में रह गए, वे सब धर्महीन, क्रियाहीन, काम-वासना तथा पेट के गुलाम हो गए (हैं)। इस कलियुग में पापमूल, दुराचारी, तेजहीन ब्राह्मण अपनी रक्षा करने में असमर्थ और शुद्रों की सेवा करने वाले हो गए हैं।'

अपने पिताजी के इस प्रकार के वचन सुनकर श्री कल्कि के मन में कलि के कुल का विनाश करने की इच्छा हुई। ब्राह्मणों ने तब अपने वचनों (मन्त्रों) से उनका उपनयन संस्कार कराया। इसके बाद, सज्जनों के स्वामी कल्कि जी गुरुकुल में वास करने गए।

तीसरा अध्याय

सूत जी बोले—''इसके बाद, गुरुकुल में जाते हुए कल्कि जी को देख कर महेन्द्र पर्वत पर रहने वाले भगवान् परशुराम उन्हें अपने आश्रम ले आए, और बोले—'मैं तुम्हे पढ़ाऊँगा। भृगुवंश में उत्पन्न, जमदग्नि का पुत्र, वेद-वेदांग

को जानने वाला, धनुर्वेद में पारंगत मुझ को (तुम) धर्म से महा प्रभावशाली गुरु जानो। हे ब्राह्मण के पुत्र! मैं पृथ्वी को क्षत्रियहीन करके और (उसे) ब्राह्मणों को देकर महेन्द्र पर्वत पर तप करने आया हूँ। तुम यहाँ अपना वेदाध्यन करो और जो अन्य उत्तम शास्त्र हैं, उन्हें भी पढ़ो।'

परशुराम जी के इस प्रकार के वचन सुनकर कल्कि जी के शरीर के रोंगटे आनन्द के कारण खड़े हो गए। उन्होंने पहले परशुराम जी को नमस्कार किया और फिर वेद पढ़ने के लिए सन्नद्ध हो गए।

(अल्प समय में ही) चौंसठ कलाओं और वेदों को उनके अंगों सहित एवं धनुर्वेदादि पढ़ कर कल्कि जी ने भगवान् परशुराम से हाथ जोड़कर कहा—'हे प्रभो! जिस दक्षिणा को आप को अर्पित कर मेरी सर्व सिद्ध होगी और जिस दक्षिणा से आप सन्तुष्ट होंगे, वह दक्षिणा क्या है? यह जानने की मेरी प्रार्थना है।'

परशुराम जी बोले—'हे भूमन (श्रेष्ठ)! कलि के विनाश के लिए भगवान् ब्रह्मा जी ने सब के आश्रय, भगवान् विष्णु से (अवतरित होने की) प्रार्थना की थी। हे देव, वे ही आप विष्णु भगवान् शम्भल ग्राम में पैदा हुए हैं। मुझ से विद्या, शिवजी से अस्त्र और वेदज्ञ शुक से सिहंल देश की अपनी पत्नी पाकर (आप) पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करेंगे। इस के बाद दिग्विजय करते समय, धर्महीन और कलि के प्रिय राजाओं तथा बौद्धों का विनाश कर आप धर्मराज मरू और देवापि को स्थापित करेंगे। आप के इस उत्तम कार्य के पूरा होने से ही हम संतुष्ट होंगे और यही हमारी दक्षिणा होगी, क्योंकि तभी हम यथोचित यज्ञ, दान, तप आदि कर्म कर सकेंगे।'

इस प्रकार के वचन सुन कर, गुरु परशुराम जी को

नमस्कार कर के कल्कि जी भगवान् बिल्वोदकेश्वर (बेल-पत्र व जल से जिनकी पूजा की जाती है) शिवजी के पास गए और उन शंकर भगवान् को इस प्रकार सन्तुष्ट किया।

कल्कि (महादेव जी के पास जाकर) उन आशुतोष (जो स्तुति से जल्दी ही प्रसन्न हो जाते हैं), हृदय में रहने वाले, शान्त, महेश्वर शिवजी की विधिवत् पूजा कर फिर प्रणाम व ध्यान कर बोले—'हे शिव, पार्वती के स्वामी, संसार के नाथ, सब प्राणियों को शरण में लेने वाले, वासुकि साँप का कण्ठ-भूषण धारण करने वाले, तीन नेत्र वाले, सघन आनन्द देने में दक्ष, पुरातन, पंचमुख आदि-देव मैं आप को प्रणाम करता हूँ। हे योगियों के स्वामी, काम-नाशक, भयंकर (कराल-दर्शन), गंगा-तरंग से समुज्ज्वल (पवित्र) मूर्द्धा (सिर) वाले, जटाजूट से ढके हुए, महाकाल, चन्द्रमा से शोभित मस्तक वाले! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप भूत वैताल के साथ श्मशान में निवास करने वाले हैं, आप अपनी भयंकर लम्बी भुजाओं से भाँति-भाँति के शस्त्र,

परशुराम के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करते हुए भगवान

तलवार और शूल आदि धारण करने वाले हैं, प्रलय के समय आपकी क्रोध रूपी आग से समस्त संसार भस्म हो जाने वाला है। आप ही भूतादि तन्मात्रा स्वरूप पंचभूत काल-कर्म स्वभाव से सृष्टि रचते हैं और फिर प्रलय करके जीवत्व को प्राप्त हो ब्रह्मानन्द का सुख लेते हैं—ऐसे आप को मै बार-बार नमस्कार करता हूँ। जिस की आज्ञा से संसार में पवन बहता है, आग जलती है, सूर्य प्रकाशित होते हैं, आकाश में ग्रह तारागण के साथ चन्द्रमा का विकास होता है—उनकी मै शरण लेता हूँ। जिनकी आज्ञा से पृथ्वी सब-कुछ धारण करने वाली है, बादल देवता समय पर वर्षा करते हैं, जो मेरू के बीच में समस्त भुवनों के पालन करने वाले हैं, ऐसे विश्वरूप ईशान को मैं नमस्कार करता हूँ।'

कल्कि जी की इस प्रकार स्तुति सुनकर सब कुछ जानने वाले महादेव जी, पार्वती जी के साथ साक्षात् प्रकट हुए। महादेव जी ने प्रसन्न हो कर कल्कि जी के समस्त शरीर पर हाथ फेर कर मुस्कराते हुए कहा—'हे श्रेष्ठ, जो अभिलाषा हो, उस वर को माँगो। आपके द्वारा रचा हुआ यह स्तोत्र संसार में जो लोग पढ़ेंगे, इस लोक और परलोक में उनके सभी मनोरथ सफल होंगे। इस स्तोत्र को पढ़ने और सुनने से विद्यार्थी को विद्या, धर्मार्थी को धर्म (और) कामना वाले को उसकी कामना प्राप्त होती है। हे कल्कि जी, मैं आपको यह शीघ्र गति वाला, बहुरूपी गरुड़-अश्व और यह सब कुछ जानने वाला तोता देता हूँ। आप इन्हें लें। मनुष्य आप को सब शास्त्रों के विद्वान, सब वेदों में पारंगत और सब प्राणियों में विजयी बताएँगे। बहुत भार वाली, पृथ्वी के भार को दूर करने में सहायक, महा चमक वाली, भयंकर इस रत्नत्सरु नाम की (अथवा रत्न जड़ित मूठवाली) तलवार को आप ग्रहण कीजिए।'

महोदव जी के ये वचन सुनकर कल्कि जी महेश्वर को प्रणाम करके घोड़े पर सवार हो शीघ्र ही शम्भल ग्राम आए। वहाँ पहुँच कर विधिपूर्वक पिता, माता तथा भाइयों को नमस्कार कर जमदग्नि के पुत्र परशुराम जी द्वारा कही गई उन सब बातों का वर्णन किया। (और) महादेव जी के वरदान की बात भी कह कर परम तेजस्वी कल्कि जी अपनी जाति वालों से प्रसन्न चित्त हो शुभ कथा कहने लगे। गर्ग्य, भर्ग्य तथा विशाल आदि इस वृतान्त को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और शम्भल ग्राम निवासियों में एक-दूसरे से कह कर इस कथा का प्रचार हुआ।

शम्भल ग्राम निवासियों के मुख से यह संवाद सुनकर विशाखयूपराज समझ गए कि कलि को समाप्त करने के लिए हरि भगवान् ने पृथ्वी पर अवतार ले लिया है। (उसकी) अपनी महिष्मती पुरी में यज्ञ, दान, तप, व्रत आदि करने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र सभी से हरि प्रेम करने लगे। लक्ष्मीपति श्री कल्कि भगवान, के प्रादुर्भाव होने से सभी

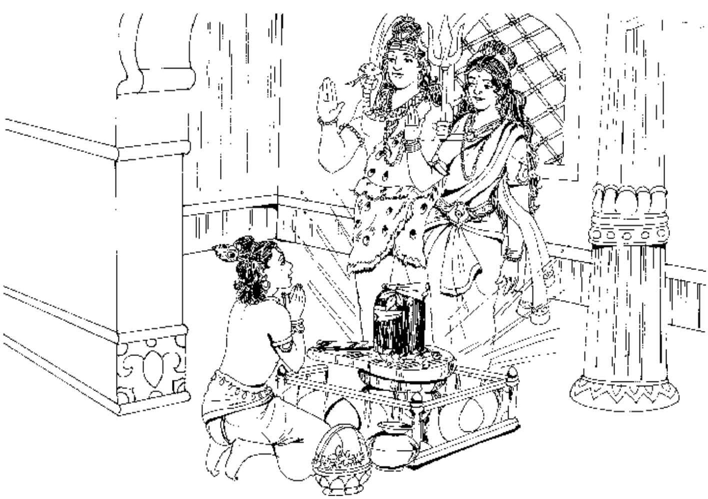

कल्कि जी को वरदान देते हुए भगवान शिव और पार्वती जी

वर्णों को अपने-अपने धर्म में लगे रहते देख कर राजा स्वयं ही प्रजा का पालन करने वाले, शुद्ध मन वाले तथा धर्म-परायण हुए। लालच, झूठ आदि धर्महीन कार्यों के वंश वाले लोग, महिष्मती नगरी के निवासियों को धर्म-परायण देख कर बहुत दुःखी हो कर वहाँ से चले गए। (तब) तेज चमक वाली तलवार तथा धनुष बाण सहित श्री कल्कि जी शिवजी द्वारा दिए हुए विजय प्राप्त करने वाले घोड़े पर सवाल होकर नगरी के बाहर आए। इस पर सज्जनों को प्रिय लगने वाले विशाखयूपराज शंभल ग्राम में विष्णु जी के अंश से आविर्भूत कल्कि जी का अवतार देखने के लिए चल पड़े।

राजा विशाखयूपराज ने नगर से बाहर निकलकर देखा कि भगवान् कल्कि पधार रहे हैं, उनके अंग-अंग से कान्ति छिटक रही है। कवि, प्राज्ञ और सुमन्त्रक उनके आगे-आगे चल रहे हैं। गर्ग्य, भर्ग्य तथा बहुत बड़ी संख्या में बन्धु-बान्धव उनको चारों ओर से घेरे हुए हैं। इस प्रकार वे ऐसे लग रहे हैं, मानों ताराओं के बीच में चन्द्रमा अथवा देवताओं से घिरे उच्चैःश्रवा घोड़े पर विराजमान इन्द्र हों।

कल्कि जी को देख कर विशाखयूपराज का शरीर रोमांचित हो गया, वे झुक गए और तत्काल पूर्ण वैष्णव हो गए। राजा के साथ रहते हुए (वार्तालाप करते हुए) कल्कि जी ने पहले बताए गए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि वर्णों तथा आश्रमों के धर्मों को पुनः संक्षेप में बताया। (कल्कि जी ने कहा)—हमारे अंश कलि के पाप से भ्रष्ट हुए थे, हमारे जन्म लेने पर (अब) धर्म-मार्ग से मिले हैं। आप लोग राजसूय और अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान कर, उनके साथ मेरी उपासना करें, क्योंकि मैं ही परलोक हूँ, मैं ही सनातन धर्म हूँ। काल, स्वाभाव और संस्कार मेरे अनुगत होकर ही काम करते हैं। चन्द्रवंश में उत्पन्न देवापि और सूर्यवंश में उत्पन्न मरू नाम के

(दोनों) राजाओं को स्थापित कर मैं सत्युग की स्थापना कर सद्गति को प्राप्त होऊँगा।

यह वचन सुन कर राजा विशाखयूपराज ने श्री कल्कि, (हरि भगवान्) को प्रणाम कर मनोवांछित श्रेष्ठ वैष्णव धर्म के बारे में बताने को कहा।

इस प्रकार राजा के वचन सुन कर कलि-कुल को नाश करने की अभिलाषा से अवतार लेने वाले श्री कल्कि जी ने अपने परिजनों और परिषद् के लोगों को प्रसन्न करने वाले मधुर वचन से साधु-धर्म की व्याख्या करनी आरंभ की।

चौथा अध्याय

सूत जी बोले—''इस के उपरान्त धर्ममय कल्कि जी, सभा के मध्य में सूर्य की भाँति विराजमान हो कर, विशाखयूपराज से ब्राह्मणों की प्रिय धर्म कथा को कहने लगे।

कल्कि जी ने कहा—'कालान्तर में ब्रह्माण्ड का नाश होगा, प्रलय होने पर सभी पदार्थ मुझ में समा जाएँगे। सृष्टि के पहले मैं ही वर्तमान था और कुछ नहीं था। यह मेरी ही सृष्टि है। समस्त संसार की सुप्त अवस्था, अद्वैत अवस्था रूपी महा रात्रि का अन्त होने पर विराट् का मेरे साथ क्रीड़ा करने के लिए आविर्भाव हुआ, जो प्रभु अर्थात् जगत् का नियन्ता, है।

उस विराट् मूर्ति के सहस्र सिर थे, सहस्र नेत्र और सहस्र चरण थे। उस मूर्ति के अंग से ब्रह्मा जी हुए, जिन के मुख से वेद उत्पन्न हुए। उन ब्रह्म उपाधि धारण करने वाले, सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाले) पुरुष ने मेरे वेद वाक्य से बँधे हुए जीव उपाधिधारी मेरे अंश और माया के अंश को मिलाकर इस जीव जगत को उत्पन्न किया। इस प्रकार मनु आदि प्रजापति

भगवान् के सहित देवतागण की उत्पत्ति हुई। उन ब्रह्मा ने हमारे ही अंश से सत्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों वाली माया द्वारा अनेक प्रकार की उपाधि धारण कर, इस लोक में देवता, मानव, जड़ और चेतन उपाधि वाली सृष्टि पैदा की। माया सृष्टि को बनाने वाला मेरा अंश अन्त में जाकर मुझ में ही मिल जाएगा। इसी प्रकार ब्राह्मण, जो मेरे शरीर हैं, वे मेरे आत्म-स्वरूप हैं। इस संसार में ब्राह्मण यज्ञ, अध्ययन तथा उत्तम कार्यों से मेरा उद्धार करते हैं। तप दानादि कर्म से मेरी सेवा करते हैं, मेरा नाम लेते हैं और मुझे याद करते हैं। वेद मेरी पूर्ण मूर्ति हैं, ब्राह्मण वेदों के बोलने वाले हैं। जिस प्रकार वे मुझे याद करते हैं तथा प्रसन्न करते हैं, देवादि कोई भी उस प्रकार मुझे प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी कारण ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित वेदों से तीनों लोकों के निवासीगण परिपुष्ट हो रहे हैं। जगत निवासी मेरे शरीर हैं और उस शरीर को पुष्ट करने में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। इसीलिए शुद्ध और सत्व गुणों का आश्रय लेकर मैं ब्राह्मणों को नमस्कार करता हूँ। मेरे नमस्कार करने पर वे अखिलाश्रय (अखिल+आश्रय, अर्थात् पूर्ण आश्रय वाले) ब्राह्मणगण मुझे जगन्मय (जगत्+मय, अर्थात् संसार-युक्त) समझ कर मेरी सेवा करते हैं।'

विशाखयूपराज बोले—'बताइए, ब्राह्मण के लक्षण क्या हैं ? वे आपकी भक्ति कैसे करते हैं, जिस भक्ति के करने से आप की कृपा से ब्राह्मणों के वाक्य बाण-स्वरूप हो गए हैं।'

भगवान् कल्कि ने बताया—'वेद मुझे अव्यक्त (ब्रह्म) की अभिव्यक्ति रूप ईश्वर कहते हैं। ये वेद ब्राह्मणों के मुख में स्थित होकर विविध धर्मों के रूप में प्रकट होते हैं। ब्राह्मणों का जो धर्म है, वही धर्म, यानी उनका धार्मिक आचरण ही मेरी सबसे बड़ी भक्ति है। उस भक्ति से प्रसन्न हो कर मै

श्रीशः (श्री+ईशः, अर्थात् लक्ष्मी के पति भगवान् विष्णु) के रूप में युग-युग में पैदा होता हूँ।

बुद्धिमान् लोग कहते हैं कि सधवा के द्वारा बनाए गए सूत को तिगुना कर उसके बाद उस तिगुने सूत को फिर तिगुना करने से यज्ञोपवीत बन जाता है। उस सूत को तीन फेरा करके वेद और प्रवर की संख्या के अनुसार उसमें गाँठें लगाकर गर्दन से नाभि के बीच पीठ के अर्धभाग के बराबर का यज्ञोपवीत यजुर्वेदी ब्राह्मणों के लिए निहित है। सामवेदियों का यज्ञोपवीत गर्दन से नाभिपर्यन्त का होता है। यह बाएँ कन्धे पर धारण किया जाता है। यह यज्ञोपवीत धारण करने वाले को बल प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त ब्राह्मण मिट्टी, राख, चन्दनादि से तिलक धारण करें और मस्तक में बालों तक धर्म-कर्म के अंग के रूप में उज्ज्वल त्रिपुण्ड्र लगाए। पुण्ड्र एक अंगुल के बराबर चौड़े प्रमाण को कहते हैं। उसी को तीन गुना करके त्रिपुण्ड्र हुआ। त्रिपुण्ड्र में ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश जी का वास है। त्रिपुण्ड्र के दर्शन करने से पाप का नाश होता है।

ब्राह्मणों के हाथ में स्वर्ग और श्रीहरि, उसकी वाणी में वेद, शरीर में तीर्थ और राग तथा नाड़ियों में त्रिगुणों वाली प्रकृति है। ब्राह्मणों के कण्ठ स्थान में सावित्री है, हदय में साक्षात् ब्रह्म, वक्षःस्थल के बीच धर्म और पीठ पर अधर्म का वास होता है। हे राजन्! ब्राह्मण पृथ्वी के देवता हैं, उत्तम वचनों के द्वारा पूजा तथा वन्दना के योग्य हैं। चारों आश्रमों के कर्त्तव्यों में कुशल और मेरे धर्म को चलाने वाले हैं।

ब्राह्मणों के बालक भी ज्ञान और तप में बड़े तथा मुझे प्रिय हैं। उन्हीं के वचनों का पालन करने के लिए मैं अवतार लेता हूँ। ब्राह्मणों के महाभाग्य का वर्णन, जो सब प्रकार के पापों का नाश करने वाला और कलि के दोषों को दूर करने

वाला है, सुनने से प्राणी सब प्रकार के भय से छूट जाते हैं।'

कल्कि जी के कलि के दोषों को नाश करने वाले वचन सुनकर शुद्ध हृदय, वैष्णवों के सिरमौर विशाखयूप उनको प्रणाम करके (तप के लिए) चले गए।

राजा (विशाखयूप) के चले जाने पर शिवदत्त बुद्धिमान् शुक इधर-उधर धूम कर सन्ध्या के समय कल्कि जी के समक्ष पहुँच कर और उनकी स्तुति कर उनके सामने खड़ा हुआ। स्तुति करने वाले उस शुक से कल्कि जी ने मुस्करा कर स्वागत करते हुए कहा—'आप का किस देश से शुभागमन हुआ है ? वहाँ आपने क्या खाया ?' शुक ने कहा—'हे देव, मुझ से एक कौतूहल भरी बात सुनिए। मैं समुद्र के बीच स्थित सिंहल नामक द्वीप गया था। सिंहल द्वीप में जैसी घटना घटी, उस की विचित्रता सुनने में मधुर है। (वहाँ के) बृहद्रथ राजा की कन्या का चरित्र अमृत के समान उत्तम है। सिंहल द्वीप के राजा बृहद्रथ की रानी कौमुदी के गर्भ से इस कन्या ने जन्म लिया है। चारों वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जिस सिंहल द्वीप में निवास करते हैं, उस में उत्पन्न कन्या का चरित्र सुनने से संसार के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

महल, अटारी, मकान, पुर आदि से वह द्वीप शोभायमान है। रत्नों और स्फटिक मणि की कुण्डी आदि लगी हैं तथा वह स्वर्णमयी लता से शोभायमान है। उत्तम वेश वाली पद्मिनी नारियाँ वहाँ पर विराजती हैं। जल से भरे तालाबों के तट पर सारस तथा हंस आदि पक्षी किल्लोल कर रहे हैं। सिंहल द्वीप तरह-तरह के कमल-लता के समूह, वन-उपवन से शोभायमान है और उन कमल, कह्लार, कुन्द आदि फूलों पर भौरों के रंग-प्रसंग से रमणीय प्रतीत हो रहा है। सिंहल देश का स्वामी राजा बृहद्रथ अत्यन्त बलवान् और पराक्रमी है। उस राजा की प्रशंसा योग्य पद्मावती नाम की यशस्विनी कन्या है। कामदेव

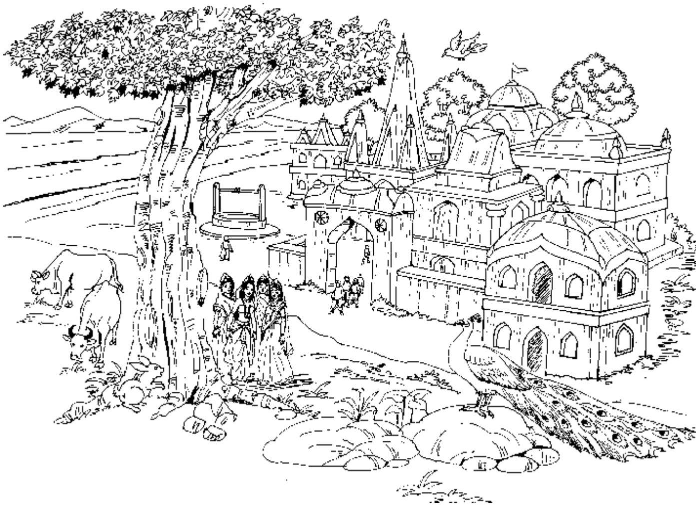

सिंहल द्वीप

को मोहित करने वाली, उत्तम चरित्र वाली, सुन्दर, सुगठिता, त्रिभुवन में दुर्लभ, संसार में अतुलनीय वह कन्या चित्र में निर्मित जैसी है। जिस प्रकार पार्वती जी शिवजी की सेवा में लगी रहती हैं, उसी प्रकार अच्छी सम्मति वाली, पूजनीया पद्मावती भी सखी तथा कन्याओं के साथ जप और ध्यान में लगी रहती हैं। उस श्रेष्ठ मुख वाली पद्मावती के रूप में विष्णु भगवान् की प्रिय लक्ष्मी जी को पृथ्वी पर अवतरित हुआ जान कर, साक्षात् महादेव जी पार्वती सहित प्रसन्नतापूर्वक प्रकट हुए। वह कन्या वर देने वाले शिवजी को पार्वती के साथ देखकर, लज्जा से नीचा सिर किए हुए कुछ भी न बोली और उनके सामने खड़ी रही।

तब महादेव जी ने उससे कहा—'हे सुभगे, तुम्हारे पति नारायण हर्षपूर्वक तुम्हारा पाणिग्रहण करेंगे। अन्य कोई राजकुमार तुम्हारे साथ विवाह करने योग्य नहीं है। जो मनुष्य संसार में तुम को वासना की दृष्टि से देखेंगे, वे उसी समय अपनी उम्र के अनुकूल नारी बन जाएँगे। देवता, राक्षस, नाग,

गन्धर्व, चारण आदि जो कोई भी तुम्हारे साथ रमण करने की इच्छा करेगा, वह तत्काल निश्चय ही स्त्री हो जाएगा। नारायण को छोड़कर और कोई भी तुम्हारे साथ पाणिग्रहण की इच्छा करेगा, उसकी ऐसी ही दशा होगी। तुम तप को छोड़कर अपने घर जाओ और भोग के योग्य अपना उत्तम शरीर बनाओ। हे विष्णु की पत्नी कमले, दुःख मत करो, मन के मैल को दूर करो। इस प्रकार भगवान् शिव जी पद्मावती को वर देकर अन्तर्धान हो गए।

महादेव जी के मनोवांछित वरदान का वचन सुनकर प्रफुल्ल मुख हुई पद्मावती महादेव जी को प्रणाम कर अपने पितृ-गृह को चली गई।

पाँचवाँ अध्याय

शुक ने कहा—'बहुत समय बीतने पर अपनी पुत्री पद्मावती को यौवनावस्था में प्राप्त होते देख कर बृहद्रथराज पाप की शंका से चिन्तित हो गए।

राजा ने अपनी रानी कौमुदी से कहा—हे सुभगे, पद्मा के विवाह के लिए उत्तम कुल में उत्पन्न किस शीलवान् राजा को स्वीकार करूँ?

उस देवी कौमुदी ने अपनी पति से शिवजी द्वारा कहे गए वचन को कहा कि इस के पति भगवान् विष्णु होंगे, इसमें संशय नहीं है।

रानी के ये वचन सुनकर राजा ने प्रश्न किया—सब के हृदयों में वास करने वाले विष्णु भगवान् इस कन्या के साथ पाणिग्रहण कब करेंगे? हे कौमुदी, मेरा ऐसा कोई भाग्य उदय नहीं हुआ है कि जिससे वेदवती के पिता तपस्वी मुनि की भाँति स्वयंवर सभा में भगवान् विष्णु को दामाद के रूप में वरण कर सकूँ। देवासुर संग्राम में समुद्र मन्थन से पैदा हुई

पद्मा (लक्ष्मी) की भाँति भगवान् विष्णु इस स्वयंवरा पद्मावती को ग्रहण कर लें, ऐसा प्रयत्न मैं करूँगा।

यह विचार कर राजा बृहद्रथ ने गुण-शील वाले, तरुण आयु वाले, रूपवान्, विद्वान एवं धनवान राजाओं को सम्मान सहित निमन्त्रित किया। सिंहल देश में पद्मा के स्वयंवर के लिए अनेक प्रकार के मंगल आयोजन होने लगे। राजाओं के निवास के लिए विचारकर उपयुक्त स्थान सज्जित किया जाने लगा (और) विवाह के लिए निश्चय करने वाले समस्त राजा सोने और रत्न आदि के आभूषणों से सज-धज कर अपनी सेना सहित सिंहल देश में आने लगे। वे महाबलवान् राजागण रथ, हाथी और घोड़ों पर सवार हो कर वहाँ उपस्थित हुए। सफेद छत्रों से उन पर छाया की गई और सफेद चँवरों से उन पर हवा की गई। शस्त्र और अस्त्रों के तेज से दमकते हुए राजागण इन्द्रसहित देवतागण की भाँति प्रतीत हुए। रूचिराश्व, सुकर्मा, मदिराक्ष, दृढ़ाशुग, कृष्णसार, पारद, जीमूत, क्रूरमर्दन, काश, कुशाम्बु, वसुमान, कंक, क्रथन, संजय, गुरुमित्र, प्रमाथी, विजृम्भ, सृजय, अक्षम तथा अन्य बहुत पराक्रमवाले राजागण सिंहल देश में इकट्ठे हुए। विचित्र माला और वस्त्रों को धारण कर, गाने-बजाने में संहृष्ट (मस्त) राजा लोग रंगभूमि में पधारे। आदर सहित पूजे जाने पर वे अपने-अपने आसनों पर बैठे।

नाना प्रकार के भोग और सुखों से आसक्त, रमणीय चरित्र वाले और सबको प्रसन्न करने वाले राजागण को देख कर राजा बृहद्रथ ने श्रेष्ठ वर का वरण करने वाली अपनी कन्या को (स्वयंवर-स्थल में) बुलाया।

गौरी, चन्द्रमुखी, श्यामा, रमणीय हार से शोभित और मणि, मोती, मूँगों के सब अलंकारों से शोभित पद्मावती, क्या महामोहमयी माया है या स्वयं कामदेव की प्रिया पृथ्वी

पर आई है! मैं तो स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताल लोक—सभी जगह जाता हूँ, किन्तु मैंने पद्मावती की भाँति रूप और सुन्दरता से सम्पन्न ऐसी दूसरी कन्या नहीं देखी। ऐसा सभी राजागण सोच रहे थे। पद्मावती के पीछे अनेक दासियाँ थीं और वह सखियों से घिरी हुई थी।

नगर के बाहर द्वारपालगण हाथों में बेत लिए अन्तःपुर की देख-रेख कर रहे थे। बन्दीगण आगे खड़े थे। राजकुमारी ने वहाँ धीरे-धीरे प्रवेश किया।

घुँघरुओं और किंकिणी की संसार को मोह लेने वाली ध्वनि करती हुई, वहाँ पधारे हुए राजाओं के कुलों के बहुत से शील तथा गुणों को सुनती हुई, हंस जैसी चालवाली, रत्नों की माला हाथ में लिए हुए, सुंदर अंगों को चलायमान करती हुई और कटाक्ष से देखती हुई, चंचल कुंडलों वाली, केशों के समूह के हिलने से गर्दन की अपूर्व शोभा दिखाने वाली, सुन्दर मुस्कान वाली, खिले हुए मुख वाली और दाँतों की

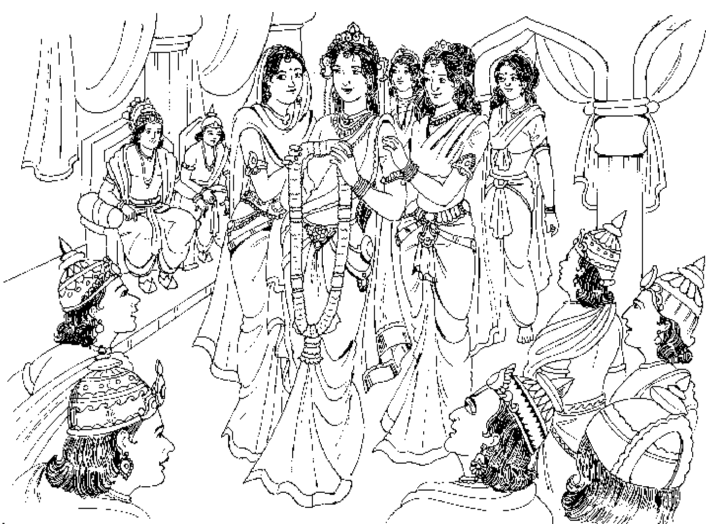

पद्मा देवी स्वयंवर में

चमक वाली, वेदी के समान मध्य अंग (कमर) में लाल और रेशमी वस्त्रोंवाली, कोयल जैसी मीठे बोल वाली, अपने रूप और सुन्दरता से तीनों लोकों को मुग्ध करने वाली, ऐसी—मन को मोहने वाली कामिनी—(राजकुमारी पद्मावती) को आया हुआ देखकर समस्त राजा कामदेव के वश में विह्वलचित्त हो गए अर्थात् ठगे-से रह गए और उनके वस्त्र, शस्त्र आदि (और वे स्वयं) पृथ्वी पर गिरने लगे।

काम-विमोहित हो कर, वासनामय दृष्टि से देखने पर और वैसा स्मरण करने से उनका रूप सुन्दर अंगों वाली स्त्री का हो गया। ये स्त्रियाँ बड़े नितम्बवाली, स्तनों के भार से झुकी, सुन्दर कमर वाली थीं। विलासयुक्त हँसी वाली, व्यसन की चतुराई वाली, सुन्दर मुख वाली और कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री रूप में अपने को देखकर राजागण सहर्ष सहेली के वेश में पद्मा जी के पीछे चलने लगे।

पद्मा जी के विवाह का उत्सव देखने के लिए उत्सुक मैं निकट के एक वट के वृक्ष पर बैठा था। राजाओं ने स्त्री रूप धारण किया, यह दृश्य देखकर पद्मा जी हृदय में बहुत शोक व विलाप करने लगीं। मैं उन के विलाप को सुनने के लिए बैठा रहा। हे संसार के स्वामिन्! मंगलमय विवाहोत्सव के इस प्रकार समाप्त हो जाने पर पद्मावती मन में शरणागत की रक्षा करने वाले शिव जी का ध्यान कर जैसी दुःखी हुईं, मैंने उसे सुना है। हे कल्कि जी, उस करुणा से भरे विलाप की कथा को आप सुनिए। पद्मावती ने देखा कि सभी राजागण उनको देख कर हाथी, घोड़े, रथों को छोड़ कर स्त्री रूप धारण करते हुए सहेली बन उनके साथ-साथ चलने लगे। पद्मा जी यह दृश्य देखकर दीन भाव से आभूषणों को उतार कर पाँव की उंगली से पृथ्वी को कुरेदने लगीं। फिर पद्मा जी महादेव जी के वरदान को सफल करने की इच्छा

से संसार के स्वामी श्री हरि भगवान् का पति भाव से ध्यान करने लगीं।'

छठवाँ अध्याय

शुक ने कहा—'फिर अपनी सहेलियों से घिरी हुई विस्मित मुख वाली पद्मा जी पतिरूप में श्री हरि भगवान् का ध्यान करती हुई पास में खड़ी विमला नाम की सखी से बोली—हे विमले! क्या विधाता ने मेरे भाग्य में यही लिखा है कि मुझे देखते ही पुरुष स्त्री बन जाएँ? हे सखि! जिस प्रकार रेगिस्तान में बोया हुआ बीज बेकार जाता है, उसी प्रकार मन्दभागिनी पापिनी मेरी भी शिव जी की जो पूजा की गई, वह व्यर्थ हुई। लक्ष्मीपति श्री हरि भगवान् सारे जगत् के अधिपति और स्वामी हैं। मैं यदि उनको अपना पति बनाने की अभिलाषा करूँ भी तो क्या वे संसार के स्वामी मेरे पति होने की इच्छा करेंगे? यदि महादेव जी का वचन मिथ्या हो जाए, यदि भगवान् विष्णु मुझे याद न करें, तो मैं श्री हरि का ध्यान करते-करते अग्नि में अपने शरीर को समर्पित कर दूँगी। कहाँ मैं बेचारी मनुष्य जाति की स्त्री और कहाँ वे नारायण देव! मानों विधाता मेरे विमुख हैं। इसी कारण मैं शिव जी द्वारा ठगी हुई हूँ और भगवान् विष्णु द्वारा परित्याग किए जाने पर, मेरे अलावा और कोई भला कहीं जीवित रहता!

सुन्दर चरित्र वाली पद्मावती के इस प्रकार तरह-तरह से विलाप करते हुए शोकातुर वचनों को सुनकर मैं आपके पास आया हूँ।

शुक जी के इस प्रकार के वचनों को सुन कर बहुत अचंभे में पड़े हुए कल्कि जी ने कहा—'तुम प्रिय पद्मा को समझाने के लिए फिर सिंहल देश जाओ। हे शुक! तुम मेरे संदेश-वाहक बन कर मेरे रूप और गुणों को प्रिय पद्मा को

सुना कर फिर वापस चले आओ। वह पद्मा मेरी प्रिय पत्नी है, मैं उसका पति हूँ। यह संयोग विधाता ने ही बनाया है और तुम्हारी मध्यस्थता के द्वारा हम दोनों का यह मिलाप सम्पन्न होगा। तुम सर्वज्ञ हो, तुम्हें मालूम है कि कौन काम, कब और कैसे करना चाहिए, अतः अपने अमृतमय वचनों से उस (पद्मा जी) को समझा कर मेरे आश्वासन की बात बताकर आइए।'

इस प्रकार कल्कि भगवान् के वचन सुन कर, अत्यन्त प्रसन्न हो कर और उनको प्रणाम कर सुखी चित्त हो शुक जी जल्दी ही सिंहल देश गए। फिर उस पक्षी ने समुद्र के पार जा कर स्नान किया, अमृत के समान जल को पिया और बिजौर (गलगल) फल खा कर राज भवन में प्रवेश किया। वहाँ कन्या के निवास स्थान में पहुँच कर, नागकेसर के पेड़ पर बैठे हुए शुकजी ने पद्मा को देख कर मनुष्य की भाषा में कहा— 'हे सुन्दरी! तुम कुशल से तो हो ? हे रूप और यौवन वाली, चंचल नेत्रों से सुशोभित तुम्हें मैं दूसरी लक्ष्मी समझता हूँ। तुम्हारा मुख कमल की भाँति है, तुम में कमल की-सी गंध है, तुम्हारी आँखें कमल के समान हैं, तुम्हारे हाथ भी कमल के समान हैं। हे हाथ में कमल वाली! अपने इन सब लक्षणों से तुम दूसरी लक्ष्मी मालूम होती हो। हे सुन्दरी, क्या विधाता ने सारे संसार के रूप और सुन्दरता की संपदा इकट्ठा कर सब प्राणियों को मोहने वाली तुम्हें बनाया है ?'

शुक जी के अत्यन्त अद्भुत वचन सुनकर कमलों की माला धारण किए वह पद्मा देवी हँस कर उस से बोली— 'तुम कौन हो ? कहाँ से आए हो ? क्या तुम शुक रूपधारी देवता हो या दैत्य हो ? तुम दयावान होकर किस कारण मेरे पास आए हो ?'

शुक बोले—'मैं सब कुछ जानने वाला हूँ। अपनी इच्छा से सब जगह घूमने वाला हूँ। सब शास्त्रों के तत्व को जानता

हूँ। देवताओं, गन्धर्वों और राजाओं की सभा में पूजा जाता हूँ। मैं आकाश में अपनी इच्छा से घूमता हूँ। हृदय में दुःख लिए, भोगों के सुखों को त्यागने वाली श्रेष्ठ मानवी, तुम्हें देखने के लिए मैं यहाँ आया हूँ। तुमने हँसी-मज़ाक, सखियों का साथ और शरीर के आभूषण त्याग दिए हैं। इस तरह तुम्हें देखकर मैं दुःखी चित्त हो, तुम्हारी कोयल की बोली से भी मीठी व कोमल वाणी में तुम्हारे सन्ताप का कारण पूछता हूँ।

तुम्हारे दाँत, ओंठ और जीभ से निकले हुए शब्द (अक्षरों की पंक्ति) जिसके कानों में पड़े हों, उस की तपस्या का वर्णन कहाँ तक किया जाए (अर्थात् उसने अभूतपूर्व तपस्या की होगी।) तुम्हारे सामने सिरस के फूलों की कोमलता भला क्या है ? चन्द्रमा की कान्ति तुम्हारे सामने क्या ठहरती है और विद्वान लोग जिस ब्रह्मानन्द की प्रशंसा करते हैं, वह अमृत तुम्हारे सामने क्या है ? अर्थात् तुम्हारी तुलना में ये सब चीज़ें कहीं नहीं टिक सकतीं। जो तुम्हारी बाहुरूपी लता, यानी भुजाओं के बंधन से बँध कर तुम्हारे चन्द्रमुख के अमृत को पिएगा, भला उसको व्यर्थ के तप, दान, जप से क्या प्रयोजन है ? तिलक और बालों से मिश्रित अर्थात् शोभित चंचल कुण्डलों से मंडित, चंचल नेत्रों वाली, तुम्हारे सुन्दर मुख को देखने से फिर से जन्म नहीं होगा। (अर्थात् जन्म-मरण के बंधन से छूट जाएँगे) हे बृहद्रथ की पुत्री, तुम्हारी मानसिक व्याधि का क्या कारण है ? बताओ। हे भामिनी, बिना किसी रोग के तुम्हारा यह शरीर तप से दुर्बल हुआ जैसा दिखता है। धूल से गंदी हुई सोने की मूर्ति की भाँति तुम्हारा यह शरीर मलिन क्यों हो गया है ?'

पद्‌मा जी बोली—'जिसका भाग्य ही उल्टा है, भला उसके रूप से, कुल से, धन से, ऊँचे वंश से क्या मतलब है ? अर्थात ये सब बेकार हो जाते हैं। हे शुक, मेरा हाल यदि तुम

न जानते हो तो सुनो, मैंने बाल्यकाल, पौगण्ड काल (पाँच से सोलह वर्ष तक) तथा किशोर काल में शिव जी की पूजा की थी।

उस पूजा से संतुष्ट होकर पार्वजी जी सहित शिव ने कहा था—हे पद्मे! तुम वर माँगो। अपने सम्मुख मुझे लज्जा से नीचे को मुँह किया और खड़ा हुआ देखकर शिव जी ने कहा था—तुम्हारे स्वामी हरि नारायण अर्थात् भगवान् विष्णु होंगे। (उन्होंने यह भी कहा था कि) चाहे कोई देवता हो या राक्षस हो या वनवासी हो या गन्धर्व हो, जो कोई तुम्हें वासना की दृष्टि से देखेगा, वह तत्काल स्त्री बन जाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। इस प्रकार वर देकर भगवान् शिव ने विष्णु भगवान् की पूजा का प्रकरण जिस प्रकार बताया है, वह भी तुम्हें बताती हूँ, तुम सावधान चित्त से सुनो। ये जो सखियाँ हैं, पहले ये सब राजा थे। जब मेरे धर्मात्मा पिता ने मुझे यौवन से भरपूर सुन्दर स्वरूपयुक्त देखा तो इन राजाओं को स्वयंवर में बुलाया। ये लोग युवा, गुणवान रूपवान और धन-धान्य वाले थे। ये सब लोग मुझ से विवाह का निश्चय कर आए थे और स्वागत के पश्चात् स्वयंवर-स्थल में सुख से बैठे थे। ये सुंदर कान्ति से भरपूर, हाथ में रत्नों की माला लिए, मुझे स्वयंवर भूमि में देखकर काम मोहित हो कर भूमि पर गिर पड़े। इसके बाद इन्होंने अपने को स्तन भार से झुके और बड़े नितम्बादि सहित स्त्री रूप में पाया।

हे शुक! इसके बाद ये लोग मन में स्त्री भाव को धारण कर बहुत दुःखी हो कर शत्रु-मित्रादि सब की लज्जा और भय छोड़ कर मेरे पीछे-पीछे चलने लगे। ये सभी गुणों से सम्पन्न मेरी सखियाँ होकर भगवान् की सेवा में लगी हुई उन की पूजा, तप तथा ध्यान मेरे साथ करती हैं।

अपनी मानसिक इच्छा के अनुसार, कानों को सुख देने

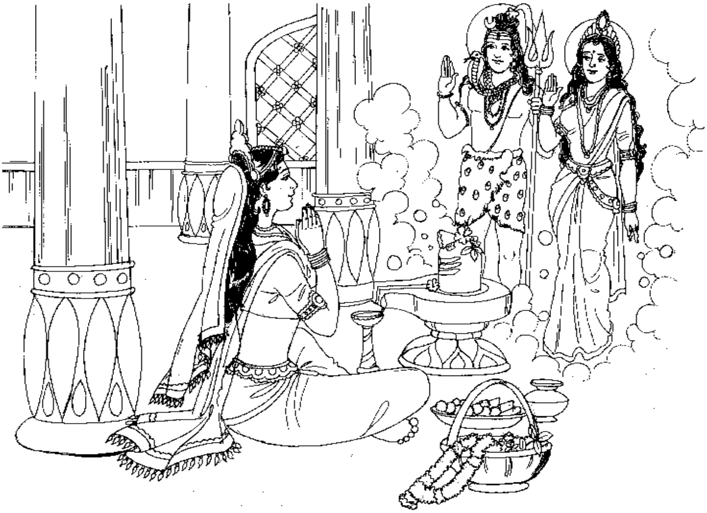

भगवान शिव और पार्वती की पूजा करती हुई पद्मा जी

वाले ये वचन सुनकर शुक जी ने कथा के उचित प्रसंग से पद्मा जी को संतुष्ट किया, उसके बाद भगवान् की पूजा से संबंधित बात उठाई।

सातवाँ अध्याय

शुक ने कहा—हे शुभे (कल्याणि), महादेव जी ने विष्णु भगवान् की पूजा की जो विधि तुम्हें बताई है, मैं उसे सुनना चाहता हूँ। तुम धन्य हो, तुम ने पुण्य किए हैं, (क्योंकि) तुम शिवजी की शिष्या हुई हो। मैं भाग्य से ही तुम्हारे पास पहुँचा हूँ। अब मैं तुम से परम आश्चर्य वाली विष्णु भगवान् की पूजाविधि, जो कि मेरे पक्षी-शरीर का निवारण (उद्धार) करने वाली है, सुनूँगा; (क्योंकि) भगवान् विष्णु का जप, ध्यान एवं उनकी पूजा-विधि भगवान् की भक्ति देने वाली है और सुनने में सुखद तथा परमानन्द देने वाली है।

यह सुनकर पद्मा जी बोलीं—शिव जी द्वारा बताई गई

श्री विष्णु भगवान् की पूजा-विधि पवित्र है और इस का श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करने, सुनने और कहने से गुरु-हत्या, गो-हत्या तथा ब्रह्म-हत्या करने वाले मनुष्यों के पाप भी शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। हे शुक, महादेव जी ने विष्णु भगवान् की पूजा का जैसा वर्णन किया है, उसे तुम मन लगा कर सुनो।

प्रातःकाल नित्य कर्म करने के बाद स्नान कर पवित्र हो, हाथ-पाँव आदि धोकर और जल स्पर्श कर पूजा करने वाला अपने आसन पर बैठे। इसके बाद अपने को संयत कर, पूर्व दिशा की ओर मुँह कर के अंगन्यास से (जैसे तिलक आदि लगा कर), शरीर की शुद्धि कर विधिपूर्वक अर्घ्य की स्थापना करे। इसके बाद केशव अर्थात् भगवान विष्णु का कृत्य अर्थात् पूजन रूपी कार्य का, संकल्प उनके विविध नामों का उच्चारण करते हुए अंगन्यास एवं करन्यास करते-करते विष्णुमय हो जाए और अपने हृदय को उनके लिए आसन कल्पित कर, उस पर उनको (भगवान् विष्णु को) स्थापित करे। तब पूजक हृदयरूपी कमल में विराजमान भगवान् विष्णु की उनके मूल मंत्र (ॐ नमो नारायणाय) से पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, वस्त्र एवं आभूषण (समर्पण) आदि षोडषोपचार विधि से (मन-ही-मन) पूजन करके हृदय कमल में विद्यमान भगवान् विष्णु के चरणों से लेकर सिर के बालों तक का ध्यान करे। ध्यान में भगवान् की मुखमुद्रा प्रसन्न हो और ऐसा लग रहा हो कि भगवान् भक्तों को मनोवांछित फल दे रहे हों।

(ध्यान के समाप्त होने पर) 'ॐ नमो नारायणाय स्वाहा' कहकर इस स्तोत्र का पाठ करे—योग द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वाले विद्वान लोग जिन का सदा ध्यान करते हैं, जो लक्ष्मी के आश्रय हैं। तुलसी पत्र अथवा माला से सुभासित भक्त जिन के ऊपर भौंरे के समान मँडराने वाले हैं (अथवा जिनके

भक्तगण भृङ्ग-रूपी तुलसी का सदा सेवन करते हैं) जिनके लाल रंग के कमल के समान नाखूनों वाली उंगलियों के पत्रों से गंगाजल बह रहा है, मैं ऐसे श्री विष्णु भगवान् के चरण कमलों का आश्रय ग्रहण करता हूँ।

जिन के श्रीचरणों में मणिमाला से गुँथे हुए घुंघरू, जो कि हंस की बोली के समान ध्वनि करते हैं, शोभायमान हैं। जिन चरणों में सोने का त्रिवक्र नाम का वलय बँधा है, उन चरण कमलों का मैं स्मरण करता हूँ।

सुपर्ण अर्थात् गुरुड़ जी के गले के आभूषण नीलकान्त मणि की चमक से जिन जंघाओं की कान्ति बढ़ी है, जिन जंघाओं के बीच में (गरुड़ की सवारी के कारण) अत्यन्त सुन्दर लाल मणि के समान लाल चमक वाली गरुड़ जी की चोंच शोभा पा रही है। जिन जंघाओं के नीचे लाल तलुए लटके हुए शोभायमान हैं, संसार की आँखों को सुख देने वाले ऐसे भगवान् विष्णु की उन जंघाओं का मैं स्मरण करता हूँ।

चंचल गरुड़ जिनका यश 'सामवेद' का गान कर गाते हैं। उत्सव के समय कन्धे में पड़े हुए सुन्दर विचित्र रंग के कपड़ों की बिजली की-सी शोभा से युक्त, श्री विष्णु भगवान् की उन दोनों जंघाओं का मैं स्मरण करता हूँ।

भगवान् विष्णु की जो कमर ब्रह्मा, यम तथा कामदेव की आधार-भूमि है, जो तीनों गुणों से युक्त प्रकृत रूप अद्भुत पीताम्बर से ढकी रहती है तथा जो जीवों के बीज का आधार है और जहाँ दुपट्टा शोभा पाता है, (ऐसी) गरुड़ की पीठ पर बैठे भगवान् विष्णु की उस कमर का मैं ध्यान करता हूँ।

जिस उदर में तीन बल पड़े शोभा पा रहे हैं और जिस उदर की नाभि रूपी तालाब में ब्रह्मा का जन्म-स्थान कमल खिल रहा है। जिस उदर में नाड़ी रूपी नदियों के रस से आन्त्र

रूपी समुद्र उफन रहा है व जिस में पतले-पतले रोओं की रेखाएँ शोभित हैं, ऐसे भगवान् विष्णु के उस उदर का मैं स्मरण करता हूँ।

जिस हृदय (छाती) पर समुद्र से उत्पन्न हुई लक्ष्मी जी के स्तनों का कुंकुम लग रहा है, जो हृदय-हार तथा कौस्तुभ मणि की चमक से जगमगा रहा है और जिस हृदय पर श्रीवत्स (भगवान् विष्णु की छाती पर भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न) शोभा पा रहा है तथा हरिचन्दन के फूलों की माला झूल रही है, ऐसे भगवान् के अति सुन्दर उस हृदय का मैं स्मरण करता हूँ।

भगवान् की जो दाहिनी भुजाएँ सुन्दरता की खान हैं और जो भुजाएँ बाजूबंद (वलय) व अंगद आदि आभूषणों से शोभा पा रही हैं तथा जिन भुजाओं की प्रचण्डता से अनेक दैत्य नष्ट हो गए हैं व जिन भुजाओं की चमक से गदा, चक्र आदि का तेज भी फीका पड़ जाता है, ऐसी उन दो दाहिनी भुजाओं का (मैं) मन से ध्यान करता हूँ।

भगवान् विष्णु दोनों बाईं भुजाओं में कमल और शंख धारण किए हुए हैं। हाथी की सूँड के समान साँवले रंग की दोनों भुजाओं में मणि वाले आभूषण हैं। लाल रंग की उँगलियाँ उनके घुटनों का स्पर्श करती हैं, अर्थात् उनके हाथ घुटनों तक पहँचते हैं। कमल पर बैठी हुई पद्मा जी को प्रसन्न करने वाली श्री विष्णु भगवान् की उन दोनों सुन्दर बाहों का मैं ध्यान करता हूँ।

जो कण्ठ कमल की नाल (डण्ठल) जैसा निर्मल है और जिस कण्ठ में (कमल रूपी मुख की) तीन धारियाँ और वनमाला शोभा पा रही हैं तथा कण्ठ मुक्ति देने वाले मंत्र के उत्तम फल का उद्गम है, श्री विष्णु भगवान् के ऐसे कण्ठ का मैं ध्यान करता हूँ।

लाल कमल के समान, लाल-लाल ओंठों के बीच हँसते हुए शोभायमान दाँत वाले, सुन्दर कोमल वचन वाले व मन को प्रसन्न करने वाले तथा अमृत से भरे चंचल नेत्र-पत्र से विचित्र, लोगों के मन को प्रसन्न करने वाले भगवान् श्री विष्णु के कमल रूपी मुख का मैं स्मरण करता हूँ।

जिन भगवान् की भौंहों के प्रभाव मात्र से यमराज के घर की गंध भी नहीं सूँघनी पड़ती, जिनके मध्य सुन्दर नासिका शोभित है और जिन से संसार की सृष्टि, स्थिति और प्रलय होती है व जिनसे कामदेव का महोत्सव प्रकट होता है तथा जिनके देखने से लक्ष्मी जी का हृदय प्रसन्न होता है, ऐसी श्री भगवान् के मुख मंडल पर शोभा पाने वाली, उन भौंहों का मैं ध्यान करता हूँ।

जिन कानों में गालों के पास मछली (मकर) जैसी आकृति वाले चंचल कुण्डल शोभायमान है, जो अनेक दिशाओं तथा आकाश मण्डल को प्रकाश देते हैं। जो कान के आगे लटकते हुए बालों के समूह से कुछ सिकुड़े हुए मालूम होते हैं और जो कान मणियों वाले मुकुट के किनारों पर हैं, ऐसे श्री विष्णु भगवान् के उन कानों का मैं स्मरण करता हूँ।

जिस माथे (भाल) पर मनोहर सुन्दर सुगंधित गोरोचन का तिलक सुशोभित है। जो नेत्रों को आनन्दित करता है। जिस ब्रह्मा भवन रूपी माथे पर मणियों से मण्डित मुकुट जगमगा रहा है, ऐसे मन को लुभाने वाले और सुन्दर नेत्रों वाले श्री विष्णु भगवान् के उस माथे का मैं ध्यान करता हूँ।

अपने प्रिय लोगों के आदरपूर्वक तरह-तरह के सुगन्धित फूलों से (सजाकर) जिन बाँके बालों की वेणी (चोटी) बना कर बाँधी है, जिन हिलते हुए बालों की सुन्दरता से कमल पर बैठी श्री लक्ष्मी की वासना से होने वाला विकार

(बुराई) शान्त हो जाता है। मैं अपने हृदय कमल में श्री विष्णु भगवान् के बादलों के समान सुन्दर लम्बे केशों का ध्यान करता हूँ।

मेघ के समान वर्ण वाले, चन्द्रमा तथा सूर्य के समान प्रकाशमान, जिनकी भौहें इन्द्रधनुष के सामान अत्यन्त सुन्दर हैं और नासिका उठी हुई है। जिनके नेत्र नील कमल के समान विशाल और सुन्दर हैं तथा जो विद्युत के समान चमकते हुए वस्त्र पहने हैं। तीन लोक से न्यारे ऐसे भगवान् विष्णु का मैं आश्रय करता हूँ (शरण लेता हूँ)।

मैं दीन हूँ, वेदों में बताई गई सेवा भी नहीं करता। मेरा शरीर पापों से और दुःखों से भरा है। मैं लोभ से घिरा हूँ और शोक, मोह आदि मानसिक कष्टों से बिंधा हुआ हूँ। हे वासुदेव! अपनी कृपा दृष्टि से मेरी रक्षा करो।

जो इस विधि के जानने वाले मनुष्य भक्तिपूर्वक श्री विष्णु भगवान् की इस अति मनोहर मूर्ति का ध्यानपूर्वक (उपयुक्त) सोलह श्लोकों रूपी फूलों से स्तुति, नमस्कार तथा पूजन करते हैं, वे शुद्ध, मुक्त (जन्म-मरण से छुटकारा पाकर) ब्रह्मानन्द (परमात्मा की अनुभूति से मिलने वाले आनन्द) को प्राप्त करते हैं। यह (श्री पद्मा जी को) शिव जी द्वारा बताया गया, श्री पद्मा जी का कहा गया स्तोत्र अत्यन्त पवित्र है और धन, यश, आयु, स्वर्ग फल को देने वाला तथा मंगल देने वाला है। यह स्तोत्र परलोक तथा इस लोक में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी फलों को देने वाला है। इसे जो भाग्यवान् लोग पढ़ेंगे, वे सब पापों से छूट जाएँगे।

卐 卐

दूसरा अंश

पहला अध्याय

सूत जी बोले—पद्मा जी के ये वचन सुन कर, कल्कि जी के दूत, बुद्धिमान् शुक सखियों के बीच में बैठी पद्मा जी से बोले—हे पद्मे! अद्भुत कर्म करने वाले श्री विष्णु भगवान् की सर्वाङ्ग पूजा (नख से शिख तक) का वर्णन कीजिए, क्योंकि मैं उसका विधिपूर्वक अनुष्ठान कर तीनों लोकों में घूमूँगा।

यह सुनकर पद्मावती ने कहा—इस प्रकार संसार के ईश्वर पूर्णात्मा भगवान् विष्णु का चरणों से लेकर केशों तक ध्यान कर के पूजक मूल-मंत्र का जप करे। जप करने के बाद बुद्धिमान पूजा करने वाला व्यक्ति दण्डवत् (भूमि पर डंडे के समान लेट कर) प्रणाम करे। इसके बाद विश्वक्सेन आदि को पाद्य, अर्घ्य, नैवेद्य आदि देकर विष्णु भगवान् के प्रति अर्पित वस्त्र को हृदय पर रखकर सर्वव्यापी भगवान् विष्णु का स्मरण करते हुए मनोयोग से नृत्य, गान और श्री हरि का संकीर्तन करे। इसके बाद भगवान् विष्णु के बचे हुए निर्माल्य (चढ़ाए गए फूल आदि) को माथे पर धारण कर नैवेद्य (प्रसाद) को लेवे। हे शुक! लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु की पूजा की यह विधि है। इस प्रकार पूजा करने से इच्छा करने वाले व्यक्ति की इच्छा पूरी होती है और निष्काम व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त होती है। यह कथा सुनने में सब को सुख देने वाली है तथा देव, गन्धर्व और मनुष्यों के हृदयों को प्रिय है।

शुक बोला—हे साध्वी! (साधु का स्त्रीलिंग, जो सज्जन व उत्तम के अर्थ में प्रयुक्त होता है)। तुमने मुझ जैसे पापी पक्षी को भी संसार से मुक्ति देने वाले भगवान् विष्णु की

भक्ति के लक्षण बताए। इन लक्षणों को तुम्हारी कृपा से मैंने सुना। (किन्तु) रत्न और आभूषणों से सजी-धजी सोने की सजीव मूर्ति-सी, जिसके समान रूप मिलना संसार में दुर्लभ है, ऐसी तुम लक्ष्मी को मैं देखता हूँ। तुम्हारे समान रूप, शील और गुण वाली स्त्री (मैं) संसार में दूसरी नहीं देखता और न संसार में तुम्हारे योग्य गुणवान् भर्त्ता (पति) ही कहीं दिखाई देता है। किन्तु समुद्र के पार अत्यन्त अद्भुत और गुणवाले साक्षात् ईश्वर रूप किसी अलौकिक मनुष्य को मैंने देखा है। (उस व्यक्ति का) सर्वांग सुन्दर शरीर विधाता का बनाया हुआ नहीं मालूम पड़ता। अगर ध्यान से देखा जाए तो श्री वासुदेव भगवान् और उस के बीच कोई अन्तर नहीं प्रतीत होता। तुम ने असीम तेजवान् भगवान् विष्णु के जिस रूप का ध्यान किया है, उस रूप के साथ मिलान करने से दोनों में कोई भी अन्तर नहीं मालूम पड़ता।

पद्मा जी बोलीं—हे शुक! तुम ने क्या कहा ? फिर से कहो। उन्होंने कहाँ जन्म लिया है ? यदि तुम उनके किए हुए कर्मों का विशेष वृतान्त जानते हो, तो उसे यहाँ विस्तार से बताओ। वृक्ष से उतर कर तुम नीचे आओ, मैं विधिपूर्वक तुम्हारी पूजा (आदर-सत्कार) करूँगी। बिजौरे (गलगल) के फलों का आहार कर, स्वच्छ जल/दूध पियो। मैं तुम्हारी (ऊपर और नीचे वाली) दोनों चोचों को पद्मराग मणि और रत्नों से लाल रंग की चमक वाली और मन को मोहने वाली कराऊँगी। मैं तुम्हारी गर्दन को सोने से युक्त सूर्यकान्त मणि से सजाऊँगी और तुम्हारे दोनों पंखों को मोतियों से मढ़वाऊँगी। तुम्हारे पंख तथा शरीर को केसर से रंगवाकर तुम्हारा ऐसा रूप बनाऊँगी कि तुम्हें देखते ही सबकी आँखों को सुख मिलेगा। तुम्हारी पूँछ को स्वच्छ मणि से गूँथ दूँगी, जिस से तुम्हारे उड़ते समय घर्घर की आवाज़ होगी और तुम्हारे चरणों

को घुँघरुओं से ऐसे सजाऊँगी कि तुम्हारे चलने के समय (नूपुर की) सुमधुर ध्वनि निकलेगी। तुम्हारी अमृत-सी कथा को सुनकर मेरे मन की सारी व्यथा दूर हो गई। मुझे आज्ञा दो और और बताओ कि मैं तुम्हारा क्या काम करूँ। मैं सखियों के साथ तुम्हारी सेवा करने को तैयार हूँ।

पद्मा जी के इस प्रकार के वचन सुनकर प्रसन्न हृदय शुक ने धीरे-धीरे उनके पास जा कर कहना आरंभ किया— ब्रह्मा जी द्वारा प्रार्थना किए जाने पर धर्म की स्थापना के उद्देश्य से अत्यन्त करुणामय, लक्ष्मी जी के पति भगवान् विष्णु ने शम्भल नाम के गाँव में रहने वाले विष्णुयश के घर में जन्म लिया है। वे चार भाइयों, जाति और गोत्र वालों के साथ हैं। उपनयन संस्कार के बाद कल्कि जी ने परशुराम जी के पास जा कर वेदों का अध्ययन किया। इसके बाद वे धनुर्वेद, संगीत विद्या (गान्धर्वेद) सीख कर भगवान् शंकर से घोड़ा तलवार, शुक, कवच और वर प्राप्त करके अपने

शुक और पद्मा जी

संभल ग्राम लौट आए। इसके बाद उन बुद्धिमान कल्कि जी के पास विशाखयूपराज गए और तब कल्कि जी ने राजा की अधर्म युक्त शंकाओं का निवारण किया (और धर्म को प्रकट और अधर्म को दूर किया)।

यह समाचार सुनकर प्रसन्न मुख वाली पद्‌मावती ने कल्कि जी को आदर सहित लाने के लिए शुक को कहा, फिर उस शुक को सोने तथा रत्नों से सजा कर, हाथ जोड़ का उस से बोली—जो कुछ मुझे निवेदन करना है, उसे तुम जानते हो। तुम से (उसके अलावा) और क्या कहूँ, स्त्री-स्वभाव के कारण मेरी आत्मा डर रही है। यदि (मेरे कर्म-दोष के कारण) वे प्रभु न आएँ, तब भी उनको मेरी ओर से प्रणाम करके मेरे कर्मों के दोष के कारण जो कुछ हुआ है, वह सब कह कर उन्हें यह भी बताना कि भगवान् शिव ने जो यह वर मुझे दिया है कि जो पुरुष मुझे वासना की दृष्टि से देखेगा, वह उसी समय स्त्री बन जाएगा, वह मेरे लिए शाप बन गया है।

शुक ने पद्‌मा जी के ये वचन सुनकर उन्हें ढाढस बँधाया और बार-बार प्रणाम कर उड़ते हुए वह कल्कि जी द्वारा पालित तथा रक्षित शंभल ग्राम में पहुँचा। शत्रुओं के नगरों को जीतने वाले कल्कि जी ने शुक का वहाँ पहुँचना सुन कर, अत्यन्त आनन्द देने वाले, सोने और रत्नों से सजे हुए शुक को अपनी गोद में ले लिया। परम तेजस्वी कल्कि जी ने पहले अपने बाएँ हाथ से स्वच्छ किए गए शुक को दूध पिला कर तृप्त किया। इस के बाद अपने मुँह को उसके मुँह से सटाकर कई तरह से बातें पूछीं, जैसे—कौन-से देश से घूम-फिर कर और कौन-सी अद्‌भुत चीज़ देखकर आए हो ? तुम अब तक कहाँ थे और कहाँ से तुमने ये मणि और सोने के आभूषण पाए हैं ? (श्री कल्कि ने कहा)—तुम से मिलने की रात-दिन और सब तरह से मेरी इच्छा रहती है। तुम्हें न

देखने से मुझे एक क्षण भी एक युग के समान लगता रहा है।

कल्कि जी के इस प्रकार के वचन सुनकर शुक ने उन को बार-बार प्रणाम किया और पद्मा जी की पहले बताई गई पूरी कहानी सुनाई। इसके बाद, शुक ने नम्रतापूर्वक अपना पद्मा जी के साथ संवाद और अपने आभूषण धारण करने का हाल-सभी कुछ सुनाया।

कल्कि जी इन वचनों को सुन कर, शीघ्र ही शिवजी द्वारा दिए गए घोड़े पर सवार हो कर प्रसन्नतापूर्वक शुक के साथ गए। समुद्र के पार, स्वच्छ जल के बीच तरह-तरह के विमानों से परिपूर्ण तथा मणि और सोने से जगमगाती हुई। महलों और ऊँचे मकानों पर फहराते हुए झंडे तथा तोरणों (द्वारों) से सजी हुई। सभा मंडपों, दुकानों, महलों व बस्तियों तथा नगर-द्वार की पांतों से शोभित एवं पद्मिनी स्त्रियों की कमल-गंध से प्रसन्न भौंरों वाली, सुनिर्मित सिंहल पुरी (द्वीप) में पहुँच कर कल्कि जी ने सामने स्थित नगरी को देखा।

हंसों के समूह के (इधर-उधर) घूमने से नगरी के तालाब में हिलोरें उठ रही हैं। तालाब के खिले हुए कमलों में भौंरे गूँज रहे हैं। तालाबों के चारों ओर हंस, सारस, जलमुर्ग (जल-कौवे) पक्षियों के समूह वहाँ कलरव कर रहे हैं। स्वच्छ जल की चंचल तरंगों के साथ (अथवा समान) वन में बयार चल रही है। कदम्ब, कांचन वृक्ष, शाल, ताल, आम, मौलश्री, कैथ, खजूर, बिजौर, नींबू, करंजन, पुन्नाग, पनस, नागरंग, अर्जुन, शिंशपा, सुपारी तथा नारियल आदि अनेक वृक्षों से वन शोभायमान है। इस प्रकार फलों, फूलों और पत्रों से शोभायमान वह वन कल्कि जी ने देखा। यह सब देख कर नगर के पास वाले वन में पुलकित शरीर वाले कल्कि जी शुक से करुणा-पूर्वक आदर के साथ ये प्रीतिपूर्ण वचन बोले—यहाँ सरोवर में स्नान करेंगे। इस प्रकार के वचन सुनकर

श्री कल्कि भगवान् की बात को समझ कर शुक ने विनयपूर्वक यह निवेदन किया—अब मैं पद्मावती के घर जाता हूँ। फिर शुक ने पद्मावती के समीप जाकर कल्कि जी द्वारा कहे गए वचन और उनके आने की पूरी बात बताई।

दूसरा अध्याय

सूत जी बोले—घोड़े से उतर कर सरोवर के पास, जल लाने वाले मार्ग से, मूंगों से शोभायमान, कमलों की सुगन्ध से मस्त, भौंरों की गूँज से पूर्ण शोभायमान, कमलों की सुगन्ध से मस्त, भौंरों की गूँज से पूर्ण, साफ पारदर्शी स्फटिक की बनी सीढ़ियों के चबूतरे पर, कदम्ब वृक्ष के नए-नए पत्तों से छन कर आती हुई सूरज की किरणों के बीच बैठे कल्कि भगवान् ने शुक को पद्मावती के आश्रम में भेजा। वहाँ पहुँच कर नागकेसर के वृक्ष पर बैठे हुए शुक ने सखियों से घिरी हुई और अटारी के ऊपर कमल के पत्तों की सेज पर शयन करती पद्मा जी को देखा। उस ने देखा कि साँस की गर्मी से उनका कमल रूपी मुख मलिन हो गया है और वह अपनी सखियों के दिए हुए चन्दन की गंध से युक्त कमल को हाथ से हिला रही है। दक्षिण दिशा से आया हुआ, परागयुक्त पानी को धारण किए हुए, रसपूर्ण, प्रिय पवन तक भी पद्मावती के द्वारा निन्दित है (के सामने फीका पड़ रहा है)।

(ऐसे ही समय) करुणामय हृदय से शुक ने प्रिय वचन कह कर पद्मा जी को ढाढस बँधाया। तब पद्मा जी ने कहा—आओ-आओ, तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हारा स्वागत है। शुक ने उत्तर दिया—शुभे (कल्याणि), मैं सकुशल हूँ।

पद्मा जी ने कहा—हे शुक! तुम्हारे जाने पर अर्थात् जब से तुम गए हो, तब से मैं बहुत व्याकुल हूँ। उत्तर में शुक ने कहा—अब रसायन द्वारा तुम्हें शान्ति मिलेगी। पद्मावती ने

उत्तर दिया—मेरे लिए रसायन मिलना भी कठिन है। शुक बोले—हे शिवजी की शिष्या, तुम्हारे लिए रसायन सुलभ ही है।(यहाँ रसायन का अभिप्राय श्री कल्कि प्राप्ति रूपी औषध है।)

पद्मा जी बोली—हे शुक! मुझ भाग्यहीन का मनोरथ किस तरह, कहाँ सफल होगा ? शुक ने उत्तर दिया—हे श्रेष्ठ देवि! इसी स्थान पर मैं उन (श्री कल्कि जी) को तालाब के किनारे पर बैठा कर यहाँ आया हूँ।

इस प्रकार पद्मा जी और शुक की आपस में बातचीत होने पर, अपने मनोरथ के पूरा होने के हर्ष में पद्मा जी आदरपूर्वक शुक के मुख के समक्ष अपना मुख करके, आँखों में आँखें डाल कर उसे आनन्दपूर्वक देखने लगीं। विमला, मालिनी, लोला, कमला, कामकन्दला, विलासिनी, चारूमती, कुमुदा—ये (पद्मा की) आठ नायिका-सखियाँ हैं। इन सखियों के साथ जल क्रीड़ा करने को तैयार हो कर पद्मा जी ने कहा—सखियों! मेरे साथ तालाब के किनारे चलो। यह कह कर सुन्दर वेश वाली सखियों से घिरी हुई पद्मा जी पालकी पर सवार होकर अपने अन्तःपुर से शीघ्र ही बाहर निकली, जिस प्रकार रुक्मणि भगवान् कृष्ण के दर्शनों के लिए बाहर आई थी। पद्मा जी जिस रास्ते से चली, उस रास्ते के चौराहों पर अथवा दुकानों पर जो लोग थे, वे पद्मा जी को देखते ही स्त्री बन जाएँगे, इस डर से चारों ओर जहाँ जिन को राह मिली, उधर ही भाग गए। उन भागने वाले पुरुषों की स्त्रियाँ (वन-पर्वतों में) अपने पुरुषों के निरापद रहने के लिए देवपूजादि अनुष्ठान करने लगीं। इस तरह रास्ता पुरुषों से खाली हो गया। (तब) मदमाती बलवती महिलाएँ पालकी को ले चलीं। पद्मा जी शुक के कहने के अनुसार उस पालकी में बैठी (́और) उन सखियों से घिरी हुई वहाँ से

चल दीं। इसके बाद सारस और हंस आदि की मधुर ध्वनि से गुंजायमान, खिले हुए कमल के पराग से सुगन्धित सरोवर के पानी में स्नान कर, कुमुदिनी फूल को खिलाने वाले चन्द्रमा के उदय होने की आशा में वे चन्द्रमुखी सुन्दरियाँ (वहाँ) घूमने लगीं। इन सुन्दरियों के कमल रूपी मुखों की सुगन्ध से भौंरे अन्धे हो गए (भ्रम में पड़ गए) और इसीलिए वे और खिले हुए कमलों को छोड़कर उनके कमल रूपी मुखों पर बैठने (मँडराने) लगे। सुन्दरियाँ बार-बार इन भौंरों को उड़ाती हैं, पर वे उन मुखों में अत्यन्त सुगन्ध पा कर उन्हें छोड़ते नहीं हैं।

सरस हँसी-मज़ाक, बाजे तथा नाच के साथ हाथ-में-हाथ मिला कर जल में क्रीड़ा करने व तैरने में मस्त सखियों के मन को पद्मा जी ने तथा पद्मा जी के मन को सखियों ने हर लिया। इस के बाद (वह) पद्मा जी काम से व्याकुल मन में शुक के वचनों पर विचार करती हुई सखियों सहित जल से बाहर निकल कर, मूल्यवान् आभूषणों को पहन कर, शुक द्वारा बताए हुए कदम्ब वृक्ष के नीचे पहुँची। शुक के साथ वहाँ जा कर मणियों से सजे चबूतरे पर महामणियों से विभूषित सूर्य की चमक से भी अधिक तेजोमय भगवान् कल्कि को अपने सामने सुख से सोते हुए (पद्मा जी ने देखा)। तमाल के पत्तों के समान नीले रंग वाले, पीले वस्त्र पहले हुए, सुन्दर कमल जैसी आँखों वाले, घुटने तक पहुँच रही भुजाओं वाले, विशाल वक्ष तथा पतली कमर वाले, श्रीवत्स से चिह्नित हृदय वाले और छाती पर कौस्तुभ मणि की कान्ति से प्रकाशित कमला पति भगवान् कल्कि जी विराजमान हैं। उस अद्भुत रूप को देख कर पद्मा जी ठगी-सी रह गई और उचित आदर-सत्कार करना भूल गई। हृदय में शंका होने के कारण पद्मा जी ने उन्हें जगाने को मना किया। (पद्माजी ने सोचा)—कहीं ऐसा न हो कि

मुझे देखने से ये महान् बलवान, अत्यन्त सुन्दर पुरुष स्त्री बन जाए। तब यहाँ मेरा क्या होगा, कहीं मेरे लिए शिव का वरदान अभिशाप का रूप न ले ले। इसके बाद, इस जड़ और चेतन संसार के स्वामी भगवान् कल्कि जी पद्मा जी के मन की बात को समझ कर जागे और देखा कि परम रूपवती पद्मा जी वहाँ खड़ी हैं, मानों मधुसूदन भगवान् विष्णु के सामने लक्ष्मी खड़ी हों। सखियों के साथ आई हुई, बिना पलक मारे कटाक्ष करती (आँखों के हाव-भाव से मोहती) हुई पद्मा जी को देख कर उस साक्षात् माया के समान मोहिनी रूप राजकुमारी पद्मा जी से श्री कल्कि जी ने काम से व्याकुल होते हुए कहा—

हे सुन्दरी (कान्ते)! यहाँ आओ। सौभाग्य से तुम्हारा यहाँ आना मेरे लिए शुभ हुआ है। तुम्हारे चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख से मेरी वासना का ताप दूर होकर सुख बढ़ेगा। हे चंचल नेत्रों वाली! मुझ संसार के विधाता को काम रूपी साँप ने डसा है। तुम्हारी सुन्दरता के रस रूपी अमृत से उसकी शान्ति हो सकती है। यह शान्ति बहुत पुण्य करके भी कठिनता से प्राप्त होती है और यह शान्ति तुम्हारा सहारा पाने वाले का जीवन है। महावत जिस तरह मस्त हाथी के कुम्भ पर अंकुश घुमाता है, (मेरी इच्छा है कि) तुम्हारी ये सुन्दर और बड़ी बाँहें श्रेष्ठ नाखून रूपी अंकुश द्वारा मेरे हृदय में स्थित कामदेव रूपी हाथी के कुंभ को छेद डालें। वस्त्र से ढके तुम्हारे ये दोनों गोल स्तन कामदेव के चाबुक की भाँति सिर उठा रहे हैं। मेरे प्रगाढ़ आलिंगन से अभिमान-भंग और विनीत बनकर मुझे परम सुख देंगे। हे प्रिय! तुम्हारी कमर यज्ञ की वेदी के बीच के भाग की तरह पतली है। उस में तीन बल पड़े हुए हैं, उन पर सुन्दर रोएँ उगे हैं। मैं जानता हूँ कि त्रिवली रेखा तुम्हारे प्रिय के काम मार्ग में उतरने की सीढ़ी है। हे रंभा के समान

भगवान कल्कि के समीप पहुँचकर उन्हें निहारती पद्मा जी

जंघा वाली, पुलिन के समान तुम्हारे नितम्ब-बिम्ब हमारे संभोग सुख को पूरा करें। हे पतली काया वाली! झीने वस्त्र से ढके तुम्हारे नितम्ब मंडल पर कामदेव से मस्त हुए पुरुष के भोग की इच्छा पूरी हो जाती है। इस समय ये नितम्ब हमें संभोग का सुख प्रदान करें। मेरे निर्मल हृदय रूपी जल में कामदेव रूपी साँप के काटने से विष पैदा हो गया है, जिस की शान्ति तुम्हारे अति सुन्दर चरण-कमल कर सकते हैं; जो उंगली रूपी पत्र से चित्रित और हंस के समान शब्द करने वाले घुँघुरुओं से शोभायमान हैं।

कलि कुल का नाश करने वाले कल्कि जी के इस अमृत के समान वचन को सुनकर उनके सत्पुरुषत्व से हर्षित, सखियों से घिरी हुई पद्मा जी को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। (पद्मा जी के समक्ष होने पर उनकी कामना करते हुए भी कल्कि जी का पुरुषत्व अक्षत रहा। अन्य पुरुषों/राजाओं की भाँति स्त्रीत्व में परिवर्तित नहीं हुआ)। फिर मन्त्र-मुग्ध सी क्लान्त मन हुई पद्मा जी अपने कान्त (कल्कि जी)के मन

को खिन्न देखकर अपनी सखियों सहित गर्दन झुकाकर, हाथों की अंजली बाँधकर धीरता पूर्वक अपने पति को प्रणाम कर कहने लगीं।

तीसरा अध्याय

सूत जी बोले—प्रेम के कारण जिस की वाणी गद्‌गद हो गई थी, ऐसी पद्‌मा जी उन कल्कि जी को साक्षात् विष्णु भगवान् जान कर लज्जा के कारण सिर झुका उन करुणा के सागर भगवान् की स्तुति करने लगी—हे संसार के स्वामी, धर्म के वर्म (कवच-रक्षा करने वाले), रमा (लक्ष्मी) के पति, प्रसन्न हो। हे विशुद्ध आत्मा वाले, मैं आप को पहचान गई हूँ। मैं आपकी शरण में आई हूँ। मेरी रक्षा करो। मैं धन्य हो गई हूँ। मैं पुण्यवती हूँ। तप, दान, जप एवं व्रतादि से आपको सन्तुष्ट कर कठिनता से आराधना किए जाने योग्य आप के कमल रूपी चरणों को मैंने पा लिया है। मुझे आज्ञा दीजिए, ताकि मैं आप के सुन्दर कमल रूपी चरणों को छू कर घर जाऊँ और राजा (अपने पिता) को आप के शुभागमन की बात बता सकूँ।

इस प्रकार कह कर, रूप की खान पद्‌मा जी अपने घर गई और अपने पिता राजा के पास जाकर अपने दूत द्वारा विष्णु भगवान् के अंश (रूप) कल्कि जी के आने की बात बताई।

सखी के मुँह से पद्‌मा जी से विवाह करने की इच्छा से श्री विष्णु भगवान् के आने की बात सुन कर राजा बृहद्रथ प्रसन्न हुए। इसके बाद राजा, पुरोहित, ब्राह्मण, परिवार के लोगों (तथा) मित्रों के साथ पूजा की सामग्री साथ लेकर नाचते गाते व अनेक वाद्य बजाते हुए श्री कल्कि जी को लाने चल दिये। (श्री कल्कि जी के आने के उपलक्ष्य में) कारूमती

नगरी को झंडियों एवं सोने के महराबदार द्वारों से सजाया गया। फिर राजा बृहद्रथ ने तालाब के पास जा कर देखा कि श्री विष्णुयश के पुत्र (और) भुवनों के स्वामी भगवान् विष्णु मणियों की वेदी पर विराजमान हैं। घनघोर बादलों के ऊपर जैसे दीप्तिमान बिजली, इन्द्र-धनुष आदि शोभा पाते हैं, इसी प्रकार कृष्ण वर्ण के कल्कि जी के अंग पर आभूषण दमक रहे हैं। रूप और सुन्दरता की खान, कामदेव के उद्यम को नाश करने वाले अर्थात् कामदेव की चेष्टा को समाप्त करने वाले, शरीर पर पीले कपड़े पहने हुए, तेज प्रभा से शोभित तथा रूप, शील और गुणों की खान भगवान् कल्कि को राजा ने अपने सामने देखा और श्रीश (लक्ष्मी जी के स्वामी) भगवान् कल्कि को देखकर आँसुओं से भरे नेत्रों तथा पुलकित शरीर से उनकी विधिपूर्वक पूजा की।

इसके बाद राजा बृहद्रथ ने कहा हे—जगदीश्वर, जिस प्रकार मान्धाता के पुत्र से वन में यदुनाथ मिले थे, उसी प्रकार

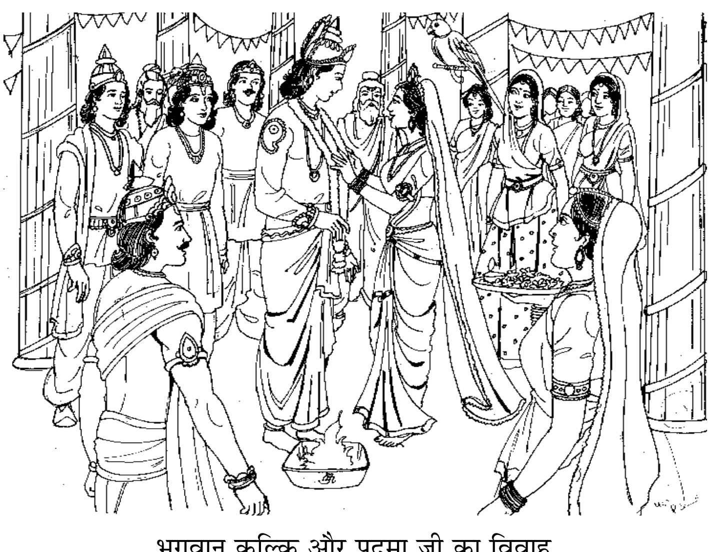

भगवान कल्कि और पद्मा जी का विवाह

आपका आगमन मुझे भी लगा।

यह कहकर (राजा ने) उन की पूजा की और उन्हें अपने आश्रम (राजभवन) ले आए। वहाँ अपने भव्य महल में उन्हें ठहराकर अपनी कन्या उन को दी, अर्थात् कन्यादान किया।

कमल से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा जी के आदेश के अनुसार पद्मानाभ, कमलनेत्र भगवान् कल्कि जी को, कमल के पत्ते जैसी (सुन्दर सुकोमल) आँखों वाली पद्मा जी को विधिपूर्वक समर्पित किया।

प्यारी पत्नी को पा कर और सज्जनों द्वारा सम्मान पा कर सिंहल द्वीप के उत्तम स्थान को देख कर उनकी विशेषता को जानने वाले भगवान् कुछ दिन वहाँ ठहरे। जो राजा स्त्री बन गए थे और पद्मा जी की सखी हो गए थे, वे लोग संसार के स्वामी कल्कि भगवान् को देखने शीघ्र ही वहाँ आ गए। वे स्त्रियाँ (स्त्रीत्व को प्राप्त राजागण) श्री भगवान् कल्कि को देखकर और उनके चरण छू कर तथा उनकी आज्ञा से रेवा नदी में स्नान करने के बाद फिर पुरुषत्व को प्राप्त हुईं, यानी फिर पुरुष बन गईं।

पद्मा जी का रंग तो गोरा है और कल्कि जी का रंग काला है। ये दोनों रंग एक-दूसरे के उल्टे हैं। इसी प्रकार पद्मा जी के नीले कपड़े हैं और कल्कि जी के पीले कपड़े हैं। इन दोनों के रंगों का यानी नीले और पीले का आपस में अच्छा मेल प्रतीत होता है।

राजा लोग कल्कि जी का परम और अद्भुत प्रभाव देखकर उनकी शरण में आकर बड़ी भक्ति के साथ उन्हें प्रणाम कर स्तुति करने लगे—हे देव, आप की जय हो! आपकी जय हो! आपकी कल्पना (सोचने) करने से संसार में तरह-तरह की विचित्र कल्पनाएँ पैदा होती हैं और आप के

प्रभाव से वे कल्पनाएँ साकार होती हैं। जब तीनों लोक प्रलय के जल में डूब गए, तब आप निर्जन स्थल में प्रकट हुए थे। आपने ही धर्म-सेतु के संरक्षण के लिए मत्स्य-देह धारण की थी। राक्षसों की सेना जब इन्द्र को हराने लगी और तीनों लोकों को जीतने वाला अत्यन्त वीर हिरण्याक्ष जब इन्द्र का संहार करने चला, तब उसका नाश कर पृथ्वी का उद्धार करने का संकल्प कर आप वराह (शूकर) के रूप में प्रकट हुए थे। हे भगवान्! वही आप हमारी रक्षा करें। फिर जब देवता और राक्षस मिल कर समुद्र को मथते समय मन्दरांचल (पर्वत) का आधार-स्थान न पाकर दुःखी हुए, उस समय आप ने उनकी सहायता के लिए संकल्प किया और कूर्मावतार (कछुए के रूप में अवतार लेकर) में अपनी पीठ पर मन्दरांचल धारण किया। देवताओं को अमृत पिलाने के उद्देश्य से ही आपका कूर्मावतार हुआ। हे परमेश्वर! अब आप हम दीन-हीन राजाओं पर प्रसन्न होवें।

इसके बाद जब महा बलवान् और महावीर, तीनों लोकों को जीतने वाला हिरण्यकश्यप देवताओं को कष्ट पहुँचाने लगा और देवता लोग जब बहुत डर गए, तब आपने देवताओं की भलाई के लिए उस हिरण्यकश्यप (दैत्यों के राजा) को मार डालने का संकल्प किया। दैत्यराज को ब्रह्मा जी का वर मिला हुआ था कि वह देवता, गन्धर्व, किन्नर, नर, नाग और शस्त्र तथा अस्त्र (यानी इनमें से किसी के द्वारा भी) रात में या दिन में, स्वर्ग में या पाताल में या मृत्युलोक में कहीं भी नहीं मारा जा सकता। (ऐसे विचित्र वर का हल ढूँढ़ कर) आप ने सब बातों पर विचार कर नृसिंह मूर्ति धारण की। दैत्यराज आपको देखकर क्रोध के मारे आग बबूला हो, दाँत से होंठों को काटता हुआ, कमर कस कर आपसे लड़ने को तैयार हो गया। आपने अपने नाखूनों से उसके मर्म (हृदय)

को फाड़कर उसे यमलोक पहुँचाया। इसके बाद, तीनों लोकों को जीतने वाले महाराजा बलि के यज्ञ में इन्द्र के छोटे भाई बनकर आपने वामन का रूप धारण किया और दैत्यराज पर सम्मोहन डालकर (मोहित कर केवल) तीन पग भूमि माँगी। दान करने के लिए जल छोड़ते ही जब आप की अभिलाषा पूरी हो गई, तब आपने छल से विराट् रूप धारण किया, फिर तीनों लोकों को दान करने के फलस्वरूप आप पाताल में बलि के द्वारपाल होकर रहे। इसके बाद, जब अत्यन्त बलवान् पराक्रमी अपने घमंड में चूर हैहय आदि राजाओं ने धर्म की मार्यादा को तोड़ा, तब उनका नाश करने के लिए आपने भृगुवंश में श्रेष्ठ परशुराम के रूप में अवतार धारण किया। उस समय अपने पिता के यज्ञ की गाय का अपहरण किए जाने से क्रुद्ध आप ने पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियों से रहित कर दिया। इसके बाद, पुलस्त्य वंश के श्रेष्ठ विश्रवा मुनि के राक्षस पुत्र रावण के अत्याचार से जब तीनों लोक दुःखी हुए, तब उनका नाश करने के लिए आप ने सूर्यवंशी राजा दशरथ के यहाँ राम के रूप में अवतार लिया था। उसके बाद, विश्वामित्र जी से आप ने अस्त्र विद्या सीखी। जब रावण ने सीता जी का हरण किया, तब आप ने क्रोधित होकर वानरों की सेना इकट्ठा कर रावण का उसके वंशसहित नाश किया था। इसके बाद आप ने यदुकुल रूपी समुद्र के लिए चन्द्रमा के समान वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण (और बलराम) के रूप में अवतार लिया और अनेक राक्षसों यानी दानव और दैत्यों का नाश कर तीनों लोकों के पापों को दूर किया था। इसके कारण सारे देवतागण आप के उस अवतार रूप के चरण-कमलों की सेवा करने लगे, उस समय आप ने बलभद्र रूप से भी अवतार लिया था। इसके उपरान्त, ब्रह्मा के बनाए हुए वैदिक धर्म के यज्ञानुष्ठानों में आई अनेक क्रूरता देखकर

आपने बुद्ध अवतार धारण किया और संसार त्याग द्वारा माया-प्रपंच से रहित मोक्ष प्राप्त करने का चतुराई भरा उपदेश दिया, परन्तु कर्म-मार्ग का स्वयं उल्लंघन नहीं किया। इस समय आप कलिकुल (कलियुग में होने वाली बुराइयों) का नाश करने के लिए, बौद्ध पाखंडियों, म्लेच्छों आदि को दण्ड देने के लिए वैदिक धर्म रूपी सेतु (पुल) की रक्षा कर रहे हैं। आप ने ही हम सब का स्त्रीत्व रूपी नरक से (जिसमें पद्मा जी को काम-भावना से देखने के कारण पड़ गए थे) उद्धार किया है। अतएव हम लोग आप की इस कृपा का वर्णन कैसे करें, अर्थात् वर्णन करने में असमर्थ हैं। ब्रह्मा आदि देवता भी आप की लीला (जो आप अवतार लेकर दिखाते हैं) नहीं जान सकते (अथवा आपको अवतार विषय की इच्छा कभी नहीं हो सकती)। हम लोग स्त्री दर्शन करने से कामदेव के बाण से पीड़ित हुए और मृगतृष्णा (प्यास से भटकता हिरन जब गलती से रेत को ही पानी समझ कर उस ओर भागता है) से दुःखी जीव हैं। हमारे लिए आप के कमल रूपी चरणों को पाना अत्यन्त कठिन है। आप कृपा के सागर हैं। आप करुणा भाव से एक बार हम पर अपनी कृपा दृष्टि डालकर हमें ढाँढस बँधाइए।

चौथा अध्याय

सूत जी ने कहा—पुरुषोत्तम कल्कि जी ने भक्त राजाओं के वचन सुनकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन चारों वर्णों के धर्म अर्थात् कर्त्तव्यों का वर्णन किया। संसार में लिप्त और संसार से विरक्त लोगों के लिए वेदों ने जो कर्म बताए हैं, उन सब को सुनाया। कल्कि जी के ये वचन सुनकर राजाओं के हृदय पवित्र हो गए। इसके बाद उन्होंने कल्कि जी को फिर नमस्कार किया और अपनी पिछली अवस्था के

बारे में पूछा—(राजाओं ने पूछा कि) मनुष्यों में स्त्रीत्व और पुरुषत्व के भेद किस ने किए हैं ? बुढ़ापे, जवानी, बचपन और सुख-दुःखादि के कारण क्या हैं ? हे भगवान्! ये सब कहाँ से, किस से आए हैं, क्या हैं ?—ये सब विषय जिनके बारे में हम कुछ नहीं समझते, उनका आप वर्णन करें।

(कल्कि जी ने यह सुनकर अनन्त नाम के मुनि को याद किया।) याद करते ही वे मुनियों में श्रेष्ठ, बहुत समय से तीर्थों में रहने वाले तथा व्रत धारण करने वाले अनन्त मुनि यह जान गए कि (अब) कल्कि जी के दर्शन से मेरी मुक्ति होगी, इसलिए वे शीघ्र ही वहाँ आ गए, क्योंकि उनके लिए मुक्ति पाने का कोई दूसरा उपाय नहीं था। अतः वे कल्कि जी के पास जा कर बोले—मुझे क्या करना होगा ? कहाँ जाना होगा ? मुझे आज्ञा दीजिए। ये वचन सुनकर कल्कि जी ने हँसकर मुनिवर से कहा—'आप ने हमारे किए हुए सभी काम देखे हैं और आप को सब मालूम है। भाग्य को कोई नहीं पलट सकता और बिना काम किए किसी को फल नहीं मिलता।'

मुनि ये वचन सुनकर प्रसन्न हुए।

उन्हें (मुनिवर को) जाने के लिए तैयार देख कर, अचंभे में पड़े चित्त वाले राजाओं ने कमल के समान सुन्दर नेत्र वाले कल्कि जी से कहा—'मुनिवर ने क्या कहा है ? आपने उन्हें क्या उत्तर दिया ? आप दोनों के बीच क्या बातें हुईं ? उस सब को हम सुनना चाहते हैं।'

राजाओं के ये वचन सुनकर मधुसूदन (मधु नामक राक्षस के संहारक) कल्कि जी बोले—'हमारी बातचीत के संबंध में इस शांत हृदय वाले मुनि जी से पूछो।'

श्रेष्ठ राजागण कल्कि जी के वचन सुनकर प्रश्न का भेद जानने के लिए नत-मस्तक होकर अनन्त जी से बोले—'हे मुनि! कल्कि जी से, जो कि धर्म के वर्म (कवच अथवा

रक्षक) हैं, आप की जो बातचीत हुई है, वह कठिनता से समझी जा सकती है। हे प्रभु! आप उस का तत्व यानी गहरा रहस्य हम लोगों को बताइए।'

मुनि श्रेष्ठ बोले—'प्राचीन समय में पुरिका नामक स्थान (पुरी) में वेद-वेदांगों को जानने वाले, धर्म के जानने वाले, विद्रुम नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे दूसरों की भलाई में लगे रहते थे। वे ही मेरे पिता थे। हे विभो! मेरी माता का नाम सोमा था। वे पतिव्रता थीं। मेरे माता-पिता के समर्थ होने पर मेरा जन्म हुआ। परन्तु मैं क्लीव (नपुंसक या हिजड़ा) पैदा हुआ। मेरा जन्म होने पर मेरे माता-पिता बहुत दुःख और शोक से व्याकुल हुए। सब लोग मेरी निन्दा करने लगे। मुझे क्लीव (नपुंसक) देखकर मेरे पिता घर-बार त्याग कर शिव वन में जाकर धूप, दीप, चन्दन आदि से विधि पूर्वक महादेव जी की पूजा करने लगे। भगवान् शिव शान्त हैं, सारे लोकों के स्वामी हैं, सभी प्राणियों के आश्रय हैं। जिन के गले का हार वासुकि नाम का नाग है। जिन की जटाओं के जाल में गंगा-तरंग सुशोभित है। ऐसे आनन्द के देने वाले महादेव जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

कल्याण के देने वाले महादेव जी ने इस प्रकार अनेक स्तोत्र (भगवान् की स्तुति में गाए गए छन्दों) से सन्तुष्ट होकर, अपनी सवारी नन्दी पर बैठ कर प्रकट हुए और प्रसन्न चित्त होकर मेरे पिता जी से वर माँगने को कहा। मेरे पिता विद्रुम जी बोले—'मेरा पुत्र नपुंसक है, इसलिए मैं अत्यन्त दुःखी हूँ।' महादेव जी ने हँस कर मुझे पुरुष होने का वर दिया। पार्वती जी ने भी इस वरदान का अनुमोदन (समर्थन) किया। इसके बाद, मेरे पुरुषत्व का वर प्राप्त होने पर मेरे पिता घर आ गए। मुझे पुरुष बना देख कर मेरे माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए। इसके बाद, जब मेरी अवस्था बारह वर्ष की हुई, तब मेरे माता-पिता ने मेरा

विवाह कर दिया और वे बन्धु-बान्धवों सहित बहुत प्रसन्न हुए। मेरी पत्नी यज्ञरात की पुत्री थी। वह रूपवती थी और यौवन वाली मानिनी (जिसे अपने रूप रंग का घमंड हो) थी। मैं उसे पा कर सन्तुष्ट हो गृहस्थ आश्रम में रहने लगा और धीरे-धीरे स्त्री के वश में हो गया। इसके उपरान्त, कुछ समय बीतने पर मेरे माता-पिता स्वर्ग सिधार गए। मैंने अपने इष्टमित्रों और ब्राह्मणों के साथ उनके पारलौकिक (मरने के बाद दिवंगत आत्मा के लिए किए गए) कर्म किए। मैंने अपने माता-पिता के पारलौकिक कर्मों के करने के बाद अनेक ब्राह्मणों को भोजन कराया। चूँकि मैं अपने माता-पिता की मृत्यु के कारण बहुत दुःखी था, मैंने भगवान् विष्णु की आराधना शुरू की। भगवान् विष्णु मेरे जप, पूजा आदि कर्मों से सन्तुष्ट हुए और मुझ से स्वप्न में कहा—इस संसार में स्नेह, मोह आदि से बनी यह मेरी ही माया है। ये मेरे पिता हैं, ये मेरी माता हैं—इस तरह की ममता से जिन लोगों का मन दुःखी होता है, वे ही लोग शोक, दुःख, भय, उद्वेग (क्रोध आदि), बुढ़ापे और मृत्यु का कष्ट अनुभव करते हैं। मैं भगवान् विष्णु का यह वचन सुनकर जैसे ही इसका उत्तर देने को तैयार हुआ, वैसे ही वे अन्तर्धान हो गए और मेरी नींद टूट गई। हे राजागण! फिर मैं अचंभे में पड़ गया और अपनी पत्नी के साथ उस पुरिका नगरी को छोड़कर पुरुषोत्तम नाम के श्री विष्णु भगवान् के स्थान पर आया। मैं उसी पुरुषोत्तम नामक स्थान के दक्षिण भाग में सुन्दर आश्रम बना कर अपनी पत्नी और सेवकों के साथ विष्णु भगवान् की सेवा करने लगा। मैं भगवान् विष्णु के उस वास स्थान में रह कर उनकी माया देखने की इच्छा से यमराज के भय को नाश करने वाले भगवान् विष्णु का ध्यान नाच कर, गा कर तथा जप करके करने लगा। इसी प्रकार बारह वर्ष व्यतीत होने पर, व्रत की समाप्ति के दिन द्वादशी को, मैं अपने बन्धुओं

के साथ स्नान करने की इच्छा से समुद्र-तट पर गया। इसके उपरान्त, मैंने ज्योंही समुद्र में गोता मारा, त्योंही भयानक चंचल लहरों से परेशान होने पर, मैंने अपने को उठने में समर्थ नहीं पाया। समुद्र के जानवर जैसे मच्छ आदि मुझे चुभने लगे, यानी वे मुझे चोट पहुँचाने लगे। मैं कभी उतराने (उछलने) लगा, (तो कभी) डूबने लगा, जिससे मेरा चित्त व्याकुल हो गया और मैं पानी की लहरों (के थपेड़ों) से चेतनाहीन (बेहोश-सा) हो गया। मेरे अंग शिथिल (ढीले) पड़ गए। इसके बाद हवा के झोंके से बहता हुआ मैं समुद्र के दक्षिणी तट पर आ लगा। ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वृद्ध शर्मा नाम के एक ब्राह्मण मुझे वहाँ पड़ा देखकर, सन्ध्या-उपासना करने के बाद मुझे अपने घर ले आए। धर्मात्मा, पुत्र-स्त्री वाले और धनवान वृद्ध शर्मा मुझे स्वस्थ बना के पुत्र के समान मेरा पालन-पोषण करने लगे। हे राजागण! उस स्थान में मुझे दिशाओं का ज्ञान भी न रहा और अत्यन्त बेबस हो गया। मैंने उस ब्राह्मण दम्पती (स्त्री व पति) को अपना माता-पिता समझ कर वहीं रहना शुरू कर दिया। उस ब्राह्मण ने मुझे अनेक तरह से वेद में बताए गए धर्म का पालन करने वाला जान कर, नम्रतापूर्वक अपनी कन्या का विवाह मुझ से कर दिया। ब्राह्मण की कन्या का नाम चारुमती था। उस रूप, गुण से युक्त, तपाए हुए सोने के समान रंग वाली, मानिनी (जिसे अपने रूप पर घमंड हो) स्त्री को पा कर मैं अत्यन्त विस्मित हुआ, यानी अचंभे व खुशी से भर गया। चारुमती ने मुझे हर तरह से सन्तुष्ट किया और मैंने तरह-तरह के भोग और सुखों का आनन्द उठाया। समय पर पाँच पुत्र हुए और मेरा सुख बढ़ता गया। मेरे पाँच पुत्रों के नाम थे—जय, विजय, कमल, विमल और बुध। मैं पुत्र और आत्मीय (अपने) लोगों से युक्त, तरह-तरह के धन का स्वामी बन गया और स्वर्ग में देवताओं के राजा इन्द्र की भाँति प्रसिद्ध और पूज्य हो

गया। जब मैं बड़े पुत्र बुध के विवाह के लिए तैयार हुआ तो धर्मसार नाम के ब्राह्मण ने अपनी कन्या को दान देने की इच्छा प्रकट की और उस ने अपनी कन्या के विवाह के लिए वेदों को जानने वाले ब्राह्मणों द्वारा उत्सवादि (आभ्युदयिक श्राद्ध) सम्पन्न किए। सोने के आभूषणों से सजी हुई अनेक महिलाएँ बाजे-गाजे के साथ नाचने-गाने लगीं। मैं अपने पुत्र के अभ्युदय (उन्नति या सफलता) की इच्छा से पितृ-तर्पण, देव तर्पण तथा ऋषि तर्पण करने के लिए बड़े आदर से समुद्र तट पर गया। स्नान तर्पण के बाद मैं जल्दी ही पानी से निकल कर तट की ओर जाने लगा तो देखा कि मेरे पहले के आश्रम के भाई-बन्धु स्नान और संध्यादि करके आ रहे हैं। यह देख कर मैं बहुत बेचैन हो गया। हे राजागण! पुरुषोत्तम नगर के निवासी ब्राह्मणों को भगवान् विष्णु की सेवा और द्वादशी व्रत की समाप्ति के लिए तैयार देखकर मेरे चित्त में अत्यधिक अचरज हुआ। मेरे रूप और मेरी अवस्था में पहले से कुछ भी बदलाव नहीं आया था। मुझे अपने सामने ऐसा अचरज-भरा देख कर, पुरुषोत्तम वासियों ने मुझ से पूछा—'हे अनन्त! तुम तो भगवान् विष्णु के भक्त हो। तुम ने इस जगह पानी और भूमि में क्या देखा है ? हम तुम्हें क्यों इतना परेशान देख रहे हैं ? अपने इस अचरज को छोड़ो और जो देखा हो, वह बताओ। अपने व्रत का पारण करो।'

मैंने उन लोगों से कहा—'मुझे कुछ भी दिखाई व सुनाई नहीं दिया, परन्तु मैं काम-वासना से मोहित हो गया हूँ और मेरा अन्तःकरण बहुत कमजोर है। मुझे भगवान् विष्णु की माया को देखने की इच्छा हुई थी। इस समय हरि भगवान् की माया से मेरी बुद्धि मारी गई है। मेरी इन्द्रियाँ व्याकुल हो रही हैं।'

मैं स्नेह और मोहजाल में पड़ कर लाचार हो गया,

परन्तु मुझे हरि की माया-जाल में पड़ा हुआ किसी ने न जाना। इस तरह स्त्री, धनागार (धन का कोष) और पुत्र के विवाहादि विषय में मेरा मन अत्यधिक डूबा होने पर भी मैं बहुत ही दुःखी रहने लगा। (मैं सोचने लगा कि) मैं 'अनन्त' कौन हूँ। (परन्तु) कुछ भी न समझ सका और सब विषय मुझे स्वप्न से मालूम हुए। इसी बीच मेरी मानिनी स्त्री मुझे लाचार और बेबस देखकर, 'हाय! अचानक क्या हुआ ?' कहती और रोती हुई मेरे पास आई। यहाँ मैं अपनी पहले वाली पत्नी को देख और उन स्त्री व पुत्रों को याद करके अत्यन्त दुःखी होने लगा। उसी समय धीर, सब कुछ जानने वाले, परम धार्मिक, सूर्य के समान तेजस्वी, सत्व गुण सम्पन्न, शान्त, शुद्ध और दुनिया के दुःखों को दूर करने वाले परमहंस (बहुत पहुँचे हुए संन्यासी) उत्तम बातों द्वारा मुझे समझाने के लिए वहाँ आए। मेरे कुटुम्ब जनों ने मेरे सामने स्थित उन परमहंस की पूजा कर उनसे पूछा—'इनका कल्याण कैसे होगा ?'

पाँचवाँ अध्याय

सूत जी बोले—परमहंस (संन्यासी) यथोचित (जैसी उचित हो) भिक्षा पाकर बैठ गए। इसके बाद पुरुषोत्तम निवासी ब्राह्मण ने पूछा—'अनन्त किस प्रकार स्वस्थ होंगे ?'

परमहंस संन्यासी उनकी बात समझ गए और मुझे सामने देखकर मेरी ओर देखकर बोले—'हे अनन्त! तुम चारुमती नाम की अपनी स्त्री, बुध आदि बेटों, धनरत्न से भरे-पूरे सुन्दर भवनों तथा महलों को छोड़कर यहाँ पर कब आए हो ? क्या आज तुम्हारे पुत्र के विवाह का दिन है ? आज भी तुम्हें मैंने समुद्र तट पर घूमते हुए देखा है। वहाँ के सभी धार्मिक लोग तुम्हारा सम्मान करते हैं। मुझे भी निमन्त्रण देकर तुम शोक से व्याकुल

हुए अपनी नगरी से यहाँ क्यों आ गए ? हे अनन्त! मैंने तुम्हें (वहाँ उस समय) सत्तर वर्ष की आयु का वृद्ध देखा था, परन्तु इस समय यहाँ तुम तीस साल के जवान क्यों दिखाई देते हो ? मुझे अत्यन्त संभ्रम है। मैं देखता हूँ कि यह स्त्री तुम्हारी सहायिका पत्नी है, परन्तु वहाँ मैंने इसे पहले नहीं देखा था। (यह कहाँ से आई है ?) (मैं यह भी नहीं जानता कि मैं भी कहाँ से, किस तरह और किस जगह पर आया हूँ तथा कौन मुझे यहाँ लाया ?) तुम क्या वही अनन्त हो ? अथवा और कोई हो ? मैं भी क्या वही भिक्षुक हूँ अथवा अन्य कोई हूँ ? मेरा और तुम्हारा दोनों का इस स्थान पर मिलना इन्द्रजाल जैसा मालूम पड़ता है। तुम अपने धर्म में लगे हुए गृहस्थ हो और मैं परमार्थ (आध्यात्मिक) चिन्ता में लगा हुआ भिक्षुक ब्राह्मण हूँ। यहाँ पर हम दोनों की बातचीत बालक और एक उन्मत्त की बातचीत के समान निरर्थक जान पड़ती है। हे द्विज! (ब्राह्मण दो बार जन्म लेने के कारण द्विज कहलाते हैं—एक बार माता के गर्भ से और दूसरी बार यज्ञोपवीत अर्थात् विद्यारंभ से जन्म माना जाता है) मुझे जान पड़ता है कि यह परमेश्वर की माया है। इसी कारण तीनों लोकों के प्राणी मोहित हुए जान पड़ते हैं। साधारण ज्ञान से इसका रहस्य समझ नहीं आता। अद्वैत ज्ञान (जब आत्मा और परमात्मा का भेद मिट जाता है) होने पर यह माया पूरी तरह समझ में आ जाती है।

महान् संन्यासी भिक्षुक इस तरह भौंचक्का हुए (मुझसे इतना ही कहा, फिर पास खड़े एक साधु से) बोले—हे महाभाग, मार्कण्डेय! मैं तुम्हें भविष्य की कथा बताता हूँ। सुनो—तुमने देखा कि प्रलय के समय भगवान् विष्णु के उदर का आश्रय लेकर जल में सब को मोहित करने वाली माया ऐसे रहती है, जैसे राजमार्ग में स्थित वेश्या। यही माया तीनों लोकों में व्याप्त होकर रहती है। यही माया तमोगुण (काम,

क्रोध आदि दुर्गुण) धारण कर सब को उस झूठे संसार में चलाती है। यही माया उस दु:ख का कारण है, जो अनन्त है। यह माया अक्षरी है अर्थात् इसका नाश कोई नहीं कर सकता। प्रलय काल में जब तीनों लोकों का नाश हो जाता है, जब प्रकाश न होने से सब ओर अँधेरा हो जाता है, जब दिशाओं, काल आदि का कोई चिह्न नहीं रहता, तब परमब्रह्म सृष्टि बनाने की इच्छा करके तन्मात्रा रूप (शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध यानी सूक्ष्म और मूल तत्व) में प्रकट होते हैं। सबसे पहले ब्रह्म अपनी शक्ति से पुरुष और प्रकृति इन दो भागों में बँटे, फिर काल की सहायता से पुरुष और प्रकृति का संयोग हुआ, जिससे महत् तत्व पैदा हुआ। काल, स्वभाव और कर्म से युक्त यह महत् तत्त्व ही अहंकार रूप में परिणत हुआ। यह अहंकार गुण भेद से सत्व, रज, तम के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में परिणत होता है। सबसे पहले अहंकार तत्व से त्रिगुण वाले पंचतन्मात्र यानी शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध पैदा होते हैं। इन पंचतन्मात्र से पाँच महाभूत पैदा होते हैं। प्रकृति में ब्रह्म के स्थित होने से इस तरह सृष्टि बनती है। इसके बाद देवता, असुर, मनुष्य और इस ब्रह्माण्ड रूपी बरतन के पेट में जितने भी जीव-जन्तु और पदार्थ हैं, जो उत्पन्न और नष्ट होते हैं, वे सब पैदा होते हैं। परमात्मा की माया से ये सभी जीव ढके रहते हैं, जिससे ये संसार में फँसे और दुनियादारी के कामों में बँधे रहते हैं। (इसीलिए) ये अपने उद्धार का कोई भी उपाय नहीं सोच पाते। कैसा आश्चर्य है! माया कैसी बल वाली यानी सामर्थ्य वाली है। ब्रह्मा आदि देवतागण भी इसी माया के वश में हो जाने के कारण ऐसे ले जाए जाते हैं, जैसे नकेल से बँधा बैल या डोर से बँधा पंछी खिंचे चले जाते हैं। जो मुनियों में श्रेष्ठ लोग इस प्रकार की वासना रूपी मगरमच्छों से भरी नदी को, यानी उस नदी को

जो कि गुणमयी माया है, पार करने की इच्छा करते हैं, उनका जन्म ही संसार में सार्थक है, (क्योंकि ऐसे लोग) तत्वज्ञानी हैं।'

शौनक जी ने कहा—'मार्कण्ड, वशिष्ठ, वामदेव तथा दूसरे मुनियों ने ये आश्चर्यजनक वचन सुनकर क्या कहा? अनन्त की बात सुनने वाले राजाओं ने अनन्त के मुख से अमृत के समान मधुर वाक्य सुन कर क्या कहा? हे सूत जी! वे सभी भविष्य की बातें बताइए।'

सूत जी ने शौनक जी की प्रशंसा करते हुए शोक और मोह को नाश करने वाली तत्वज्ञान की पूरी बात विस्तार से सुनानी आरंभ की। सूत जी बोले—इसके बाद राजाओं ने आदरपूर्वक अनन्त जी से पूछा। अनन्त जी ने मायामोह को तप से कैसे नष्ट किया जाए और इन्द्रियों को कैसे वश में किया जाए—यह सब बताया।

अनन्त जी बोले—'इसके बाद मैंने वन में जाकर विधिपूर्वक तप करना शुरू किया, परन्तु किसी भी तरह इन्द्रिय और मन को वश में न कर सका। मैं वन में बैठ कर जब कभी भगवान् का ध्यान करता था, उसी समय मैं बराबर स्त्री, पुत्र, धन और दूसरी सभी बातें याद करने लगा। उनकी (स्त्री, पुत्र, ऐश्वर्य आदि की) याद आते ही मेरे मन में ध्यान को नाश करने वाले दुःख, शोक, डर आदि पैदा होकर ध्यान में विघ्न डालने लगे। इसके बाद मैंने इन्द्रियों के निग्रह करने का संकल्प किया। मैंने सोचा कि इन्द्रियों को वश में करने से निश्चय ही मन को वश में कर लूँगा। मैं जब इस तरह से निश्चय कर इन्द्रियों को वश में करने लगा, तब इन्द्रियों के स्वामी देवतागण मेरी ओर देखने लगे।

दस इन्द्रियों के स्वामी देवताओं ने अपने रूप सहित प्रकट होकर मुझसे कहा—'हे अनन्त! हम दिशा, वात, सूर्य,

प्रचेता, दो अश्विनी कुमार, अग्नि, इन्द्र, उपेन्द्र और मित्र हैं।' दस इन्द्रियों के हम दस अधिष्ठता देवता हैं। हम तुम्हारे शरीर में मौजूद हैं। हमें नाखून के अगले भाग से छिन्न-भिन्न करना तथा नष्ट करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। क्या इस तरह से मन को वश में करके तुम अपना कल्याण कर सकोगे? कभी नहीं। इन्द्रियों को नष्ट-भ्रष्ट करने से तुम्हारे मर्म (प्राणों) को चोट पहुँचने पर तुम मर जाओगे। हम देखते हैं कि अन्धे, बहरे, और विकलांग (लंगड़े-लूले अथवा विकल अंग वाले) जीव जब निर्जन वन में वास करते हैं, तब भी उनका मन विषय-भोग में ललचाया रहता है। जीव रूपी गृहस्थ का यह शरीर घर है और मन के पीछे चलने वाली बुद्धि इसकी स्त्री है और हम सब लोग बुद्धि रूपी स्त्री के पीछे चलने वाले सेवक हैं। जीवगण अपने-अपने कर्मों के अधीन हैं। मुक्ति और संसार (बंधन) का कारण मन है। परमात्मा की माया के अनुगत हुआ मन ही लालची प्राणी (जीव) को संसार रूपी चक्र में घुमाया करता है। इसलिए तुम मन को वश में करने के लिए अपने मन को भगवान् विष्णु की भक्ति में लगाओ। भगवान् विष्णु की भक्ति ही सदैव सभी कर्मों का नाश करके सुख और मोक्ष देने वाली है। श्री विष्णु भगवान् की भक्ति से द्वैत और अद्वैत का ज्ञान हो जाता है। वह भक्ति आनन्द के समूह को देने वाली है। हे उत्तम बुद्धि वाले! हरि की भक्ति से ही जीव कोष का नाश होगा। इस समय कल्कि जी के दर्शन से तुम परम निर्वाण अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकोगे।'

परमहंस संन्यासी के इस उपदेश को सुनकर मैं भक्तिपूर्वक केशव जी की पूजा करके कलिकुल के नाश करने वाले कल्कि जी के दर्शन करने इस स्थान पर आया हूँ। इस स्थान पर अरूप अर्थात् निराकार ईश्वर के रूप का दर्शन

कर पाया। पदहीन (जिनके पैर नहीं हैं) ईश्वर के कोंपल के समान चरण को छू कर मैं कृतार्थ (धन्य) हो गया। वाणीरहित जगत्पति की बातें सुनीं।

यह कहकर प्रसन्न चित्त अनन्त मुनि अपने ईश्वर, कमल के समान नेत्रों वाले, लक्ष्मी जी के स्वामी कल्कि जी को प्रणाम करके चले गए।

इस प्रकार मुनि के वचन सुनकर राजागण ने ऋषियों की तरह व्रत, नियमादि का अनुष्ठान करते हुए विधिपूर्वक कल्कि जी व पद्मा जी की पूजा कर मुक्ति प्राप्ति की।

शुक ने कहा—'अनन्त जी की इस कथा को पढ़ने और सुनने से संसार की माया छूट जाती है, अज्ञान रूपी अँधेरा दूर हो जाता है और संसार के बन्धन से यानी जन्म-मरण से मुक्ति हो जाती है। जो धर्मात्मा वैष्णव लोग भगवान् विष्णु की सेवा में लगे रहने पर भी भोग-विलास की इच्छा से दुनिया रूपी सागर में फँसे रहते हैं, वे इस कथा के द्वारा भेद से रहित ज्ञानोल्लास की तेज तलवार को लेकर सुन्दर भक्ति रूपी दुर्ग (किले) के आश्रय में रह कर शरीर में रहने वाले छः शत्रुओं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर्य (ईर्ष्या, द्वेष) को पराजित करेंगे यानी इन पर विजय पा लेंगे।'

छठा अध्याय

सूत जी बोले—इसके बाद, राजाओं के चले जाने पर, कल्कि जी ने पद्मा जी तथा सेनासहित सिंहल द्वीप से शम्भल ग्राम को प्रस्थान करने की इच्छा प्रकट की। देवताओं के स्वामी इन्द्र जी ने कल्कि जी का अभिप्राय समझ कर शीघ्र ही विश्वकर्मा (देवताओं के भवनादि निर्माता) को बुला कर कहा—'हे विश्वकर्मा! तुम शम्भल ग्राम में जाओ। (वहाँ) ढेर-सारे सोने से ऊँची-ऊँची अट्टालिका, महल, घर, बाग

आदि बनाओ और रत्न, स्फटिक (बिल्लौर), वैदूर्य (मणि) अनेक प्रकार की मणियों के इस्तेमाल से अपनी भवन-निर्माण कला दिखाने में कुछ भी कसर न रखो।'

विश्वकर्मा ने जब इन्द्र के ये वचन सुने, उसने अपना कल्याण समझ कर कमलेश (कमला के पति अर्थात् भगवान् विष्णु) के लिए संभल ग्राम में 'स्वस्ति' आदि (की आकृति के अथवा चिह्नों से युक्त) अनेक प्रकार के भवन बनाए। हंस, शेर, गरुड़ के मुख की शक्ल वाले तरह-तरह के भवन बनाए गए। सारे भवन दुमंज़िले, तिमंज़िले आदि एक-दूसरे के ऊपर बनने लगे। गर्मी से छुटकारा पाने के लिए सुन्दर खिड़कियाँ बनाई गईं। तरह-तरह के जंगलों, बेलों, उपवनों, तालाबों, वापी आदि से कल्कि जी का शम्भल ग्राम इन्द्र की अमरावती के समान अत्यन्त शोभायमान हो गया।

इधर सिंहल द्वीप में कल्किजी सेना सहित कारुमती नगरी से बाहर जा कर समुद्र के तट पर गए। कौमुदी नामक रानी के साथ राजा बृहद्रथ अपनी बेटी के प्रेम से कातर होकर सन्तुष्ट हृदय वाली पद्मा जी के पतिदेव और पद्मा जी को दस हजार हाथी, एक लाख घोड़े, दो हजार रथ, दो सौ दासियाँ तथा तरह-तरह के कपड़े और रत्न आदि देकर भक्ति और स्नेह भरी आँखों से अपने दामाद और कन्या के कमल रूपी मुख को देखते ही रह गए। वे कन्या और दामाद को पूज कर उन्हें विदा कर कारुमती नामक अपनी नगरी लौट आए।

इसके बाद, कल्कि जी ने सेना सहित समुद्र के जल में स्नान किया और तभी एक गीदड़ को पानी के ऊपर चलते हुए पार होते देखकर वहीं रुक गए। इसके उपरान्त, लक्ष्मी के पति कल्कि जी, जल को स्तंभित (स्थिर, यानी ठहरा हुआ) देखकर, सेना और सवारियों सहित समुद्र के जल के ऊपर चलते हुए पार हो गए। समुद्र पार होने पर (कल्कि जी ने)

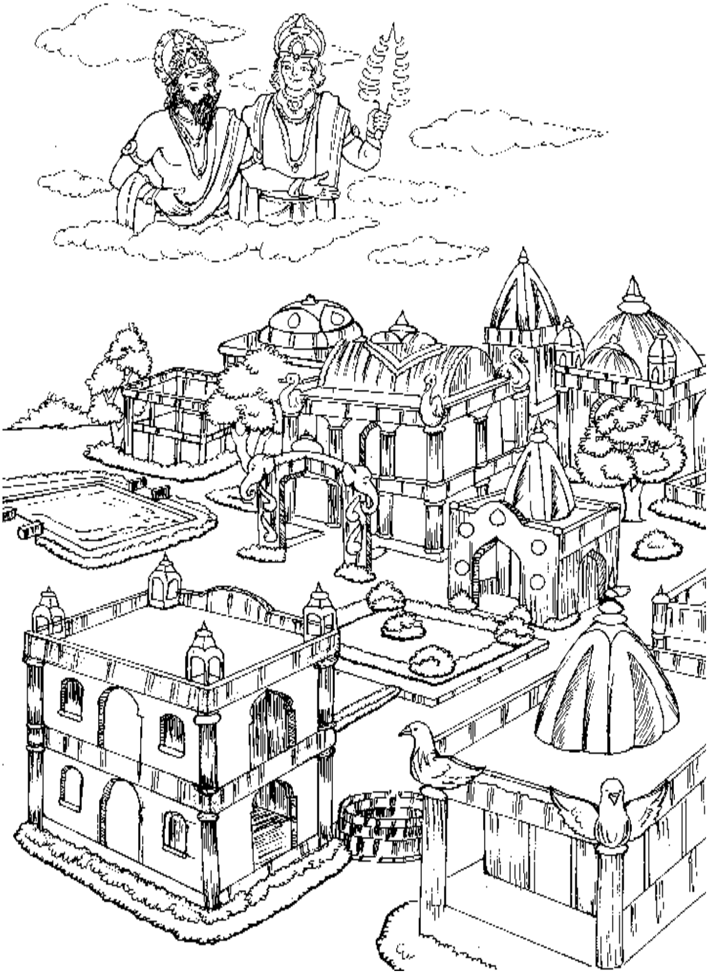

विश्वकर्मा द्वारा निर्मित शम्भल ग्राम

शुक से कहा—'हे शुक! तुम शम्भल ग्राम में मेरे घर पर जाओ। हमारा प्रिय काम सफल करने के लिए (या मेरा प्रिय करने के लिए और मेरे सुख के लिए) इन्द्रदेव की आज्ञा के अनुसार विश्वकर्मा ने वहाँ पर बहुत से शोभायमान निर्मल (स्वच्छ) भवन बनाए हैं। तुम वहाँ जाकर हमारे माता-पिता और जाति वालों से हमारा कुशल समाचार कह कर हमारे

विवाहादि की सभी बातें बतला देना। मैं सेना के सहित पीछे आ रहा हूँ। तुम आगे शम्भल ग्राम में जाओ।'

बड़े धैर्यवान्, सब कुछ जानने वाले शुक कल्कि जी के वचन सुनकर आकाश मार्ग से उड़ते हुए कुछ समय के बाद देवताओं द्वारा पूजे गए शम्भल ग्राम में पहुँचे। शम्भल ग्राम में सात योजना में फैले हुए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—चारों वर्णों के लोग—रहते हैं। सूर्य की किरणों की भाँति स्वच्छ जगमगाती हुई सैकड़ों अट्टालिकाएँ उसमें चारों ओर शोभा बढ़ा रही हैं। सभी मौसमों में सुख देने वाले, रमणीक शम्भल ग्राम को देखकर शुक ने विह्वल होकर वहाँ प्रवेश किया। वह एक घर से दूसरे घर में, महल के अगले भाग से आकाश मार्ग में, एक बाग से दूसरे बाग में और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर विचरने लगा। इसी तरह प्रसन्नचित्त शुक विष्णुयश के घर पहुँच गया। इसके बाद विष्णुयश के पास पहुँच कर तरह-तरह की प्यारी कहानियाँ उसने मीठी वाणी में कहीं। सिंहल द्वीप से पद्मा जी के साथ कल्कि जी के आने की बात बताई।

इसके उपरान्त, विष्णुयश ने जल्दी ही प्रसन्न हृदय से विशाखयूपराज और दूसरे मुख्य और माननीय राजाओं को सभी समाचार बताए। विशाखयूपराज ने चन्दन से सुगंधित जल से भरे सोने के घड़ों से गाँव और नगर को सजाया (या चन्दन से सुगंधित जल से सब जगह छिड़काव कराया)। दीपमाला, सुन्दर सुगंधित फूलों की माला, अगर आदि सुगंधित पदार्थों, केले-सुपारी आदि फलों, नई कोंपलों, चावलों और पान के पत्तों आदि से शम्भल ग्राम सुशोभित हो गया और देवताओं की पुरी के समान मनोहर लगने लगा। परम सुन्दर, सुन्दरियों की आँखों के आनन्द, सुन्दर शरीर वाले कृपा के सागर कल्कि जी भारी सेना सहित नगर में प्रवेश करने लगे। कल्कि जी ने

पद्मा जी सहित माता-पिता के चरणों में प्रणाम किया। जिस प्रकार देवलोक में दिति जी इन्द्र और उनकी पत्नी (शची) को देखकर सफल मनोरथ तथा प्रसन्न हुई, उसी तरह सती सुमति अपने पुत्र कल्कि जी और पुत्र वधू पद्मा जी को देखकर अत्यन्त प्रसन्न तथा सफल मनोरथ हुई। शम्भल ग्राम नगरी ध्वजा-पताकाओं से सजी हुई थी। अपने पति तुल्य स्वामी कल्कि जी को पाकर आनन्द विभोर हो रही थी। (ऐसा लग रहा था मानों) इस सुन्दरी रूपी नगरी का अन्तःपुर मानों उसकी सुन्दर जंघाएँ (जघन, नितम्ब) हों, महल उठे हुए स्तन हों, (मीनारों पर बने) मयूर मानों स्तनाग्र हों, हंसों की पाँतें मानों मोतियों की लड़ियों से युक्त सुन्दर मालाएँ हों, सुगन्धित-धूप आदि का उठता धुआँ मानों उसके वस्त्र हों, कोयल का कूकना उसकी मधुर वाणी हो और तोरण द्वार हँसता मुखड़ा हो। अज अर्थात् जन्म न लेने वाले ब्रह्मा जी के भी आश्रय मूलाधार, कल्क अर्थात् पाप समूह के विनाशक भगवान् कल्कि ने शम्भल में सब कुछ भूलकर निर्द्वन्द भाव से अनेक वर्षों तक पद्मा जी के साथ रमण किया।

कुछ समय के बाद बड़े भाई कवि की कामकला नाम की पत्नी ने बृहद्कीर्ति और बृहद्बाहु नाम के बहुत बलवान, पराक्रमी और परम धार्मिक दो पुत्रों को जन्म दिया। दूसरे भाई प्राज्ञ की पत्नी ने, जिसका नाम सन्नति था, यज्ञ और विज्ञ नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया। ये दोनों पुत्र इन्द्रियों को जीतने वाले हुए और पूरे संसार में पूजे गए। तीसरे भाई सुमंत्रक की पत्नी ने, जिसका नाम मालिनी था, शासन और वेगवान् नाम के दो पुत्रों को पैदा किया। ये दोनों पुत्र सज्जनों का उपकार करने वाले हुए। कल्कि जी द्वारा पद्मा जी के गर्भ से जय और विजय नाम के दो पुत्र पैदा हुए। ये दोनों पुत्र संसार भर में प्रसिद्ध और अत्यन्त बलवान् हुए।

(इस प्रकार कल्कि जी का परिवार पुत्रवान और सर्व-ऐश्वर्य सम्पन्न हो गया) फिर अमात्यों (राजा के सहचर अथवा मंत्रियों) से घिरे और (समस्त सम्पत्तियों से युक्त) कल्कि जी (ब्रह्मा जी की तरह) अपने पिता जी को अश्वमेध यज्ञ करने के लिए तैयार हुआ देख कर बोले—मैं दिशाओं के स्वामियों को हराकर, धन इकट्ठा करके आपसे अश्वमेध यज्ञ कराऊँगा। इस समय मैं दिग्विजय (सम्पूर्ण दिशाओं की विजय) के लिए यात्रा करता हूँ।

यह कहकर शत्रुओं के नगरों को जीतने वाले कल्कि जी प्रसन्न होकर पिता को प्रणाम कर सेना सहित कीकटपुर की ओर चल पड़े। अति विस्तार में फैली हुई कीकटपुर नगरी बौद्ध धर्मावलम्बियों का मुख्य स्थान है। यहाँ के लोग वैदिक धर्म को नहीं मानते, अपने पितरों और देवताओं की पूजा नहीं करते और परलोक में विश्वास नहीं करते। इस नगरी के अधिकतर लोग केवल अपने शरीर को ही आत्मा मानते हैं (शारीरिक सुखों की चिन्ता करने वाले हैं) और कुल-धर्म और जाति-धर्म का पालन नहीं करते और वे लोग धन, स्त्री, भोजन आदि विषयों में अपने-पराए का भेद नहीं मानते। यह नगर तरह-तरह के लोगों और तरह-तरह की पीने वाली और खाने वाली वस्तुओं से भरपूर है।

युद्ध करने के लिए, सेवकों के साथ कल्कि जी का आना सुन कर वहाँ का राजा जिन दो अक्षौहिणी सेना सहित नगर से बाहर निकला। अनेक हाथियों, रथों, घोड़ों, सोने के आभूषणों से सजे हुए उत्तम वर्ण के रथवाले और अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाले योद्धाओं से पृथ्वी ढक गई। सेनाओं के झंडों के कपड़ों से धूप भी पृथ्वी तक नहीं पहुँच पाती थी।

सातवाँ अध्याय

सूत जी बोले—इसके बाद, हथिनी पर हमला करने वाले शेर की भाँति श्री विष्णु-अवतार श्री कल्कि जी ने, जो कि पापों का नाश करने वाले हैं और सब पर विजय पाने वाले हैं, ने उस बौद्ध सेना पर धावा बोल दिया। युद्ध में खून में रंगी हुई, जिस की कमर नंगी हो गई हो, जिसके सुन्दर बाल फैले हुए हों, जो भाग रही हो, बिलख रही हो, जो रतियुद्ध में घायल हो गई हो, ऐसी नायिका की तरह जो सेना हो, उस भागती हुई सेना से सैन्य नायक कल्कि जी बोले—'हे बौद्ध लोगो! तुम सब युद्ध के क्षेत्र से मत भागो। लड़ाई के लिए तैयार हो वापस लौटो और अपना बल तथा बहादुरी दिखाने में किसी तरह की कमी न करो।'

कल्कि जी के ये वचन सुन कर वह बलहीन जिन (बौद्धों का नायक) क्रोधित होकर सांड पर सवारी किए चमड़े की (ढाल और) तलवार लेकर लड़ाई के लिए उन के सामने दौड़ा। विविध हथियारों से लैस अनेक प्रकार के युद्ध करने में पारंगत (अत्यन्त दक्ष) वह जिन कल्कि जी के साथ युद्ध करने लगा। युद्ध में उसकी चतुराई देखकर देवतागण भी अचंभे में पड़ गए। उसने भाले से घोड़े को बेधा और बाण से कल्कि जी को बेहोश कर जल्दी ही उन्हें गोदी में उठाने की कोशिश करने लगा, पर किसी भी तरह उन्हें न उठा सका। जिन ने कल्कि जी को संसार का भरण-पोषण करने वाला जानकर, क्रोध पूर्वक देखते हुए उनके साथ दास (बन्दी) का-सा व्यवहार कर उनके कवच और अस्त्र-शस्त्र छिन्न-भिन्न कर डाले। यह देखकर विशाखयूपराज जी ने गदा से जिन को घायल किया और अपनी ही लीला से मूर्च्छित हुए कल्कि जी को अपने रथ पर चढ़ाकर चल दिए। कल्कि जी, फिर होश में आने पर, भक्तों को उत्साह देने के लिए

विशाखयूपराज के रथ से उछल कर पृथ्वी पर कूदकर जिन के सामने चले।

कल्कि जी का अत्यन्त बलवान् घोड़ा भी भालों की चोट की चिन्ता किए बिना, युद्ध भूमि में कूदकर-घूमकर, पैरों की मार से, दाँतों की चोट से, बालों को खींचकर (अथवा, अपने अयाल और बालों से) बौद्ध सेना में स्थित हज़ारों दुश्मनों का क्रोधित होकर नाश करने लगा। (उस) घोड़े की भयंकर सांसों की हवा से उड़कर कोई-कोई वीर तो दूसरे द्वीप में जा गिरे और कोई हाथी-घोड़े-रथ आदि से टकराकर युद्धभूमि में ही गिर पड़े। गर्ग्य और उसके साथियों ने थोड़े ही समय में बौद्धों की छः हजार सेना का नाश कर दिया। भार्ग्य (और उसकी सेना) ने एक करोड़ दस हजार सेना को मार गिराया और विशाल तथा उसकी सेना ने पच्चीस हजार शत्रु नष्ट कर दिए। कवि ने अपने दोनों पुत्रों की सहायता से लड़ाई करके शत्रुओं की बीस हजार सेना का नाश किया। इसी प्रकार प्राज्ञ ने दस लाख और सुमंत्रक ने पाँच लाख सेना

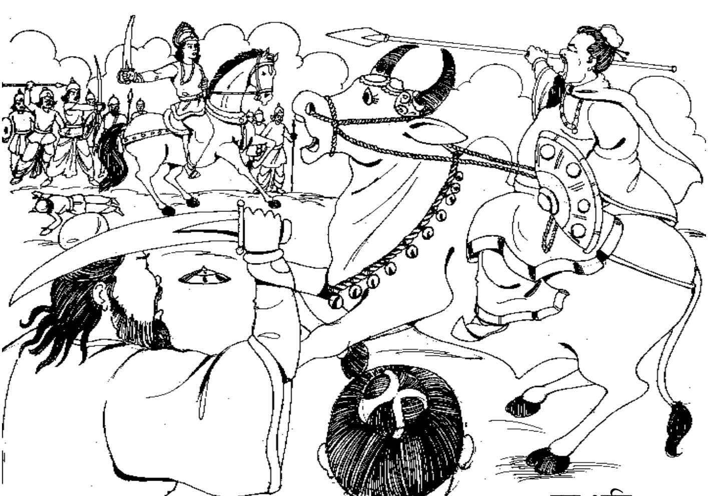

रण भूमि

को हराया।

इसके बाद, कल्कि जी हँसकर बौद्धों के सेनानायक जिन से बोले—'हे दुष्ट बुद्धि वाले! भागता क्यों है? सब जगह शुभ और अशुभ फल देने वाले भाग्य स्वरूप मुझको समझकर मेरे सामने आ। मेरे बाणों से घायल होकर अब तुम परलोक चले जाओगे, तब तुम्हारे साथ कोई नहीं होगा। इसलिए इस बीच तुम अपने भाई-बंधुओं का सुन्दर मुख देख लो।'

कल्कि जी के ये वचन सुनकर बलवान् जिन (बौद्धों का स्वामी) हँसकर बोला—'अदृष्ट (दैव या भाग्य) कभी सामने प्रकट नहीं होता। हम सब प्रत्यक्ष (जो सामने दिखाई दे) को छोड़कर और किसी को न मानने वाले यानी प्रत्यक्षवादी बौद्ध हैं। शास्त्र में कहा है कि दैव हमारे द्वारा मारा जाएगा। अतः तुम्हारा श्रम व्यर्थ है। यदि तुम दैवस्वरूप हो तो भी हम सब तुम्हारे सामने मौजूद हैं। यदि तुम बाणों द्वारा हमें मारोगे तो क्या बौद्ध लोग तुम्हें छोड़ देंगे। हमारे लिए जो निन्दा भरे वचन तुमने कहे हैं, वे वचन तुम पर ही लौटेंगे। तुम स्थिर हो जाओ।' बौद्धों के नायक जिन ने ऐसा कह कर तेज़ बाणों से कल्कि जी को ढक दिया।

जिस प्रकार सूर्य के दर्शन से बर्फ की वर्षा नष्ट हो जाती है, उसी तरह बाणों की वर्षा कल्कि जी पर व्यर्थ सिद्ध हुई। (उनके स्पर्श से क्षीण हो गई।) (जिन द्वारा चलाए गए) ब्रह्मास्त्र, वायव्यास्त्र, आग्नेयास्त्र, मेघास्त्र और अनेक दूसरे अस्त्र (प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न अस्त्रों से भिन्न-भिन्न प्रकार का विनाश होता था। जैसे किसी बाण से आग लगती थी, तो किसी से वर्षा होती थी आदि) कल्कि जी को देखते ही थोड़े ही समय में निष्फल हो गए। जिस प्रकार ऊसर धरती में बीज बोने से अनाज पैदा नहीं होता, जिस प्रकार वेद

न जानने वाले को दान देने से फल नहीं मिलता, जिस प्रकार भले लोगों की बुराई करके विष्णु भक्ति का पुण्य नहीं मिलता, उसी तरह जिन के द्वारा फेंके गए सारे अस्त्र बेकार होने लगे।

इसके बाद कल्कि जी ने उछल कर सांड पर सवार जिन के बाल पकड़ लिए और दोनों ही पृथ्वी पर गिरकर (अरुण शिखा) मुर्गों की तरह भयंकर लड़ाई लड़ने लगे। पृथ्वी पर गिरने पर जिन ने अपने एक हाथ से कल्कि जी के बाल पकड़े और दूसरे हाथ से उनका हाथ पकड़ लिया। इसके बाद, चाणूर और श्रीकृष्ण की भाँति दोनों ने ही पृथ्वी तल से उठकर एक-दूसरे के बाल और हाथ पकड़ लिए। ये दोनों महा बलशाली बिना शस्त्रों के रीछों की तरह मल्ल युद्ध करने लगे। मस्त हाथी जिस तरह ताड़ के पेड़ को तोड़ डालता है, उसी तरह कल्कि जी ने अपने पैरों की चोट से जिन की कमर तोड़कर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया।

हे ब्राह्मणों! जिन को भूमि पर गिरा हुआ देख कर बौद्ध लोग हाहाकार करने लगे और शत्रु की मृत्यु देखकर (कल्कि जी की) सेना बहुत प्रसन्न हुई। जिन को रणभूमि में गिरा हुआ देखकर उसका भाई अत्यन्त बलवान् शुद्धोधन गदा लेकर कल्कि जी को मारने के लिए पैदल ही शीघ्रता से दौड़ा। हाथी पर सवार, शत्रु की सेना का नाश करने वाले कवि ने शुद्धोधन पर बाणों की बौछार की। उसे बाणों से ढक दिया और (हाथी को दबा लेने वाले) शेर के समान गरजने लगा। धर्म के जानने वाले कवि ने गदा धारण करने वाले शुद्धोधन को पैदल चलते देखा, तब वे स्वयं भी गदा लेकर पैदल ही शुद्धोधन के सामने खड़े हो गए। जिस तरह हाथी शत्रु-हाथी से दाँतों से लड़ाई करता है, उसी तरह गदा-युद्ध में चतुर, अत्यन्त वीर कवि और महा बलवान शुद्धोधन आपस में गदायुद्ध करने लगे। लड़ाई के नशे में चूर दोनों वीर

भयंकर आवाज करके गदा द्वारा एक-दूसरे पर किए जाने वाले वार से अपने-अपने को बचाने लगे। इसके बाद, कवि ने शेर जैसी गर्जना करते हुए अपनी कठोर गदा की चोट से शुद्धोधन की गदा को भूमि पर गिराकर जल्दी ही उसके हृदय पर गदा का वार किया। गदा की चोट लगते ही वीर शुद्धोधन भूमि पर गिर पड़ा, लेकिन सहसा उठ कर उसने फिर कवि पर गदा का प्रहार किया। गदा की चोट से कवि भूमि पर तो नहीं गिरे पर उनकी इन्द्रियाँ नाकारा-सी हो गईं और बेहोश होकर वे खंभे-से खड़े रहे। शुद्धोधन महाबली, पराक्रमी और हज़ारों रथ चालकों के साथ कवि को देखकर माया देवी को बुलाने के लिए चल पड़ा।

जिस माया देवी को देखते ही देवता, राक्षस, मनुष्य तथा तीनों लोकों के सभी प्राणी प्राणरहित मूर्ति की तरह बेबस हो जाते हैं, शुद्धोधन आदि बौद्ध लोग उसी माया देवी को सामने लाकर लाखों-करोड़ों की संख्या में म्लेच्छ सेनापतियों सहित युद्ध के लिए तैयार हो गए। माया देवी के रथ पर सिंहध्वज (जिस झंडे पर शेर बना हो) सुशोभित था, उस पर चढ़कर उन्होंने अनेक अस्त्र-शस्त्र पैदा किए। उस माया देवी को चारों ओर से कौओं, गीदड़ों आदि ने घेर लिया और काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि षड् वर्ग (अवगुण) उसकी सेवा करने लगे।

अनेक रूप धारण करने वाली बलवती त्रिगुणात्मिका माया देवी को सामने देखकर कल्कि जी की सेना भाग खड़ी हुई। (माया देवी को देखकर) शस्त्र धारण करने वाले सारे योद्धा तेजहीन मूर्ति की तरह शक्तिहीन हो गए।

इसके बाद प्रभु कल्कि जी अपने भाई, जाति और मित्रों आदि को अपनी माया रूपी पत्नी से लाचार और जीर्ण होते देख उसके पास पहुँचे। सुन्दर शरीर वाली, लक्ष्मी के से

रूप वाली माया की ओर जैसे ही श्रीहरि (कल्कि) भगवान् ने देखा, वह प्यारी पत्नी के समान उनके शरीर में प्रविष्ट हो गई। अपनी माता माया को न देख पाने पर मुख्य बौद्ध लोग बल और पुरुषार्थ से हीन हो गए। वे सैकड़ों की संख्या में इकट्ठे होकर रोने-चिल्लाने लगे। अचरज से भरे चित्त वाले वे लोग कहने लगे—'कहाँ चली गई ?'

इधर कल्कि जी ने अपनी सेना पर दृष्टि डाल उसको उठाया और म्लेच्छों (विधर्मियों) के नाश करने की इच्छा से तेज तलवार लेकर घोड़े पर सवार हो गए और तलवार की मूठ को ज़ोर से पकड़ा। बाणों से भरे तरकस, सुन्दर धनुष, कवच और अंगुलि त्राण (उंगलियों को बचाने के लिए पहनी गई चमड़े की पट्टी) से उनके शरीर की शोभा बढ़ रही थी। कवच के ऊपरी भाग में सोने की बनी बिंदियाँ जड़ी हुई थीं, जो ऐसी चमक रही थीं, मानों नीचे बादलों के समूह में तारों की शोभा हो। मुकुट के अगले भाग में लगी हुई तरह-तरह की मणियाँ शोभा बढ़ा रही थीं। सुन्दरियों के नयनों को सुख देने वाले रस के मन्दिर कल्कि जी शत्रुओं के पक्ष को विक्षिप्त करने (पागल बनाने या गड़बड़ी पैदा करने) के लिए रूखी टेढ़ी नज़र से देखने लगे। भक्त-जनों का मन कल्कि जी के कमल रूपी चरणों को देखकर प्रसन्न हुआ और धर्म की निन्दा करने वाले बौद्ध लोग डर गए। आकाश में देवतागण यह कहकर बहुत प्रसन्न हुए कि यज्ञ की अग्नि में अब फिर आहुति दी जाएगी।

जो सजी हुई सेना के समूह को इकट्ठा कर सभी शत्रुओं का नाश करने के इच्छुक हैं, जो युद्ध करने में लीला दिखा रहे हैं और जो साधुओं का सम्मान करने वाले हैं, जो अपने जनों के दुःख हरने वाले हैं और सभी जीवों का भरण-पोषण करने वाले हैं, ऐसे वे सज्जनों की इच्छा पूरी करने के लिए

अवतार धारण करने वाले कल्कि भगवान् (हमारा) कल्याण करें।

卐 卐

तीसरा अंश

पहला अध्याय

सूत जी बोले—इसके बाद कल्कि जी ने कुछ म्लेच्छों को बाणों द्वारा बेध कर और कुछ को तलवार से मारकर यमलोग पहुँचाया। इसी प्रकार विशाखयूप, कवि, प्राज्ञ, सुमंत्रक, गर्ग्य, भर्ग्य और विशाल आदि ने भी म्लेच्छों को यमलोक पहुँचाया। कपोतरोमा, काकाक्ष, काककृष्ण आदि शुद्धोधन और अन्य बौद्ध की संतानें (उनकी) कल्कि जी की सेना के साथ लड़ाई करने लगीं।

उस घोर युद्ध से भूमण्डल से सभी प्राणी भयभीत हो गए। भूतनाथ प्रसन्न हुए। खून से सने हुए लाल कीचड़ से संग्राम की भूमि ढक गई। लड़ाई के मैदान में गिरे हुए हाथियों, घोड़ों, रथियों के खून की नदी बहने लगी। इस नदी में (गिरे हुए) बाल ऐसे लगते थे, मानों काई का समूह हो और घोड़े धनुष तरंग के समान दिखाई देने लगे। हाथी ऐसे लग रहे थे, मानों कठिनाई से पार होने योग्य पुल हों। खून की इस नदी में बहते हुए सिर कछुए, रथ, नावें और हाथ मछली जैसे लग रहे थे। खून की इस नदी के तट पर गीदड़ और बाज़ खुशी से ऐसी आवाज़ें करने लगे, मानों नगाड़े की आवाज़ हो रही हो। इसे सुनकर सज्जन मनस्वी बहुत प्रसन्न हुए।

हाथी पर सवार योद्धा हाथी पर सवार योद्धाओं से, घोड़े पर सवार योद्धा घोड़े पर सवार योद्धाओं से, ऊँट पर बैठे योद्धा ऊँट पर बैठे योद्धाओं से और रथ पर सवार योद्धा रथ पर सवार योद्धाओं से लड़ने लगे। बाणों से बिंधे (कटे) हुए हाथ, पाँव और सिर शरीर से अलग होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। बहुत से हारे हुए भयभीत योद्धा, रोके जाने पर भी,

भस्म-रमे जैसे धूल-धूसरित मुख, गेरुआ (लाल) जैसे धारण किए हुए रक्तरंजित वस्त्र और बिखरे बालों से संन्यासी-जैसे लगते, पलायन कर गए। कोई-कोई तो व्याकुलता से भागने लगा और कोई-कोई बार-बार पानी माँगने लगा। इस प्रकार कल्कि जी की सेना के बाणों से बिंधकर म्लेच्छ सेना में कोई भी चैन से (सकुशल) न रहा। उनकी रूपवती, बलवती, पतिव्रता युवती रमणियाँ भी संतान का सुख और उनका सहारा छोड़कर, (युद्ध में अपने-अपने पति की सहायता करने के लिए) कोई रथ पर, कोई हाथी पर, कोई विहंग पर, कोई घोड़े पर, कोई गधे पर, कोई ऊँट पर और कोई बैल पर सवार होकर युद्ध करने के लिए आ गई। ये सुन्दर प्रभा (कान्ति) वाली स्त्रियाँ अनेक गहनों से सजी-धजी, युद्ध के साज में तैयार होकर धनुष-बाण धारण करके आई थीं। इनके कर-कमलों में बाजूबन्द भी शोभित थे। सुन्दर आकृति वाली इन स्त्रियों में कोई स्वैरिणी (कुल्टा अथवा व्यभिचारिणी), कोई पतिव्रता और कोई विलासिनी थी। ये नारियाँ अपने-अपने पति की मृत्यु से दुःखी होकर (बदला लेने के लिए) कल्कि सेना के साथ युद्ध के लिए आगे बढ़ीं।

शास्त्र में कहा है कि मनुष्य मिट्टी, राख, लकड़ी आदि की बनी चीज़ पर प्रभुता अथवा अधिकार बनाए रखने के लिए अपने प्राण देने को तैयार हो जाते हैं। इसीलिए युवतियों के लिए अपने प्राण के समान अपने-अपने पति की मृत्यु अपने सामने देखकर सह लेना असंभव था।

इसके बाद म्लेच्छ स्त्रियाँ अपने-अपने पति को बाणों से बिंधा हुआ और बेचैन देख उन्हें पीछे हटा उनके अस्त्र लेकर कल्कि जी की सेना के साथ स्वयं युद्ध करने लगीं। उन स्त्रियों को युद्ध करने को तत्पर देखकर कल्कि जी की सेना विस्मय से भर गई और उसने कल्कि जी के पास जाकर

यत्नपूर्वक (सादर) पूरा समाचार बताया। युद्ध करने की इच्छा वाली स्त्रियों का हाल सुनकर महान् बुद्धिमान् कल्कि जी प्रसन्नतापूर्वक रथ पर चढ़ कर सेना और सेवकों के साथ उस स्थान पर आए।

अनेक शस्त्र और अस्त्रों को धारण करने वाली, तरह-तरह की सवारियों पर चढ़ी हुई, व्यूह-रचना करने वाली उन म्लेच्छ महिलाओं को देखकर पद्मा जी के स्वामी कल्कि जी (उनसे) बोले—'हे महिलाओ! मैं तुम्हारी भलाई के लिए उत्तम वाक्य कहता हूँ। तुम उसे सुनो। क्या पुरुषों का स्त्रियों के साथ युद्ध करना उचित है। अर्थात् उचित नहीं है। (लहराते) बालों से शोभायमान, नयनों को आनन्द देने वाले तुम्हारे इन चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखों पर कौन पुरुष प्रहार करेगा? तुम्हारे वक्ष स्थल पर कुच (स्तन) रूपी शिव विराजमान हैं। सुन्दर हार ने सर्प के समान उन स्तन रूपी महादेव जी को विभूषित किया है। इसे देखकर कामदेव का घमंड भी चूर-

युद्ध के लिए तत्पर म्लेच्छ स्त्रियाँ और भगवान कल्कि

चूर हो जाता है, अर्थात् जो अत्यन्त सुन्दर है, उस पर कौन पुरुष प्रहार करेगा? तुम्हारे कलंक से रहित चन्द्र-मुख पर लहराते बाल ऐसे हैं, जैसे चकोर चाँदनी का पान कर रहे हैं। पृथ्वी पर ऐसा कौन-सा पुरुष है, जो ऐसे मुख पर प्रहार करेगा? भारी स्तनों के बोझ से थोड़ी झुकी हुई तुम्हारी बहुत पतली कमर छोटे-छोटे रोओं से सुशोभित है। ऐसे अंग पर कौन पुरुष प्रहार करेगा? तुम्हारे इन आँखों को सुख देने वाले, वस्त्रों से ढके, अति सुन्दर दोष रहित जघन पर कौन पुरुष बाणों की मार करेगा।'

कल्कि जी के ये वचन सुनकर म्लेच्छ स्त्रियाँ हँसने लगीं और बोलीं—'हे महात्मन्! जब आपने हमारे पतियों को मार डाला, तब हमारा भी नाश हो चुका।'

यह कहकर वे स्त्रियाँ कल्कि जी का नाश करने के लिए तैयार हुईं। वे जब अस्त्रों को छोड़ने लगीं तो अस्त्र उनके हाथ में धरे-के-धरे रह गए।

तलवार, शक्ति, धनुष-बाण, भाले, लाठी आदि सोने से मढ़े हुए शस्त्रों से उन शस्त्रों के अधिष्ठाता देवतागण साक्षात प्रकट होकर म्लेच्छों की स्त्रियों से कहने लगे—'हे स्त्रियो! हमने जिस (ईश्वर) से तेज पाया है और जिस तेज के द्वारा हम प्राणियों को मारते हैं, इन्हें उन्हीं सर्वव्यापक परमात्मा समझो और दृढ़ विश्वास करो। हे स्त्रियो! हम इन्हीं ईश्वर की आज्ञा के अनुसार गतिशील होते हैं। हमने इन्हीं परमात्मा से नाम और रूप पाकर प्रसिद्धि प्राप्त की है। रूप, गन्ध, रस, स्पर्श और शब्दादि पाँच गुणों के आधार पंचभूत हैं। इनमें रहकर ही ये अपना-अपना काम करते हैं। ये कल्कि जी वही परमात्मा हैं। इन्हीं की आज्ञा से काल, स्वभाव, संस्कार और संज्ञा आदि की आश्रयभूता परा-प्रकृति महत्तत्व और अहंकार आदि उत्पन्न करती है। सृष्टि, स्थिति और प्रलय (यानी संसार

की रचना, पालन-पोषण और विनाश) संसार का कार्य ईश्वर की माया के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। परमात्मा ही सबके आदि और अन्त हैं। इनसे ही संसार की सभी शुभाशुभ बातें होती हैं और ये ही ईश्वर हैं। यह मेरा पति है, मैं इनकी स्त्री हूँ, यह मेरा पुत्र है, यह मेरा अपना है, ये मेरे बन्धु-बान्धव हैं—ये सब बातें स्वप्न जैसी हैं और जादू (या इन्द्रजाल) जैसे तरह-तरह के व्यवहार इनसे ही प्रकट हो रहे हैं। जो लोग केवल स्नेह और मोह के अधीन होकर आवागमन करते हैं, जो लोग राग, द्वेष, विद्वेष आदि के कारण कल्कि जी की सेवा नहीं करते, वे ही इस संसार को सत्य समझते हैं। काल कहाँ से आया? मृत्यु कहाँ से आती है? यम कौन है? देवतागण कौन हैं? ये सब भगवान् कल्कि जी ही अपनी माया द्वारा अनेक (रूपों में) हो गए हैं। हे महिलाओ! हम शस्त्र नहीं हैं, हममें किसी भी प्रकार की मार करने की शक्ति नहीं हैं। वे परमात्मा ही शस्त्र हैं, वे ही शस्त्र द्वारा मार कर सकते है। इसमें जो दो भेद हैं, वे केवल परमात्मा की ही माया है। जब दैत्यपति प्रह्लाद के कहने के अनुसार भगवान् नारायण ने नृसिंह का रूप धारण किया, तब जिस तरह हम (शस्त्रगण) उन पर प्रहार नहीं कर सके थे, उसी तरह कल्कि जी के सेवकों पर भी आघात करने की शक्ति हममें नहीं है।'

अस्त्र-शस्त्रों के यह वचन सुनकर स्त्रियों का हृदय अचरज से भर गया और वे स्त्रियाँ स्नेह, मोह आदि को छोड़कर कल्कि जी की शरण में आ गईं। उन म्लेच्छ स्त्रियों को ज्ञान की निष्ठा में लगा हुआ देखकर पद्मा जी के स्वामी कल्कि जी ने हँसकर पापों के समूहों को नाश करने वाले भक्ति-योग के बारे में बताना शुरू किया। इसके बाद लक्ष्मी पति भगवान् कल्कि ने उन्हें आत्मनिष्ठा विषयक कर्मयोग और सांसारिक सभी प्रकार के भेदों का मूल ज्ञानयोग का

उपदेश दिया, जिससे व्यक्ति कर्म करते हुए भी उसके फल को न भोगने वाले नैष्कर्म्य को प्राप्त कर लेता है। इसके बाद उन सभी स्त्रियों ने कल्कि जी के उपदेश से ज्ञान प्राप्त किया और इन्द्रिय को जीत कर भक्ति से उस परम पद को पा लिया, जो संन्यासियों को भी दुर्लभ है।

इस प्रकार बुद्ध के अनुयायी म्लेच्छों के साथा भयंकर युद्ध कर, उन बौद्धों एवं म्लेच्छों के समूहों का वध कर, उनकी जीवात्मा को ज्योतिर्मय स्थान (तारागण) और उनकी पत्नियों को मोक्ष देकर भगवान् कल्कि बहुत ही शोभायमान् हुए।

जो लोग बौद्धों तथा म्लेच्छों के नाश की यह कथा आदरपूर्वक सुनेंगे और दूसरों से कहेंगे उनके समस्त शोक दूर होंगे, उनका सदैव भला होगा, उनमें भगवान् विष्णु के प्रति भक्ति पैदा होगी और जन्म-मरण से छुटकारा मिलेगा। इस कथा को सुनने से सारी सम्पदा मिलती है, माया-मोह दूर होता है और फिर संसार के दुःखों से दुःखी नहीं होना पड़ता।

दूसरा अध्याय

कल्कि जी, बौद्धों और म्लेच्छों को हरा कर और रत्न तथा धन लेकर, सेना सहित कीकट पुरी से लौटे। इसके बाद धर्म-रक्षक, परम तेजवान्, कल्कि जी ने वक्रतीर्थ में आकर विधिपूर्वक स्नान किया।

कल्कि जी,लोकों के पालन करने वाले (लोकपाल) के समान, भाइयों और कई प्रिय स्वजनों के साथ वहाँ पर रहने लगे। एक बार, कल्कि जी ने (दीन व) दुःखी हृदय वाले कुछ मुनियों को वहाँ पर (दीनतापूर्वक) आए देखा। डरे हुए मुनिगण कल्कि जी के पास आकर बार-बार कहने लगे—'हे संसार के स्वामिन्! रक्षा करो!'

बौने कद वाले, वल्कल वस्त्र और जटाधारी नम्रतामूर्ति बालखिल्यादि (जिनका शरीर अंगूठे के समान छोटा हो) से श्री कल्कि जी ने नम्रतापूर्वक पूछा—'आप लोग कहाँ से आएँ हैं ? किससे डरे हुए हैं ? बताइए। वह (आपको डराने वाला) चाहे देवताओं का स्वामी इन्द्र भी होगा, तो भी मैं उसका नाश करूँगा।'

कमल के समान (सुन्दर) नेत्र वाले कल्कि जी के ये वचन सुनकर ऋषि-मुनियों के चित्त प्रसन्न हुए और उन्होंने राक्षस निकुम्भ की लड़की की कथा कहनी शुरू की—'हे विष्णुयश के पुत्र, सुनिए! कुम्भकर्ण के पुत्र निकुम्भ की एक कन्या है। वह आकाश मंडल से आधी ऊँची है। (वह इतनी ऊँची है कि आकाश को छूती है) उसका नाम कुथोदरी है। वह राक्षसी कालकञ्ज नामक राक्षस की पत्नी है। उसके पुत्र का नाम विकञ्ज है। वह राक्षसी अपना मस्तक हिमालय पर्वत पर और चरण निषधांचल पर रख कर पुत्र विकञ्ज के (मुख के) पास स्तन रखकर उसे स्तनों से दूध पिलाती है। हम उस (राक्षसी) की साँस से तंग आकर यहाँ आए हैं। भाग्य ही हमको यहाँ लाया है। इसी कारण हम आपके चरणों में पहुँचे हैं। हे देव! राक्षसों से तथा विपत्तियों से मुनियों की रक्षा कीजिए।'

मुनियों के ये वचन सुनकर शत्रु-पुर को जीतने वाले कल्कि जी सेना सहित हिमालय पर्वत की ओर गए। हिमालय पर्वत की तराई पहुँचकर एक रात वहाँ बिताई। फिर उन्होंने प्रातःकाल ज्यों ही सेना सहित यात्रा करने की इच्छा प्रकट की, त्यों ही (उन्हें) एक दूध की नदी दिखाई दी। वह नदी शंख और चन्द्रमा की भाँति सफेद, बड़ी और तेज़ बहाव वाली थी। उसमें फेन उठ रहे थे। कल्कि जी के सभी सेवक ऐसी दूध की नदी को देखकर अचम्भे में पड़ गए।

भगवान् कल्कि यद्यपि इसका कारण जानते थे, तथापि हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेना के सभी योद्धाओं से घिरे हुए उन्होंने (अनजान बनकर) महर्षियों से पूछा—'इस नदी का नाम क्या है ? इसमें किस कारण दूध बहता है ?'

कल्कि जी के ये वचन सुनकर ऋषियों ने आदरपूर्वक कहा—'हे कल्कि जी! इस दूध वाली नदी की उत्पत्ति की कहानी बताते हैं। सुनिए! कुथोदरी नाामक राक्षसी के स्तन का दूध इस हिमालय पर्वत से गिर कर नदी के रूप में बह रहा है।' (तत्पश्चात्) सात घड़ी के बाद एक और दूध की नदी (दूसरे स्तन से) बहेगी। हे महामते! फिर यह नदी सारहीन होकर तटाकार हो जाएगी। (केवल किनारे रह जाएँगे)।

ये वचन सुनकर सेना सहित कल्कि जी बोले—'कैसा आश्चर्य है! इसी राक्षसी के स्तन के दूध से इतनी बड़ी नदी निकली है। एक स्तन से विकञ्ज को प्यार से दूध पिला रही है। इसके शरीर का परिमाण (लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई आदि) कितना है, यह नहीं जाना जा सकता।'

अचरज से भरे सबने कहा कि इस राक्षसी में कितना बल है! इसके बाद परमात्मा कल्कि जी सेना सहित तैयार होकर राक्षसी के पास गए। मुनि लोग उस राक्षसी के रहने का रास्ता दिखाने लगे। उन्होंने जाकर देखा कि बादलों के समान एक राक्षसी पर्वत की चोटी पर बैठकर अपने पुत्र को अपने स्तन से दूध पिला रही है। उसकी साँस इतनी तेज़ थी कि उससे टकरा कर जंगली हाथी तक दूर गिर रहे हैं। उसके कान के छेद में सिंह समूह सो रहे हैं। उसके रोमछिद्र (जहाँ से बाल निकलते हैं) इतने बड़े हैं कि हिरनों को उनके गुफा होने का भ्रम हो गया है, जिससे वे हिरन तथा उनके बच्चे और उन बच्चों के बच्चे उनमें सो रहे हैं। (उन पशुओं को) व्याध से किसी तरह का डर नहीं है और वे जौंक (लीख) की तरह

लगे हुए हैं। पर्वत के शिखर पर वह राक्षसी ऐसी लग रही थी, मानों दूसरा कोई पर्वत (शिखर) ही हो। सब सैनिक डर के मारे बेचैन हो गए। उनकी अकल मारी गई और वे अपने अस्त्र छोड़ने के लिए तैयार हो गए। ऐसे सिपाहियों से कमल के समान नेत्र वाले कल्कि जी बोले—'इस पहाड़ी किले में तुम सब अग्नि-किला बनाकर रहो और जो योद्धा हाथियों, घोड़ों और रथों पर सवार हैं, वे हमारे साथ आ जाएँ। मैं थोड़ी-सी सेना लेकर बाणों के समूह, तलवारों तथा फरसे से मार करने के लिए धीरे-धीरे इसके सामने जाता हूँ।'

कल्कि जी यह कहकर सेना को पीछे रखकर बाणों से उस राक्षसी पर वार करने लगे। राक्षसी ने सहसा क्रोध में आग बबूला होकर बड़ी अजीब-सी आवाज़ की। उस भयंकर आवाज़ से सभी डर गए। सारे सैनिक बेहोश होकर भूमि पर गिरने लगे। कुथोदरी भयानक मुँह खोलकर अपनी (तेज़) साँस से रथ, हाथी, घोड़े आदि खींचकर हड़पने लगी। जिस तरह रीछ की (तेज़) साँस से चींटियाँ उसके मुँह में घुसती चली जाती हैं, उसी तरह सेना सहित कल्कि जी ने उस राक्षसी के पेट में प्रवेश किया।

(यह देखकर देवतागण और गन्धर्वगण हाहाकार करने लगे।) मुनियों ने शाप दिया और महर्षियों ने कल्कि जी की कुशलता मनाने के लिए मंत्र का जप करना शुरू कर दिया।

वेद के ज्ञाता अन्य ब्राह्मण लोग दुःखी होकर गिरने लगे। बचे हुए योद्धा रोने लगे, (पर) दुष्ट राक्षस लोग प्रसन्न हुए।

देवताओं के शत्रुओं का नाश करने वाले कमलनयन कल्कि जी ने इस प्रकार संसार को दुःखी देखकर स्वयं ही अपने को याद किया। (अथवा एक क्षण के लिए विचारा) इसके बाद कल्कि जी ने उस (राक्षसी के) अन्धकारमय उदर

में (अग्नि) बाण द्वारा आग प्रकट की और बाण से उत्पन्न उस अग्नि को कपड़े, चमड़े और रथ की लकड़ियों से धधकाकर, फिर अपनी तलवार उठाई।

जिस प्रकार देवताओं के राजा (सहस्र नयन) इन्द्र अपने वज्र द्वारा वृत्रासुर (राक्षस) की कोख में छेद कर बाहर हो गए थे, उसी प्रकार सबके ईश्वर, पापों का नाश करने वाले कल्कि जी उस बड़ी तलवार से राक्षसी की (दाहिनी) कोख को भेद कर बलवान् अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाले बन्धु-बान्धवों के साथ बाहर निकल आए।

बहुत-से हाथी, घोड़े, रथ के योद्धा, सवार और पैदल सिपाही उस राक्षसी की योनि-मार्ग से निकल पड़े और कई उस की नाक के छेदों से और कानों से बाहर निकल आए। इसके बाद खून से लथपथ योद्धागण बाहर निकलकर राक्षसी को हाथ-पाँव चलाते हुए देखकर उसी समय बाणों द्वारा उसे बींधने लगे। पेट, सिर आदि सारे अंगों के छिन्न-भिन्न होने

कुशोदरी राक्षसी का वध करते भगवान कल्कि

पर, राक्षसी ने भयंकर आवाज़ से दसों दिशाएँ गुँजा दीं और शरीर की भारी रगड़ से पहाड़ों को चूर-चूर करती हुई प्राण त्याग दिए।

(राक्षसी का पुत्र) विकञ्ज अपनी माँ की यह दशा देखकर बेचैन और क्रुद्ध हुआ और वह बिना हथियारों के ही सेना में घुस गया। उसकी छाती पर हाथियों की माला, सारे अंगों में आभूषण के रूप में घोड़े, मस्तक पर महासर्प की पगड़ी और उंगलियों में शेर की अंगूठी है। (वह) विकञ्ज अपनी माता के शोक से दुःखी होकर कल्कि जी की सेना का मर्दन (नाश) करने लगा। कल्कि जी ने उस पाँच साल के बालक का नाश करने के लिए परशुरामजी का दिया ब्रह्मास्त्र धारण किया और उस का मस्तक काट कर पृथ्वी पर डाल दिया। मुनियों के कहने से कल्कि जी ने गेरू आदि से सजी पर्वत की चोटी के समान अद्‌भुत, खून से लथपथ राक्षसी का उसके पुत्र के साथ नाश किया।

देवताओं ने कल्कि जी पर फूलों की वर्षा की और मुनियों ने स्तोत्रों द्वारा उनकी भली-भाँति पूजा की। (तब) कल्कि जी ने हरिद्वार स्थित गंगा तट पर अपनी सेना का डेरा डाला। भगवान् कल्कि जी ने अपने नौकर-चाकर आदि सहित वह रात उसी जगह पर गुजारी। सवेरे देखा कि मुनि लोग गंगा स्नान के बहाने उनको देखने के लिए व्याकुल हो रहे हैं।

कल्कि जी हरिद्वार में गंगा जी के तट के पास पिण्डारक नाम के जंगल में अपने नौकर-चाकर सहित रहने लगे। एक दिन कल्कि जी जह्नु की पुत्री (जाह्नवी अर्थात् गंगा) का दर्शन कर रहे थे। उसी समय मुनि लोग उनके दर्शन के लिए आकर विधान पूर्वक उनकी स्तुति करने लगे।

तीसरा अध्याय

सूत जी बोले—परम धार्मिक कल्कि जी ने आनन्दपूर्वक आए हुए और आराम से बैठे हुए मुनियों को देखकर उनकी विधिपूर्वक पूजा करके कहा—साक्षात् सूर्य के समान तेजस्वी, तीर्थ यात्रा के लिए तैयार, तीनों लोकों की भलाई करने वाले आप कौन हैं ? आज आप लोग हमारे भाग्य से ही यहाँ उपस्थित हुए हैं। आज मैं इस संसार में पुण्यवान्, भाग्यवान् और यशस्वी हुआ हूँ, क्योंकि आप लोगों ने आज मुझे कृपापूर्ण नेत्रों से देखा है।

इसके बाद, वामदेव, अत्रि, वसिष्ठ, गालव, भृगु, पराशर, नारद, अश्वत्थामा, परशुराम, कृपाचार्य, त्रित, दुर्वासा, देवल, कण्व, वेदप्रमिति और अंगिरा आदि सभी मुनिगण तथा अन्यान्य महाव्रत धारण करने वाले ऋषिगण, चन्द्र और सूर्यकुल में उत्पन्न, महावीर्यवान् सदैव तपस्या में लगे महाराज मरू और देवापि को सामने कर (मुनि लोग) पापों का नाश करने वाले कल्कि जी से ऐसे ही बोले जैसे प्रसन्नचित्त देवता लोग महासागर के तट पर स्थित विष्णु जी से बोले थे।

मुनिगण बोले—'हे समस्त संसार के विजेता, हे जगन्नाथ, हे समस्त लोकों के अन्तःकरण को जानने वाले, हे सृष्टि की स्थिति और प्रलय के स्वामी, हे परमात्मन् आप प्रसन्न होवें। हे पद्मा जी के स्वामी, आप काल-स्वरूप हैं। संसार के गुण और कर्म आप में ही रहते हैं। ब्रह्मा आदि देवतागण भी आपके कमल के समान चरणों की पूजा करते हैं। आप इस समय हमसे प्रसन्न होवें।'

इस प्रकार मुनियों के वचन सुनकर संसार के स्वामी कल्कि जी बोले—'हे मुनियो! आप लोगों के सामने ये दो महाबलवान्, पराक्रमी और तपस्वी लोग कौन हैं ? ये दोनों

लोग गंगा जी की स्तुति कर प्रसन्नचित यहाँ किस कारण आए हैं ? तथा (श्री कल्कि ने उन दोनों से पूछा कि) आप किस कारण गंगा जी की स्तुति करते हैं और आपके नाम क्या हैं ?'

तब उन दोनों महाशयों में से एक, मरु प्रसन्न होकर, हाथ जोड़कर सामने खड़े होकर विनम्र वाणी में अपने वंश की कीर्ति का वर्णन करने लगे—'आप सर्वव्यापी, परमात्मा और अन्तर्यामी हैं, हे प्रभो! आप तो सब कुछ जानते हैं। आपकी आज्ञा से सबकुछ बताता हूँ। आप सुनिए। आपकी नाभि से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। ब्रह्मा के पुत्र मरीचि, मरीचि के मनु और मनु के सत्य पराक्रमी इक्ष्वाकु उत्पन्न हुए थे। इक्ष्वाकु के पुत्र युवनाश्व, युवनाश्व के पुत्र मान्धाता, मान्धाता के पुत्र पुरुकुत्स हुए पुरुकुत्स के पुत्र बुद्धिमान् अनरण्य पैदा हुए। अनरण्य के पुत्र त्रसदस्यु, उनके हर्यश्व, के पुत्र अरुण हुए। अरुण के पुत्र बुद्धिमान् त्रिशंकु और त्रिशंकु के प्रतापवान् महाराजा हरिश्चन्द्र हुए थे। महाराजा हरिश्चन्द्र के पुत्र हरित (हरीत या रोहित), हरित के पुत्र भरुक, भरुक के पुत्र वृक् (या रुरूक), वृक् के पुत्र सगर और सगर के पुत्र असमञ्जस और असमञ्जस के पुत्र अंशुमान हुए। अंशुमान के पुत्र दिलीप और दिलीप के भगीरथ नामक प्रसिद्ध पुत्र थे। वे (भगीरथ) ही गंगा को लाए थे। इसी कारण गंगा जी भागीरथी नाम से प्रसिद्ध हुई। आपके चरणों से उत्पन्न होने के कारण संसार के लोग इनकी स्तुति, प्रणाम और पूजा करते हैं। भगीरथी के पुत्र नाभ (या नाभाग), नाभ के पुत्र बलवान् सन्धुद्वीप हुए और सिन्धुद्वीप के अयुताश्व ने जन्म लिया। अयुताश्व के पुत्र ऋतुपर्ण, ऋतुपर्ण के पुत्र सुदास, सुदास के पुत्र सौदास, सौदास के पुत्र बुद्धिमान् अश्मक हुए। अश्मक के पुत्र मूलक, मूलक के पुत्र दशरथ (प्रथम) हुए और दशरथ के एडविड ने जन्म

लिया। एडविड के पुत्र विश्वासह, विश्वासह के पुत्र खट्वांग और खट्वांग के पुत्र दीर्घबाहु थे। दीर्घबाहु के पुत्र रघु, रघु के पुत्र अज, अज के पुत्र दशरथ (द्वितीय) हुए। दशरथ से साक्षात् संसार के स्वामी अवतार रूप में श्रीराम ने जन्म लिया।'

रामावतार की कथा सुनकर कल्कि जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और श्रीराम-चरित्र का विस्तार से वर्णन करने के लिए मरु से कहा। मरु ने कहा—'इस पृथ्वी में ऐसा कौन है, जो सीता जी के पति श्री रामचन्द्र जी के कर्मों का वर्णन कर सके। हज़ार मुख वाले अनन्त जी भी उनके यश का गुणगान करने में असमर्थ हैं, फिर भी आप की आज्ञा से अपनी बुद्धि के अनुसार पाप-ताप को नाश करने वाले श्री रामचन्द्र जी के पावन चरित का वर्णन करता हूँ।

प्राचीन समय में ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा (राक्षसों के विनाश के लिए) प्रार्थना किए जाने पर सूर्यवंश में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, इन चार अंशों के रूप में, अज-पुत्र

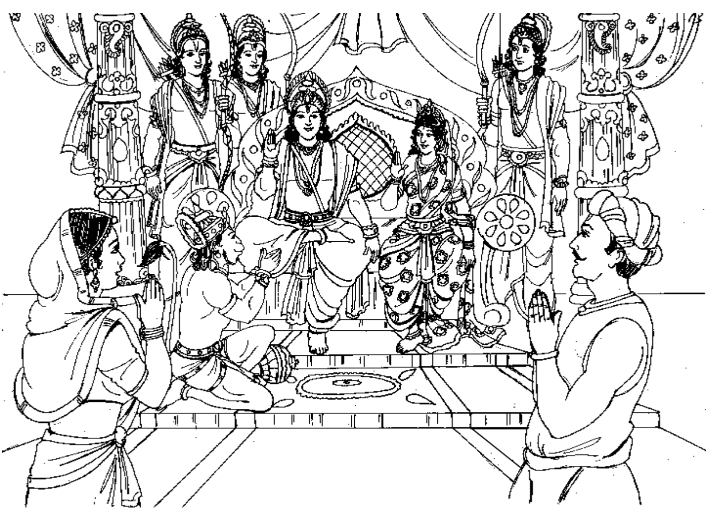

राम दरबार

दशरथ जी के यहाँ, राक्षसों का नाश करने वाले, जानकी जी के पति श्री रामचन्द्र जी ने अवतार लिया था। उन्होंने शैशवास्था में ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डालने वाले राक्षसों को अपने बल से नष्ट कर श्रेष्ठता को सिद्ध किया। जिनकी कृपा से इच्छाओं वाले संसार में पुनर्जन्म नहीं होता, जो महाबलवान् और प्रभा वाले हैं, ऐसे समस्त शस्त्र विद्याओं में पारंगत श्री रामचन्द्र जी संसार को मोहने वाला और काम को भी लजाने वाला सुन्दर रूप धारण कर अपने छोटे भाई सहित मुनि (विश्वामित्र) के साथ राजा जनक की सभा में गए। (ब्रह्मा जी के पीछे) सुशोभित चन्द्रमा की भाँति अनुपम तेजस्वी श्री रामचन्द्र जी अपने छोटे भाई (लक्ष्मण) सहित विश्वामित्र मुनि के पीछे विधिपूर्वक बैठे, आदि देव परमात्मा को सामने देख कर राजा जनक जी ने सोचा कि ये जानकी के योग्य वर हैं और अपने प्रण की कठोरता को समझ कर मन-ही-मन अपनी भर्त्सना की और श्री रामचन्द्र जी के पास गए। श्री रामचन्द्र जी ने राजा जनक का सम्मान पाकर और सीता जी की चितवन से सत्कार पाकर, अत्यन्त कठोर धनुष को हाथ में लेकर उसके दो टुकड़े कर दिए। इससे 'श्री रामचन्द्र की जय', 'श्री रामचन्द्र की जय' की ऊँची ध्वनि हुई, जो तीनों लोकों में फैल गई। (इस प्रकार) श्री रामचन्द्र जी अति शोभित हुए।

इसके बाद राजा जनक ने दशरथ जी के चार पुत्रों को यानी राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को अपनी अलंकृत चार पुत्रियों का यानी क्रमशः सीता, उर्मिला, माण्डवी और श्रुतिकीर्ति का प्रसन्नतापूर्वक कन्यादान कर दिया। जब सब लोग आनन्दपूर्वक विवाह करके अवधपुरी को जा रहे थे, तब रास्ते में भृगुपुत्र परशुराम जी ने श्री रामचन्द्र जी पर अपनी असीम वीरता दर्शायी।

इसके बाद राजा दशरथ जी ने अपनी राजधानी अयोध्या में पहुँचने पर मंत्रियों से सलाह की और सीतापति श्री रामचन्द्र जी को अपने विचित्र सिंहासन पर अभिषिक्त करने का विचार किया। राज्याभिषेक (श्री रामचन्द्र जी को गद्‌दी पर बैठाने) की सभी तैयारियाँ होने लगीं। परिजन लोग (सेवक आदि) अभिषेक का सामान इकट्ठा करने लगे। तभी कैकेयी ने आकर राज्याभिषेक करने के लिए तत्पर राजा दशरथ जी को रोका।

इसके बाद, अपने पिता की आज्ञानुसार श्री रामचन्द्र जी सुमित्रा के पुत्र अर्थात् अपने छोटे भाई लक्ष्मण और जानकी जी के सहित वन को गए। साथ-साथ चलने वाले नगर निवासियों को छोड़कर फिर भगवान् राम गुह के घर पहुँचे और वहाँ (उन्होंने) राज-चिह्नों (राजकीय वस्त्राभूषण) को हटाकर जटा-वल्कल (जटा का अर्थ बाल और वल्कल का अर्थ पेड़ की छाल से बने वस्त्र है) धारण कर लिए।

जंगल में अपनी पत्नी और छोटे भाई सहित श्री रामचन्द्र मुनिवेश में (सभी लोगों द्वारा) पूजे जाने लगे और पंचवटी आश्रम में रहने लगे। इसके बाद भरत जी दुःखी होकर उनके पास आए। श्री रामचन्द्र जी अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर दुःखी हुए। भरत जी को समझाया। उसके बाद अनेक वर्ष तपोवन में बिताए।

इसके बाद, कामदेव के बाण से पीड़ित, श्रेष्ठ वेश वाली, सुन्दरी, हंसी-मजाक करती हुई, वराभिलाषी, रावण की बहन शूर्पणखा को देखकर श्री रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण जी को इशारा किया और लक्ष्मण जी ने तेज़ तलवार से उस राक्षसी को कुरूप कर दिया।

इसके बाद (श्री रामचन्द्र जी ने) रास्ते में एक दानव को नष्ट कर, रावण के अनुगामी चौदह हजार सेना के स्वामी खर-दूषण को उसके सेवकों सहित नष्ट किया। इसके उपरान्त

(अपनी प्रिय) सीता जी की प्रिय इच्छा के अनुसार सोने के चंचल हिरण (रूपी राक्षस) को मार डाला।

इसके बाद में राम को (सोने के हिरण के रूप में राक्षस का पीछा करते हुए) व लक्ष्मण को जाते हुए देखकर, रावण ने शीघ्रतापूर्वक श्री राम के आश्रम से सीता का हरण कर लिया। अपनी घास-फूस की बनी कुटिया में सीता जी को न देखकर 'हा सीते! हा सीते!' विलाप करते हुए श्री रामचन्द्र जी मूर्च्छित हो गए।

इसके बाद, वन में ऋषियों के आश्रमों, पहाड़ों की गुफाओं, जल-स्थानों और जोहड़ों अर्थात् सभी स्थानों में सीता जी को ढूँढ़ते हुए रास्ते में उन्होंने अधमरे-से जटायु को पड़ा हुआ देखा। उस जटायु से रावण द्वारा सीता जी को हरण किए जाने का समाचार सुना। जटायु की मृत्यु होने पर श्री रामचन्द्र जी ने पितृतुल्य उसका अन्तिम (अग्नि) संस्कार किया।

सीता जी के वियोग से दुःखी धनुर्धरों में अग्रणी श्री रामचन्द्र जी ने श्री लक्ष्मण जी के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर नव-परिचय प्राप्त वानरों की सेना को देखा और सूर्यपुत्र बलि के छोटे भाई सुग्रीव के मंत्री, पवन पुत्र (श्री हनुमान जी) से मिले। फिर सुग्रीव और हनुमान जी द्वारा प्रार्थना किए जाने पर श्री रामचन्द्र जी ने सप्त ताल को भेद डाला और बाण से बालि को मार कर सुग्रीव से मित्रता की और उन्हें वानरों का राजा बनाया।

इसके बाद, पवन पुत्र हनुमान जी सीता जी को ढूँढ़ते हुए सम्पाति (जटायु के बड़े भाई) के कहने के अनुसार समुद्र को पार कर लंकापुरी में प्रवेश करके अशोक वन में सीता जी के साथ बातचीत करके उन्हें आनन्द दिया और तब श्री रामचन्द्र जी के पास आए। यह जानकर कि हनुमान जी ने

अपनी शक्ति से अनेक राक्षसों का नाश किया है और लंका को जलाया है, श्री रामचन्द्र जी ने समुद्र को भयभीत कर (या समुद्र की सलाह से) पर्वतों-शिलाओं से समुद्र को बाँध कर बन्दरों के समूह के साथ लंका को प्रस्थान किया और क्रोधित होकर राक्षसों के स्वामी रावण के नगर, प्राचीर आदि का विनाश कर डाला। इसके बाद लक्ष्मण जी सहित भगवान् राम युद्ध में प्रबल व भयंकर धनुष को धारण कर, तेज बाणों सहित, हाथी, घोड़े और रथ से युक्त और काल की जीभ जैसी भयंकर तलवार से राक्षसों का नाश करके शोभित हुए।

इसके बाद, वानरों के राजा सुग्रीव, पवनसुत हनुमान जी, नल, अंगद, ऋक्ष जामवन्त आदि महाबलवान (ऋक्ष और) वानरों ने वृक्षों और पर्वतों की भयंकर चोट से महाबली, पराक्रमी, देवताओं के वैरी रावण के सेवक राक्षसों का नाश किया। ये राक्षस जानकी जी के क्रोध से पहले ही नष्ट हो रहे थे।

फिर, अति बलवान् लक्ष्मण जी ने घनघोर शब्द करने वाले और रक्त पीने वाले सेवकों से घिरे हुए देवशत्रु, रावण-पुत्र (इन्द्रजीत) मेघनाथ का वध किया। इसके बाद क्रोधित होकर (उन्होंने) निकुम्भ, मकराक्ष और विकटादि राक्षसों को भी मार डाला।

इसके बाद, रावण ने भी करोड़ों हाथियों, रथों और घोड़ों पर सवार तथा पैदल सेनाओं के साथ युद्ध स्थल में जाकर, वानर सेना के स्वामी सुग्रीव के प्रभु अनन्त दिव्य अस्त्रों के धारण करने वाले श्री रामचन्द्र जी के पास आकर युद्ध करना शुरू किया। रघुवीर श्री रामचन्द्र जी ने ब्रह्मा जी के वर से जिस रावण को खुशहाली प्राप्त हुई थी और जो महाबली और पराक्रमी था और युद्ध भूमि में जो पहाड़ की तरह अविचल था, राक्षसों के सेनापति उस शत्रु रावण को

और (उसके भाई) कुम्भकर्ण को तीक्ष्ण बाणों से बेध डाला।

इसके बाद श्री राम और रावण ने आपस में तीक्ष्ण बाण चलाए, जिनसे बादलों की घटा के समान पूरा आकाश ढक गया। बाणों के आपस में टकराने से आवाज़ें हुई और (टकराव से) आग की चिंगारियाँ निकलने लगीं। (उन चिंगारियों के निकलने से) बिजली के चमकने जैसी शोभा दिखाई दी। धनुषों की टंकार ऐसी थी, मानों सारी पृथ्वी पर बिजली कड़क रही हो। उससे युद्ध भूमि बहुत भयंकर मालूम होने लगी। वह रावण, जिससे इन्द्र तक भयभीत होता था, सीता जी के क्रोध से व्याप्त तथा श्री रामचन्द्र जी के आग उगलने वाले अस्त्रों से भस्म होकर भूमि पर गिर पड़ा। रावण के मारे जाने पर वानरों में श्रेष्ठ हनुमान जी ने अग्नि द्वारा शुद्ध और पवित्र की गई (या अग्नि से भी जो जलाई नहीं जा सकी) ऐसी जानकी जी को श्री रामचन्द्र जी को समर्पित किया और श्री रामचन्द्र जी प्रसन्न होकर अपनी पुरी को गए।

इसके बाद, देवताओं के राजा इन्द्र के कहने के अनुसार श्री रामचन्द्र जी ने तुरन्त विभीषण को (जो अब भयरहित और शान्त था) राजगद्दी पर बैठाया।

वानरों (के राजाओं) से घिरे हुए, सीता जी तथा लक्ष्मण जी सहित, श्री रामचन्द्र जी अत्यन्त सुन्दर शोभायमान पुष्पक विमान पर चढ़कर अयोध्या पुरी आए। मार्ग में आते हुए बीच जंगल में घुसते समय भगवान् राम अपना मुनिवेश और गुह की मित्रता को याद करने लगे, तभी श्रेष्ठ मुनियों ने आकर उनकी पूजा की।

इसके उपरान्त, अपने लोगों से घिरे हुए श्री रामचन्द्र जी ने भरत की दुःखी माता (कैकयी) (या दुःखी भरत को) को ढाढस बँधाया और माताओं की आज्ञानुसार पिता के सिंहासन पर बैठे। वशिष्ठ आदि श्रेष्ठ ऋषियों ने उनका

राज्याभिषेक किया (गद्दी पर बैठाया)। इसके बाद, वे (सब लोकों के स्वामी जन पालक श्रीराम) देवताओं के राजा इन्द्र के समान समस्त लोकों के पालन करने वाले रूप में शोभित हुए। उनकी प्रजा बहुत-से धन वाली हो गई और ब्राह्मण लोग तप में लग गए। सब लोग परस्पर प्रीति भाव रखकर, भय-रहित होकर अपने-अपने धर्म के कार्यों में लग गए। समय पर बादल बरसने लगे, जिस से पृथ्वी सदा हरित (हरी-भरी) हुई। महान् बलवान् पराक्रमी श्री रामचन्द्र जी के राज्यकाल में सारा संसार अच्छे मार्ग पर चलने लगा।

इस प्रकार दस हज़ार वर्ष तक श्री रामचन्द्र जी ने अपने अनेक गुणों से प्रजा को प्रसन्न रखते हुए अपना मनोरथ पूरा करके अपनी प्रिय जानकी जी के मन को आनन्दित किया। महामुनियों के सहित तीन अश्वमेध यज्ञ भी बिना बाधा के पूरे किए और अनेक दक्षिणा व दान और यज्ञों द्वारा देवताओं को संतुष्ट किया।

इसके बाद श्री रामचन्द्र जी ने किसी कारणवश निर्दय चित्त (करके) जानकी जी को (परित्याग कर) जंगल में छोड़ दिया। फिर, प्रचेता-पुत्र दयालु वाल्मीकि जी ने अपनी बनाई हुई रामायण को याद किया और दुःखी चित्त से श्री रामचन्द्र जी की परम प्रिय जानकी जी को अपने आश्रम ले गए। पृथ्वी की पुत्री जानकी जी से कुश और लव नाम के दो महाबलवान् पराक्रमी पुत्र पैदा हुए। इन दो राजकुमारों ने श्री रामचन्द्र जी के पास जाकर उनकी कीर्ति का गायन किया। मुनिवर श्री वाल्मीकि जी ने इन दोनों पुत्रों के सहित निन्दारहित, देवताओं द्वारा पूजी गई सीता जी को श्री रामचन्द्र जी को समर्पित किया।

इसके उपरान्त श्री रामचन्द्र जी ने अपने सामने पुत्रों सहित उपस्थित रोती हुई जानकी जी से कहा—तुम अपनी

शुद्धि के लिए फिर अग्नि में प्रवेश करो। श्री रामचन्द्र जी का यह वाक्य सुनकर सीता जी उनके कमल रूपी चरणों में प्रणाम करती हुई अपनी माता पृथ्वी के साथ मणियों के समूह के समान उज्ज्वल पाताल में प्रवेश कर गईं।

श्री रामचन्द्र जी जानकी जी के इस प्रकार पाताल में प्रवेश को याद करते हुए गुरु वशिष्ठ, छोटे भाइयों, परिजनों तथा पशुओं सहित प्रसन्न चित्त सरयू नदी के जल को छूकर सुन्दर विमान में बैठकर वैकुण्ठ धाम को चले गए। श्री रामचन्द्र जी के इस चरित्र को, जो कानों के लिए अमृत के समान है, आदर से सुनेंगे, श्री रामचन्द्र जी की कृपा से उनकी सभी बाधाएँ दूर होंगी, रोगों की शान्ति होगी, वंश बढ़ेगा, धन और जन की सम्पत्ति और स्वर्गादि की सम्पत्ति उन्हें मिलेगी। इसके पाठ करने से अन्तःकरण में आनन्द उत्पन्न होगा और संसार-सागर सूख जाएगा और परम प्रभु का पद प्राप्त होगा।

चौथा अध्याय

श्री रामचन्द्र जी के पुत्र कुश, कुश के पुत्र अतिथि, अतिथि के पुत्र निषध, निषध के पुत्र नभ, नभ के पुत्र पुण्डरीक और पुण्डरीक के पुत्र क्षेमधन्वा हुए। क्षेमधन्वा के पुत्र देवानीक, देवानीक के पुत्र हीन (या अहीनक), हीन के पुत्र पारिपात्र, पारिपात्र के पुत्र बलाहक (या बलस्थल) बलाहक के पुत्र अर्क और अर्क के पुत्र राजनाभ हुए। राजनाभ के पुत्र खगण, खगण के पुत्र विधृत, विधृत के पुत्र हिरण्यनाभ, हिरण्यनाभ के पुत्र पुष्प, पुष्प के पुत्र ध्रुव, ध्रुव के पुत्र स्यन्दन और स्यन्दन के पुत्र अग्निवर्ण हुए। अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्र (या शीघ्रगन्ता) हुए। वही अतुल वीरता वाले शीघ्र हमारे पिता थे और मैं शीघ्र का पुत्र हूँ। मेरा नाम मरु है। कोई-कोई (लोग) मुझे बुध और कोई सुमित्र भी कहते हैं।

इतने समय तक मैं कलापग्राम में रहकर तप किया करता था। सत्यवती के पुत्र व्यास के मुख से आप के अवतार रूप में प्रकट होने का समाचार कलियुग के लाख वर्ष के समय की प्रतीक्षा करके आपके पास आया हूँ। आप परमात्मा हैं। आपके पास आने से करोड़ों जन्मों के पापों के समूह नष्ट हो जाते हैं और यश और कीर्ति बढ़ती है। सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।

'आपकी वंशावली सुनकर मुझे मालूम हुआ कि आप सूर्यवंश में उत्पन्न हुए राजा हैं। आपके साथ ये दूसरे श्रीमान्, जो कि महापुरुषों के लक्षणों से युक्त हैं, कौन हैं ?'

कल्कि जी के ऐसे (मीठे) वचन सुनकर देवापि ने नम्रता पूर्वक मधुर वाणी से कहना शुरू किया—'प्रलय के अन्त में आप की नाभि के कमल से चारमुख वाले ब्रह्मा जी पैदा हुए थे। ब्रह्मा जी के पुत्र अत्रि, अत्रि के पुत्र चन्द्रमा, चन्द्रमा के पुत्र बुध, बुध के पुत्र पुरुरवा, पुरुरवा के पुत्र नहुष, नहुष के पुत्र ययाति हुए। ययाति के देवयानि से यदु और तुर्वसु नाम के दो पुत्र पैदा हुए।

हे सज्जनों के स्वामी! ययाति ने शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अनु और पूरु नाम के तीन पुत्र पैदा किए। सृष्टि के समय जिस प्रकार भूतादि के द्वारा पंचभूत पैदा होते हैं, उसी प्रकार ययाति से पाँच पुत्रों की उत्पत्ति हुई। पुरु के पुत्र जनमेजय (प्रथम), जनमेजय के पुत्र प्रचिन्वान् प्रचिन्वान् के पुत्र प्रवीर, प्रवीर के पुत्र मनस्यु (या नमस्य), मनस्यु के पुत्र अभयदा, अभयदा के पुत्र उरुक्षय, उरुक्षय के पुत्र त्र्यरुणि, त्र्यरुणि के पुत्र पुष्करारुणि, पुष्करारुणि के पुत्र बृहत्क्षेत्र और बृहत्क्षेत्र के पुत्र हस्ती हुए। इन हस्ती राजा के नाम पर ही हस्तिनापुर नाम का नगर स्थापित हुआ था। हस्ती के तीनों पुत्रों के नाम अजमीढ़, अहिमीढ़ और पुरमीढ़ थे। अजमीढ़ के पुत्र ऋक्ष,

ऋक्ष के पुत्र संवरण और संवरण के पुत्र कुरु हुए। कुरु के पुत्र परीक्षित, परीक्षित के (तीन) पुत्र सुधनु, जन्हु और निषध हुए। सुधनु के पुत्र सुहोत्र और सुहोत्र के पुत्र च्यवन हुए। च्यवन के पुत्र बृहद्रथ, बृहद्रथ के पुत्र कुशाग्र, कुशाग्र के पुत्र ऋषभ, ऋषभ के पुत्र सत्यजित, सत्यजित के पुत्र पुष्पवान और पुष्पवान के पुत्र नहुष हुए।

बृहद्रथ की दूसरी पत्नी से शत्रुओं को संताप देने वाले जरासन्ध पैदा हुए। जरासन्ध के पुत्र सहदेव, सहदेव के पुत्र सोमापि और सोमापि के पुत्र श्रुतश्रवा हुए। श्रुतश्रवा के पुत्र सुरथ, सुरथ के पुत्र विदूरथ, विदूरथ के पुत्र सार्वभौम, सार्वभौम के पुत्र जयसेन, जयसेन के पुत्र रथानीक और रथानीक से क्रोधी युतायु का जन्म हुआ। युतायु के पुत्र देवातिथि, देवातिथि के पुत्र ऋक्ष, ऋक्ष के पुत्र दिलीप और दिलीप के पुत्र प्रतीपक हुए। हे प्रभो! मैं प्रतीपक का पुत्र देवापि हूँ। मैं शान्तनु को अपना राज्य देकर कलापग्राम में रहकर दत्तचित्त से तप कर रहा था। अब आपके दर्शनों की इच्छा से मैं यहाँ आया हूँ। मैंने मरु और मुनियों के साथ (यहाँ आकर) आपके कमल रूपी चरणों को प्राप्त किया है। इसलिए अब हमें काल के भयानक गाल में नहीं जाना पड़ेगा और हमें ब्रह्मज्ञानियों (आत्मतत्वज्ञों) का पद प्राप्त होगा।'

मरु और देवापि के ऐसे वचन सुनकर कमल के समान आँखों वाले कल्कि जी प्रसन्न हुए और उन्हें आश्वासन देकर कहने लगे—'मैं जानता हूँ कि आप दोनों महान् धर्म के जानने वाले राजा हैं। इस समय आप लोग हमारी आज्ञा के अनुसार राजा बनकर अपने-अपने राज्य का पालन कीजिए। हे मरु! मैं अब प्रजा का पीड़न व प्राणियों की हिंसा करने वाले अधर्मी म्लेच्छों का नाश करके आपको आपकी राजधानी अयोध्यापुरी में राजगद्दी पर बैठाऊँगा। हे राजर्षि देवापि! मैं

युद्ध क्षेत्र में पुक्कसों (नीच अथवा वर्णसंकरों) का नाश करके आपको आपकी राजधानी हस्तिनापुरी में राजगद्दी पर बैठाऊँगा। मैं मथुरा नगरी में रहकर आपका डर दूर करूँगा। शय्याकरण, उष्ट्रमुख और विनोदा आदि एकजंघ का विनाश कर सत्युग की स्थापना कर प्रजा का पालन करूँगा। आप सब भी तपस्वियों के वेश और व्रत को छोड़कर उत्तम रथ पर सवार हो जाइए। आप दोनों ही लोग शस्त्र और अस्त्र चलाने में प्रवीण हैं और महारथी हैं, इसलिए आप दोनों मेरे साथ-साथ घूमना।

हे मरु! विशाखयूप नाम के राजा परम सुन्दरी, शीलवती और सुन्दर अंगों (नेत्रों) वाली अपनी कन्या विवाह में आप को देंगे। हे मरु! आप संसार की भलाई के लिए राजा बनकर मेरे वचनों का पालन कीजिए। हे देवापि! आप भी रुचिराश्व की शान्ता नामक पुत्री से विवाह कीजिए।'

कल्कि जी के इस प्रकार के आश्वासन से भरे वचन सुनकर मुनियों सहित देवापि (और मरु) अत्यन्त विस्मित हुए और संदेह त्याग कर यह मान लिया कि ये (कल्कि जी) ही साक्षात हरि और ईश्वर हैं।

जब कल्कि जी इस प्रकार के अभय देने वाले वचन कह रहे थे, तभी आकाशमार्ग से इच्छानुसार चलने वाले दो रथ उतरे। ये दोनों रथ अनेक प्रकार के रत्नों से बने थे। उनकी चमक सूर्य जैसी थी। इन रथों में दिव्य अस्त्र और शस्त्र भरे हुए थे। सभा में बैठे हुए मुनि और राजा आदि सभी विश्वकर्मा के बनाए हुए रथ को सभा में आया देखकर 'यह क्या है ?' हर्ष में कहते हुए अचम्भा प्रकट करने लगे।

कल्कि जी बोले—'सभी जानते हैं कि आप दोनों राजा, संसार की रक्षा और पालन करने के लिए, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, यम और कुबेर के अंश से अवतरित हुए हैं। इतने दिनों तक

आप दोनों लोग अपने आप को छिपाए हुए थे। अब मुझे मिलने के लिए यहाँ आए हैं। इसलिए अब आप मेरी आज्ञानुसार इन्द्र जी के द्वारा दिए गए इन रथों पर चढ़ें।''

पद्‌मा जी के स्वामी, संसार के ईश्वर कल्कि जी जब इस प्रकार के वचन कह रहे थे, तभी देवतागण फूलों की वर्षा करने लगे और मुनि सामने आकर स्तोत्र-पाठ करने लगे। हवा मन्द-मन्द चलने लगी। शिवजी की जटाओं में गंगा जल के मिलने से विभूति गीली हो गई। धीमे बहने वाली हवा ने महादेव जी की उस विभूति के पराग को उड़ाकर भगवती पार्वती जी के अंग का स्पर्श करके शुभगुण का संकेत दिया।

उसी समय सनक मुनि के समान, परम तेजस्वी दण्डधारी एक ब्रह्मचारी वहाँ पर आए। उनका शरीर तपे हुए सोने की तरह चमक रहा था। (ऐसा लगता था, मानों) उनमें धर्म का निवास है। सुन्दर जटा और वल्कलधारी ये ब्रह्मचारी हाथ में दण्ड लिए हुए थे। कमल के जैसे सुन्दर नेत्रों वाले अद्‌भुत उन महापुरुष के शरीर से कभी नष्ट न होने वाले आनन्द का भाव प्रकट हो रहा था। तेज के समूह से युक्त उनकी देह के छूने से संसार के पापों के समूह दूर हो रहे थे।

पाँचवाँ अध्याय

शुक बोले—उस (ब्रह्मचारी) को देखते ही कल्कि जी अपने सभासदों सहित उठ खड़े हुए और पाद्य (पैर धोने के लिए जल),अर्घ्य (देवता अथवा पूज्य व्यक्ति को दिए जाने वाली आहुति अथवा उपहार) और आचमनीय आदि से उनकी पूजा की। सभी आश्रमों के लिए पूजनीय उन (ब्रह्मचारी) भिक्षु को बैठाकर कल्कि जी ने पूछा—'आप कौन हैं ? आप हमारे सौभाग्य से ही यहाँ आए हैं। जो लोग

पापरहित हैं, पूर्ण हैं, सबके मित्र हैं, वे लोग प्रायः संसार का उद्धार करने के लिए पृथ्वी पर घूमा करते हैं।'

मस्करी (ज्ञानी संन्यासी भिक्षु) ने कहा—'हे श्रीनाथ, मैं आपकी आज्ञा पालन करने वाला कृतयुग हूँ। आप का यह अवतार तथा प्रभाव प्रत्यक्ष देखने की इच्छा से यहाँ आया हूँ। आप उपाधिरहित (विभेदक गुणों रहित) काल-स्वरूप हैं, आप क्षण, दण्ड, लव (खण्ड) आदि से इस समय उपाधिवाले हुए हैं। आप की ही माया से सारा संसार उत्पन्न हुआ है। आप की इच्छा से ही पक्ष (पखवाड़ा), दिन, रात, मास, ऋतु, संवत्सर, युग आदि और चौदह मनु नियमित रूप से प्रकट होते हैं और अपना कार्य करते हैं। सबसे पहले मनु स्वायम्भुव थे, दूसरे स्वारोचिष, तीसरे उत्तम, चौथे तामस, पाँचवें रैवत, छठे चाक्षुष, सातवें वैवस्वत, आठवें सावर्णि, नवें दक्षसावर्णि, दसवें ब्रह्मसावर्णि, ग्यारहवें धर्मसावर्णि, बारहवें रुद्रसावर्णि, तेरहवें संसार में प्रसिद्ध वेद सावर्णि (शैच्य देवसावर्णि) और चौदहवें इन्द्रसावर्णि थे। ये सभी मनुगण आपकी ही विभूतिस्वरूप हैं। ये सभी मनु अलग-अलग नाम और रूपों में आते हैं, चले जाते हैं और संसार को प्रकाशित करते हैं।

देवताओं के बारह हज़ार वर्ष का एक चतुर्युग (चौकड़ी युग) होता है। ऐसे ही चार हज़ार, तीन हज़ार, दो हज़ार और एक हज़ार वर्ष में क्रम से सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग होते हैं। इस चारों युगों की पूर्व संध्या क्रमशः चार सौ, तीन सौ, दो सौ और एक सौ वर्ष होती है। इस चौकड़ी युग की शेष संध्या का परिमाण भी ऐसा ही है। प्रत्येक मनु इकहत्तर चौकड़ी युग तक पृथ्वी को भोगते हैं। ऐसे ही सब मनु बदलते रहते हैं। जितने समय तक चौदह मनुओं का अधिकार रहता है, उतने समय को ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं। इसी समय के

बराबर ब्रह्मा की एक रात होती है।

इसी प्रकार काल दिन, रात, पखवाड़ा, महीना, साल और ऋतु आदि उपाधि (भेद दिखाने वाले गुण) धारण कर ब्रह्मा जी की जन्म-मृत्यु आदि का विधान करते हैं। जब ब्रह्मा जी की आयु सौ वर्ष (ब्रह्मा जी के सौ वर्ष) हो जाती है, तब वे आप में लीन हो जाते हैं। इसके बाद प्रलय काल बीत जाने पर हे प्रभु! ब्रह्मा जी आपकी नाभिकमल से पैदा होते हैं। इन कालों के अंश में मैं कृतयुग हूँ। मेरे अधिकार में उत्तम धर्म का पालन किया जाता है। प्रजा धर्म का आचरण करके कृतकृत्य (सफल मनोरथ) हो जाती है। इसी कारण मैं कृतयुग नाम से प्रसिद्ध हूँ।'

सत्युग के ये अमृत-वचन सुनकर कल्कि जी अपने अनुचरों सहित बहुत प्रसन्न हुए। कलिकुल का नाश करने में समर्थ कल्कि जी सत्ययुग के आगमन को देखकर कलि के अधिकार वाली विशसन नामक नगरी में युद्ध करने की इच्छा से अपने अनुयायिओं से बोले—'जो वीर योद्धा हाथी पर चढ़कर युद्ध करते हैं, जो रथ पर चढ़कर युद्ध करते हैं। जो घोड़ों पर चढ़कर युद्ध करते हैं अथवा जो पैदल चलकर युद्ध करते हैं, जिनका शरीर सोने के विचित्र आभूषणों से शोभा पा रहा है, जो लोग भाँति-भाँति के शस्त्र-अस्त्र धारण करने के योग्य हैं और युद्ध-कला में कुशल हैं, ऐसे वीरों को लाकर उनकी गिनती करो।'

छठा अध्याय

सूत जी बोले—भगवान् कल्कि के कहने के अनुसार मरु और देवापि ने विवाह कर लिया था। इस समय वे दोनों विशाल भुजाओं वाले पुरुष (कल्कि जी के वचन सुनकर) रथ पर चढ़े हुए वहाँ आए। अपनी वीरता का अभिमान करने

वाले वे दोनों अपने शरीर को कवच से ढके हुए, उंगलियों में गुश्ताना लगाए हुए, भारी सेना को साथ लिए, अनेक प्रकार के अस्त्र व शस्त्रों को धारण किए हुए थे। उनके माथे पर काले रंग का शिरस्त्राण (सिर की रक्षा करने वाला) शोभा पा रहा था। वे अति प्रवीण (धुरंधर) धनुष बाण धारण करने वाले, छः अक्षौहिणी सेना के साथ पृथ्वी को कँपा रहे थे।

विशाखयूप राजा के साथ भी एक लाख हाथी, एक करोड़ घोड़े और सात हज़ार रथ थे। साथ ही धनुष बाण धारण किए हुए दो लाख सजी हुई पैदल सेना थी। हवा के झोंकों से उनकी पगड़ियाँ और दुपट्टे हिल रहे थे। इसके अलावा, उनके साथ पचास हज़ार लाल रंग के घोड़े, दस हज़ार मतवाले हाथी, बहुत-से महारथी और नौ लाख पैदल सेना थी। शत्रुपुर को जीतने वाले कल्कि जी इस प्रकार से, देवलोक में स्थित देवताओं के राजा इन्द्र के समान, दस अक्षौहिणी सेना सहित सुशोभित थे।

इस प्रकार भाई, पुत्र, मित्र और सैनिकों से घिरे हुए संसार के स्वामी भगवान् कल्कि ने प्रसन्न होकर दिग्विजय (दिशाओं को अर्थात् सम्पूर्ण संसार को विजय) करने की इच्छा से यात्रा की।

उसी समय उस स्थान पर बलवान कलि द्वारा पीड़ित (निग्रह किया हुआ) धर्म ब्राह्मण वेश में परिजनों सहित आया। उसके सेवकों में ऋत, प्रसाद, अभय, सुख, प्रीति, योग, अर्थ, अदर्प, स्मृति, क्षेम (सुरक्षा) और प्रतिश्रय (शरण) थे। श्रीहरि के दोनों अंश नर और नारायण भी, जो कि तप और व्रत सम्पन्न थे, साथ थे। धर्म इन सबको लेकर स्त्री-पुत्र सहित शीघ्र ही उस स्थान पर आया। श्रद्धा, मैत्री (मित्रता), दया, शान्ति, तुष्टि, (संतोष), पुष्टि (पोषण), क्रिया, उन्नति, बुद्धि, मेधा (बुद्धि विशेष, जो धारण करती

है), तितिक्षा (सहन करने की शक्ति), आदि धर्म पालन करने वाले मूर्तिभाव (शरीर सहित) अपने बन्धुओं सहित, कल्कि जी के दर्शनों के लिए और अपने आने का कारण बताने के लिए वहाँ आए।

कल्कि जी ने ब्राह्मण के दर्शन कर नम्रतापूर्वक विधिवत् उनकी पूजा की और कहा—'आप कौन हैं और यहाँ कैसे आए हैं ? पुण्य भोग समाप्त होने पर स्वर्ग से पृथ्वी पर आगत् (क्षीण-पुण्य) पुरुष के समान आप (स्त्री-पुत्र सहित) किस राजा के राज्य से आए हैं ? यह सब ठीक-ठीक मुझ से वर्णन कीजिए। पाखण्डों से तिरस्कृत (अपमानित) वैष्णव सज्जनों के समान आप (और आपके) स्त्री-पुत्र आदि, जन-बल और पौरुष (पराक्रम) से रहित अत्यन्त कातर हैं।'

कमलापति कल्कि जी के ये वचन सुनकर अपनी शान्ति (कल्याण) के विषय में सोचते हुए, अनाथ और बहुत कातर धर्म ने अपने पुत्रों, स्त्री तथा अपने अनुचरों के साथ हाथ जोड़कर, आनन्द तथा दया से युक्त श्रीहरि की पूजा एवं प्रणाम कर, स्तुति की। धर्म ने कहा—'हे कल्कि जी, आप मेरा वृतान्त सुनिए। मैं ब्रह्म स्वरूप धर्म हूँ और आपके वक्ष स्थल (छाती) से पैदा हुआ हूँ। मैं सभी जीवधारियों की इच्छाओं को पूरा करने वाला हूँ। मैं देवताओं में अग्रणी (सबसे पहला) हूँ। मैं देवताओं तथा पितरों को दी जाने वाली आहुति के अंश का भागीदार हूँ। यज्ञ के फल को देने वाला मैं साधुओं की मनोकामना पूरी करता हूँ। आपकी आज्ञा के अनुसार मैं सदैव साधुओं का काम करता हुआ घूमा करता हूँ। इस समय मैं समय की गति से बलवान् कलि के द्वारा पराजित हुआ हूँ। इस समय शक, कम्बोज, शबर आदि (अनार्य) जातियाँ कलि के अधिकार में रह रही हैं। हे सम्पूर्ण संसार के आधार, इस समय साधु लोग संसार रूपी काल की

आग से संताप पाकर दुःखी हो रहे हैं। इसी कारण मैं आप के चरणों में आया हूँ।'

धर्म के द्वारा इन अद्भुत वचनों के कहे जाने पर, पापों को नाश करने वाले श्रीमान् कल्कि जी सबको प्रसन्न करते हुए नम्रतापूर्वक बोले—'हे धर्म, देखो कृतयुग आ गया है। ये सूर्यवंश में उत्पन्न हुए राजा मरु हैं। तुम जानते ही हो कि मैंने ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर शरीर धारण किया है। कीटक देश में (मैंने) बौद्धों का दमन किया है। यह जानकर तुम सुखी होवो। जो लोग वैष्णव नहीं हैं और अन्य जो तुम्हारे विरुद्ध उपद्रव करते हैं, मैं उनका विनाश करने के लिए सेनासहित यात्रा करता हूँ। इस समय तुम निडर होकर पृथ्वी पर घूमो।

(हे धर्म) अब जबकि मैं उपस्थित हूँ और सत्ययुग आ गया है, तब तुम्हें क्या डर है? तुम किस कारण मोह से व्याकुल हो रहे हो? अब तुम यज्ञ, दान और व्रत के साथ घूमो। हे धर्म, तुम संसार के प्रिय हो। तुम अपने पुत्रों तथा बन्धुओं के साथ दिग्विजय करने तथा शत्रुओं का नाश करने के लिए यात्रा करो। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।'

धर्म, कल्कि जी के ये वचन सुनकर, बहुत प्रसन्न हुए और अपने आधिपत्य का स्मरण करते हुए कल्कि जी के साथ जाने की इच्छा प्रकट की (जाने को तत्पर हुए)। यात्रा के समय धर्म ने अपनी पत्नी तथा पुत्रों को सिद्धाश्रम में रख छोड़ा। जब धर्म प्रस्थान करने को तैयार हुए, वे साधु-सत्कार रूपी कवच से सन्नद्ध, वेद और ब्रह्मा रूप रथ पर सवार, अनेकानेक शास्त्रों के अनुसंधान के संकल्प रूप धनुष से सुसज्जित थे। वेद के सात स्वर धर्म के रथ के सात अश्व थे, ब्राह्मण सारथि और अग्नि उनका आश्रय था। इस प्रकार धर्म रूपी उस नायक ने तरह-तरह के क्रियानुष्ठान रूपी बल से युक्त होकर यात्रा की।

कल्कि जी, यज्ञ, दान, तप, यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह), नियम (शौच, संतोष, तपः, स्वाध्याय, ईश्वर-प्राणिधान)आदि सहायकों के साथ खश, काम्बोज, शबर, बर्बरादि (म्लेच्छों) को हराने के लिए (अपने) इच्छित स्थान (कलि के वास-स्थान) पर गए। कलि का वास-स्थान भूतों का डेरा था और वहाँ चारों ओर

कलि और कल्कि भगवान के मध्य युद्ध

कुत्ते भौंक रहे थे। वह स्थान गोमांस की बदबू से भरा था, कौवों, गीदड़ों और उल्लुओं से घिरा हुआ था। वहाँ स्त्रियों से संबंधित झगड़ों, और जुआ, व्यसन आदि का अड्डा था।

यह नगरी भयंकर दिखाई देने वाली व संसार के लिए डरावनी थी। वहाँ स्त्रियों की आज्ञा पर चलने वाले लोग थे। कल्कि जी की युद्ध के लिए यात्रा की तैयारी सुनकर कलि बहुत क्रोधित होकर अपने बेटे-पोतों सहित उल्लू की ध्वजा वाले रथ पर सवार होकर विशसन नामक नगर से बाहर निकला। कलि को देखकर धर्म ने ऋषियों के साथ कल्कि जी की आज्ञानुसार (कल्कि जी के प्रोत्साहन देने वाले वचनों से उत्साहित होकर) उसके साथ लड़ाई शुरू कर दी। ऋतु के साथ दंभ की लड़ाई होने लगी। प्रसाद ने लोभ को युद्ध करने के लिए ललकारा। अभय के साथ क्रोध की और सुख के साथ भय की लड़ाई होने लगी। निरय (नरक) मुद के पास आकर अनेक शस्त्र-अस्त्रों से लड़ाई करने लगा। आधि (वेदना यानी मानसिक पीड़ा) ने योग के साथ और व्याधि (बीमारी) ने क्षेम के साथ लड़ाई शुरू की। ग्लानि ने प्रश्रय से और जरा (बुढ़ापे) ने स्मृति से युद्ध करना शुरू किया। इस प्रकार से बहुत कठोर और घोर लड़ाई शुरू हो गई। ब्रह्मा आदि देवता युद्ध को देखने के लिए अपनी विभूति (शक्ति) सहित आकाश में आ गए। मरु अत्यन्त बलवान् खश और कम्बोज लोगों से लड़ाई करने लगे। देवापि ने युद्ध में चीन, बर्बर तथा उनके सेवकों से लड़ाई की। राजा विशाखयूप ने पुलिन्दों और श्वपचों (नीच व चाण्डाल) के साथ अत्यन्त प्रभावकारी अनेक दिव्य शस्त्र-अस्त्रों से लड़ाई शुरू की। कल्कि जी अपनी सेना सहित उत्तम शस्त्र तथा अस्त्रों से कोक और विकोक (और उसकी सेना) के साथ लड़ाई करने लगे। ये दोनों (कोक और विकोक) ब्रह्मा जी से वरदान पाकर बहुत घमण्डी हो

गए थे। ये दोनों भाई (कोक और विकोक), दानवों में श्रेष्ठ, अत्यन्त मदमस्त, युद्ध करने में अत्यन्त चतुर, अत्यन्त बलशाली, देवताओं को डराने वाले और एक जैसी शक्ल वाले थे (अथवा मिलकर, एक होने पर, देवताओं के लिए भी भयोत्पादक)। इनका शरीर वज्र के समान कठोर था और ये दोनों ही दिग्विजयी थे। अगर दोनों इकट्ठे होकर लड़ने लगें तो मृत्यु को भी जीत सकते थे। ये दोनों अत्यन्त वीर सेना से युक्त और हाथ में गदा लेकर (शुम्भादि राक्षसों के साथ मिलकर) पैदल ही लड़ाई करने लगे। सेना से युक्त कल्कि जी कोक और विकोक के साथ भारी लड़ाई लड़ने लगे। उनकी सेना के प्रधान योद्धाओं ने भयंकर लड़ाई शुरू की। घोड़ों के हिनहिनाने, हाथियों की चिंघाड़, दाँतों के किटकिटाने, धनुषों की टंकार, शूरवीरों की भुजाओं, घूसों और चपतों की चोटों से भयंकर आवाज़ें होने लगीं। इन आवाज़ों से दसों दिशाएँ भर गईं। उस समय कोई भी मनुष्य शान्ति नहीं पा सका। देवतागण भयभीत हो आकाश के उल्टे-टेढ़े मार्ग से जाने लगे। पाश, तलवार, दण्ड, शक्ति, ऋष्टि (दुधारी तलवार), शूल, गदा और घोर बाणों से करोड़ों वीरों के कटे-फिके हाथ, पैर और कमर आदि से युद्ध भूमि भर गई।

सातवाँ अध्याय

सूत जी बोले—इस प्रकार घोर युद्ध में प्रवृत्त (लगा) हुआ देखकर, धर्म ने अत्यन्त क्रोध से कृतयुग सहित कलि से भयंकर युद्ध करना शुरू किया। इसके बाद कलि, धर्म और सत्ययुग के भयंकर बाणों की बौछार से हारकर, अपनी सवारी गधे को छोड़कर अपनी पुरी लौट गया। कलि का उल्लू की ध्वजा वाला रथ टूट-फूट गया। सारे शरीर से खून बहने लगा और छछूँदर की-सी बदबू आने लगी। मुँह का आकार बहुत

भयंकर हो गया। कलि ऐसी अवस्था के होने पर स्त्री के पूरे अधिकार वाले कक्ष (अन्तःपुर) में घुस गया। अपने कुल घातक (कुल में अंगारे से समान सारहीन होता) दम्भ, बाणों की वर्षा से घायल हो चुका था। उसकी वासनाएँ (सामर्थ्य और ऊर्जा) क्षीण हो चुकी थीं। व्याकुल और निराश दम्भ भी अपने घर में घुस गया (युद्ध भूमि छोड़ गया)।

प्रसाद के पदाघात (या गदा की चोट) से लोभ का सिर चूर-चूर हो गया। कुत्तों द्वारा जुता हुआ लोभ का रथ भी टूट-फूट गया। तब वह रथ को छोड़कर खून की उल्टियाँ करता हुआ भाग गया।

क्रोध अभय से लड़ाई में हार गया। उसकी आँखें लाल हो गईं। चूहों द्वारा खींचे जाने वाले बदबू वाले टूटे-फूटे रथ को छोड़कर क्रोध भागा और विशसन नगर में चला गया। सुख के थप्पड़ की चोट से भय मरकर भूमि पर गिर पड़ा। निरय ने प्रीति के घूँसे की चोट से ऐसी मार खाई कि यमराज के पास पहुँच गया। आधि, व्याधि आदि सभी सत्ययुग के बाणों से पीड़ित हो अपनी-अपनी सवारियों को छोड़कर डर से परेशान अनेक देशों में भाग गए। इसके बाद सत्ययुग के साथ धर्म ने कलि की मुख्य राजधानी विशसन नामक नगर में प्रवेश किया और बाणों की आग से कलि सहित उस नगर को भस्म कर दिया। कलि के सारे अंग जल (कर राख हो) गए। उसकी स्त्री और उस की प्रजा सभी काल के गाल में समा गई और वह बेचारा अकेला रोता हुआ छिपकर दूसरे वर्ष (देश—जैसे भारतवर्ष भी जम्बूद्वीप का एक वर्ष माना जाता था) को चला गया।

(एक ओर) मरु ने दिव्य अस्त्रों के समूह के तेज से शक और कम्बोजों को मार डाला। (दूसरी ओर) देवापि ने शबर, चोल और बर्बरों (और उनकी सेना को) इसी तरह

नष्ट कर दिया। परम बलवान् विशाखयूपराज ने दिव्य अस्त्र-शस्त्रों से पुलिन्द और पुक्कसों को हराया। विमल (शुद्ध) बुद्धि वाले राजा विशाखयूप लगातार तलवारों की मार से और अनेक शस्त्र-अस्त्रों की बौछार से शत्रुओं का नाश करने लगा। इस तरह शत्रुसेना के अधिकांश योद्धा मारे गए। गदा से युद्ध करने में कुशल महान् वीर कल्कि जी हाथ में गदा धारण कर सारे लोकों को डराते हुए कोक और विकोक के साथ लड़ने लगे।

ये (दोनों भाई) वृकासुर के पुत्र और शकुनि के पोते थे। जिस प्रकार पुराकाल में श्री नारायण ने मधु-कैटभ के साथ लड़ाई की थी, उसी प्रकार कल्कि जी ने इन दोनों वीरों के साथ युद्ध करना शुरू किया। कोक और विकोक की गदाओं की चोट से कल्कि भगवान् का शरीर बुरी तरह घायल हो गया। उनकी गदा हाथ से छूटकर भूमि पर गिर पड़ी। सबलोग अचरज भरी आँखों से इस घटना को देखने लगे। इसके बाद, संसार के विजयी महाबलशाली महाबाहु विष्णु जी ने फिर क्रोधित होकर भल्ल नामक अस्त्र से विकोक का सिर काट डाला। बलवान् विकोक मर तो गया, लेकिन जैसे ही उस पर उसके भाई की नज़र पड़ी, वैसे ही वह मृत्यु शय्या से फिर उठ बैठा। यह देखकर देवतागण और शत्रुओं का नाश करने वाले कल्कि जी बहुत अचरज में पड़ गए। कल्कि जी ने विकोक को पुनर्जीवित करने वाले गदाधारी कोक का सिर काट डाला। कोक मर तो गया पर फिर विकोक के देखते ही वह उसी समय जीवित हो उठा। इसके बाद, अपनी इच्छा के अनुसार रूप धारण करने वाले महाबलवान् कोक और विकोक इकट्ठे होकर दूसरे यमराज की भाँति कल्कि जी से लड़ाई करने लगे। वे दोनों ढाल और तलवार धारण कर कल्कि जी पर बार-बार वार करने लगे। कल्कि

जी ने क्रोधित होकर बाणों द्वारा उन दोनों के ही सिर काट डाले। दोनों के सिर फिर धड़ से जुड़ गए। कल्कि जी यह देखकर बहुत चिन्ता में पड़ गए। इसके बाद कल्कि जी के घोड़ों ने कोक और विकोक को वार करते हुए देखकर उनपर भारी चोट की। यम के समान भयंकर दुर्धर्ष कोक और विकोक कल्कि जी के घोड़े से बहुत घायल होने पर क्रोध युक्त हो लाल-लाल आँखों से उस (घोड़े) पर बाणों की वर्षा करने लगे। घोड़े ने क्रोधित होकर कोक और विकोक की बाहों को काट खाया। उनके बाहों की हड्डियाँ चकनाचूर हो गईं। बाहें और धनुष छिन्न-भिन्न हो गए। इसके बाद जैसे बच्चा गाय की पूँछ को पकड़ता है, वैसे ही दोनों वीरों (कोक और विकोक) ने घोड़े की पूँछ को पकड़ लिया। उन्हें पूँछ पकड़े हुए देखकर घोड़ा बहुत क्रोधित हुआ और पिछले पाँवों से मजबूत वज्र के समान उनकी छाती पर भारी चोट की। पूँछ को छोड़कर कोक और विकोक दोनों ही मूर्च्छित हो भूमि पर गिर पड़े, लेकिन तत्काल फिर उठ खड़े हुए और कल्कि जी को सामने देख कर साफ़-साफ़ शब्दों में लड़ाई के लिए ललकारा।

इसी समय श्री ब्रह्मा जी कल्कि जी के समीप आकर हाथ जोड़कर धीरे से बोले—'ये कोक और विकोक अस्त्र-शस्त्रों से नहीं मारे जाएँगे। हे परमात्मन्! एक ही बारी में दोनों को थप्पड़ (घूसा) मारकर इनकी हत्या की जा सकती है। इन दोनों में एक के देखते हुए दूसरे की मृत्यु नहीं होगी। अतएव इस बात को याद रखकर आप एक ही बारी में दोनों का वध कीजिए।'

ब्रह्मा जी के ये वचन सुनकर कल्कि जी ने शस्त्र-अस्त्र और सवारी छोड़कर मनमाना प्रहार करने वाले उन दोनों दानवों के बीच में आकर वज्र के समान दो मुट्ठियों के एक साथ वार

से उन दोनों के मस्तक चकनाचूर कर दिए। देवलोक स्थित देवताओं को डराने वाले और सभी प्राणियों का बुरा चाहने वाले ये दोनों दानव मस्तकों के चकनाचूर हो जाने के बाद भूमि पर पहाड़ की दो चोटियों की तरह (या शिखर रहित दो पहाड़ों की तरह) गिर पड़े। इस महान् अचरज भरे काम को देखकर गन्धर्वलोग गाने लगे। अप्सराएँ नाचने लगीं। देवता, सिद्ध लोग और चारण प्रसन्न मन से फूलों की वर्षा करने लगे।(उन्होंने) दुन्दुभियाँ बजाई और सब दिशाएँ हर्ष, उल्लास से गूँज उठीं। कोक और विकोक की मृत्यु देखकर कवि ने प्रसन्न और उत्साहित होकर अपने दिव्य अस्त्रों से रथ और अस्त्रों सहित दस हज़ार महारथी वीरों का नाश किया। प्राज्ञ ने युद्ध भूमि में एक लाख योद्धाओं का नाश किया। सुमन्त्र के हाथ से पच्चीस रथी मारे गए। इसी प्रकार उस समय गर्ग्य, भर्ग्य और विशालादि वीरों ने भी क्रोधित होकर म्लेच्छ, बर्बर और निषादों का नाश किया।

इस प्रकार उन सबको जीतकर, कल्कि जी सारी (विशाल) सेना लेकर राजाओं के साथ भल्लाटनगर को जीतने के लिए गए। अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। उत्तम शस्त्रास्त्र धारण करने वाले वीर उनके साथ चले। अनेक प्रकार के वाहन (सेना में)आ गए। चारों ओर से (कल्कि जी पर) चामर डुलाए जाने लगे।

आठवाँ अध्याय

सूत जी बोले—नारायण प्रभु कल्कि जी घोड़े पर सवार होकर तलवार धारण कर अपनी सेना सहित भल्लाटनगर को गए। वे योगी भल्लाट के राजा, कल्कि जी को संसार का स्वामी और विष्णु का अवतार जानकर, अपनी सेना के सहित युद्ध करने की इच्छा से (नगर से) बाहर आए। बुद्धिमान्,

श्रीमान्, लम्बे-चौड़े शरीर वाले, महा तेजवान्, कृष्णभक्त, महा बलवान राजा शशिध्वज हर्ष से पुलकित हो गए। राजा शशिध्वज की पत्नी महादेवी सुशान्ता भगवान् विष्णु का व्रत रखने वाली थी। अपने पति को कल्कि जी से युद्ध करने को तैयार देखकर उसने कहा—'हे नाथ, कल्कि जी तो संसार के स्वामी, सबके अन्तःकरण में बसने वाले साक्षात् नारायण हैं, आप उनपर कैसे प्रहार करेंगे?'

हे सुशान्ते, पितामह ब्रह्मा जी ने जिस प्रकार परम धर्म (कर्त्तव्य) निर्धारित किया है, उस धर्म के अनुसार संग्राम में सभी पर प्रहार किया जा सकता है, चाहे वहाँ गुरु हो या शिष्य हो या हरि ही क्यों न हो! संग्राम भूमि में जीवित लौटने पर (व्यक्ति) राज्य का उपभोग करता है और मरने पर स्वर्ग का आनन्द भोगता है। इसलिए लड़ाई में क्षत्रियों के लिए जीत और मौत दोनों ही सुखदायी हैं।'

सुशान्ता जी बोली—'जो कामी है या जो (माया मोह में फँसे) विषय-भोग में मस्त हैं, उन लोगों के लिए युद्ध में जीत होने पर राज्य भोग और मृत्यु होने पर स्वर्ग पाना (अवश्य ही) कुछ अर्थ रखता है, परन्तु जो नारायण के सेवक हैं, उनके लिए ये दोनों चीजें कुछ भी नहीं हैं। आप तो सेवक हैं, वे स्वामी (ईश्वर) हैं। आप निष्काम हैं, वे (आपको) फल प्रदान नहीं करेंगे। ऐसी अवस्था में मोह पूर्वक दोनों में युद्ध होना कैसे संभव हो सकता है?'

राजा शशिध्वज ने कहा—'ईश्वर तो सुख-दुःख आदि सब द्वन्द्वों से परे हैं। यदि उनके देह धारण करने के कारण ईश्वर और सेवक में द्वन्द्व युद्ध हो जाए तो वह विलास-लीला सेवारूप मानी जाएगी। जब भगवान् ने देह धारण की, तब काम आदि गुण जो माया के अंश हैं और शरीर के गुण हैं, भगवान् के शरीर में आए। कामादि का आरोपित होना देह

धर्म है तो उनके शरीर में विषयादि क्यों नहीं आएँगे ? सर्वव्यापक (और पूर्ण ब्रह्मभाव सम्पन्न) होने से ही परमेश्वर को ब्रह्म कहते हैं। वही परमेश्वर जब शरीर धारण कर अवतार लेता है तो वह एक व्यक्ति हो जाता है और उसे शरीरिता कहते हैं। परमेश्वर के दो रूपों में अभेद दृष्टि रखने वाले भक्त के भी जन्म, परमेश्वर में लय और सांसारिक अभ्युदय उसी प्रकार सम्भव हैं। भगवान् विष्णु सेव्य भी हैं और सेवक भी। सेव्य-सेवक भाव ही सेवा है। यह भाव भी विष्णु-माया की ही देन है। उनकी माया ही सेवा (भी) कही गई है। परमेश्वर की यह द्वैत और अद्वैत चेष्ट (क्रिया) धर्म, अर्थ और काम रूप तीन प्रकार के पुरुषार्थों को जन्म देती है। हे प्रिये (कान्ते), इसी कारण मैं कल्कि जी के साथ युद्ध करने के लिए सेना सहित जाता हूँ। हे प्रिये, इधर अब तुम कमलापति नारायण जी की पूजा करो।'

'हे स्वामिन्, आप तो भगवान् विष्णु की सेवा करके विष्णु भगवान् में ही लीन हो गए। इस से मैं कृतार्थ हो गई। इस लोक और परलोक में भगवान् विष्णु की उपासना के अलावा और कोई गति नहीं है।'

सुशान्ता के इस प्रकार के विनय भरे सुन्दर वचन सुन महाराजा शशिध्वज आँखों में (प्रेम के) आँसू भरकर भगवान् विष्णु को याद करने लगे और अपने को (उन्होंने) महान् वैष्णव समझा।

इसके बाद राजा शशिध्वज ने हर्षपूर्वक प्यारी सुशान्ता को छाती से लगाया, फिर अनेक (वैष्णव) वीरों को लेकर (वैष्णवों के साथ) भगवान् के नाम का स्मरण करते हुए युद्ध करने के लिए गए। राजा शशिध्वज ने कल्कि जी की सेना में घुसकर भारी सेना को तितर-बितर कर दिया। युद्ध के लिए तैयार महान् वीर शय्याकर्णगण शस्त्रास्त्र उठाकर उनके

साथ युद्ध करने लगे। शशिध्वज राजा के पुत्र महाबलवान, परम वैष्णव, महाधनुर्धारी श्रीमान सूर्यकेतु सूर्यवंशी राजा मरु के साथ लड़ने लगे। सूर्यकेतु के छोटे भाई बृहत्केतु थे। वे अत्यन्त सुन्दर, कोयल जैसी मधुरवाणी वाले और गदा-युद्ध में बड़े निपुण थे। वे देवापि के साथ युद्ध करने लगे। राजा विशाखयूप हाथियों के झुण्डों सहित अनेक प्रकार के अस्त्र और शस्त्र लेकर राजा शशिध्वज के साथ युद्ध करने लगे। लाल घोड़े पर सवार, धनुर्धारी, फुर्तीले हाथ वाले, प्रतापी भर्ग्य ने धूल से भरे स्थान में धनुर्धारी शान्त के साथ युद्ध शुरू किया।

इस प्रकार शूल, प्रास (परशु), गदा, बाण, शक्ति, ऋष्ट, तोमर, भल्ल, खड्ग (तलवार), भुशुण्डी (आग छोड़ने वाला अस्त्र) और कुन्त (बरछी) आदि अस्त्रों के प्रहार से लड़ाई चालू हो गई। चामर और ध्वजा पताका की छाया और गाढ़े धूल भरे वातावरण से युद्ध भूमि में अँधेरा छा गया। देवतागण आकाश में स्थित होकर युद्ध देखने लगे। गन्धर्वगण अमृत की भाँति मधुर वाणी में गाते हुए युद्ध देखने के लिए आए।

सारे लोक ही अद्भुत युद्ध को देखने के लिए आए। शंख, दुन्दुभि (और नगाड़ों) की आवाज़, वीरों की ताल, हाथियों की चिंघाड़, घोड़ों की हिनहिनाहट और युद्ध के अस्त्रों के छोड़े जाने से होने वाली आवाज़ से युद्ध भूमि में भारी शोर हो गया। सब लोग गूंगे की तरह दिखाई देने लगे। कोई किसी की बात नहीं सुन सकता था। रथ पर सवार रथ पर सवारों से, पैदल पैदलों से, घुड़सवार घुड़सवारों से भिड़कर लड़ने लगे। यह युद्ध देवासुर संग्राम की तरह यमराज की प्रजा बढ़ाने लगा, अर्थात् बहुत भारी संख्या में लोग मारे जाने लगे। (इस युद्ध में) कल्कि जी की सेना के वीर और सेनापति और

उनसे भिड़े हुए शशिध्वज के योद्धागण धूल-धूसरित होने लगे। उनके हाथ, पाँव और सिर कट-कटकर ज़मीन पर गिरने लगे। कोई घायल होकर भाग रहे हैं, कोई चिल्ला रहे हैं, कोई भर्राई हुई आवाज़ में बिलख रहे हैं, कोई खून की धार से भीग रहे हैं, कोई एक-दूसरे पर गिर कर पृथ्वी को ढके हुए हैं और कोई हाथी और घोड़ों के पाँव और रथों से कुचले जा रहे हैं। इस तरह, इस युद्ध में हज़ारों-करोड़ों वीर मारे गए। युद्ध भमि में खून की नदियाँ बहने लगीं। खून की इन नदियों से पिशाच, राक्षस, गीदड़ और गिद्धों को बहुत आनन्द मिला। खून की इन नदियों में गिरी हुई पगड़ियाँ हंसों के समान दिखाई देने लगीं। गिरे हुए हाथी टापुओं की तरह दिखाई देने लगे। रथों के झुंड नावों की तरह दिखाई दे रहे थे। कटे हुए हाथ और पाँव मछलियों के समूह की तरह दिखाई दे रहे थे और (योद्धाओं के आभूषण और) तलवारें सोने की रेत की तरह दिखाई दे रही थीं। इस प्रकार संग्राम भूमि में अति दारुण नदी प्रवृत्त हुई (निकल पड़ी)। बलवान् सूर्यकेतु मरु के साथ युद्ध कर रहे थे। काल के समान दुर्घर्ष (विकट) सूर्यकेतु ने बाणों से मरु को घायल कर दिया। मरु ने भी दस बाणों से सूर्यकेतु को आहत कर डाला। वीर सूर्यकेतु ने मरु के बाणों से घायल होने पर अत्यन्त क्रोधित होकर उसके घोड़ों को मार डाला और लात मारकर उसके रथ को चकनाचूर कर गदा से उसकी छाती में ज़ोर से चोट मारी। उस चोट से मरु बेहोश होकर गिर पड़ा। धर्म को जानने वाला सारथी अपने स्वामी मरु को दूसरे रथ में उठाकर ले गया। (उधर) बलवान बृहत्केतु ने अपने बाणों के समूह से देवापि को ढक डाला। जिस प्रकार सूर्य देवता कुहरे (धुंध) से ढक जाते हैं, उसी प्रकार बाणों से ढके हुए देवापि ने उसी समय धनुष उठाकर अपने बाणों की बौछार से शत्रु के बाणों का निवारण

कर दिया। बृहत्केतु ने पत्थर पर धार लगे हुए तेज़ बाणों से अपने शूल को टूटा देखकर पुनः धनुष उठाया और सोने से मढ़े हुए, लोहे के मुख वाले, गिद्ध के पंखों के समान तेज़ बाणों की बौछार कर देवापि और उसकी सेना पर प्रहार करना शुरू किया। देवापि ने तेज़ बाणों से बृहत्केतु का वह दिव्य धनुष काट डाला। धनुष नष्ट होने पर बृहत्केतु ने देवापि को मारने की इच्छा से तलवार धारण की। फिर वीर बृहत्केतु ने उस भयंकर युद्ध में देवापि के घोड़ों और सारथी को मार डाला। देवापि ने धनुष छोड़कर शत्रु को घूँसा (और थप्पड़) मारा। (देवापि ने) उसको दोनों भुजाओं के बीच दबाकर भींचना शुरू किया। अट्ठाइस (या सोलह) वर्षीय बृहत्केतु शत्रु द्वारा पीड़ित होकर बेहोश और मुर्दे के समान हो गया। अपने छोटे भाई की यह दशा देखकर सूर्यकेतु ने देवापि के सिर पर वज्र के समान एक घूँसा मारा। घूँसे की चोट से देवापि बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। शत्रु सूर्यकेतु ने देवापि को बेहोश जानकर क्रोधित होकर उसकी सेना पर वार करना शुरू किया।

(उधर) राजा शशिध्वज ने युद्ध भूमि में सम्पूर्ण संसार के आधार, सूर्य के समान तेजस्वी, श्यामवर्ण कमल जैसी आँखों वाले, पीले कपड़े पहने, बड़ी भुजाओं वाले, सुन्दर मुकुट से शोभायमान कल्कि जी को अपने सामने देखा। भाँति-भाँति की मणियों के समूह से सुशोभित शरीर वाले, लोगों की आँखों और हृदय के अंधकार को दूर करने वाले कल्कि जी को चारों ओर से विशाखयूप आदि राजागण घेरे हुए थे। धर्म और सत्‌युग उनकी पूजा कर रहे थे।

नौवाँ अध्याय

सूत जी बोले—हृदय में ध्यान करने योग्य, सुन्दर घोड़े

पर सवार, खड्‌गधारी, पूर्णावतार, कल्कि जी का रूप देखकर शशिध्वज विचार करने लगे। धनुष-बाण को धारण करने वाले, सुन्दर आभूषणों से सुशोभित, संसार के स्वामी कल्कि जी संसार के पापों और कष्टों को नाश करने के लिए तैयार हैं। राजा शशिध्वज ने रोमांचित होकर उन परमात्मा कल्कि जी से कहा—'कमल जैसे नेत्र वाले, आइए, आइए और हमारे हृदय पर प्रहार कीजिए। हे परमात्मन्, हमारे बाणों के डर से (बाणों की मार से बचने के लिए) आप अंधकार से पूर्ण मेरे हृदय में प्रवेश करके छिप जाइए। आप तो निर्गुण होकर भी गुण को जानते हैं, आप अद्वैत होकर भी अस्त्रों से मारने के लिए तैयार हुए हैं और आपने कामरहित होकर भी अपने सैनिकों की जीत के कार्य में सहायता की है अर्थात् सेना का संहार किया है। सभी लोक मुझे उन्हीं परमात्मा के साथ रथ पर सवार युद्ध करते हुए देखें। आप स्वामी हैं, मैं आप पर दृढ़ प्रहार करूँगा, परन्तु प्रहार करते समय यदि मैं आपको अलग दूसरा व्यक्ति समझूँ तो मुझे वह लोक मिलेगा, जो लोक ऐसे लोगों को मिलता है, जो शिव और विष्णु में भेद समझने वाले को प्राप्त होता है।'

इस प्रकार अस्त्र धारण करने वाले तथा शत्रुओं को सन्ताप देने वाले राजा शशिध्वज के इन वचनों को सुनकर अक्रोध (क्रोध रहित) परमात्मा कल्कि जी अपने को क्रोध की आकृति वाला दिखाकर उन (शशिध्वज) पर बाण मारने लगे। राजा शशिध्वज ने उनके श्रेष्ठ अस्त्रों द्वारा किए गए प्रहार की चिन्ता किए बगैर अपने बाणों की ऐसी वर्षा की जैसे पर्वत पर मूसलाधार वर्षा हो रही हो। राजा शशिध्वज के बाणों की वर्षा से कल्कि जी का शरीर क्षत-विक्षत हो गया और वे बहुत क्रुद्ध हो गए। इसके बाद दैवी शस्त्र और अस्त्रों की मार से दोनों में घोर युद्ध होने लगा। ब्रह्मास्त्र से ब्रह्मास्त्र

पर, पर्वतास्त्र से वायव्यास्त्र पर, मेघास्त्र से आग्नेयास्त्र पर और गारुड़ास्त्र से पन्नगास्त्र पर हमले होने लगे।

इस प्रकार राजा शशिध्वज और कल्कि जी अनेक दिव्य अस्त्रों से आपस में एक-दूसरे पर चोटें करने लगे। लोक और लोकपाल (इस भयंकर युद्ध को देखकर) बहुत डर गए। वे लोग यह समझ बैठे कि अब तो प्रलयकाल ही आ पहुँचा है। युद्ध देखने के लिए आकाश-मार्ग से आए हुए देवतागण बाणों से निकलने वाली आग से डरने लगे। कल्कि जी और राजा शशिध्वज ने देखा कि देवास्त्रों का प्रयोग असफल हो रहा है, इसलिए वे अस्त्रों को छोड़कर बाहुयुद्ध पर उतर आए। अब दोनों ने लड़ाई में पैरों की मार का, चपतों की मार का और घूसों की मार का सहारा लिया। दोनों ही वीर यानी भगवान् कल्कि और राजा शशिध्वज युद्ध विद्या में कुशल थे, इसीलिए वे लड़ाई में एक-दूसरे के कौशल को देखकर प्रसन्न हुए। जिस प्रकार सृष्टि के आरंभ में पृथ्वी का उद्धार करते समय वराह जी ने आवाज़ की थी, वैसी ही आवाज़ करते हुए कल्कि जी ने शत्रु पर करतलाघात किया। राजा शशिध्वज मूर्च्छित हो गया। इसके बाद उसने फौरन ही उठकर क्रोधित होकर ज़ोर से कल्कि जी पर अपनी मुट्ठी से वज्र के समान (कठोर) मुक्का मारा। कल्कि जी उस प्रहार से मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। भगवान् जगदीश्वर कल्कि जी को मूर्च्छित देखकर उनको ले जाने के लिए धर्म और सतयुग वहाँ पर आए। राजा शशिध्वज ने धर्म और सतयुग को दो काँखों में ले लिया। फिर वह (शशिध्वज) कल्कि जी को गोद में उठाकर कृतकृत्य हो गया व अपने घर की ओर चला गया; और सोचने लगा कि अन्य कोई राजा मेरे दोनों पुत्रों को लड़ाई में जीत नहीं सकेगा।

इस प्रकार राजा शशिध्वज सुराधिप (देवताओं के

भगवान विष्णु की पूजा करती हुई राजा शशि ध्वज की पत्नी सुशान्ता

स्वामी) के स्वामी कल्कि जी को संग्राम में हराकर और धर्म और सत्युग दोनों को काँख में लेकर प्रसन्न हृदय और पुलकायमान शरीर से सेना को तहस-नहस कर अपने घर को गया। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि रानी सुशान्ता नारायण जी के मंदिर (घर) में विराजमान है। सुशान्ता के चारों और वैष्णवी नारियाँ बैठी हुई थीं और भगवान् नारायण जी का गुणगान कर रही थीं। सुशान्ता का अति सुन्दर मुख देखकर राजा ने कहा—'हे सुशान्ते! जिन्होंने बेचारे देवताओं की विनयभरी प्रार्थना पर शम्भल गाँव में जन्म लिया है और जिन्होंने विद्या प्राप्त कर पाखण्डियों और म्लेच्छों का विनाश किया है, वही हृदय में रहने वाले, तुम्हारी शक्ति की परीक्षा लेने के लिए माया का सहारा लेकर मूर्च्छा रूपी छल से इस समय यहाँ आए हैं। हे कान्ते! यह देखो, धर्म और सत्ययुग हमारी दोनों काँखों में मौजूद हैं। तुम इनकी पूजा करो।'

राजा शशिध्वज के ऐसे वचन सुनकर, सुशान्ता बहुत

प्रसन्न हुई। शशिध्वज के नाभिस्थल में नारायण और दोनों काँखों में क्रमशः धर्म और सत्ययुग थे। रानी सुशान्ता उनको प्रणाम करके हरि नाम कीर्तन करने लगी। क्रम से उसकी लज्जा दूर हो गई और वह सखियों के साथ नाचने लगी।

दशवाँ अध्याय

सुशान्ता बोली—'हे हरे जय हो! हे महामते! मेरे माया-मोह से ढके हुए आवरण को हटाकर अमर देवगण सेवित, सुन्दर आभूषणों से सजे, सज्जनों द्वारा पूजित, अपने कमल जैसे चरणों को हमारे सामने रखो। आपका शरीर तो दुनिया भर की उत्तम सामग्री से बना है, सज्जनों के हृदयों में स्थित है और स्वयं कामदेव तक को मोहित करने वाला है। आप इस समय हमारी मनोकामना को पूरा करें। आपका यश दुनिया के शोक का नाश करने वाला है। आपके मुस्कान-सुधा सम्पन्न चाँद-जैसे मुँह से अमृत से भरी मीठी बोली निकलकर सबको प्रसन्न करती है। हे परमात्मन्! आपका चन्द्रमा जैसा सुंदर मुख संसार का कल्याण करे। मेरे पति को कोई भी कभी भी हरा नहीं पाया। यदि मेरे पतिदेव ने किसी भी काम से आपको अप्रसन्न किया हो तो आप उस शत्रुभाव को छोड़कर कृपा कीजिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो भला, दुनिया के लोग आपको कृपा-सागर परमेश्वर क्यों कहेंगे ? आपकी भार्या प्रकृति है, जो महत्तत्व, अहंकार तत्व और पंचतन्मात्र आदि से शरीर बनाती है। आपकी देख-रेख में आपकी लीला से ही ब्रह्मा द्वारा बनाए गए इस संसार में सर्जन (निर्माण), स्थिति और प्रलय होती है। हे देव! पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवं आकाश—ये पंचभूत देह और इन्द्रियों के कारण-रूप हैं।(हे प्रभो!) आप इन पंचभूत और त्रिगुणमयी अपनी माया से अपने भक्तों पर कृपा कीजिए। हे भगवन्! आपके नाम

गुणगान से यानी आपका नाम लेने से कलिकाल के पाप समूह दूर हो जाते हैं। आपका नाम तो अनगिनत गुणों का भण्डार है, संसार के भयों का नाश करने वाला है। जो भी लोग दुनिया के तीनों तापों से दुःखी होकर आपका नाम लेते हैं, वे जन्म के बन्धन से यानी बार-बार जन्म लेने से छुटकारा पा लेते हैं। आपके अवतार से सज्जनों का मान बढ़ता है, ब्राह्मणों की लक्ष्मी बढ़ती है, देवताओं का पालन होता है, सत्ययुग की पुनः प्रतिष्ठा होती है, धर्म की वृद्धि होती है और कलियुग का संहार होता है। इस समय आपके इस अवतार से हमारा कल्याण हो। हमारे घर में पति, पुत्र, पोते, रथ, ध्वज, चामर, ऐश्वर्य एवं मणियों से जड़े हुए आसन आदि सब ही विद्यमान हैं, परन्तु आपके कमल रूपी चरणों की पूजा बिना वे सभी क्या शोभा पाते हैं अर्थात् शोभाहीन हैं। हे संसार की आत्मा! आपका मुख सुन्दर मुस्कान की शोभा वाला है, सर्वांग सुन्दर है, मनोहर बोली वाला है, सुन्दर भावों वाला है, (परन्तु) यदि यह हमारा चाहा हुआ कार्य न कर पाए तो (भगवान् करे) हमारी अभी मौत हो जाए। आप (अश्वारोही) सबको अभय दान देते हैं, (घोड़े पर चढ़कर घूमते हैं), हे देव! आपके तेज़ बाणों की बौछार से बहुत-से वीर मौत के शिकार हुए हैं, जो बलवान् वीर युद्ध में मारे गए हैं, आप उनका पालन करते हैं। आपके रसीले मुख-मण्डल पर सैकड़ों चन्द्रमा की चमक विराजमान है, महादेव, ब्रह्मा जी (भी) आपके आश्रय की भीख चाहते हैं। हे देव! आप निस्सन्देह सनातन पूर्ण ब्रह्म हैं।'

इसके बाद कल्कि जी इस प्रकार सुशान्ता के विनय-गीत से संतुष्ट हो (उसी प्रकार) उठ बैठे जैसे युद्ध में स्थिर (मूर्छित) वीर-रणशय्या से उठे। उन्होंने अपने सामने सुशान्ता को, बायीं ओर सत्ययुग को, दाहिनी ओर धर्म को और पीछे

राजा शशिध्वज को देखकर जैसे लज्जा से मुख को नीचा झुकाकर कहा—'हे कमल जैसे सुन्दर फूल की भाँति नेत्रों वाली! तुम कौन हो ? किस कारण हमारी सेवा करने के लिए तैयार हो ? ये महावीर शशिध्वज किसलिए मेरे पीछे उपस्थित हैं ? हे धर्म! हे कृतयुग! हमलोग युद्ध-भूमि को छोड़कर किसलिए शत्रु के अन्तःपुर में आए ? मुझको बताओ। मैं शत्रु हूँ। शत्रु की स्त्रियाँ किस कारण से प्रसन्न हृदय से मेरी सेवा करती हैं ? मैं तो मूर्च्छित हो गया था। शूरवीर शशिध्वज ने मेरा नाश क्यों नहीं किया ?'

सुशान्ता बोली—'पृथ्वी के रहने वाले, स्वर्ग के रहने वाले, रसातल के रहने वाले मनुष्यों, सुर तथा असुरों और नागों में (भला) ऐसा कौन है, जो नारायण कल्कि जी की सेवा नहीं करता ? जगत् जिसका सेवक और मित्र रूप है, जिसके दर्शन से किसी के प्रति शत्रुता नहीं रह जाती, उसका क्या साक्षात् सम्बन्ध से (प्रत्यक्ष रूप से) कहीं कोई शत्रु हो सकता है ? (अर्थात् नहीं हो सकता।) मेरे स्वामी यदि शत्रु का भाव रखकर लड़ाई करते तो क्या आपको वह अपने स्थान में (इस प्रकार) ला सकते थे ? मेरे स्वामी आपके दास हैं और मैं आपकी दासी हूँ। हे लम्बी भुजाओं वाले! मुझ पर प्रसन्न होकर आप स्वयं ही यहाँ पर आए हैं।'

धर्म बोले—'हे कलि का नाश करने वाले! ये दोनों ही जिस तरह आपकी भक्ति कर रहे हैं, आपके नाम का कीर्तन करते हैं और आपकी स्तुति करते हैं, उसे देखकर तो मैं कृतार्थ हो गया हूँ, अत्यन्त धन्य हो गया हूँ।'

'आज मैं आपके इस सेवक का दर्शन करके सत्ययुग के नाम से जाना जाता हूँ। आप भी इस सेवक के तेज से ईश्वर और संसार के पूजनीय बन गए।'

शशिध्वज बोले—'मैंने युद्ध करके आपके शरीर पर

प्रहार किया है। आप हमारी आत्मा हैं। मैंने काम-क्रोधादि रोग के वशीभूत होकर आपसे दुश्मनी की है। (मुझे दण्ड दीजिए)।'

इस वचन को सुनकर कल्कि जी ने मुस्कराकर बार-बार कहा—'तुमने तो हमें जीत लिया है।'

इसके उपरांत राजा शशिध्वज ने लड़ाई के मैदान से अपने पुत्रों को बुला, सुशान्ता के मन की बात समझकर (सुशान्ता की प्रेरणा से) कल्कि जी को रमा नाम की अपनी कन्या को कन्यादान में दे दिया।

उसी समय मरु, देवापि, विशाखयूपराज और रुधिरश्व आदि राजागण, राजा शशिध्वज का निमन्त्रण पाकर, युद्ध के मैदान से शय्याकर्ण नाम के राजा के साथ भल्लाट नगर में आ गए। उन राजाओं की अनगिनत फ़ौज से वह नगरी रौंदी-सी जाने लगी। अनगिनत हाथियों, घोड़ों, रथों, पैदल सैनिकों, छत्रों और झंडों-ध्वजाओं आदि से (शोभित मण्डप में) कल्कि जी का रमा जी से विवाह सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया। सभी लोग प्रसन्नतापूर्वक अपने दल-बल सहित उस उत्सव को देखने के लिए आए। शंख, भेरी, मृदंग आदि बाजों की ध्वनि की गूँज और नाच-गाने आदि विवाह में होने वाले अनुष्ठानों और नगर की स्त्रियों के मंगलाचार के बीच रमा जी और कल्कि जी का विवाह अत्यन्त सुखकारी रहा।

राजा लोगों ने, तरह तरह के स्वादिष्ट भोजन का सत्कार पाते हुए, सभा में प्रवेश किया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा दूसरी जाति वाले लोग विचित्र प्रकार के गहनों और तरह-तरह की भोग वस्तुएँ पाकर कमल जैसी आँखों वाले श्री कल्कि जी द्वारा शोभित उस सभा में (कल्कि जी के दर्शनों के लिए) बैठे। जैसे तारों के बीच में चाँद शोभा पाता है, वैसे ही राजाओं के स्वामी कल्कि जी सभी लोगों को

मोहित करके शोभायमान हुए। कमल-पत्र जैसी आँखों वाले कल्कि जी ने (सभा में उपस्थित राजाओं के समक्ष) रमा जी के साथ पाणिग्रहण (विवाह संस्कार) किया। राजा शशिध्वज कल्कि जी को जामाता (दामाद) के रूप में पाकर सभा में भक्ति सहित शोभायमान हुए।

ग्यारहवाँ अध्याय

सूत जी बोले—महर्षियों द्वारा अशेषकथित (अशेष कहे गए) भक्ति से पूर्ण शरीर वाले, परम वैष्णव, सत्ययुग, धर्म एवं रानी सुशान्ता सहित राजा शशिध्वज को देखते हुए, आगत राजाओं तथा ब्राह्मणों ने कहा—'इस समय तो आप (दोनों) साक्षात् नारायण कल्कि जी के स्वश्रु-श्वसुर (सास-ससुर) बन गए हैं; (परन्तु) हम सब राजा लोग, ऋषिगण, ब्राह्मणगण और अन्यान्य लोग नारायण में आपकी भक्ति भावना का इतना विस्तार (अधिकता) देखकर अचम्भे में पड़ गए हैं और यह जानना चाहते हैं कि आपको नारायण के प्रति ऐसी भक्ति कहाँ से मिली है। हे राजन्! क्या यह भक्ति आपने किसी से सीखी है ? अथवा क्या यह आपकी जन्म से ही स्वाभाविक भक्ति है ? हे राजन्! हमलोगों को आपसे इस भगवद्भक्ति का कारण जानने की इच्छा है। इस कारण (भगवद्भक्ति की कथा) को सुनकर भी तीनों लोकों के लोग पवित्र होते हैं और संसार में लिप्त होने की आदत (आवागमन) का नाश होता है।'

शशिध्वज बोले—'हे अतुल वीरता वाले राजागण! हम दोनों स्त्री और पुरुष के जैसे जन्म और कर्मादि हुए हैं और जिस प्रकार हमलोगों को भक्ति की याद आई है, उन सब बातों को सुनिए।

हज़ारों युग बीत गए होंगे, मैं पहले किसी जन्म में सड़े

हुए मांस को खाने वाला गिद्ध था और यह मेरी प्यारी पत्नी सुशान्ता गिद्धनी थी। हम दोनों एक बड़े पेड़ पर घोंसला बनाकर रहा करते थे। हम दोनों जंगलों और बाग-बगीचों से भरे सभी स्थानों में अपनी इच्छा के अनुसार घूमा-फिरा करते थे और हम दोनों ही मुर्दों के बदबूदार मांस से अपनी गुज़र-बसर करते थे। एक समय एक निर्दयी व्याध (पक्षियों का शिकार करने वाले) ने हम दोनों को देखकर हमें पकड़ने की इच्छा से ललचा कर अपने (हृष्ट-पुष्ट) पालतू गिद्ध को छोड़ा। उस समय मैं भूख से परेशान था। पालतू गिद्ध को देखकर मेरे मन में भरोसा हुआ और मैं और गिद्धनी मांस के लालच में पड़कर वहाँ झपट पड़े (और जाल में फँस गए)। व्याध ने हम दोनों को बँधा हुआ देखकर मन में खुश हो, वहाँ आकर जल्दी ही हमारा गला पकड़ लिया। हम पूरी ताकत से अपनी चोंचों से उस पर चोट करने लगे। फिर मांस के लालची व्याध ने हम दोनों को पकड़कर गण्डकी नदी के तट पर (शालिग्राम) गंडकी शिला पर पटककर हम दोनों के सिरों को चूर-चूर कर डाला। गंगा (के तट) और चक्रांङ्कित शिला पर मृत्यु होने के कारण, हम दोनों उसी समय चतुर्भुज रूप धारण कर प्रकाशमान विमान में बैठकर सभी लोगों द्वारा पूजित वैकुण्ठ धाम में पहुँचे। उस स्थान में सौ युग तक रहने के बाद हम ब्रह्मलोक में गए। ब्रह्मलोक में भी पाँच सौ युगों तक सुख भोगकर अन्त में काल के वश में पड़कर फिर चार सौ युगों तक देवलोक में स्वर्गीय सुख का आनन्द उठाया।

हे राजागण! उसके बाद हमने इस मर्त्य लोक में जन्म लिया है। परन्तु शालिग्राम शिला का स्थान और नारायण जी की कृपा, सभी बातें हमारी याद में ताजा हैं। गण्डकी नदी के तट पर मृत्यु प्राप्त होने से हममें पूर्वजन्म की स्मृति विद्यमान है। गण्डकी का माहात्म्य क्या कहूँ ? उसके जल के स्पर्श का

भी माहात्म्य है। चक्रांकित शिला (शालिग्राम शिला) को छूने से मृत्यु के बाद जब ऐसा फल मिलता है तो भगवान् वासुदेव की सेवा करने के फल का तो कहना ही क्या है! इसी विचार से हम भगवान् नारायण की उपासना में कभी नाचते हैं, एकाग्रचित्त से उनमें आसक्त रहते हैं। कभी उनका गुण-गान करते हैं और कभी भक्ति भाव से जमीन पर लोटने लगते हैं। हम इसी तरह इस जगह अपना समय बिताते रहते हैं। हमने ब्रह्मा जी के मुँह से पहले ही जान लिया था कि कलि का नाश करने के लिए नारायण अंशरूप से कल्कि जी के रूप में अवतार लेंगे। हम उनके पराक्रम को भली-भाँति जानते हैं।'

राजा शशिध्वज ने इस प्रकार राजसभा में अपनी कहानी सुनाकर, कल्कि जी को हार्दिक सम्मान दिया और दस हज़ार हाथी, एक लाख घोड़े, छः हज़ार रथ, छः सौ युवती दासियाँ और अनेक बहुमूल्य रत्न देकर बन्धु-बान्धवों के साथ अपने को धन्य (कृतकृत्य) समझा।

इस प्रकार राजा के (मुख से उनके) पूर्व जन्म का वृतान्त सुनकर सभासदों ने अचम्भा प्रकट किया और उन्हें पूर्ण (अभावशून्य/सिद्ध) समझा। इस प्रकार वहाँ सब लोग कल्कि जी की स्तुति और ध्यान करने लगे। फिर उन सब लोगों ने राजा शशिध्वज से भक्ति और दूसरे भक्तों के लक्षण पूछने शुरू किए।

राजाओं ने पूछा—'भगवद्भक्ति किसका नाम है ? विधान को जानने वाला भक्त किसे कहते हैं ? वह भक्त क्या करता है ? क्या खाता है ? कहाँ रहता है ? किस तरह बातचीत करता है ? हे राजाओं के स्वामी! आप सब जानते हैं, इसलिए आप सभी कुछ सादर वर्णन करें।'

उनके ये वचन सुनकर राजा का चेहरा खिल उठा और

उन्हें साधुवाद देकर पुराने जन्म का स्मरण (जातिस्मर) होने के कारण कृष्ण नाम से दुनिया को पवित्र करने के उद्देश्य से ब्रह्मा जी द्वारा सुने हुए साधु-चरित्र को बताना शुरू किया।

राजा शशिध्वज ने कहा—'प्राचीन काल में ब्रह्मसभा के बीच महर्षि लोग विराजमान थे। उसी समय यह कथा सनकादि ने नारद जी से पूछी थी। उसी कहानी को आपलोग मुझसे पूछते हैं। (वही आपको बताता हूँ)। उस समय मैं भी वहाँ मौजूद था, इसी कारण मैंने उनकी कृपा से उन सब कथाओं को सुना था। हे (पाप के नाश करने वाले) सभासदगण! मैंने जो भी बातें सुनी थीं, वे इस समय बताता हूँ। आप (पापनाश करने वाली) उन बातों को सुनिए।

सनकादि जी ने पूछा—'हे महर्षि नारद! हरि की कैसी भक्ति करने से (बार-बार) जन्म नहीं लेना पड़ता और किस प्रकार की भक्ति प्रशंसा के योग्य है ? आप इन बातों को ही पहले बताएँ। हम बहुत मन लगाकर उसे सुनते हैं।'

नारद जी ने कहा—'(प्रशंसा के योग्य भक्ति का लक्षण यह है कि) संसार के विधि-विधान को जानने वाला, चतुर साधना करने वाला व्यक्ति उत्तम बुद्धि से आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा—इन पाँच ज्ञानेन्द्रियों को अपने बस में करके और छठवें मन का निग्रह करते हुए परम ज्ञान का सहारा लेकर गुरु के चरणों में अपने शरीर को अर्पण कर दे। गुरुदेव के प्रसन्न हो जाने पर, स्वयं भगवान् नारायण प्रसन्न हो जाते हैं। शिष्य को चाहिए कि प्रणवाग्नि प्रिया के बीच में ॐ वर्ण को अनन्य हृदय यानी एकाग्रचित्त से याद करते हुए बड़ी सावधानी से पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय आदि से तथा स्नान और वस्त्र-आभूषणों सहित, सब ओर से ध्यान हटाकर केवल नारायण जी के कमलचरणों में ध्यान कर पूजा करे। इसके बाद अपने हृदय-कमल के बीच में स्थित सुन्दर, सर्वांग

रूप से सुन्दर नारायण जी के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार ध्यान करके वचन, मन, बुद्धि और सभी इन्द्रियगण सहित अपनी आत्मा को पूर्ण भाव से श्री नारायण के प्रति समर्पित करे। कल्कि देवमूर्ति, अनन्त विष्णु जी के ही अंश हैं, जिन सब नामों को आप जानते हैं, वे उन (विष्णु) के सिवाय कुछ नहीं है। भगवान् कृष्ण तो सेवा करने के योग्य स्वामी हैं और हम सेवा करने वाले सेवक हैं। सभी जीव कृष्ण जी की मूर्ति हैं। इसलिए ज्ञानी लोग कहते हैं कि अविद्या के वश में होकर ही ये सब पैदा होते हैं। भक्तों के लिए सेव्य (जो सेवा करने योग्य है) सेवक (जो सेवा करता है) भाव में द्वैतभाव का उदय होता है, क्योंकि (नारायण) सेव्य एक है और सेवक दूसरा है। इस तरह से ये दोनों अलग-अलग रूप मालूम होते हैं, परन्तु है यह कि नारायण के अलावा कोई भी दूसरी चीज़ कहीं भी नहीं है। भक्त उन्हीं भगवान् विष्णु को याद करता है और उनके ही नाम का कीर्तन करता है। भगवान् के ही लिए सभी काम किया करता है, इसीलिए भक्त के लिए आनन्द और सुख का उदय होता है। भक्त (परमात्मा की भक्ति में) विह्वल होकर नाचता है, (प्रेम में व्याकुल) रोता है, हँसता है, भगवान् में अपने को लीन समझकर तन्मयता पूर्वक घूमता है, भक्ति भाव में डूबकर अपने को भूलकर (पृथ्वी पर) लोटता है और (श्री हरि के अतिरिक्त) कहीं भी किसी (अन्य) भेद को नहीं देखता। इस प्रकार की भगवान् के विषय में होने वाली अव्यभिचारिणी भक्ति के (जिसमें किसी प्रकार की विकृति/बुराई न हो) प्रभाव से देवता, दानव, गन्धर्व और मनुष्य आदि समस्त लोग सहसा पवित्र हो जाते हैं। जो नित्य रहने वाली प्रकृति है, जो ब्रह्म की सम्पदा है, वही भक्ति के रूप में प्रकट हुई है। वह भक्ति ही वेदादि में उत्तम बताई गई है और यही भक्ति विष्णु,

ब्रह्मा और शिव की स्वरूप है। द्वैत भाव के कारण ही सत्त्वगुण के अभ्यास से भक्ति भाव उत्पन्न होता है। रजोगुण से इन्द्रियों के विषयों की लालसा होती है और तमोगुण के प्रभाव से घोर कर्म में प्रवृत्ति होती है। संसार में जिन लोगों को द्वैत ज्ञान हो जाता है, उनमें जब सत्वगुण होता है तो उनमें निर्गुणता आ जाती है, अर्थात् वे भोग-विलास से दूर रहते हैं, लेकिन जिनमें रजोगुण आ जाता है—उनके अन्दर भोग-विलास की इच्छा होने लगती है और जब उनमें तमोगुण जोर मारने लगता है तो वे नरक में जाने योग्य हो जाते हैं। भगवान् विष्णु का भोग लगाने के बाद छोड़ा हुआ या छूटा हुआ पवित्र पथ्य और इच्छित नैवेद्य को सात्त्विक कहा जाता है। ऐसा सात्त्विक आहार ही भक्तों को ग्रहण करना चाहिए। जो भोजन इन्द्रियों को अच्छा लगने वाला है, जिससे वीर्य तथा रक्त बढ़ता है, जिससे आयु बढ़ती है और जिससे शरीर रोगरहित यानी स्वस्थ रहता है, इस प्रकार के शुद्ध भोजन को राजस भोजन कहते हैं।

(अब तामस भोजन के बारे में बताते हैं।) जो भोजन कड़ुवा, खट्टा, गरम, जलन पैदा करने वाला, बदबूवाला और बासी हो, उसे तामसीवृत्ति के लोग पसन्द करते हैं।(कौन-से गुण वाले कहाँ-कहाँ पाए जाते हैं, इसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि) सत्वगुण का पालन करने वाले लोग जंगल में, रजोगुण को धारण करने वाले लोग गाँवों में और तमोगुण वाले लोग जुएघर में या शराबघर में रहते हैं। वे भगवान् नारायण स्वयं हाथ उठाकर किसी को कुछ नहीं देते और (सच्चा) सेवक भी भगवान् से कुछ नहीं माँगता, फिर भी उन दोनों की आपसी प्रीति हमेशा दिखाई पड़ती है, यह (कैसी) असाधारण और अजीब बात है!' शुद्ध हृदय वाले महर्षि सनक ने भक्तिपूर्वक देवर्षि नारद जी से साक्षात् भगवान्

नारायण के गुणों का बखान सुना तथा विनम्रतापूर्वक वचनों से श्रेष्ठ देवर्षि नारद जी की स्तुति कर एवं उन्हें प्रणाम कर इन्द्रलोक को पधारे।

बारहवाँ अध्याय

राजा शशिध्वज ने कहा—'हे राजाओ! मैंने (आप लोगों को) ऐसे भक्त और भक्ति की महिमा बताई है, जिनके अद्‌भुत कामों का कीर्तन करना चाहिए। अब (बताइए) मैं और क्या कहूँ ?'

राजाओं ने कहा—'हे राजन्! आप तो महान् वैष्णव हैं (और) सभी प्राणिमात्र की भलाई के काम में लगे रहते हैं। फिर क्या कारण है कि आप हिंसा आदि दोषों से युक्त लड़ाई में शामिल हुए ? हमने देखा है कि सज्जन अधिकांश रूप से अपने प्राण, बुद्धि, धन एवं वचन द्वारा विषय-वासना वाले प्राणियों की भलाई करते हैं।'

राजा शशिध्वज ने कहा—'सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण वाली प्रकृति से ही द्वैत भाव प्रकट होता है। यह प्रकृति ही काम रूपिणी है, यानी इच्छा रूपिणी है, और इस प्रकृति से ही सभी वेद और तीनों लोक पैदा हुए हैं। वेद तीनों जगत में धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश करके विषय-भोग की इच्छा रखने वाले लोगों में भक्ति पैदा करते हैं। वेदों में पारंगत वात्स्यायन आदि मुनि और मनु (या मनुष्य) वेदवाणी के शासन को मानते हुए (वेद-वाक्यों का पालन करते हुए), ईश्वर को ही आहुति (या धर्म-भेंट) अर्पित (प्रदान) करते हैं (की थी)। हमलोग उनके पीछे चलने वाले बनकर धर्म-कर्म में लगे रहकर (ही) युद्ध करते हैं। वेदों के आदेशों के अनुसार लड़ाई में हम (आक्रमण करने वाले) आततायियों का नाश करते हैं। सभी वेदों के जानने वाले विद्वान् भगवान्

वेद व्यास जी ने कहा है कि यदि ऐसे व्यक्ति की हम हत्या करते हैं, जो हत्या के योग्य नहीं हैं तो हमें जैसा पाप लगता है, वैसा ही पाप हमें तब लगता है, जब हम किसी हत्या के योग्य जीव को बचा देते हैं। ऐसा आचरण न करने से इतना अधर्म होता है कि जिसका प्रायश्चित नहीं है। यही कारण है कि मैं युद्ध के मैदान में कठिनता से जीते जाने वाली सेना का नाश करने में तत्पर होकर धर्म, सत्ययुग तथा कल्कि जी को ले आया हूँ। मेरा विचार है कि यही असली भक्ति है। अब इस विषय में आप अपना अभिप्राय बताइए।

इसके अलावा, मैं वेद वाक्य के अनुसार (अपने कहने के समर्थन में) प्रमाण दूँगा। भगवान् विष्णु सर्वत्र व्यापक हैं, यानी सभी जगह वे मौजूद हैं, तो (उस हालत में) कौन मारता है और किसको मारा जाता है ? कहने का मतलब है कि मरने वाले में भी वही विष्णु हैं और मारने वाले में भी वही हैं। जब वध (हत्या) करने वाले श्री विष्णु हैं और वध किए जाने वाले भी श्री विष्णु हैं, फिर किसकी हत्या होगी ? वेदों का आदेश भी यही है कि युद्ध और यज्ञ आदि में की जाने वाली हत्या को हत्या नहीं माना जाता। मुनि लोग और चौदह मनु भी ऐसा ही बताते हैं। हमलोग भी यज्ञ और युद्ध से इसी तरह भगवान् विष्णु की पूजा किया करते हैं। इसलिए, भगवती माया का सहारा लेकर, विधिपूर्वक सेवक-सेव्य (सेवा करने वाला और वह, जो सेवा किए जाने योग्य है) भाव वाली आराधना से साधक सुखी होता है, दूसरा कोई उपाय नहीं है, जिससे सुखी हुआ जा सके।'

राजागण बोले—'हे राजन्! राजा निमि ने गुरु वशिष्ठ के शाप के कारण अपना शरीर छोड़ दिया था, परन्तु इस प्रकार से भोग से युक्त शरीर में कैसे वैराग्य हुआ ? जब यज्ञ के अन्त में देवताओं ने प्रसन्न होकर, उसको बचाया और उसे

फिर से शरीर में प्रवेश करने की आज्ञा दी, तब वह राजा किस कारण से छोड़ी हुई देह में फिर प्रवेश करने के लिए सहमत नहीं हुए? सुना है कि महर्षि वशिष्ठ जी ने शिष्य के शाप से देह छोड़कर फिर देह को ग्रहण किया। भक्त तो (जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है) मुक्ति पा लेता है, इसलिए मुक्ति प्राप्त करने वाले व्यक्ति का फिर जन्म कैसे हो सकता है? अतएव, ज्ञानी लोगों तक के लिए भी भगवान् की माया समझ के बाहर है। यह माया तो इन्द्रजाल (जादू) की तरह संसार में फैलकर प्राणियों को मोहित करती है।'

वचन बोलने में उत्तम राजा शशिध्वज ने उनकी ये बातें सुनकर भक्ति सहित हृदय में प्रणाम करके फिर यह कहना शुरू किया। राजा शशिध्वज बोले—'तीर्थ, क्षेत्रादि के दर्शन करने से अनेक जन्मों के बाद भगवान् की कृपा से सज्जनों का साथ मिलता है, इस सत्संग से ही जीव ईश्वर के दर्शन पाता है। (ऐसा व्यक्ति) फिर विष्णु लोक में जाकर आनन्द से भरे हृदय से ईश्वर का भजन करता है। इस प्रकार से संसार में जीव अद्भुत भोगों को भोगकर भक्त बनता है। जो लोग रजोगुणी होते हैं, वे हमेशा कर्मों के द्वारा श्री विष्णु की पूजा करते रहते हैं और भगवान् का नाम-कीर्तन और उसके रूप का स्मरण करने को उत्सुक (इच्छुक) रहते हैं। वे लोग भगवान् के अवतार का अनुकरण करते हैं। एकादशी आदि पर्वों में व्रत रखते हैं और भगवान् संबंधी महोत्सव, भगवान् की भक्ति, भगवान् की पूजा आदि कामों से ही उनका हृदय परम आनन्द से भरता है। अतएव ऐसे सभी भक्त लोग, जिन्होंने स्वयं भोगफल को प्रत्यक्ष देखा है, मोक्ष के लिए प्रार्थना नहीं करते। वे भोगों को भोगते हुए ही जन्म ग्रहण करके हरिभाव को प्रकट किया करते हैं। भक्त लोग भगवान् नारायण के ही रूप हैं। उन लोगों से ही सारे क्षेत्र और तीर्थ पवित्र होते हैं। वे

धर्म-कार्य में लगे रहते हैं। सारे सार (तत्व) और असार (तत्वहीन) की जानकारी रखते हैं और सेव्य और सेवक इन दो मूर्तियों में निवास करते हैं। जैसे भगवान् श्री कृष्ण ने अवतार ग्रहण किया था, वैसे ही उनके सेवक भी समय-समय पर अवतार ग्रहण किया करते हैं। इसी कारण से निमि भक्तों की आँखों पर निमेष रूप से रहते हैं। यह भी भगवान् की लीला है। वशिष्ठ जी ने मुक्त होने पर जो शरीर धारण किया था, उसका भी कारण यही है। राजाओ! मैंने आप से यह भक्ति और भक्त की महिमा बताई है। इसको सुनने से मनुष्य के सभी पाप जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं, नारायण के प्रति भक्ति बढ़ती है, इन्द्रियों के अधिष्ठाता (स्वामी) देवता लोग भी आनन्द पाते हैं और काम-रोग आदि सभी दोष नष्ट होकर माया-मोह दूर हो जाते हैं। तीनों लोकों के ज्ञाता व्यास आदि भावुक मुनियों ने वेद-पुराणादि तरह-तरह के शुद्ध शास्त्रीय व्याख्या करने वाले अमृत तत्व को बहुत लम्बे समय तक मंथन किया और उस मंथन के फलस्वरूप अद्‌भुत कृष्ण-प्रेम का ताज़ा मक्खन प्राप्त हुआ। इसके द्वारा संसार के बंधन कट जाते हैं। लोगों ने जब देखा कि व्यासादि मुनियों को ऐसा फल मिला तो उन्होंने भगवान् श्री कृष्ण के साथ उनकी तुलना की है।'

तेरहवाँ अध्याय

सूत जी बोले—राजा शशिध्वज ने प्रसन्न चित्त से सभा में उपस्थित हुए लोगों के सामने अपनी कथा सुनाकर (फिर) हाथ जोड़कर कल्कि जी से कहा—'हे हरे! आप तीनों लोकों के स्वामी हैं। ये जितने भी राजा है, आपके ही आश्रय में हैं। इन सभी राजाओं और मुझे भी अपनी आज्ञा का पालन करने वाला समझो। अब मैं हरिद्वार, (तीर्थ का नाम) जो कि

ऋषि-मुनियों को प्रिय है, तप करने के लिए जाता हूँ। अब जो मेरे ये बेटे-बेटियाँ और उनके भी जो बच्चे हैं अर्थात् मेरे पोते-पोतियाँ हैं, वे आपके ही भरोसे हैं अर्थात् आप इनकी देखभाल कीजिए। हे देवताओं के स्वामी! मेरी इच्छा को तो आप जानते ही हैं। आपने अपने पूर्व जन्म में जाम्बवान और द्विविद नामक बन्दरों का जो नाश किया था, वह भी आपको याद ही है।'

यह कहकर राजा शशिध्वज अपनी पत्नी के साथ जाने के लिए तैयार हुए और कल्कि जी ने (जैसे) लज्जा से अपना मुँह नीचाकर लिया। राजाओं ने इस बात के कारण को जानने की इच्छा से कहा—'हे नाथ! राजा शशिध्वज ने कौन-सी ऐसी बात कही, जिसके लिए आपको अपना मुँह नीचे करना पड़ा? कृपया इस बात को बताकर हमारा संदेह दूर कीजिए।'

कल्कि जी बोले—'हे राजाओं! आप लोग राजा शशिध्वज से ही इसका कारण पूछें। वे ही आपलोगों के सन्देह को दूर करेंगे। राजा शशिध्वज उत्तम ज्ञानी हैं और मुझमें उनकी गहरी भक्ति है।'

कल्कि जी के इन वचनों को सुनकर राजाओं ने उनके कहने के अनुसार ही संशय से भरे मन से राजा शशिध्वज से फिर पूछा—'हे राजन् (राजा शशिध्वज)! आप बहुत बुद्धिमान राजा हैं। आपने इस समय क्या कहा और आपकी बात सुनकर कल्कि जी ने किस कारण अपना मुँह नीचा कर लिया?'

राजा शशिध्वज बोले—'पहले जब रामचन्द्र जी ने अवतार ग्रहण किया था, तब लक्ष्मण जी ने इन्द्रजीत का वध किया अतएव कठोर राक्षसी वृत्ति से इन्द्रजीत की मुक्ति हुई। अग्निशाला में (इन्द्रजीत) ब्राह्मण का वध करने से लक्ष्मण जी के शरीर में ऐकाह्हिक (तेहिया) बुखार प्रवेश कर गया, जिससे लक्ष्मण जी को मोहादि (उपद्रवों) ने घेर लिया।

लक्ष्मण जी की ऐसी व्याकुल (परेशान) हालत देखकर अश्वनी कुमार के वंश में पैदा हुए श्रेष्ठ वैद्य द्विविद नामक वानर ने उनको एक मंत्र सुनाया और वही मंत्र लिखकर श्री रामचन्द्र जी के सामने ऊँची जगह पर रखकर लक्ष्मण को दिखाया। इस (मन्त्र) पत्रक को देखकर लक्ष्मण जी का बुखार जाता रहा और उन्हें फिर शक्ति आ गई (पहले जैसा ही बल प्राप्त हो गया)। इसके बाद, लक्ष्मण जी ने उस द्विविद नामक वानर से कहा—हे वानर! तुम कोई वर माँगो। द्विविद यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और प्रसन्न हो लक्ष्मण जी से बोला—मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपके हाथ से मेरा वध हो और मैं (इस प्रकार) वानर योनि से छूट जाऊँ।

फिर लक्ष्मण जी बोले—मैं अगले जन्म में बलदेव के रूप में अवतार लूँगा और उस समय मेरे ही हाथ से तुम्हारी यह वानर योनि छूट जाएगी। (वह मंत्र था) समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नाम वानर, जिसे लिखकर (लिखा हुआ) देखने से ऐकाहिक (तेहिया) बुखार नष्ट हो जाता है। (ऊपर बताए गए) इस मंत्र के अक्षर तालपत्र पर लिखकर द्वार पर देखने से ऐकाहिक बुखार छूट जाता है।

इस प्रकार लक्ष्मण जी से वर पाकर द्विविद नाम का वानर स्वस्थ शरीर से बहुत समय तक जीवित रहा। बहुत समय के बाद बलदेव जी के अस्त्र से उसने प्राण त्यागे और मोक्ष अभयात्मिका पद को प्राप्त हुआ। ऐसे ही आपकी इच्छानुसार सूत पुत्र लोमहर्षण की नैमिषारण्य में बलदेव जी के अस्त्र से मृत्यु हुई थी। हे राजागण! वामनावतार के समय जब वामन जी ने तीन पग भूमि से समस्त लोकों को नाप डाला था, उस समय जाम्बवान् ने उनके ऊपर लोक में पहुँचे चरण की प्रदक्षिणा की थी। वामन जी ने देखा कि जाम्बवान मन के समान बहुत शीघ्र गति वाले हैं तो वे भौंचक्के होकर

बोले—हे अत्यन्त बलशाली, रीक्षों के स्वामी, मुझसे वर माँगो।

वामन जी के ये वचन सुनकर ब्रह्मांश से पैदा हुए जाम्बवान ने प्रसन्न मुख से कहा—मुझे यह वर दीजिए कि आपके (सुदर्शन) चक्र से मेरी मृत्यु हो। यह सुनकर वामन जी ने कहा—जब मैं कृष्ण रूप में अवतार लूँगा, तब मेरे चक्र (सुदर्शन) से तुम्हारा सिर काटा जाएगा। उस समय ही तुम्हें मुक्ति मिलेगी।

फिर जब कृष्णावतार हुआ था, तब मैं सत्राजित नाम का राजा था। मैं सूर्य की पूजा किया करता था। उस समय एक मणि के कारण दुर्वाद उत्पन्न हो गया (मेरे द्वारा अपराध हुआ)। मेरे छोटे भाई का नाम प्रसेन था। एक सिंह ने मणि के लिए मेरे छोटे भाई को मार डाला था। बाद में यह सिंह भी इसी मणि के कारण जाम्बवान् द्वारा मारा गया। असीम तेजस्वी कृष्ण जी कलंक के डर से मणि को ढूँढ़ने लगे। फिर एक गुफा में जाम्बवान् के साथ उनकी लड़ाई हुई। जाम्बवान ने अपने ईश (स्वामी या प्रभु) को पहचान लिया। कृष्ण जी ने अपने चक्र से उनका सिर काट डाला। लक्ष्मण युक्त (सहित) श्री कृष्ण जी का दर्शन प्राप्त कर जाम्बवान ने अपने प्राण त्याग दिए। रीछों के स्वामी ने, नई दूब के समान श्री कृष्ण जी की श्याम वर्ण की मूर्ति के दर्शन करके उनको मणि के साथ-साथ अपनी जाम्बवती नामक कन्या भी दान में दे दी।

इसके बाद, श्री कृष्ण जी ने द्वारकापुरी में आकर सभा में मुझे बुलाया और उस समय वह मणि, जो ऋषियों को भी मिलनी कठिन है, उन्होंने मुझे दे दी। उस समय मैंने अत्यन्त लज्जित होकर वह मणि और सत्यभामा नामक कन्या कृष्ण जी को दान कर दी। कृष्ण जी ने दोनों की ही सुन्दरता देखकर दोनों को स्वीकार कर लिया। कुछ समय पीछे कृष्ण जी मेरे पास मणि रखकर सत्यभामा को साथ ले द्वारका से

हस्तिनापुर चले गए। जब कृष्ण जी हस्तिनापुर चले गए, तब शतधन्वा नामक राजा ने मेरा संहार करके मणि को ले लिया। इस प्रकार पिछले जन्म में कल्कि जी ने जो कुछ किया था, वह मैं जानता हूँ। मैंने श्री कृष्ण जी पर मिथ्या कलंक लगाया, इसलिए उस जन्म में मेरी मुक्ति नहीं हुई। इसी कारण इस जन्म में कल्कि रूप परमात्मा श्री कृष्ण जी को रमा रूपिणी सत्यभामा कन्या देकर श्रेष्ठ गति को प्राप्त हो रहा हूँ। लड़ाई के मैदान में मृत्यु होने से मुक्ति होगी, इसीलिए मैंने कामना की थी कि सुदर्शन चक्र से ही मेरी मृत्यु हो। संसार के अधिपति प्रभु कल्कि जी ने इस प्रकार अपने श्वसुर के वध को याद किया और धर्म-भय और लज्जा से मुँह नीचाकर लिया।

अत्यन्त आश्चर्य से पूर्ण तथा अद्भुत सुन्दर, इस कथा को सुनकर सभा में उपस्थित राजा लोग अचंभे में पड़ गए। सभासदों को भी आनन्द मिला। मुनिलोग श्री कल्कि जी के गुणों पर मुग्ध हो गए। श्रीमान् राजा शशिध्वज द्वारा कहे गए इस आख्यान को जो सुनता है, वह सुखी, धन्य, अत्यन्त यशस्वी होता है, मोक्ष पाता है और फिर उसे जन्म-मरण का महान् दुःख नहीं सहना पड़ता।

चौदहवाँ अध्याय

सूत जी बोले—इसके बाद महा तेजस्वी कल्कि जी विचित्र वचनों को कहकर अपने श्वसुर शशिध्वज को सन्तुष्ट करके राजाओं के साथ चले गए। राजा शशिध्वज भी कल्कि जी की इच्छानुसार वर पाकर महेश्वरी माया की स्तुति करके मोह-बंधन को छोड़कर स्त्री सहित जंगल को गए। कल्कि जी ने सेना सहित काञ्चनी पुरी (कांचीपुर) के लिए प्रस्थान किया। इस नगरी के चारों ओर पहाड़ियों का घेरा है। विष की वर्षा करने वाले साँपों द्वारा इसकी रक्षा होती है। परपुर

अर्थात् शत्रु की नगरी को जीतने वाले अच्युत कल्कि जी ने अपनी सेना के साथ उस मुश्किल से भेदे जाने वाले योग्य घेरे को भेदकर और बाणों द्वारा विषधारी साँपों का नाश करके उस नगरी में प्रवेश किया। कल्कि जी ने देखा कि वह पुरी अनेक मणियों और ढेर-सारे सोने से सजी हुई है। वह स्थान-स्थान पर नाग-कन्याओं से घिरी है। बीच-बीच में हरिचन्दन वृक्ष (कल्पवृक्ष) शोभायमान हैं, परन्तु वहाँ मनुष्य एक भी नहीं है। इन अद्‌भुत दृश्यों को देखकर कल्कि जी ने मुस्करा कर राजाओं से कहा—'देखो, कैसा आश्चर्य है। यह साँपों की नगरी है! मनुष्यों के लिए तो यह स्थान बहुत भयानक है। इस नगर में केवल नाग-कन्याएँ निवास करती हैं। बताइए, इसमें प्रवेश करना चाहिए या नहीं ?'

रमानाथ अर्थात् भगवान् कल्कि और राजा लोग अपने कर्त्तव्य (क्या करना चाहिए) के बारे में कुछ निश्चय नहीं कर सके। वे लोग चिन्ता करने लगे। उसी समय आकाशवाणी हुई—'इस नगरी में सेना सहित आपका प्रवेश करना उचित नहीं है। इस पुरी के भीतर रहने वाली विष-कन्याओं के देखने मात्र से आपको छोड़कर बाकी सभी मर जाएँगे।' उस आकाशवाणी को सुनकर कल्कि जी अकेले ही शीघ्रतापूर्वक तलवार लेकर घोड़े पर सवार होकर शुक पक्षी को साथ लेकर वहाँ गए। कुछ दूर जाकर कल्कि जी ने एक अपूर्व कन्या को देखा। इस कन्या का रूप देखकर ज्ञानी लोग भी अपना धीरज खो बैठते। अद्‌भुत रूप वाले कल्कि जी को देखकर कन्या मुस्कराकर बोली—'इस संसार में महावीर्य वाले सैकड़ों राजा और दूसरे मनुष्य मेरे कारण अपनी देह का नाश कराकर काल के गाल में समा गए। अतएव मैं बहुत दुःखी हूँ। देवता, राक्षस, मनुष्य किसी के साथ भी मेरे प्रेम की संभावना नहीं है। इस समय आपके कमल के समान

भगवान कल्कि और विषकन्या

सुन्दर दो नेत्रों से निकलने वाले अमृत में बहकर मैं आपको नमस्कार करती हूँ। मैं इस संसार में विषभरी दृष्टि वाली दीन और बहुत अभागिनी हूँ। आपकी दृष्टि अमृत पूर्ण है। मैंने कौन-सी तपस्या की थी, जो आपके साथ मिलाप हुआ?'

कल्कि जी बोले—'हे सुश्रोणि सुन्दरी! तुम कौन हो? किसकी कन्या हो? तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हुई? मुझे बताओ कि तुमने ऐसा कौन-सा काम किया था कि जिससे तुम्हारी दृष्टि विष वाली हो गई?'

विषकन्या बोली—'हे महा बुद्धि वाले! मैं चित्रग्रीव नामक गन्धर्व की पत्नी हूँ। मेरा नाम सुलोचना है। मैं अपने पति के मन को बहुत आनन्द देती थी। एक बार मैं अपने पति के साथ विमान में सवार होकर गन्धमादन पर्वत के कुञ्ज (झाड़ी) में जाकर किसी शिला पर बैठी कामाकुल हो विहार कर रही थी। मैं उस समय वासना के मद में तस्त थी। वहाँ पर यक्ष मुनि का भौंडा आकार देखकर मैं जवानी के घमंड में

अन्धी उनपर कटाक्ष कर हँसने लगी। मेरे अप्रिय वचन सुनकर और उपालम्भपूर्ण (अर्थात् मजाक उड़ाने वाले) वाक्य सुनकर मुनि ने क्रोधित होकर मुझे शाप दे दिया। उस शाप के कारण ही मैं विष दृष्टि वाली बन गई। उसके बाद मैं साँपों वाली कांचनी नामक इस नगरी में नागनियों में डाली गई। मैं दृष्टि द्वारा विष बरसाया करती हूँ। मैं अत्यन्त भाग्यहीन और पतिहीन होकर अकेली घूमा करती हूँ। मैं नहीं जानती कि मैंने कौन-सी ऐसी तपस्या की थी, जिससे आप की दृष्टि के सामने मैं आ गई। आपके दर्शन से मेरा शाप छूट गया। इस समय मेरी दृष्टि अमृत बरसाने वाली हो गई है। अब मैं पति के पास जाती हूँ। कैसा अचरज है! सज्जनों की प्रसन्नता से तो शाप ही अच्छा है। ऋषि का शाप होने से, शाप के छूटते समय आपके चरण-कमल के दर्शन मिले हैं।'

यह कहकर विषकन्या सूर्य के समान विमान पर चढ़ कर स्वर्ग को चली गई। कल्कि भगवान् ने महामति नाम के राजा को उस नगरी का महाराजा बनाया। महामति राजा के पुत्र अमर्ष, अमर्ष के पुत्र धीमान सहस्र और धीमान सहस्र से असि नामक प्रसिद्ध राजा ने जन्म ग्रहण किया। उसी राज के वंश में बृहन्नला राजाओं की उत्पत्ति हुई है। उन राजाओं में शेर के समान मनु को अयोध्या के राज्य पर राज्याभिषेक कराया, फिर नारायण (श्री कल्कि जी) मुनियों के साथ मथुरा को गए। मथुरा के राज्य पर अत्यन्त तेजस्वी सूर्यकेतु राजा का राज्याभिषेक किया। कल्कि भगवान्, वारणावत में यात्रा करते हुए, देवापि को राज्य सौंप कर और उसको अरिस्थल, वृकस्थल, माकन्द, हस्तिनापुर, वारणावत नाम के पाँच राज्यों का अधिपति बनाकर शम्भल ग्राम को गए। इसके बाद भ्रातृवत्सल (अर्थात् भाइयों को प्यार करने वाले) नारायण जी ने कवि, प्राज्ञ और सुमन्त्रक को शौम्भ, पौण्ड्र,

पुलिन्द और मगध देश का राज्य दिया।

इसके बाद जगदीश्वर कल्कि जी ने अपने गोत्र वालों को कीकट, मध्य कर्णाटक, आन्ध्र, उड्र, कलिङ्ग, अंग, बंग इत्यादि समस्त देशों को दिया। इसके उपरान्त कल्कि जी ने स्वयं शम्भल में स्थित रहकर राजा विशाखयूप को कंकक और कपाल देश प्रदान किए। इसके बाद, कल्कि जी ने कृतवर्म आदि पुत्रों को द्वारका के अन्तर्गत स्थित चोल, बर्बर, कर्व आदि देशों का राज्य दिया। तब हरि (श्री कल्कि) भगवान् ने अपने पिता जी को परम भक्ति सहित धन व रत्न भेंट किए, और शम्भलवासियों को धैर्य देकर (संन्तुष्ट कर), गृहस्थाश्रम में रहकर, रमा जी और पद्मा जी के साथ बड़े आनन्द से समय व्यतीत करने लगे। तीनों लोक धर्म के चारों चरण सम्पन्न सत्ययुग से पूर्ण हो गए। देवगण भक्तों को उनके मनोवांछित फल देते हुए सारी पृथ्वी मंडल पर घूमने लगे। सब तरह के अनाजों से पृथ्वी भरपूर हो गई। सभी लोग हृष्ट-पुष्ट हो गए। दुष्टता, चोरी, झूठ बोलना, गंदा व्यवहार, रोग-व्याधि आदि सारे उपद्रव पृथ्वी से दूर हो गए। ब्राह्मण लोग वेदों का पाठ करने लगे। स्त्रियाँ मंगल कार्य और व्रतादि पुण्य कर्म करने लगीं। सर्वत्र पूजा और यज्ञ आदि होने लगे। स्त्रियाँ पतिव्रता हो गईं। क्षत्रिय लोग यज्ञ आदि करने लगे। वैश्य विष्णु पूजा में लगे रहने लगे और धर्मपूर्वक द्रव्य आदि खरीदते व बेचते हुए जीवन-निर्वाह करने लगे। शूद्र ब्राह्मणों की सेवा करने लगे। इस प्रकार सबलोग उपासना करते हुए अपना जीवन-निर्वाह करने लगे।

पन्द्रहवाँ अध्याय

शौनक जी बोले—हे सूत जी! महाराज शशिध्वज माया की स्तुति करके कहाँ गए? हे तत्त्व ज्ञानियों में श्रेष्ठ! माया

की स्तुति कैसी है ? उसका वर्णन कीजिए। माया और विष्णु की कथा में भेद नहीं है, अतएव पापों से छुटकारा पाने के लिए आप उस माया की स्तुति के बारे में बताइए।

सूत जी बोले—हे मुनिवर! महर्षि मार्कण्डेय जी के पूछने पर विशुद्धात्मा शुकदेव जी ने जो अति उत्तम माया स्तव कहा था, मैं उसी स्तुति को स्वयं बताता हूँ। आप उसे सुनिए। मैंने जिस स्तुति को पढ़ा है और सुना है, जिसके सुनने से सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं और सारे पाप तथा ताप (रोग) दूर हो जाते हैं, मैं उसी माया स्तव को बताता हूँ। आप उसे सुनें—विष्णु जी के भक्त राजा शशिध्वज ने भल्लाटनगर को छोड़कर संसार से मुक्ति पाने के लिए माया स्तव का पाठ करना शुरू कर दिया।

शशिध्वज बोले—'हे (ह्रींकारमयी) माया! आप शुद्ध सत्वगुणमयी, विशुद्धा और ब्रह्मा, विष्णु और महादेव की जननी हैं। वेद में आपकी ही महिमा गाई गई है। आपकी ही कोख में प्राणी मात्र और पंचतन्मात्रा रहते हैं। देव, गंधर्व, सिद्धगण और विद्यावान् आपकी वंदना करते हैं। आप सूक्ष्म हैं। स्वाहारूपिणी ह्रीं बीजरूपिणी हैं। मैं आपकी वंदना करता हूँ। आप लोकों से परे हैं, आपके स्वरूप में द्वैत भाव बताया गया है। व्यास आदि महर्षिगण आपकी ही वन्दना करते हैं। विष्णु जी (या विद्वज्जन) भी आपकी स्तुति का गायन करते हैं। आप काल रूपी समुद्र की गर्जना में लहराती हैं। आपकी कुटिल कटाक्ष विलास लीला में संसार के सभी प्राणी संसार चक्र में फँसे रहते हैं। मैं (ऐसी संसार दुर्ग से तारने वाली) आपकी वन्दना करता हूँ। सृष्टि के आरंभ, मध्य और अन्त में आप ही स्थित रहती हैं। आप सभी प्राणियों को आश्रय देती हैं। पूरी तरह अथवा द्वैतभाव दोनों से आपकी उपासना करने पर आपको पाया जा सकता है। आप देवता, तिर्यक और

मनुष्य आदि में अनेक तरह से विभक्त हो रही हैं। आप सारे संसार की आधार हैं। आप ब्रह्मस्वरूपिणी हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आपके प्रभाव से त्रिजगत् पंचभूतात्मिका रूप से प्रकाशमान हो रहा है और आपके प्रकाश के बिना तो काल, दैव, कर्म, उपाधि आदि विधाता द्वारा नियत किया गया कोई भी भाव प्रकट नहीं होता। उसी प्रभा से (आपसे) प्रभावती आपको मैं नमस्कार करता हूँ।

आप आभास रूप में (यानी जिससे हमें उस चेतन शक्ति के होने का भान होता है), भूमि में गंध, जल में रस, तेज में रूप, पवन में स्पर्श और आकाश में शब्द, इस प्रकार अनेक रूपों में विराज रही हैं, इसीलिए संसार में प्रवेश करने के कारण आप विश्वरूपिणी हैं। आपको नमस्कार है। आप ब्रह्मरूपिणी सावित्री हैं। आप भूतेश्वर भगवान् शिव की भवानी हैं। आप ही नारायण की लक्ष्मी हैं, स्वर्ग के राजा इन्द्र की पटरानी इन्द्राणी हैं। हे माया देवी! समस्त जगत् में आप का इसी भाँति होने का भान होता है। आप ही तो महिलाओं के बचपन में बाला, जवानी में युवती और बुढ़ापे में बूढ़ी के रूप में प्रकट होती हैं। आपकी कल्पना काल द्वारा की गई है। आप ज्ञान से भी परे (उस पार, ज्ञानातीत) हैं, यानी ज्ञान से आपको नहीं समझा जा सकता। आप जैसा चाहें वैसा रूप धारण करती हैं और अनेक प्रकार की मूर्तियाँ धारण करके प्रकाशमान हो रही हैं। आपकी उपासना यज्ञ और योग से की जाती है। मैं आपकी वन्दना करता हूँ।

आप वरण करने के योग्य हैं। अपनी उपासना करने वालों को वर और मनोवांछित फल देती हैं। आप साध्वी हैं, धन्या (धन्यवाद के योग्य) हैं। लोग आपका सम्मान करते हैं। आप ही श्रेष्ठ कन्या हैं (और) चण्डी, दुर्गा, कालिका आदि नाम धारण कर समय के अनुसार अनेक रूप और वेश

धारण कर अनेक प्रदेशों में प्रकट होती हैं। हे संसार की आदि देवी, यदि कोई अपने हृदय कमल में देवताओं आदि द्वारा पूजे गए आपके चरणों का ध्यान करे, भक्तिपूर्वक अपने मन में आपकी भावना रखे और अपने कानों से आपका नाम सुनें तो उसे धर्म-सम्पत्ति प्राप्त होगी और वह सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है। इस पवित्र माया स्तव को शुकदेव जी ने कहा था। महर्षि मार्कण्डेय जी से इस मायास्तव को पाकर राजा शशिध्वज ने इसी स्तव से सिद्धि प्राप्त की। वन के बीच में स्थित कोकामुख नामक स्थान में तपस्या करके भगवान् नारायण का ध्यान करते हुए राजा शशिध्वज सुदर्शन चक्र से मारे गए और इस प्रकार वैकुण्ठ धाम को चले गए।

सोलहवाँ अध्याय

सूत जी बोले—हे ब्राह्मणो! मैंने आपको राजा शशिध्वज के मोक्ष प्राप्त करने की कथा बताई। हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ!

भगवान कल्कि, पद्मा जी और रमा जी

अब पुनः कल्कि जी का अद्भुत वृत्तान्त सुनाता हूँ। आप सुनिए। जब कल्कि जी राज सिंहासन पर बैठे, (तब) वेद, धर्म, सत्ययुग, देवतागण, स्थिर और चलायमान (पेड़-पौधे, पत्थर आदि न चलने वाले यानी स्थावर हैं और जीव-जन्तु जंगम यानी चलने-फिरने वाले हैं) सभी हृष्ट-पुष्ट और सन्तुष्ट हुए। पहले समय में पुजारी लोग अनेक भूषणों से देवमूर्तियों को सजाकर इन्द्रजाल (जादूगरी) की भाँति काम करते थे। इस समय सज्जनों को माया मोह से ठगने वाले लोग पाखण्ड नहीं करते। कल्कि जी के राजा होने पर सभी लोग पूरे शरीर में तिलक धारण करने लगे। इस प्रकार कल्कि जी अपनी (पत्नियों) पद्मा जी और रमा जी के साथ शम्भल ग्राम में रहने लगे। एक बार कल्कि जी के पिता विष्णुयश ने अपने पुत्र से संसार की भलाई करने वाले देवताओं के लिए यज्ञ करने को कहा।

पिता जी के वचन सुनकर, बहुत प्रसन्न होकर नम्रता से झुककर कल्कि जी बोले—'मैं धर्म, काम और अर्थ की प्राप्ति के लिए कर्मकाण्ड के अन्तर्गत राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध और अनेक दूसरे यज्ञों का अनुष्ठान (विधिपूर्वक धार्मिक काम) करके यज्ञों के स्वामी श्रीहरि की पूजा करूँगा।' इसके बाद कल्कि जी ने कृपाचार्य, परशुराम, वशिष्ठ, व्यास, धौम्य, अकृतव्रण, अश्वत्थामा, मधुच्छन्द और मन्दपाल आदि महर्षियों एवं वेदों के प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मणों (को आमन्त्रित कर उन) की पूजा की। फिर गंगा और यमुना के मध्य यज्ञ में दीक्षा ली (तथा स्नान किया) और सबको दक्षिणा दी। इसके बाद उन्होंने ब्राह्मणों को तरह-तरह के चर्व्य (चबाने योग्य), चोष्य (चूसने योग्य), लेह्य (चाटने योग्य), पेय (पीने योग्य) पूय, शष्कुलि, यावक, मधु, फल, मूल और अन्य प्रकार के भोज्य-पदार्थों

का विधि-पूर्वक भोजन कराया। यज्ञ सब तरह भली-भाँति पूरा हुआ। अग्नि ने भोजन पकाया, वरुण ने जल दिया, पवन परोसने लगा। कमल के समान नेत्र वाले कल्कि जी ने इस प्रकार उत्तम अन्नादि, भोजन, नाच-गाने व बजाने के उत्सवों का आयोजन कर सबको आनन्द दिया। उन्होंने बालक से लेकर वृद्ध, स्त्री आदि सभी को यथोचित (जिसके लिए जैसा उचित है) धन भी दिया। रंभा, अप्सरा नाचने लगीं। नन्दी ताल बजाने लगे। हूहू नाम के गन्धर्व ने गाना शुरू किया। संसार के स्वामी कल्कि जी ब्राह्मण और सत्पात्रों के धन बाँटकर पिता जी की आज्ञा से गंगा के किनारे रहने लगे। विष्णुयश की सभा में पण्डितगण पहले के (पुरातन) राजाओं की सुन्दर कथाएँ कह रहे थे। सभी आनन्द में मग्न थे। उसी समय देवताओं द्वारा पूजित देवर्षि नारद जी तथा तुम्बरु महाराज वहाँ पहुँचे। महायशस्वी विष्णुयश जी ने प्रसन्न होकर उन दोनों महर्षियों की विधिपूर्वक पूजा की। उन दोनों महर्षियों की पूजा करने के बाद विनयपूर्वक विष्णुयश जी ने वीणा-पाणि (जिनके पाणि अर्थात् हाथ में वीणा रहती है) महामुनि नारद जी से प्रेमपूर्वक पूछा।

श्री विष्णुयश ने कहा—'हमारा कैसा सौभाग्य है! सैकड़ों जन्मों का इकट्ठा पुण्य कैसा अद्भुत है कि इसके प्रभाव से हमारी मुक्ति के लिए आप परम पूर्ण पुरुषों के दर्शन प्राप्त हुए हैं। आज आपके दर्शन तथा पूजन से हमारे पितृगण यानी पूर्वज संतुष्ट हुए। हमारी यज्ञ में दी गई आहुति सफल हुई। देवतागण सन्तुष्ट हुए। जिसकी पूजा करने से विष्णु जी पूजित होते हैं, उनका दर्शन करने से फिर जन्म नहीं होता। उनके स्पर्श से पापों के समूह का नाश होता है। ऐसे साधुओं का मिलाप कितना अद्भुत है! साधुओं का हृदय ही धर्म है, सज्जनों के वाक्य ही सदा रहने वाले (देवता) सनातन

देव हैं। सज्जनों के कर्मों से कर्मों का क्षय होता है, अतएव साधु ही स्वयं नारायण जी की मूर्ति (साक्षात् हरि) हैं। दुष्टों को दण्ड देने के लिए कृष्णावतार के रूप में श्री कृष्ण का नित्य शरीर जिस प्रकार सांसारिक नहीं है, उसी प्रकार इन तीनों लोकों में वैष्णव शरीर भी पञ्चभूत से बना हुआ मालूम नहीं पड़ता। हे ब्रह्मन्! आप इस मायामय संसार-सागर में लोगों को विष्णुभक्ति रूपी नाव द्वारा पार लगाने वाले हैं। इसलिए मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ। हे संसार के बन्धु, मैं कौन-सा काम करके इस संसार रूपी दुःख के घर (यातनागार) से छुटकारा पाकर उत्तम साधन और मोक्षपद पा सकूँगा ? कृपया आप बताइए।'

नारद जी बोले—'माया कैसी आश्चर्यमयी शोभा वाली है! कैसी बलवती है! सभी प्राणियों को कैसे अचम्भे में डाल देती है! कैसे अचरज की बात है कि भगवान् विष्णु अपने पिता और माता को इस माया-ममता से नहीं छुटा पाते! सदा रहने वाले जगत्पति भगवान् साक्षात् नारायण श्री कल्कि जी जिनके पुत्र हैं, वे विष्णुयश मुझसे मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करते हैं।' ब्रह्मा जी के पुत्र नारद जी ने यह सोच विचारकर निर्जन में ब्रह्मज्ञान देने को ब्रह्मयश के पुत्र विष्णुयश से यह ज्ञान (वाक्य) कहा।

नारद जी बोले—'देह के भस्म होने पर जीवात्मा ने बार-बार देह धारण करने की इच्छा प्रकट की। उस समय माया ने जो कुछ कहा था, सो मैं बताता हूँ, उसे सुनिए। इस (ज्ञान की बात) के सुनने से मोक्ष प्राप्त होता है।

(भगवती) माया ने अपनी इच्छा के अनुसार विन्ध्याचल पर्वत पर स्त्री रूप धारण किया और तब बोली—'मैं माया हूँ। (जब) मैंने तुमको (जीव) को छोड़ दिया है, तुम किस प्रकार (क्यों) जीवन धारण करने की इच्छा करते हो ?'

जीव बोला—'हे माये, मैं जीवित नहीं रहूँगा (जीवन की इच्छा नहीं करता)। शरीर ही तो जीवात्मा का सहारा है। 'मैं हूँ' ऐसा अनुभव करना अभिमान है, इस अभिमान के भेद-ज्ञान के बिना कैसे देह धारण की जा सकती है?'

माया बोली—'देह धारण करने पर जो भेद ज्ञान होता है, वह तुम्हें हो रहा है। ऐसा क्यों है? चेष्टा अथवा इच्छा करना माया के अधीन है। अब माया के बिना तुम्हारी चेष्टा कैसे हो रही है?'

जीव ने कहा—'हे माया, मेरे बिना तुम्हारी प्राज्ञता (ज्ञान) प्रकट नहीं हो सकती और न विषयों में इच्छा हो सकती है।'

माया बोली—'माया के कारण ही जीवात्मा जीवन धारण करता है। माया के बिना जीव वैसा ही सारहीन मालूम पड़ता है, जैसे हाथी कपित्थ फल (कैंत का फल) खाने के बाद उस फल को रसहीन बनाकर छोड़ देता है।'

जीव बोला—'हे मूर्ख माया! तुमने हमारे संसर्ग से पैदा होकर कई नाम और रूप धारण किए हैं। जैसे व्यभिचारिणी स्त्री स्वामी की निन्दा करती है, वैसे ही तुम किस कारण से हमारी निन्दा करती हो? जैसे सूर्य के उदय होने पर अँधेरा नहीं रह पाता, वैसे ही हमारे अभाव से यानी जीवात्मा के अभाव से तुम्हारा भी अभाव होता है। जैसे सूरज को ढक कर नया बादल प्रकाश वाला होता है, वैसे ही तुम भी हमको ढककर शोभायमान होती हो। हे माये, तुम लीला वाली बीज की भूसी हो। तुम में अनेकता है। इस अनेकता के कारण तुम जादू के खेल की तरह शोभा पा रही हो, जबकि तुम संसार के आदि में, अन्त में, मध्य में, कहीं भी हो ही नहीं।'

जब माया ने इस प्रकार शरीर को विषयों, मानसिक कार्यों और अभौतिक (संसार की वस्तुओं से रहित) और

जीव-रहित देखा तो उसने उस शरीर को छोड़ दिया। माया ने मुझे छोड़कर इस तरह यह शाप दिया—'हे अप्रिय, तू लकड़ी की दीवार की तरह अत्यन्त चेष्टाहीन होगा। इस पृथ्वी में कभी भी किसी भी रूप में तेरा निवास नहीं होगा।

(नारद जी विष्णुयश से बोले) 'हे देव, आपके ही पुत्र विश्वरूप, परम देवता, कल्कि जी से माया पैदा हुई है। आप माया का रहस्य समझिए और नारायण जी का ध्यान करते हुए अपनी इच्छा के अनुसार पृथ्वी पर (जहाँ चाहिए) घूमिए। जब आप आशा, ममत्व (यह मेरा है) को छोड़ देंगे, सारे विषय भोगों की इच्छा को छोड़ देंगे, शान्त हो जाएँगे, (उस अवस्था में पहुँच कर) आप जान सकेंगे कि यह संसार भगवान् विष्णु के विराट् (महान्) प्रभाव में रह रहा है और भगवान् विष्णु इस प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले संसार में व्याप्त हैं। इस प्रकार का ज्ञान प्रकट हो जाने पर जीवात्मा को परमात्मा से जोड़कर सभी इच्छाओं से अलग हो जाना उपयुक्त है।'

इस प्रकार दोनों महर्षि, विष्णुयश से बातचीत कर और कल्कि जी की प्रदक्षिणा करके, कपिल मुनि के आश्रम के लिए प्रस्थान कर गए। नारद मुनि से विष्णुयश ने यह सुनकर कि कल्कि जी, जो कि संसार के नाथ और नारायण हैं, मेरे पुत्र हैं, वन को प्रस्थान किया। विष्णुयश जी ने फिर बदरिकाश्रम जाकर घोर तपस्या करके अपनी आत्मा को परम ब्रह्म परमेश्वर में लीन कर दिया और अपने पंचभूत (अग्नि, वायु, आकाश, जल, पृथ्वी) से बने शरीर को त्याग दिया। अपने पति के प्रेम में व्याकुल होकर साध्वी सुमति ने अच्छे वेश के साथ अपने मरे हुए पति को अपने हृदय से लगाकर अग्नि में प्रवेश किया। श्रेष्ठ वस्त्र धारण कर देवताओं ने उनकी स्तुति की। मुनियों के मुख से माता-पिता के स्वर्गवास का समाचार सुनकर कल्कि जी की आँखें स्नेहासिक्त आँसुओं

से भर गईं। उन्होंने उनके श्राद्धादि कर्म किए। लोकाचार और वेदाचार पालन करने वाले धर्मात्मा कल्कि जी देवताओं द्वारा पूजित शंभल ग्राम में रमा जी और पद्‌मा जी के साथ राज्य का कार्य सँभालने लगे। तीर्थों को पवित्र करने वाले परशुराम जी महेन्द्र पर्वत शिखर से उतर कर तीर्थों में भ्रमण करते हुए कल्कि जी के दर्शन करने के लिए शंभल ग्राम गए। परशुराम जी को देखकर विधि-विधान को जानने वाले कल्कि जी ने पद्‌मा जी और रमा जी सहित सिंहासन से उठकर प्रसन्नतापूर्वक उनकी पूजा की। श्री कल्कि जी ने परशुराम जी को उत्तम गुण वाले अनेक रसीले भोज्य-पदार्थों से भोजन कराकर अमूल्य वस्त्र वाले विचित्र पलंग पर सुलाया। जब गुरु परशुराम जी भोजन कर आराम कर रहे थे, कल्कि जी उनके (अपने गुरु के) चरण दबाते हुए उन्हें सन्तुष्ट कर (उनसे) नम्रतापूर्वक मीठे वचन बोले—'हे गुरु देव, आपके आशीर्वाद से हमारे तीनों वर्ग—धर्म, अर्थ और काम सिद्ध हो गए हैं, अर्थात् हमें तीनों की प्राप्ति हो गई है। हे भगवन्, इस समय शशिध्वज की पुत्री रमा का एक निवेदन है। उसे सुन लीजिए।'

पति के ये वचन सुनकर रमा जी ने प्रसन्नचित्त हो परशुराम जी से पूछा—'किस प्रकार के व्रत, जप, यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, नियम) शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर (प्राणिधान) का पालन करने से मैं अपनी इच्छानुसार पुत्र प्राप्त कर सकती हूँ ?'

सत्रहवाँ अध्याय

सूत जी बोले—'रमा जी की पुत्र प्राप्त करने की इच्छा को सुनकर और कल्कि जी के अभिप्राय को जानकर, परशुराम जी ने रमा जी को रुक्मिणी-व्रत रखने के लिए बताया। रुक्मिणी-व्रत रखने से सती रमा पुत्रवती, सौभाग्यवती, सर्व

भोगों से युक्त और सदा युवती बनी रहने वाली हो गई।'

शौनक जी बोले—'हे सूत जी, इस रुक्मिणी-व्रत की क्या विधि है? इसका कैसा फल होता है? किसने इस परम उत्तम व्रत को किया था? इन सबका आप वर्णन कीजिए।'

सूत जी बोले—हे ब्राह्मण, मैं बताता हूँ, आप सुनिए। वृषपर्व नाम के दानवराज की एक शर्मिष्ठा नाम की कन्या थी। एक समय वह सरोवर के जल में घुसकर जल-विहार कर रही थी। उसी समय उसने पार्वती जी सहित भगवान् महादेव को वहाँ देखा। शर्मिष्ठा अपनी सहेलियों से घिरी देवयानी के साथ थी। वे उनको (महादेव और पार्वती को) देखकर डर गईं। सरोवर से तुरन्त उठकर अर्थात् निकलकर वे किनारे पर आकर अपने-अपने कपड़े पहनने लगीं। उस समय जल्दी और विह्वलता के कारण शुक्राचार्य (असुरों के गुरु) की पुत्री देवयानी ने अपने कपड़ों के धोखे में (भूल से) शर्मिष्ठा के कपड़ों को (अपने कपड़े समझते हुए) पहन

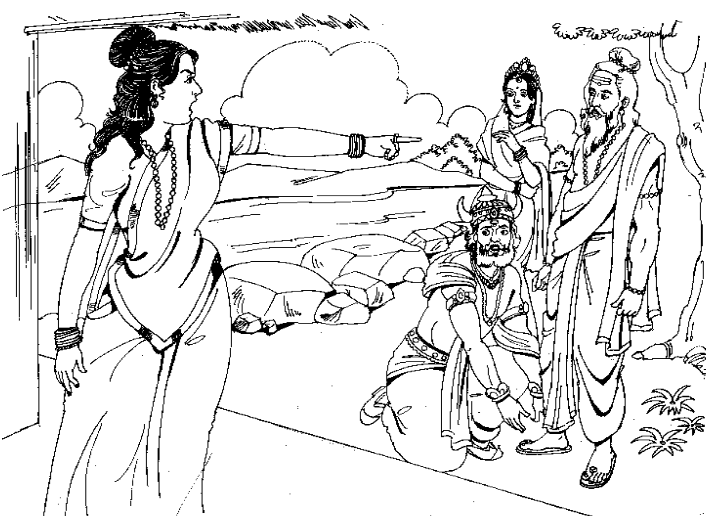

क्रोधित देवयानी

लिया। कपड़ों को बदला हुआ देखकर शर्मिष्ठा नाराज़ होकर बोली—हे भिक्षुकि (देवयानी), (भिक्षुकि अर्थात् ब्राह्मण होने के नाते भिखारिन) मेरे कपड़ों को उतार दे। इसके बाद दानव पुत्री शर्मिष्ठा दासियों से घिरी हुई देवयानी को कपड़ों से बाँध कर एक कुएँ में फेंककर अपने घर को दासियों सहित चली गई। (उसी समय) पानी पीने की इच्छा से ययाति ने, जो कि नहुष के पुत्र थे, वहाँ पहुँचकर कुएँ में गिरी हुई और रोती हुई देवयानी को हाथ से पकड़ कर कुएँ से निकाला और उठाकर पूछा—हे सुन्दरी, तुम कौन हो ?

शुक्राचार्य की उस पुत्री ने, लज्जा और भय से राजा की ओर देखते हुए शीघ्रतापूर्वक अपने कपड़े पहन कर शर्मिष्ठा ने जो कुछ किया था, वह सब कह सुनाया। (महाराजा) ययाति ने उस कन्या का अभिप्राय समझकर, उससे विवाह की इच्छा प्रकट की। उसके साथ कुछ दूर चलकर, उसे भली-भाँति आश्वासन देकर, अपने घर चले गए। (इधर) उस (देवयानी) ने घर पहुँचकर अपने पिता शुक्राचार्य से शर्मिष्ठा की सारी करतूत (बात) कही। इसे सुनकर वे क्रोधित हुए। (तब) वृषपर्व (दैत्यों के राजा) ने (उनके पास जाकर) उनको समझाया—'हे विभो! यदि आपको मुझ पर क्रोध आया है और मैं दंड के योग्य हूँ तो आप मुझे दण्ड दीजिए और (यदि) आप बुरा (अपकार) करने वाली शर्मिष्ठा पर नाराज़ हैं तो आप अपनी इच्छानुसार उसे दंड दें।' अपने पिता शुक्राचार्य के चरणों में दैत्यराज को (इस तरह) गिरे हुए देखकर देवयानी ने क्रोधित होकर कहा—'आपकी यह कन्या मेरी दासी बने।' फिर ज्ञानवान् राजा (वृषपर्व) ने भाग्य को अत्यन्त बलवान् समझकर शर्मिष्ठा को लाकर देवयानी की दासी बना दिया और अपने घर चले गए। इसके बाद शुक्राचार्य ने राजा ययाति को बुलाकर प्रतिलोम विवाह (जब नीच

जाति की कन्या का उच्च जाति वाले व्यक्ति से विवाह हो तो उस विवाह को प्रतिलोम विवाह कहते हैं) के अनुसार विधिपूर्वक देवयानी का कन्यादान कर दिया। देवयानी के साथ उसकी दासी शर्मिष्ठा भी प्रदान कर दी गई। राजकुमारी शर्मिष्ठा को देते समय शुक्राचार्य ने राजा (ययाति) से कहा— 'यदि तुम इस कन्या को अपने शयनागार में बुलाओगे तो तुम उसी समय बूढ़े हो जाओगे।' शुक्राचार्य के इस वचन को सुनकर राजा ययाति ने डर के कारण देवयानी की दासी अत्यन्त सुन्दरी शर्मिष्ठा को ऐसे स्थान पर रखा, जहाँ वह (ययाति) उसे न देख सके। वह राजकुमारी शर्मिष्ठा दुःख, शोक और डर से व्याकुल होकर नित्य सौ दासियों के साथ देवयानी की सेवा करने लगी।

एक समय जंगल में गई हुई गंगा के तट पर बैठी शर्मिष्ठा रो रही थी। तभी स्त्रियों से घिरे हुए महर्षि विश्वामित्र को उस (शर्मिष्ठा) ने देखा। ऋषि विश्वामित्र स्वयं व्रतधारी थे। सुगंधित द्रव्यों से सुवासित थे। पवित्र गंध वाली, सुन्दर रूप वाली स्त्रियाँ उनके चारों ओर बैठी थीं। धूप, दीप, माला और अनेक प्रकार की भेंटों के द्वारा ऋषि उन स्त्रियों से व्रत करवा रहे थे। विश्वामित्र ऋषि ने वेदी के ऊपर आठ दलों वाला कमल का फूल बनाया था। वेदी के चारों कोनों पर केले के चार पेड़ खड़े किए। कपड़ों से बनाए गए उस मण्डप के भीतर सोने की बनी चौकी पर मणियों से जड़ी हुई और सुन्दर गढ़ी गई भगवान् वासुदेव जी की मूर्ति (प्रतिष्ठित) शोभायमान थी। पुरुष सूक्त (ऋग्वेद का एक अंश) पढ़कर अनेक, शुभ, सुन्दर गंध वाले जल, पंचामृत, पंचगव्य (आदि सिद्धि किया) और ब्राह्मणों द्वारा पाठ किए गए मंत्र से भद्रपीठ में स्थित कर्णिका (वेदी) के ऊपर श्री वासुदेव की मूर्ति को स्थापित करके सोलह, पन्द्रह या दस (या पाँच, दस या

सोलह) विधियों से पूजा की—'हे परमेश्वर, आपकी रास्ते की थकावट (श्रम) को दूर करने के लिए यह अत्यन्त आनन्द देने वाला शीतल और सुन्दर पाद्य निवेदित है।' इसको ग्रहण कीजिए। हे रुक्मिणी के स्वामी अर्थात् नारायण, हे वासुदेव, इस दूब वाले चन्दन युक्त अर्ध्य को यत्न से तैयार किया गया है। हे प्रभो, आप प्रसन्न होकर इसको ग्रहण कीजिए। हे कमला के स्वामी (श्री निवास), अनेक तीर्थों का पवित्र जल इकट्ठा किया गया है। आप लक्ष्मी जी के साथ आचमन के योग्य इस मनोहर सुगंधित जल को ग्रहण कीजिए। हे देवताओं के स्वामी, अनेक प्रकार के सुगंधित फूलों से माला गूँथी गई है। यह माला आपके वक्ष स्थल की शोभा बढ़ाएगी। हे देव, इस शोभायमान माला को आप ग्रहण कीजिए। हे हरे, आपको कोई नहीं आवृत्त कर (ढक) सकता। फिर भी आप अपनी प्रिय लक्ष्मी के साथ सूत से बने हुए इस शुद्ध वस्त्र को स्वीकार कीजिए। हे देव, ब्रह्मा जी ने इस यज्ञ-सूत्र को बनाया है। आप और आपकी पत्नी रुक्मिणी और रमा जी इस यज्ञोपवीत (जनेऊ) को ग्रहण करें। हे देवताओं के स्वामी, इस मोतियों से जड़े हुए सोने से बनाए गए रत्नों से युक्त गहने को अपनी प्रिया के साथ ग्रहण कीजिए। हे रुक्मिणी के स्वामी, दही, दूध, गुड़, अन्न, पुआ, लड्डू तथा खांड आदि स्वीकार करके मुझ अनाथ को सनाथ बना दीजिए। हे वर देने वाले प्रभो, अत्यन्त आनन्द देने वाले कपूर और अगर की सुन्दर गंध वाली इस धूप को रुक्मिणी जी के साथ स्वीकार कीजिए। हे भगवान्, आप संसार के भोग-विलास में डूबे भक्तों के संसार के अँधेरे को दूर करने वाले हैं। आप पूरे संसार को आदर सहित प्रकाशित कर रहे हैं। इस दीपक पर भी अपनी दृष्टि डालिए। हे श्यामसुन्दर, हे कमल जैसे सुन्दर आँखों वाले, हे पीले कपड़े पहनने वाले, हे चार भुजाओं

वाले, हे देवताओं के स्वामी, हे अच्युत, आप भगवती रुक्मिणी देवी सहित हम पर प्रसन्न होवें तथा हमारी रक्षा करें।'

उनके अर्थात् उन स्त्रियों के इस व्रत को देखकर बहुत दुःखी हुई शर्मिष्ठा महर्षि को प्रणाम कर, हाथ जोड़कर मीठे वचन बोली—

'हे देवियो, मैं अत्यन्त अभागिनी हूँ। मैं राजा की पुत्री थी। (भाग्य के दोष से) मुझे स्वामी ने छोड़ दिया। इस व्रत का अनुष्ठान कैसे होता है, आप सब उपदेश देकर मेरी रक्षा करें।'

शर्मिष्ठा के ये वचन सुनकर स्त्रियों ने दया के वशीभूत होकर थोड़ी-सी पूजा की सामग्री उसे देकर आदरपूर्वक उससे यह व्रत कराया। उस शर्मिष्ठा ने व्रत करके अपने प्रिय पति को पा लिया, वह पुत्रवती हो गई, उसका यौवन हमेशा बना रहा और वह संतुष्ट हो गई। भगवती सीता ने सरमा (विभीषण की पत्नी) के साथ अशोक वन में इस व्रत को किया था। उसी व्रत के पुण्य फल से फिर सीता जी राक्षसों के नाश करने वाले भगवान् राम से मिलीं। बृहदश्व की प्रेरणा (कृपा) से द्रौपदी महारानी ने इस व्रत को कर पति को प्राप्त किया और दुःखों से छूट गई और उनका यौवन हमेशा के लिए बना रहा।

रमा जी ने वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष में द्वादशी के दिन परशुराम जी के निर्देशन में (को पुरोहित बनाकर) रुक्मिणी व्रत रखना शुरू किया। चार साल बीत जाने पर रमा जी का यह रुक्मिणी व्रत पूरा हो गया। रमा जी ने हाथ में रेशम का सूत बाँध कर बहुत-से ब्राह्मणों को भोजन कराया। इसके बाद उत्तम प्रकार से बने हुए खीर वाले यज्ञ के बचे स्वादिष्ट भोजन को अपने स्वामी के साथ ग्रहण किया और अपने परिजनों के साथ सम्पूर्ण पृथ्वी को भोगने लगी। इसके

बाद पतिव्रता रमा के दो लड़के पैदा हुए। एक का नाम मेघमाल और दूसरे का वलाहक था। ये दोनों पुत्र देवताओं का उपकार करने वाले, यज्ञ-दान-तप-व्रत करने वाले, अत्यन्त उत्साह वाले, वीर, (सुन्दर), भाग्यवान् (और कल्कि जी की आज्ञा में चलने वाले) थे। इनसे कल्कि जी बहुत प्रसन्न थे।

जो लोग इस व्रत का अनुष्ठान करते हैं, वे सब तरह की सम्पत्ति, समृद्धि (धन, धान्य, सम्पन्नता) प्राप्त करते हैं। उनको सब प्रकार के मनोवांछित फल मिलते हैं। उन्हें ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। भगवान् के चरण-कमल में वे पूरे मन से भक्ति करते हैं। महर्षियों जैसी अगम्य (जिस तक पहुँचा न जाए), अपूर्व, अद्‌भुत एवं श्रेष्ठ गति को प्राप्त करते हैं।

अठारहवाँ अध्याय

सूत जी बोले—हे ब्राह्मणो, मैंने आप लोगों को तीनों लोकों में प्रसिद्ध रुक्मिणी व्रत के बारे में बताया। इसके बाद कल्कि जी ने जो काम किए, मैं उनको बताता हूँ। आप उन्हें सुनिए—

इस प्रकार कल्कि जी ने भाई, पुत्र, बान्धव, सगे-संबंधियों सहित एक हज़ार साल तक शम्भल ग्राम में निवास किया। (उस समय) शम्भल नगरी ध्वजाओं, पताकाओं (छोटी-छोटी झंडियों) से सजी रहती थी और चित्रों और भव्य प्रांगणों तथा चौराहों की शोभा से इन्द्र की अमरावती नगरी के समान सुन्दर मालूम होती थी। इस शम्भल ग्राम में अड़सठ तीर्थ बसते थे। कलंकरहित कल्कि जी के प्रभाव से शम्भल ग्राम में मृत्यु हो जाने से मोक्ष की प्राप्ति होती थी। वन, बागीचे आदि के फैलाव तथा तरह-तरह के फूलों के समूहों से शोभित यह शम्भल नगरी इस संसार में मोक्ष देने वाली मानी जाने लगी थी। उस नगरी में (निवास करते हुए)

वहाँ की नारियों के नेत्रों को आनन्द देने वाले, संसार के स्वामी कल्कि जी पद्‌मा जी और रमा जी के साथ इच्छानुसार विहार करने लगे। अत्यन्त प्रसन्न होकर कल्कि जी देवताओं के राजा इन्द्र द्वारा दिए गए इच्छानुसार चलने वाले रथ पर बैठ कर नदियों, पहाड़ों, झाड़ियों और द्वीपों में रमा जी तथा पद्‌मा जी और अन्य कामिनियों (सुन्दर स्त्रियों) के साथ विहार करने लगे। कामासक्त, स्त्रियों के वशीभूत श्री कल्कि को दिन और रात का ज्ञान ही नहीं रहा। एक समय कल्कि जी ने, जो कि पद्‌मा जी के कमल जैसे मुख की मीठी गन्ध का भोग करने वाले हैं, एक पहाड़ी गुफा में प्रवेश किया। वह गुफा नीलेन्द्र मणियों से जगमगा रही थी। (उनके पीछे) स्वर्ण कमल जैसे सुहाने रंग वाली पद्‌मा जी और अमृत के पात्र जैसे सुन्दर रूप वाली रमा जी (दोनों) ने एक हज़ार नारियों के साथ उस गुफा में प्रवेश किया। सुन्दरी पद्‌मा जी अपने पतिदेव को गुफा में घुसते हुए देखकर विहार करने की इच्छा से उनके पीछे पीछे गुफा में घुस गई। कल्कि जी के साथ अधिक विहार करने की इच्छा से रमा जी ने भी स्त्रियों के साथ-साथ उनके पीछे प्रवेश किया। पद्‌मावती ने अन्दर घुसकर देखा कि नीलेन्द्र मणियों से जगमगाती गुफा के बीच नए बादल के समान चमक धारण किए हुए भगवान् कल्कि जी अपने ही समान सुन्दर रूपवाली स्त्रियों के बीच में शोभा पा रहे हैं। यह अचरज देख पद्‌मा जी मोह से बेहोश हो गई और निश्चेष्ट पत्थर की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ी। सखियों के साथ रमा जी भी उस दृश्य को देखकर दुःखी हृदय और व्याकुल होकर चारों ओर देखने लगी। (दूसरी पत्नी) पद्‌मा जी तो शतदल कमल के समान शोभायमान (या शत पद्‌माओं के समान रूपवाली) नारियों को देखकर शोकपूर्ण और दुःखी हृदय हो एक ही बार में अपनी चमक खो बैठी थी। पद्‌मा जी

की आँखों में लगा काजल बहकर भूमि पर गिरने लगा। वह अपने स्तनों में लगे कुंकुम से कल्कि जी व शुक को तथा पास की भूमि को कस्तूरी से मैला कर उस पर गिर पड़ी। मीठे वचन बोलने वाली, कामदेव द्वारा सताई गई दुःखी रमा जी ने हृदय में कल्कि जी का ध्यान किया और मन-ही-मन हृदय-पुष्पों (फूलों) से उनकी पूजा की और फिर दुःख से व्याकुल व शोकमग्न होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

थोड़ी देर बाद उठकर रमा जी ने ज़ोर-ज़ोर से (मोर के समान) रोना शुरू किया। अपने हृदय को कल्कि जी के आलिंगन से रहित पाकर कामदेव से सताई हुई वह कहने लगी—'हे देव, प्रसन्न हो।'

(दूसरी रानी) पद्मा जी भी अपने अंग के श्रृंगार की वस्तुओं को छोड़कर धूल में लोटने लगी। उनके कस्तूरी युक्त नीलवर्ण गले से ऐसा मालूम होने लगा, मानों उसने कामदेव का नाश करने के लिए भगवान् शिव का रूप धारण कर लिया है। कातर नेत्रों वाली और विलास की इच्छा करने वाली प्रियाओं की कामवासना को पूरा करने एवं सुरति उत्सव मनाने के लिए, आर्तजनों के बन्धु भगवान् कल्कि जी उनके बीच में प्रकट हो गए। वे स्त्रियाँ अत्यन्त प्रसन्न होकर आनन्दपूर्ण हृदय से कल्कि जी के पास वैसे ही आईं, जैसे हथिनियाँ समूह के स्वामी हाथी के पास जाती हैं। उनका विषाद (दुःख) दूर हो गया (और) वन में उनकी मनोकामना पूरी हो गई। उदार चरित्र वाले, अत्यन्त तेजस्वी कल्कि जी आकाश में उड़ने वाले, प्रकाश वाले प्रभावशाली रथ पर पद्मा जी, रमा जी आदि नारियों के साथ आरूढ़ होकर, फूलों से परिपूर्ण वैभ्राजक, चैत्ररथ तथा नन्दन कानन में जाकर विहार (आमोद-प्रमोद) करने लगे।

पद्मा जी के कमल के समान सुन्दर मुख का मधुर पान

करके, रमा जी के आलिंगन की इच्छा को उत्सुक, कल्कि जी को उन स्त्रियों के स्तनों में लगे कुंकुम ने सान दिया और वे विपरीत रतिप्रसंग में मस्त हो गए। (विपरीत रतिप्रसंग में स्त्री की कामुकता प्रधान होती है।) स्त्रियाँ उनके मुख को काटने लगीं। वे अपनी प्रियतमाओं के ओठों का पान करके इतने बेचैन हो गए कि शरीर उनके बस में न रहा। रमा जी के समान सुन्दरी धीर स्त्रियों ने पुरुषोत्तम मुकुन्द अर्थात् कल्कि जी को अपने स्तनों से सटा कर उनसे विहार करना शुरू किया। आलिंगनबद्ध पुलकित शरीर से वे सब हँसने लगीं। कामवासना के श्रम से थकी हुई स्त्रियाँ दूसरे वन में विहार करने वाले प्रिय कल्कि जी के साथ जल्दी ही तालाब के किनारे पहुँचीं। जिस प्रकार हथिनियाँ समूह के स्वामी हाथी पर पानी छिड़कती हैं, वैसे ही वे श्रेष्ठ स्त्रियाँ अद्भुत सुन्दरी पद्मा जी के साथ सरोवर में स्नान कर कल्कि जी के शरीर पर जल की वर्षा करने लगीं।

जो श्री कल्कि युवतियों के साथ लीला करने में निपुण हैं, जो प्रिय रमा जी और दूसरी स्त्रियों के साथ अपने विहार आदि विनोद के द्वारा सभी लोगों को उपदेश देने वाले हैं, जो सब देवताओं के स्वामी हैं, संसार के स्वामी हैं, उन शम्भल ग्राम के निवासी की जय हो। जो विचारों में चतुर सन्त यानी सज्जन कानों को अमृत-सा लगने वाला पुरुषोत्तम श्री कल्कि जी का चरित्र आदर सहित सुनते हैं, बोलते हैं, यानी उसका कीर्तन करते हैं और उसका ध्यान करते हैं, उनके हृदय में मुरारि भगवान् की सेवा के दास्य भाव के अतिरिक्त और किसी का प्रेम नहीं पनपता और न कोई दूसरे सुख का ही उदय होता है। उनको ऐसा अनुभव होता है, मानों संसार से मोक्ष के परम प्रिय अमृतमय सुख के अलावा और कोई दूसरा सुख नहीं है।

भगवान कल्कि का दरबार

उन्नीसवाँ अध्याय

सूत जी बोले—इसके बाद समस्त देवता और ब्रह्मा संयुक्त होकर सभी लोग मिलकर अपने-अपने गणों सहित रथों पर बैठकर कल्कि जी के दर्शन करने के लिए आए। महर्षि, गन्धर्व, किन्नर तथा अप्सरा सहित सभी प्रसन्न होकर देवताओं द्वारा पूजित शम्भलग्राम पहुँचे। वहाँ सभा के बीच

में जाकर उन सबने देखा कि तेज से सम्पन्न, कमल जैसे नेत्रों वाले कल्कि जी शरण में आए हुए लोगों के अभयदाता के रूप में विराजमान हैं। (जब कोई शरण में आए व्यक्ति को सभी डरों से छुटकारा दिलाता है तो उसे अभयदान कहा जाता है।) कल्कि जी की कान्ति (चेहरे पर चमक) नीले बादल के समान है। उनकी भुजाएँ लम्बी-लम्बी और सुपुष्ट हैं। उनके मस्तक पर जो मुकुट है, वह बिजली तथा सूर्य के समान प्रभा तेजोमय है। सूर्य के समान प्रकाश वाले कुंडलों से उनका मुखमंडल शोभा पा रहा है। हर्षालाप से (प्रसन्न करने वाली बातों से) उनका मुख रूपी कमल खिल रहा है और मीठी मुस्कान से वे शोभायमान हैं। विपक्ष के (शत्रु) लोग आपकी (कल्कि जी की) कृपापूर्ण दृष्टि के पड़ने से अनुग्रह मान रहे हैं। उनके (कल्कि जी के) वक्षस्थल पर मनोहर हार के बीच कुमुदनी को प्रसन्न करने वाली ज्योति से संयुक्त चन्द्रकान्त मणि शोभा पा रही है। वस्त्र इन्द्रधनुष के समान (विविध रंगों में) शोभा बिखेर रहे हैं। पूर्ण शरीर आनन्द-रस से पुलकायमान हो रहा है। देवता, गन्धर्व आदि सभी आने वाले लोगों ने कल्कि जी का अद्भुत रूप अनेक तरह की मणियों से जगमगाता हुआ देखा। वे सब लोग परम भक्ति भाव से अत्यन्त आदरपूर्वक परम आनन्द वाले, कमल जैसे नेत्रों वाले, कल्कि जी की स्तुति करने लगे।

देवतागण बोले—'हे देवों के स्वामी, विश्व के स्वामी, हे भूतनाथ (प्राणियों के स्वामी), हे प्रभो, आपका अन्त नहीं है। आपमें सभी भाव स्थित हैं। हे भगवान्, आप प्रचण्ड अग्नि-रूप जैसे हैं। आप के किंचित मात्र छू जाने से भी इस संसार के दुःखों का समूह नष्ट हो जाता है। आपके चरण कमल में कान्ति का जाल प्रतीत होता है। आपके चरणों से अनन्त (नाग) की प्रबल शक्ति दब गई हैं। हे (अनन्तशक्ति)

देव, आपकी जय हो! हे संसार के स्वामी, आपके श्याम रंग के वक्षस्थल पर चमकीली कौस्तुभ मणि शोभा पाती है। मणि से निकलने वाली किरणों के समूह से तीनों लोक प्रकाशित हो रहे हैं। ऐसा मालूम पड़ता है मानों बादलों के समूह के बीच में पूर्णचन्द्र (पूरा चाँद) शोभा पा रहा है। हे देव, मुसीबत में पड़कर हमलोग स्त्री, पुत्र और संबंधियों सहित आपकी शरण में आए हैं, आप हमारी रक्षा करें। हे ईश्वर, यदि हम पर आपकी कृपा है तो अब आप इस भूमण्डल के शासन को, जहाँ अब सत्य और धर्म का कोई विरोध नहीं है, त्याग कर वैकुण्ठ के लिए प्रस्थान कीजिए'

देवताओं का यह निवेदन सुनकर कल्कि जी बहुत प्रसन्न हुए और योग्य (पात्र) मित्रों के साथ वैकुण्ठ जाने के इच्छुक हुए। कल्कि जी ने प्रजा के बहुत प्यारे, धार्मिक, महाबली वाले, वीर अपने चारों पुत्रों को बुलाकर उसी समय उनका राज्याभिषेक कर दिया। फिर उन्होंने पूरी प्रजा को बुलाकर अपनी कथा (वृत्तान्त) सुनाई। उन्होंने कहा कि देवताओं के कहने पर उन्हें वैकुण्ठ-धाम की यात्रा करनी है। ये वचन सुनकर सारी प्रजा अचरज में पड़ गई और रोने लगी। जिस प्रकार पुत्र पिता से कहते हैं, उसी प्रकार प्रजा ईश्वर को प्रणाम करके कहने लगी—'हे नाथ, आप तो सभी धर्म के जानने वाले हैं। आपके लिए हमें छोड़ना उचित नहीं है। आप प्रण के प्यारे हैं यानी प्रण के पक्के हैं। आप जहाँ हैं, वहीं हम भी जाएँगे। इस संसार में धन, पुत्र और घर सबको ही प्यारे हैं, परन्तु आप तो यज्ञ पुरुष हैं। आपसे सभी शोक और दुःख नष्ट हो जाते हैं। यह जानकर हमारे प्राण आपके पीछे-पीछे चलना चाहते हैं।'

प्रजा के ऐसे वचन सुनकर कल्कि जी ने उन्हें अच्छे-अच्छे उपदेश दिए और समझाया। तब वे स्वयं द्रवित (खेद-

युक्त) मन से अपनी दोनों पत्नियों के साथ वन में चले गए। फिर गंगा जल से सम्पन्न मुनि लोगों से घिरे हुए, देवताओं से सेवित, मन को प्रसन्न करने वाले हिमालय पर्वत पर कल्कि जी देवताओं के मध्य विराजमान हुए और चार भुजाओं वाला विष्णुरूप धारण कर स्वयं अपने रूप का स्मरण करने लगे। हज़ारों सूर्य के समान उनके तेज का समूह प्रकाशित होने लगा। पूर्ण ज्योति से युक्त साक्षात् सनातन पुरुष परमात्मा कान्ति से पूर्ण होने लगे। उनका आकार अनेक तरह के आभूषणों का भी आभूषण-रूप बन गया। शंख, चक्र, गदा, पद्म, शारंग, धनुष आदि समन्वित व पूजित होने लगे। उनके वक्षःस्थल पर कौस्तुभ मणि सुशोभित थी। देवतागण उन पर सुगंधित पुष्पों की वर्षा करने लगे। चारों ओर देवताओं की दुदुंभि बजने की ध्वनि होने लगी। जब कल्कि जी विष्णु पद में प्रविष्ठ हुए, तब उन रूपरहित विष्णु जी के रूप का दर्शन कर चेतन तथा अचेतन सभी प्राणी मोहित होकर उनकी स्तुति करने लगे। अपने पति महात्मा कल्कि जी का ऐसा अचरज भरा रूप देखकर, रमा जी और पद्मा जी (श्री कल्कि जी की पत्नियाँ) अग्नि में प्रवेश कर उसमें लीन हो गईं। कल्कि जी की आज्ञानुसार धर्म और सत्ययुग इस पृथ्वी पर शत्रु रहित (निःसपत्नौ) होकर अत्यन्त सुखपूर्वक दीर्घकाल तक विचरण करने लगे। देवापि और मरु दोनों राजा कल्कि जी की आज्ञानुसार प्रजा का पालन करते हुए इस पृथ्वी की रक्षा करने लगे। विशाखयूप राजा ने भी कल्कि जी का इस प्रकार गमन सुनकर अपने पुत्र को राज्य देकर (स्वयं) वन की यात्रा की। दूसरे राजा लोग भी कल्कि जी के जाने से बहुत दुःखी हुए (वियोग सहन न कर सके)। वे भी राज सिंहासन से विरक्त (जब किसी व्यक्ति का किसी से लगाव नहीं रह जाता तो उस व्यक्ति को विरक्त कहते हैं) हो गए। वे

केवल कल्कि जी के रूप का ध्यान करने लगे और उनका नाम जपने लगे। इसी प्रकार अनन्त प्रभु (भगवान् का कोई अन्त नहीं होता, इसीलिए उन्हें अनन्त भी कहते हैं) कल्कि जी की कथा का, जो कि संसार को पवित्र बनाने वाली है, वर्णन करके शुकदेव जी नर-नारायण आश्रम को चले गए। शान्ति के अयन (शान्त चित्त रहने वाले) मार्कण्डेय आदि ऋषि लोग कल्कि जी का यह माहात्म्य सुनकर उन (के रूप) का ध्यान करते हुए उनके यश का गान करने लगे। जिन (कल्कि जी) के राज्यकाल में इस पृथ्वी पर कोई भी प्रजाजन कम उम्र में मरने वाला, गरीब पाखण्डी और कपटी नहीं रहा, जिनके राज्य में सभी प्राणी आधि-व्याधि रोग तथा दुःख रहित और ईर्ष्या रहित, देवताओं के समान आनन्दपूर्ण सुखी हो गए थे, उन महात्मा कल्कि जी के अवतार की यह कथा कही गई है। इस कथा को सुनने मात्र से धन और यश मिलता है, आयु बढ़ती है, कल्याण होता है, और अन्त में स्वर्ग मिलता है।

इस कथा को सुनने से शोक, दुःख और पाप दूर होते हैं। कलियुग से पैदा होने वाली बेचैनी का नाश होता है और यह सुख देने वाली, मोक्ष देने वाली और मन की इच्छा पूरी करने वाली है। जब तक इस संसार में मनोवांछित फल देने वाले पुराण रूप (प्राचीन) सूर्य प्रकाश देते हैं, तब तक ही संसार में अन्यान्य शास्त्रों के दीप चमकते रहते हैं। भृगुवंश में उत्पन्न हुए, परम जितेन्द्रिय महर्षि शौनक और दूसरे ऋषि अत्यन्त भली लगने वाली, भक्ति रस में पगी श्री कल्कि अवतार की कथा सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें भली-भाँति पता चल गया कि श्री लोमहर्षण जी के पुत्र सूत जी ज्ञान के गौरव में इस प्रकार प्रवृत हैं। महर्षि लोगों के हृदयों में नारायण जी की कथा फिर सुनने की इच्छा पैदा हुई, इसलिए उन्होंने

आदर सहित सूत जी से गंगा स्तोत्र के विषय में पूछा।

बीसवाँ अध्याय

शौनक जी बोले—हे सूत जी, आप सभी धर्मों के जानने वाले हैं। आपने पहले कहा था कि मुनिगण गंगा जी की स्तुति कर कल्कि जी के पास पहुँचे थे। वह स्तुति क्या है? कृपा कर आप बताएँ कि (गंगा की) किस स्तुति के भक्ति सहित पढ़ने तथा सुनने से कल्याण और मोक्ष प्राप्त होते हैं।

सूत जी बोले—हे ऋषियो, मैं आप सबको शोक तथा मोह के नाश करने वाले और (अत्यन्त श्रेष्ठ) ऋषि प्रणीत अत्यन्त उत्तम गंगा-स्तोत्र को बताता हूँ। आपलोग सुनिए।

ऋषि बोले—यह देवताओं की नदी, संसार रूपी सागर से तारने वाली, भगवान् विष्णु के कमलरूपी चरणों से निकल कर पृथ्वी पर बह रही है। यह सुमेरु पर्वत की चोटी पर रहने वाली है, इसका अमृत जैसा जल हमेशा प्रिय रहता है अर्थात् इसके जल की शुद्धता अमर है, यह पापों का नाश करने वाली है, संसार के दुःखों को हरने वाली है, यह प्रसन्न वदना है, शुभ अर्थात् भलाई देने वाली है। इस भगवती भागीरथी की सभी प्राणी स्तुति करते हैं। यह भगवती गंगा भगीरथी जी के पीछे-पीछे पृथ्वी पर आई। उन्होंने भगवान् इन्द्र के हाथी ऐरावत का घमंड चूर चूर कर दिया। गंगा जी भगवान् शिव जी के मुकुट की चमक है। हिमालय पर्वत की श्वेत पताका है। इनकी स्तुति ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवताओं, दानवों, मनुष्यों और सर्प आदि सभी ने की है। गंगा जी मुक्ति देने वाली और पापों का नाश करने वाली के रूप में शोभा पाती हैं। ब्रह्मा जी के कमण्डलु से यह गंगा रूपी बेल निकली थी। इस बेल का बीज मुक्ति है। ब्राह्मणगण इसके आल-वाल रूप हैं

(और सुधर्म इसका फल है)। श्रुति, स्मृति आदि धर्म ग्रन्थों ने इसकी स्तुति की है। यह (सुखरूप किसलयों से परिपूर्ण) लता सुमेरु पर्वत के शिखर (चोटी) को फोड़ कर पृथ्वी पर आई है। यह तीनों लोकों में व्याप्त हैं। यह सुधर्म रूपी फल को देने वाली है। इसमें सुख रूपी पत्ते शोभा पा रहे हैं। (ऊपर उड़ती पक्षी पंक्ति के कारण सुन्दर) गंगा जी महाराजा सगर के वंश (राजा सगर के 60,000 पुत्रों का कपिल मुनि के शाप से उद्धार करने के लिए उनके वंश में उत्पन्न हुए महाराज भगीरथ अपनी कठोर तपस्या से गंगा जी को पृथ्वी पर लाए और जहाँ वे सब पुत्र थे, उनके ऊपर से गंगा जी को ले गए, जिससे उनका उद्धार हो गया।) का उद्धार करने वाली हैं, वे (गंगा जी) है, सदा अशुभ का नाश करने वाली हैं। इनको प्रणाम करने, इनके गुणों का बखान करने और इनके पवित्र जल के दर्शन करने से ही (संसार में) आनन्द (और सुख) मिलता है।

जो गंगा जी महाराजा शान्तनु की रानी बनी थीं। हिमालय की चोटी जिनके स्तन हैं, फेन वाला जल जिनकी हँसी है, सफेद रंग के हंस जिनकी गति (चाल) हैं, सारी तरंगें जिनके हाथ हैं, खिले हुए कमलों की पंक्ति जिनकी माला है, जिनकी गति रस से पूर्ण प्रसन्नता से भरी हुई है और जो समुद्र की ओर जाने की इच्छा वाली हैं, ऐसी गंगा जी शोभायमान हैं। कहीं तो गंगा जी कल कल ध्वनि वाली हैं, कहीं (उनमें) जल के अधीर (विकराल) जीव विचर रहे हैं, कहीं-कहीं मुनिगण उनकी स्तुति कर रहे हैं, कहीं अनंत देव पूजा कर रहे हैं, कहीं भगवान् सूर्य की किरणों से गंगा जी का जल प्रकाशित हो रहा है, कहीं भयंकर नाद करता हुआ पानी गिर रहा है। कहीं लोग स्नान कर रहे हैं। ऐसी गंगा जी की जो कि भीष्म की माता हैं, जय हो। जो लोग भागीरथी

यानी गंगा मैया को प्रणाम करते हैं, वे ही कुशल (चतुर) हैं, जो लोग आदरपूर्वक गंगा जी का नाम जपते हैं, वे ही वास्तविक तपस्वी हैं। जो लोग मन्दाकिनी (गंगा जी) का स्मरण करते हैं, वे ही प्राणियों में श्रेष्ठ हैं। जो जीव देवताओं की इस नदी की सेवा करते हैं, वे ही निश्चय विजयी होते हैं और (सम्पूर्ण ऐश्वर्य के) स्वामी हैं।

हे त्रिपथगामिनी, हे भगवती, कब तुम्हारे स्वच्छ जल में मेरा शरीर भासित होगा ? कब मेरे इस मृत शरीर को पक्षी, गीदड़ आदि (पशु) टुकड़े-टुकड़े कर देंगे (और फिर कब) तुम्हारी चंचल लहरों के समूह में डोलता हुआ यह शरीर तुम्हारे किनारे पर स्थित शिवार से कब सजेगा ? कब मैं स्वर्ग लोक को जाऊँगा और कब देवता, मनुष्य व नाग मेरी स्तुति करेंगे ? कब मैं स्वर्ग से अपने मृत शरीर की ऐसी दशा (इस प्रकार का अपना सौभाग्य) देखूँगा ? हे माँ गंगे! कब तुम्हारे किनारे पर रहकर और, तुम्हारे पवित्र जल में स्नान करके तुम्हारे दर्शन करूँगा ? कब मैं तुम्हारा नाम स्मरण करूँगा ? कब तुम्हारे पृथ्वी पर उतरने की शुद्ध कथा का कीर्तन करूँगा ? हे देवी, कब तुम्हारी सेवा करने से मेरे मन में प्रेमरस का उदय होगा ? कब लोग मेरा आदर करेंगे ? कब मेरे किए हुए पापों का समूह (निस्संदेह) नष्ट हो जाएगा ? कब मैं शान्त चित्त होकर पृथ्वी पर घूमूँगा ?

इस अति श्रेष्ठ गंगा स्तोत्र को ऋषियों द्वारा कहा गया था। इस स्तोत्र के पढ़ने और सुनने से स्वर्ग और यश मिलता है और आयु भी बढ़ती है। प्रातःकाल, दोपहर और संध्या के समय इस स्तोत्र का पाठ करने से गंगा जी की समीपता प्राप्त होती है और लोगों के सभी पापों का नाश होता है, उनका बल और आयु भी बढ़ती है। मैंने शुकदेव जी से इस भार्गव कथा को सुना था। इसके पढ़ने तथा सुनने से पुण्य मिलता है

और यश एवं धन की वृद्धि होती है। जो लोग महाविष्णु के परम अद्भुत अवतार कल्कि जी की कथा को भक्ति से पढ़ते या सुनते हैं, उनके सब तरह के अमंगल (कष्ट) दूर हो जाते हैं।

इक्कीसवाँ अध्याय

(सूत जी बोले)—इस कल्कि पुराण में सबसे पहले बुद्धिमान मार्कण्डेय और शुक जी का संवाद है। इसके बाद अधर्म वंश की कथा तथा कल्कि भगवान् की कथा है। इसके उपरान्त, देवताओं के साथ- साथ पृथ्वी द्वारा गोरूप धारण कर ब्रह्मलोक में जाने की कथा और ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर विष्णुयश (नामक ब्राह्मण) के घर में भगवान् विष्णु के जन्म की कथा कही गई है। बाद में सुमति के गर्भ से, विष्णु के अंश से चार भाइयों के शम्भल गाँव में पैदा होने की कथा और पिता-पुत्र संवाद और कल्कि भगवान् के यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करने की कथा है। इसके बाद पिता-पुत्र के साथ-साथ रहने और कल्कि जी के वेदों के उत्तम अध्ययन और शस्त्रास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने तथा शिव जी के दर्शन की कथा है। इसके उपरान्त कल्कि भगवान् द्वारा शिव जी की स्तुति और शिवजी से वर प्रदत्त करने की कथा और (उनके) शिव जी द्वारा प्रदत्त शुक सहित संभल ग्राम में फिर लौटने की कथा और (श्री कल्कि द्वारा) जाति बन्धुओं को इस वर प्राप्त करने की कथा का वर्णन है। फिर विशाखयूपराज से कल्कि जी द्वारा अपने स्वरूप और ब्राह्मणों के महात्म्य का वर्णन तथा शुक के आगमन का वर्णन किया गया है। इसके बाद कल्कि भगवान् और शुक के संवाद की कहानी तथा शुक द्वारा सिंहल द्वीप के वर्णन की कथा बताई गई है। इसके उपरान्त, शिव जी ने कैसे पद्मा जी को वर

दिया और पद्‌मा जी के दर्शन से स्वयंवर में आए हुए राजा लोग कैसे स्त्रियाँ बन गईं, इसकी कथा है। इसके उपरान्त पद्‌मा जी के दु:ख की कथा और विवाह के निमित्त कल्कि भगवान् के प्रयास की कथा है। फिर शुक के दूत-कार्य के लिए वहाँ से चलने की कथा, पद्‌मा जी के शुकदेव को देखने की कथा तथा शुक और पद्‌मा जी के परिचय का प्रसंग तथा श्री विष्णु भगवान् की पूजनादि संबंधी कथा का वर्णन है। इसके बाद, चरण से केश पर्यन्त भगवान् विष्णु के रूप (और ध्यान) की कथा और शुक को (पद्‌मा जी द्वारा प्रसन्न होकर) आभूषण पहनाने की कथा तथा कल्कि भगवान् के पास शुक के लौट जाने की कहानी है।

इसके बाद, विवाह के लिए कल्कि भगवान् की यात्रा का वर्णन और जल क्रीडा के प्रकरण में कल्कि भगवान् तथा पद्‌मा जी के पारस्परिक परिचय की कथा और फिर कल्कि भगवान् के साथ पद्‌मा जी के विवाह सूत्र में बँध जाने का आख्यान है। इसके बाद कल्कि भगवान् के दर्शन से राजा लोगों के (जो कि स्त्री के रूप में बदले जा चुके थे) फिर पुरुष बन जाने की कथा, अनन्त मुनि के (सभा में) पधारने की कथा और सभा मंडप में राजागण और अनन्त के संवाद का वर्णन हुआ है। इसके उपरान्त अनन्त मुनि के षण्ड (नपुंसक/हिजड़ा) का रूप से जन्म-वर्णन की कथा, शिव जी की स्तुति और अनन्त मुनि के पिता की मृत्यु के बाद विष्णु क्षेत्र में माया दर्शन की कथा बताई गई है। इसके उपरान्त अनन्त के आख्यान, ज्ञान और वैराग्य-रूप वैभव की कथा है। फिर राजागण के प्रयाण तथा पद्‌मा जी के साथ कल्कि भगवान् के संभल ग्राम में आने की कहानी है।

इसके बाद में, विश्वकर्मा द्वारा शम्भलपुरी को बनाने और सजाने-सँवारने की कहानी है, फिर पद्‌मा जी, जाति

वाले लोग, भाई-बन्धु, इष्ट-मित्र और पुत्रादि तथा सेना के साथ कल्कि भगवान् के नगरी में निवास करने की कहानी है तथा बौद्धों के दमन करने का वर्णन किया गया है। तदुपरान्त बौद्ध स्त्रियों के युद्ध भूमि में (युद्ध के उद्देश्य से) आगमन की कहानी, बालखिल्य मुनियों के आने की कहानी व बालखिल्य मुनियों द्वारा अपने वृत्तान्त के बताने की कहानी है। इसके उपरान्त कुथोदरी नाम की राक्षसी की उसके पुत्र सहित मारे जाने की कथा और हरिद्वार में कल्कि भगवान् और मुनियों के सम्मेलन की कथा बताई गई है। फिर, सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश की कथा और सूर्यवंश के प्रकरण में श्री रामचन्द्र जी की कथा का वर्णन है। इसके उपरान्त संग्राम के लिए तैयार हुए मरु तथा देवापि के आने की कथा, (घोर वन में) अत्यन्त विकराल, कोक और विकोक के वध की कथा तथा कल्कि भगवान् के भल्लाटनगर जाने की कथा है। इसके बाद में शय्याकर्णादि के संग्राम की कथा है, राजा शशिध्वज के साथ कल्कि जी के युद्ध का वर्णन तथा (शशिध्वज की पत्नी) सुशान्ता की भक्ति तथा उसके कीर्तन का वर्णन है। इसके बाद, युद्ध भूमि से कल्कि भगवान्, धर्म तथा सत्ययुग को राजा शशिध्वज द्वारा घर लाने का वर्णन, (रानी) सुशान्ता द्वारा कल्कि भगवान् की स्तुति और कल्कि भगवान् और रमा जी के विवाह का वर्णन किया गया है।

इसके उपरान्त, सभा के बीच में राजा शशिध्वज द्वारा अपने पूर्वजन्म की कथा, गिद्ध का शरीर पाने का वर्णन, कल्कि भगवान् से भक्ति की प्रार्थना का वर्णन और राजा शशिध्वज की मुक्ति पाने की कथा कही गई है। तदन्तर, विषकन्या के उद्धार की कथा, राजागण के राज्याभिषेक का वर्णन, माया की स्तुति और संभल ग्राम में अनेक यज्ञों के किए जाने का वर्णन किया गया है। फिर विष्णुयश जी का

नारद जी से मोक्ष विषयक प्रश्न का वृत्तान्त, (लोक में) सत्ययुग की स्थापना का वर्णन तथा रुक्मिणी व्रत की कथा बताई गई है। इसके उपरान्त, कल्कि भगवान् के विहार का वर्णन और बेटे-पोतों के पैदा होने का वृत्तान्त तथा संभल ग्राम में देवता व गन्धर्वों के आने का वर्णन है। फिर, कल्कि भगवान् के वैकुण्ठ गमन की कथा है। इसके बाद, इस मधुर कथा को कहकर शुकदेव जी के जाने का वृत्तान्त है।

इसके बाद, इस पुराण में मुनियों द्वारा कही गई गंगा जी की स्तुति (गंगास्तोत्र) का वर्णन है। यह कल्कि पुराण पाँच लक्षणों वाला है (अर्थात् पहला लक्षण सृष्टि, दूसरा प्रलय, तीसरा वंश(सूर्य-चन्द्र आदि), चौथा मन्वनतर (मनुगण का अधिकार), पाँचवाँ वंशानुचरित अर्थात् अनेक वंशों में जन्म लेने वाले चरित्रों का वर्णन, इसमें निहित हैं।) यह संसार को आनन्द देने वाला है।

जो लोग कलि काल के पापों से पूर्ण हैं, उन्हें भी कल्कि पुराण के सुनने से सिद्धि प्राप्त होती है। इस पुराण में छः हजार एक सौ श्लोक हैं। कल्कि पुराण सब शास्त्रों के अर्थों के तत्व का सार है। इस पुराण के सुनने से ही मनुष्य का मन मोहित हो जाता है।

यह बात प्रसिद्ध है कि कल्कि पुराण के सुनने तथा पढ़ने से चारों फल यानी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त होते हैं। यह कल्कि पुराण प्रलय के अन्त में श्री नारायण भगवान् के मुख से प्रकाशित होकर संसार भर में फैला है। भगवान् वेदव्यास जी ने ब्राह्मण के रूप में इस पृथ्वी पर अवतार धारण कर इस कल्कि पुराण का वर्णन किया है। कल्कि पुराण में कल्कि भगवान् विष्णु जी के परम अद्भुत प्रभाव का वर्णन किया गया है। जो लोग सज्जनों की संगति में (घरों या) आश्रमों में, पुण्य क्षेत्रों में, वस्त्र, गहने आदि देकर ब्राह्मणों की पूजा

कर आदर के साथ गाय, घोड़े, हाथी, सोना आदि देकर भक्तिपूर्वक भगवान् विष्णु के भाव में डूबकर सब पुराणों के सार इस शुद्ध कल्कि पुराण का कीर्तन करेंगे या इसे सुनेंगे, उन उत्तम पुरुषों की मुक्ति अवश्य होगी। इस कल्कि पुराण को विधिपूर्वक सुनने से ब्राह्मण वेदों के ज्ञान में पारंगत (अत्यन्त विद्वान्) होंगे, क्षत्रिय राजा बनेंगे, वैश्य धनवान् होंगे तथा शूद्र महान् बनेंगे। कल्कि पुराण के पढ़ने से और सुनने से पुत्र की प्राप्ति चाहने वाले को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, विद्या चाहने वाले को विद्या मिलती है। लोमहर्षण के पुत्र महर्षि सूत जी शौनकादि मुनियों को भक्तिपूर्वक कल्कि पुराण की यह पुण्य कथा सुनाकर तीर्थ यात्रा के लिए चले गए। योग शास्त्र विशारद धर्मज्ञाता महर्षि शौनक जी अन्यान्य मुनियों के साथ (सूत जी से विदा लेकर) श्री हरि का ध्यान करते हुए सहर्ष ब्रह्म-पद को प्राप्त हुए। समस्त पुराणों के जानने वाले लोमहर्षण के पुत्र व्यास जी के परम शिष्य व्रतधारी, मुनियों में श्रेष्ठ श्री सूत जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

सभी शास्त्रों को भली-भाँति पढ़कर और उन पर बार-बार विचार कर यह सिद्ध (निष्पादित) होता है (निष्कर्ष निकलता है) कि हमेशा श्री नारायण जी का ध्यान करना उचित (श्रेयस्कर) है। वेद, रामायण और पुराण, भारत (महाभारत) आदि सभी ग्रन्थों के आरंभ, मध्य तथा अन्त में (सर्वत्र) श्री हरि जी का गुणगान किया गया है। जो हवा के समान (तेज़ दौड़ने वाले) वेगधारी घोड़े पर सवार हैं, जिनके हाथ में भयंकर तलवार शोभित है, जिन्होंने कलिकुल रूपी वन का नाश करके सत्य धर्म को स्थापित किया है, ऐसे जलधारी बादल के समान कान्ति वाले, सभी लोकों के स्वामी श्री कल्कि भगवान् सबका कल्याण करें।

टिप्पणी / Reference Notes

प्रथमांशः

प्रथम अध्याय

1. **नर नारायण की उत्पत्ति :** पृथ्वी का उद्धार हो जाने पर महादेव जी ने शरभरूप धर विष्णु भगवान की नरसिंह मूर्ति के दो खण्ड किये। उन दो खण्डों से ऋषि उत्पन्न हो गये। नर खण्ड से नर हुए, सिंह खण्ड से नारायण।
2. **जय :** जय शब्द की व्याख्या प्रायः कई पुराणों में आई है। भविष्य पुराण के ब्राह्म पर्व के चौथे अध्याय, श्लोक 86 से 88 में इसे विस्तार से समझाया गया है।
3. **युगों की अवधि :** एक संक्रान्ति से दूसरी सूर्य-संक्रान्ति तक के समय को सौर मास कहते हैं। बारह सौर मासों का एक सौर वर्ष होता है। मनुष्य-मास का यही एक सौर वर्ष देवताओं का एक अहोरात्र होता है। ऐसे तीस अहोरात्रों का एक मास और बारह मासों का एक दिव्य वर्ष होता है।

युगों का मान	*दिव्य वर्षों में*	*सौर वर्षों में*
सत्युग का मान	4,800	17,28,000
त्रेतायुग का मान	3,600	12,16,000
द्वापरयुग का मान	2,400	8,64,000
कलियुग का मान	1,200	4,32,000
महायुग का एक चतुर्युगी	12,000	43,20,000

4. **नैमिषारण्य :** इस अरण्य में भगवान विष्णु ने एक निमेष में दैत्यों का संहार किया था। इसी कारण इस अरण्यका नाम नैमिषारण्य हुआ।
5. **मार्कण्डेय :** मृकण्ड मुनिके पुत्र का नाम मार्कण्डेय हुआ। ये चिरञ्जीवी हैं।

6. **व्रात्य :** गर्भ से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष क्षत्रिय का एवं बारहवें वर्ष वैश्यका उपनयन संस्कार होना उचित है। किसी विशेष कारण से उक्त समय संस्कार न होने पर ब्राह्मण का सोलहवें वर्ष, क्षत्रिय का बाइसवें वर्ष एवं वैश्यका चौबीसवें वर्ष उपनयन संस्कार करने से भी चल सकता है। इस समय के बीत जाने पर उपनयन संस्कार नहीं हुआ मनुष्य व्रात्य कहलाता है। उसकी नीच संज्ञा हो जाती है।
7. **दक्षिणावर्त वहिन् :** अग्नि तीन प्रकार की है। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय। गृहस्थ के घर में सदा रहने वाली अग्नि गार्हपत्याग्नि है। गार्हपत्याग्रि से अथवा यज्ञाग्नि से लेकर दक्षिण भाग में स्थापित की हुई अग्नि को दक्षिणाग्नि कहते हैं। इसी दक्षिणाग्नि को दक्षिणावर्त वहिन्: कहते हैं। होमके निमित्त संस्कार की हुई अग्नि कोा आहवनीय कहते हैं।

द्वितीय अध्याय

1. **सावित्री :** सन्ध्या की एक मूर्ति का नाम है। सन्ध्या की तीन मूर्तियाँ हैं। सन्ध्या की पूर्वाहन् मूर्ति का नाम गायत्री, मध्याहन् का सावित्री और सन्ध्या की सायान्ह मूर्ति का नाम सरस्वती है।
2. **कृपाचार्य :** महर्षि गौतमपुत्र शरदवाण के तप से भयभीत हो इन्द्र ने ज्ञानपदी अप्सरा को भेजा। उसको देखकर बिनजाने पृथ्वी पर शरदवाण का शुक्र पतित हुआ। उस शुक्र से दो बालक हुए। इन्हें शान्तनु राजा शिकार करते समय देखकर घर ले गये। राजा कृपा कर ले आये इसी कारण इनका कृप नाम रखा। आगे योग्य होने से कृप कृपाचार्य नाम से प्रसिद्ध हुए।
3. **दश संस्कार :** 1. विवाह संस्कार, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमान्तोन्यन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. अन्नप्राशन,

8. चूड़ाकरण, 9. उपनयन, और 10. समावर्त्तन।

4. **वर्ष :** जम्बु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक तथा पुष्कर—पृथ्वी पर यह सात द्वीप है। इन द्वीपों के अनेक विभाग हैं। द्वीप के प्रत्येक विभाग को वर्ष कहते हैं।

तृतीय अध्याय

1. **महेन्द्र पर्वत :** पुरुषोत्तम क्षेत्र में ऋषि कुल्यानामनी नदी है। यह नदी गोन्दवन देश की पर्वत माला से उत्पन्न हुई है। इसी स्थान में महेन्द्र माली नाम से एक पर्वत श्रेणी प्रख्यात है। यही महेन्द्र पर्वत है। यह महेन्द्र पर्वतमाला उड़ीसा के उत्तर गंजाम से गोन्दवन तक फैली हुई है। भारतवर्ष के सात कुलाचलों में से महेन्द्र पर्वत भी एक है।
2. **वेद :** ऋक, यजुः, साम और अथर्व–ये चार वेद हैं।
3. **वेदाङ्ग :** शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द–चार वेदों के ये छः अङ्ग हैं।
4. **कलाः** शिल्पविद्या को कला कहते हैं। गीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य, लेखायादि कला के 64 भेद हैं।
5. **उपवेद :** आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्र–यह चार उपवेद हैं।
6. **दक्षिणा :** A Present, gift, off ring or donation in general, fee or remueration to Brahmana/ Perceptor, after the completion of studies under him.
7. **पञ्चभूत :** आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी—यहीं पाँच पञ्चभूत कहलाते हैं।
8. **तन्मात्रा :** पाँच भूतों के पाँच गुण–शब्द, स्पर्श रूप, रस और गन्ध एक साथ पञ्चतन्मात्रा कहलाते हैं। यही पञ्चतन्मात्रा अलग अलग होने से तन्मात्रा कही जाती हैं।
9. **रत्नसरू :** खड्गकी मुष्टिका का नाम सरु है। रत्न की बनी मुष्टिका का नाम रत्नसरु हुआ।

10. **महिष्मती :** नर्मदा नदी के तट पर यह नगरी बसी है। इसका वर्तमान नाम चुलीमहेश्वर है।

चतुर्थ अध्याय

1. **प्रकृति :** सत, रज और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है।
2. **मनु :** 1. स्वायम्भुव, 2. स्वारोचिष, 3. उत्तम, 4. तामस, 5. रैवत, 6. चाक्षुष, 7. वैवस्वत, 8. सावर्णि, 9. दक्षसावर्णि, 10. ब्रह्मासावर्णि, 11. धर्म्मसावर्णि, 12. रुद्रसावर्णि, 13. देवसावर्णि, और 14. इन्द्रसावर्णि–यही चौदह मनु हैं।
3. **प्रजापति :** 1. मारीच, 2. अत्रि, 3. अंगिरा, 4. पुलस्त्य, 5. पुलह, 6. ऋतु, 7.प्रचेता, 8. वसिष्ठ, 9. भृगु, और 10. नारद–यही दश प्रजापति हैं।
4. **त्रिवृत प्रकृति :** एक में मिश्रित तेज, जल और अन्न को त्रिवृत कहते हैं।
5. **चतुराश्रम :** ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास— इन्हीं चारों आश्रमों की चतुराश्रम संज्ञा है।
6. **चतुर्वर्ण :** ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–यही चारों वर्ण चतुर्वर्ण कहलाते हैं। चतुर्वर्ण की उत्पत्ति लोक वृद्धि के निमित ब्रह्माजी ने मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, उरूसे वैश्य और पादसे शूद्र उत्पन्न किये हैं। चतुर्वर्णकी यही उत्पत्ति है।
7. **चतुर्वर्ण की जीविका :** ब्राह्मण की शास्त्र जीविका है, क्षत्रिय की शस्त्र जीविका है, वैश्य की कृषि जीविका है, और शूद्र की तीनों वर्ण की सेवा जीविका है।

पञ्चम अध्याय

1. **मागध :** वैश्य पुरुष और क्षत्रियानी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुई सन्तान की मागध संज्ञा है।
2. **बन्दी :** मागध जातिको कहते हैं।

3. **वैदेह :** वैश्य पुरुष और ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुई सन्तान को वैदेह जाति कहते हैं।

षष्ठ अध्याय

1. **शरीर की अवस्था :** जन्म से पाँच वर्ष तक शैषवावस्था है; छः वर्ष से 10 वर्ष तक बाल्यावस्था है; 11 वर्ष से 15 वर्ष तक किशोर अवस्था है; 16 वर्ष से 35 वर्ष तक यौवनावस्था है; 36 से 50 वर्ष तक प्रौढ़ावस्था है; 51 से 70 वर्ष वृद्धावस्था है; और 81 से आगे अत्यन्त वृद्धावस्था है।
2. **पौगणडावस्था :** पाँच वर्ष से लेकर 16 वर्ष तक पौगण्डावस्था है।

सप्तम अध्याय

1. **देशिक :** पूजा करने वाला, पूजक।
2. **कौस्तुभमणि :** देवताओं के समुद्र मंथन से अनेक पदार्थों के अतिरिक्त यह कौस्तुभमणि भी प्राप्त हुई थी। इस मणि में सूर्य के सदृश किरण प्रकाश है। भगवान विष्णु जी ने इसको हृदय पर धारण किया है।
3. **श्रीवत्स :** कौस्तुभकी भाँति एक प्रकार की मणि है। विष्णु भगवान इसको धारण किये हैं।
4. **हरिचन्दन :** मन्दार, पारिजातक, सन्तान,कल्पवृक्ष और पुंसि—यह पाँच वृक्ष सुरतरु हैं। पुंसि को ही हरिचन्दन कहते हैं।
5. **अङ्गद :** अनन्त की भाँति बाहु भूषण है।
6. **गदा चक्र :** लक्ष्मीपति विष्णुभगवान के गदा चक्रादि शस्त्रास्त्र हैं। विष्णु भगवान कौमुदी गदा, नन्दकखड्ग, पाञ्चजन्य शङ्ख, सुदर्शन चक्र एवं कौस्तुभमणि धारण किये हैं।

द्वितीयांशः

प्रथम अध्याय

1. **निर्माल्य :** किसी भी देवता को अर्पण की हुई वस्तु विसर्जन के पश्चात् निर्माल्य हो जाती है। विसर्जन के पहले उसका नैवेद्य नाम है।
2. **पद्मराग मणि की उत्पत्ति :** शङ्करासुर–संग्राम में असुर वृद्धिको रोकने के निमित्त असुर का रक्त पृथ्वी पर नहीं गिरने देकर भगवान सूर्य उसे ग्रहण करते जाते थे। इसी समय रावण आ पहुँचा। रावण के भय से सूर्यनारायण ने असुर रक्त को चुपके से डाल दिया। सूर्यनारायण का फेंका हुआ असुर रक्त सिंहल देश प्रावाहिणी रावणगङ्ग एवं उसके दोनों तटों पर जा पड़ा। इस प्रकार रात्रि के समय कान्तिमान प्रभा जल से प्रदीप्त पद्मराग की उत्पत्ति हुई।
3. **मुक्ता की उत्पत्ति :** मेघा, हस्ती, मत्स्य, सर्प, वाँस, शङ्ख, वराह एवं सीपी से मुक्ताकी उत्पत्ति है। मुक्ताकी साधारण नाम मोती है।
4. **सूर्यकान्त मणि :** सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, जलकान्त, हंसगर्भ स्फटिक मणिके भेद हैं। अग्निस्रव करने वाली स्फटिकमणिको सूर्यकान्त, अमृतस्रव करने वाली स्फटिकमणिको चन्द्रकान्त, जलस्रव करने वाली स्फटिकमणिको जलकान्त, एवं विष विनाशक स्फटिकमणिको हंसगर्भ स्फटिकमणि कहते हैं।
5. **गान्धर्व वेद :** संगीत शास्त्र को गान्धर्व वेद कहते हैं। संगीत शास्त्र गन्धर्वों के अधिकार में है। उस पर गन्धर्वों का पूर्ण अधिकार होने के कारण संगीत शास्त्र उनके गन्धर्व नाम से गान्धर्व वेद के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। नृत्य, गीत, वाद्य एवं अभिनय—ये संगीत शास्त्र के अन्तर्गत हैं।

द्वितीय अध्याय

1. **मधुसूदन :** मधु–नामक एक दैत्य था। उस मधु दैत्य का विनाश करने से विष्णुभगवान का मधुसूदन नाम हुआ।
2. **श्लोक 21, 30 और 31 :** इनके बारे में मतान्तर है।

तृतीय अध्याय

1. **मत्स्यावतार :** सूर्यवंशीय राजा मनुने तपबल से प्रलय के समय स्थावर जङ्गम समस्त भूतग्राम की रक्षा का वर पाया था। युगान्तर में काल क्रम से पितृ–तर्पण करते समय मनुजी के हाथ में एक मछली आ पड़ी। आपने उसके प्राण रक्षार्थ उसको कमण्डलु में रख दिया। कमण्डलु में मछली 16 अंगुल बढ़ कर और छोटा स्थान पाकर प्राणरक्षा के लिये "रक्षाकरो! रक्षाकरो!" कह कर पुकारी। मनुजी ने तब उसे निकालकर एक मिट्टी के घड़े में डाल दिया। घड़े में मछली रात्रिभर रह कर 3 हाथ की होकर "रक्षाकरो! रक्षाकरो!" कह कर पुकारने लगी। आगे मनुजी ने उसे कुँए में, सरोवर, में, गंगा में डाला। सर्वत्र ही उसका शरीर बढ़ता गया। अन्त में मनुजी ने उस मछली को समुद्र में जा डाला। समुद्र में भी जब उसका शरीर बढ़ कर नहीं आ सका और "रक्षाकरो! रक्षाकरो!" ध्वनि आने लगी तब आपने 'हरि! केशव! वासुदेवादि' नाम सम्बोधन कर साक्षात विष्णु भगवान समझ प्रार्थना करनी शुरू की। उस समय मत्स्य भगवान ने पूर्व दिये हुए वरकी बात मनुराज से कह कर प्रलय होने की सूचना दे उसको रक्षा का उपाय बतलाया। मनुजी ने सृष्टि के बीजों का संग्रह कर संसार के जीव प्रवाहक बीजों की रक्षा की। मत्स्यावतारका संक्षेप में यहीं वृत्तान्त है।
2. **मतान्तर :** कुछ विद्वान इसे केवल बलराम–अवतार के वर्णन की मान्यता देते हैं श्रीकृष्णावतार की नहीं।

चतुर्थ अध्याय

1. **पुरुषोत्तम :** उड़ीसा देश में ऋषिकुल्या और वैतरण नदियों के बीच का स्थान पुरुषोत्तमतीर्थ नाम से प्रसिद्ध है।
2. **आभ्युदयिक :** अभ्युदयकी इच्छा से अन्नप्राशन, यज्ञोपवीत, विवाहादि शुभ कर्मों के आरम्भ में आभ्युदयिक श्राद्ध करना होता है। उसी श्राद्ध का नाम आभ्युदयिक है।

पञ्चम अध्याय

1. **कलापग्राम :** हिमालय पर्वत के दक्षिण में हैं। यदुकुल का क्षय होने पर श्रीकृष्ण जी की रानी सत्यभामा इसी ग्राम में तप करने गई थीं।
2. **जीवकोष :** जीवरूपी चैतन्य अविद्या में फँसकर अपने को प्रकृतिवत मानने लगा। जीवकी इस अवस्था का नाम कारण–शरीर हुआ। मन, बुद्धि, चित्त और अंहकार के एकत्व सम्बन्ध को अन्तःकरण कहते हैं। कारण–शरीर, अन्तःकरण, पञ्चतन्मात्रा और पञ्चज्ञान इन्द्रिय मिलकर लिङ्ग शरीर हुआ। लिङ्ग शरीर को ही जीवकोष कहते हैं।

षष्ठ अध्याय

1. **अक्षौहिणी :** 21870 हाथी, 21870 रथ, 65610 घोड़े, 101350 पैदल की अक्षौहणी संख्या है। पत्ति, सेनामुख, गुल्म,गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनाकिनी अक्षौहणी सेना गणना करने की संख्या के नाम हैं। जिस प्रकार अंग्रेज सैन्य गणना करने का रीति रेजीमण्ट, ब्रिगेड आदि हैं, उसी प्रकार भारत में चमू, पत्ति, अक्षौहणी आदि थे।

सप्तम अध्याय

1. **ताम्रचूड़ :** अरुणशिखा मुर्गको कहते हैं।
2. **शुद्धोधन :** ये शुद्धोधन ऐतिहासिक सिद्धार्थ/बुद्ध के पिता नहीं, एक पौराणिक चरित्र हैं।

3. **मायावती :** ये मायादेवी भी एक पौराणिक चरित्र हैं, भगवान बुद्ध की माता मायावती नहीं।

तृतीयांशः

प्रथम अध्याय

1-6. श्लोक 21 से 26 : इनके बारे में मतान्तर हैं।

द्वितीय अध्याय

1. **बालखिल्य :** पुलस्त्य की कन्या के गर्भ में ऋतु के शुक्र से इन ऋषियों का जन्म हुआ। गिनती में 60,000 हैं। इनके शरीर अंगुष्ट के पोरुए की भाँति छोटे-छोटे हैं।

तृतीय अध्याय

1. **पञ्चवटी :** दण्डाकारण्यके अन्तर्गत गोदावरी नदी के तट पर वन है। इसका वर्तमान नाम नासिकतीर्थ है।
2. **ऋष्यमूक :** कर्णाटक (मन्द्राज) प्रान्तान्तर्गत बिलारी से 30 कोश की दूरी पर अग्निगन्धि में किष्किन्धा आदि पर्वत हैं। किष्किन्धा आदि पर्वत हैं। किष्किन्धा से 4 कोश पर ऋष्यमूक पर्वत है। इसी पर्वत की तराई पर पम्पा सरोवर है।

चतुर्थ अध्याय

1. **पाकरपात्र :** पाठान्तर—'परिपात्र'।
2. **पुरुमढ़ि :** पाठान्तर—'पूरु मीढ़'।

सप्तम अध्याय

1. **स्त्रीस्वामिका :** जिस घर में स्त्री जातिका सम्पूर्ण अधिकार हो, उसको स्त्रीस्वामिका गृह कहते हैं। स्त्रीस्वामिका गृह में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न होने से सनातन धर्म के विरोध आचरण होने लगते हैं।
2. **पुक्कस :** वर्णाशङ्कर नीच जाति के लोग।
3. **शय्याकरण :** मतान्तर—श्री कल्कि राजाओं और

शय्याकरण गण के साथ भल्लाट नगर जीतने गए, या श्री कल्कि राजाओं के साथ शय्याकरण गण और भल्लाट नगर जीतने गए।

दशक अध्याय

1. **निजकुलक्षयं :** पाठान्तर—'द्विजकुलजयं'

एकादश अध्याय

1. **गंडकी :** गंगा में गिरने वाली उत्तर भारत व नेपाल की एक नही।
2. **गंडकी शिला :** शालिग्राम शिला; गंडकी में स्थित शिला।
3. **ब्रह्ममुखाच्छ्रुत :** पाठान्तर—'ब्रह्ममुखात्श्रुतः'
4. **अव्यभिचारिणी भक्ति :** अधिक समय पर्यन्त पर्यन्त सत्कारादिके साथ सेवा को अव्यभिचारिणी भक्ति कहते हैं।

द्वादश अध्याय

1. **लक्ष्मणस्य :** पाठान्तर—'मोक्ष्मणस्य'
2. **हैयङ्गवीन :** तत्काल दुहे हुए दूध से मक्खन निकालकर जो घी तैयार होता है उसे हैयङ्गवीन कहते हैं। कोई-कोई मक्खन को भी हैयङ्गवीन कहते हैं।

अष्टदश अध्याय

1. **श्लोक 21 व 22 :** इनके बारे में मतान्तर है।

ऊनविंश अध्याय

1. **मातान्तर :** कुछ विद्वानों की मान्यता है कि इस भाग में कोई शब्द छूट गया है।
2. **प्रसन्ना :** पाठान्तर—'प्रपन्नाः'

श्री कल्कि अवतार : कुछ अन्य विशिष्ठ उल्लेख

1. **कल्कि विष्णुयशा नाम द्विजः काल प्रचोदितः।**
उत्पत्स्यते महावीर्यो महा बुद्धि मराक्रमः॥ 93
सम्भूतः सम्भल ग्रामे ब्राह्मण बसथे शुभे।
(महात्मा वृतसम्पन्नः प्रजानां हितकृतनृप)
मनसा तस्य सर्वाणि वाहनान्यायुधानि च॥ 94
उपस्थास्यन्ति याोधाश्च शस्त्राणि कवाचानि च।
स धर्म विजयी राजा चक्रवर्ती भविष्यति॥ 95
स चेमें संकुलं लोंकं प्रसादमुप नेष्यति।
उत्थितो ब्राह्मणो दीप्तः क्षयान्तुकृदुदारधीः॥ 96
संक्षेपको हि सर्वस्य युगस्य परिवर्तकः।
स सर्वत्र गतान् क्षुद्रान् ब्राह्मणैः परिवारितः।
उत्सादयिष्यति तदा सर्वम्लेच्छगणान् द्विजः॥ 97

—महाभारत, वन पर्व, 190

युगान्त के अवसर पर महाकाल की प्रेरणा से सम्भल निवासी विष्णुयश नामक एक ब्राह्मण के घर में एक बालक प्रकट होगा जिसका नाम 'कल्की' होगा। वह महान बुद्धि एवं पराक्रम से सम्पन्न महात्मा, सदाचारी और प्रजा का हितैषी होगा। मन से चिन्तन करते ही उसके पास इच्छानुसार वाहन, अस्त्र-शस्त्र, योद्धा, कवच आदि उपस्थित हो जायेंगे। वह धर्मविजयी चक्रवर्ती राजा होगा। वह उदार बुद्धि तेजस्वी ब्राह्मण, दुःख से व्याप्त इस जगत को आनन्द प्रदान करेगा। कलियुग का अन्त करने के लिए उसका प्रादुर्भाव होगा। वही कलियुग का संहार करके नूतन युग का प्रवर्तक होगा। वह सर्वत्र ब्राह्मणों से घिरा हुआ विचरण करेगा और भूमंडल में फैले हुए नीच स्वभाव वाले सम्पूर्ण म्लेच्छों का संहार कर डालेगा।

2. **शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।**
भवने विष्णुयशसः कल्कि प्रादुर्भवष्यति॥ 18
अश्वमाशु गमारुह्य देवदत्तं जगत्पतिः।

असिनासासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः॥ 19
विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः।
नृपलिंगच्छदो दस्यून कोटिशो निहनिष्यतिः॥20
अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै।
वासुदेवां गरागातिपुण्यगन्धानिलस्प्रशाम्।
पौरजानपदानां वै हतेष्वखिलदस्यषु॥ 21
तेषां प्रजाविसर्गश्च स्थविष्ठः सम्भाविष्यति।
वासुदेवे भगवति सत्त्वमूर्तो हृदि स्थिति॥ 22
यदावतीर्णो भगवान् कल्किर्धर्मपतिर्हरिः।
कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिश्च सात्विकी॥23

—श्रीमद्भागवत, 12.2

जब अवतार के प्रकट होने का अवसर आयेगा उस समय शम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे। उनका हृदय बड़ा उदार एवं भक्तियुक्त होगा। उन्हीं के घर में कल्कि भगवान अवतार ग्रहण करेंगे। श्री भगवान् ही अष्ट सिद्धियों के तथा समस्त सद्गुणों के एकमात्र आश्रय हैं। समस्त चराचर जगत के वे ही रक्षक और स्वामी हैं। वे देवदत्त नामक शीघ्रगामी घोड़े पर सवार होकर दुष्टों को अपनी जगत प्रसिद्ध तलवार के घाट उतारेंगे। उनके रोम-रोम से तेज छिटकता होगा। अपने शीघ्रगामी वाहन पर पृथ्वी पर सर्वत्र विचरण करके राजाओं के वेष में प्रच्छन्न करोड़ों लुटेरों का संहार करेंगे। जब भगवान के अंगराग से सुगन्धित हुई वायु लोगों को स्पर्श करेगी तो उनका हृदय पवित्र हो जायेगा और पाप कर्मों का अन्त हो जायेगा। इससे सबके हृदय में भगवद्भक्ति का संचार होगा और वे सुखी तथा पूर्ण स्वस्थ होने लग जायेंगे। प्रजा के नयन-मनोहारी श्री हरि श्री धर्म के रक्षक और सब के स्वामी हैं। वे ही भगवान जब कल्कि रूप में प्रकट होंगे, तो कलियुग का अन्त होकर सत्युग (श्रेष्ठ युग) प्रारम्भ हो जायेगा और सब मनुष्य तथा उनकी संतान स्वमेव सत्त्वगुण युक्त बन जायेगी।

3. **तदास भगवान् कल्किः पुराण पुरुषोद्भवः।**
दिव्यं वाजिनमारुह्य खड्गी वर्मा च चर्मधक्॥
म्लेच्छास्तान् दैत्यभूतांश्च हत्त्वा योगं गमिाष्यति॥
षोडशाब्द सहस्त्राणि तद्द्येशाग्रि प्रतापित।
भस्मभूता कर्मभूमिर्निर्जीवा भाविता तदा॥
गते कलियुगे घौर गर्म भूमि पुनर्हरि।
कृत्त्वास्थलमयों रम्यां यज्ञैर्देवान् यजिष्यति॥
यज्ञभागमुपादाय देवास्ते बल संयुता।
यैवस्वतं मनुं गत्वा कथयिष्यन्ति कराणम्॥

—भविष्य पुराण

उस अवसर पर पुराण, पुरुष, परमेश्वर, 'कल्कि' प्रकट होंगे, जो दिव्य अश्व पर आरूढ़ और असि (तलवार), वर्म (कवच), चर्म (ढाल) आदि समस्त शस्त्रों से सुसज्जित होंगे। वे लाखों म्लेच्छों को उनके दुष्कर्मों के फलस्वरूप नष्ट कर देंगे और उसके पश्चात् 'महासमाधि' ग्रहण कर लेंगे। उनके प्राकट्य के पहले यह भूमि धर्म–कर्म रहित धर्म विमुख लोगों से भर जायेगी, पर भगवान् कल्कि के प्रभाव से वह फिर पुण्यस्थली बन जायेगी। जब कल्कि भगवान् धर्म रक्षार्थ महायज्ञ का अनुष्ठान करेंगे, तो देवगण अपना नियमित अंश प्राप्त करके शक्ति सम्पन्न हो जायेंगे और पृथ्वी निवासियों के कल्याण साधन में तत्पर होंगे।

4. **एवं कलौ सम्प्रवृत्ते सर्वे म्लेच्छमयो भवेत्।**
विप्रस्य विष्णुयशसः पुत्रः कल्किर्भविष्यति॥
नारायण कलांशश्च भगवान् बलिनां बली।
दीर्घेण करवालेन दीर्घ घोटक वाहनः॥
म्लेच्छशून्याश्च पृतिव्यां त्रिरातेण करिष्यति।
निर्म्लेच्छां वसुधां कृत्वा अनुर्धानां करिष्यति॥

—ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खण्ड

जब कलियुग की वृद्धि होकर समस्त जगत् म्लेच्छों (धर्म–द्रोहियों) से भर जायेगा, तब भगवान् नारायण के कलांश से विष्णु–

यश के गृह में 'कल्कि' का आविर्भाव होगा। वह बड़े-बड़े शक्तिशालियों की अपेक्षा भी अधिक शक्तिमान् होंगे। वे अपनी विशाल तलवार और विशाल अश्व द्वारा तीन रात्रि में अत्यन्त शीघ्र म्लेच्छों का मूलोच्छेदन कर डालेंगे और पृथ्वी के धर्मयुक्त हो जाने पर पुनः वैकुण्ठ को चले जायेंगे।

5. वेदांस्तु द्वापरे व्यासः कलेरन्ते पुनर्हरिः
कल्किस्वरूपी दुर्वत्तान् मार्गे स्थापयति प्रभु॥

—विष्णु पुराण, 3.2

भगवान् नारायण द्वापर में व्यासदेव के रूप में वेदों का विभाजन करके पुनः कलियुग के अन्त में 'कल्कि' के रूप में प्रकट होंगे और दुष्ट स्वभाव वालों को सत्मार्ग पर लगायेंगे।

श्रोते स्मार्ते च धर्मे विप्लवमत्यन्तमुपगते क्षीणाप्राये च कलावशेषजगत्स्रष्टु श्चराचरगुरोरादि मध्यान्तर रहितस्य ब्रह्ममयस्यात्मरूपिणो भगवतो वासुदेवस्यांशाश्शम्ब-लग्रामप्रधानब्राह्मणस्य विष्णुयशसो गहेऽष्टगुणर्द्धिसमन्वित कल्किरूपी जगत्यत्रावतीर्य सकल म्लेच्छदस्युदुष्टा चरणचेत-सामशेषाणामपरिच्छिन्न शक्तिमहात्म्य क्षयं करिष्यति स्वधर्मेषु चाखिलामेव संस्थापयिष्यति। 98। *—विष्णु पुराण, 4.24*

जब श्रौत (वैदिक) और स्मार्त धर्म की अत्यन्त हानि हो जायेगी और कलियुग प्रायः समाप्ति पर होगा, तभी 'शम्बल' ग्राम में निवास करने वाले विप्रश्रेष्ठ विष्णुयश के यहाँ सम्पूर्ण विश्व के कारण, चराचर के स्वामी, आदि-मध्य-अन्त से हीन, ब्रह्ममय एवं आत्मरूप भगवान् अपने अंश के अष्टगुण युक्त कल्कि रूप से अवतार धारण करेंगे। वही अपनी शक्ति और महिमा से सम्पन्न होकर सब म्लेच्छों,दस्युओं और दुष्ट और दुराचारियों को नष्ट कर सभी प्रजा को अपने-अपने धर्म में स्थापित करेंगे।

6. सर्वे कलियुगान्ते तु भविष्यन्ति च संकराः।
दस्यवः शीलहीनाश्च वेदो वाजसनेयकः॥
धर्मकञ्चुकसंव्रीता अधर्मरुचयस्तथा।

मानुषान् भक्षयिष्यन्ति म्लेच्छान् पार्थिव रूपिणः॥
कल्कि विष्णुयशः पुत्रो याज्ञवल्क्य पुरोहितः।
उत्सादयिष्यति म्लेच्छान् गृहीतास्त्र कृतायुधः॥
कल्कि रूपं परित्यज्य हरिः स्वर्गे गमिष्यति।
तथा कृतयुगं नाम पुण्वत् सम्भविष्यति॥

—अग्नि पुराण

कलियुग का अन्त होने के समय सब लोग वर्णसंकर हो जायेंगे। वे लुटेरे, शील रहित और वेद विरुद्ध आचरण करने वाले होंगे। उनकी रूचि धर्म की तरफ से हटकर अधर्म की तरफ चली जायेगी। म्लेच्छ राजागण मनुष्यों का बहुत बुरी तरह शोषण करेंगे। तब कल्कि भगवान् श्री विष्णुयश के यहाँ प्रकट होंगे और याज्ञवल्क्य उनके पुरोहित होंगे। वे शस्त्र लेकर अपनी शक्ति से म्लेच्छों को नष्ट कर डालेंगे। इसके पश्चात् जब पृथ्वी पर फिर से सतयुग स्थापित हो जायेगा तब भगवान् कल्कि पुनः अपने लोक को चले जायेंगे।

7. **कल्कि विष्णुश्र्च भाविता शम्भल ग्रामके पुनः।**
अश्वारूढोऽखिलान् लोकांस्तदाभीतान करिष्यति॥
एवं स भगवान व्यास धर्मसंर क्षणाय च।
दुष्टानां च वधार्थाय अवतारं करिष्यति॥

—गरुड़ पुराणा, 149

शम्भलग्राम में विष्णुयश के यहाँ भगवान् 'कल्कि' रूप में प्रकट होंगे। वे घोड़े पर चढ़कर समस्त संसार को प्रभावित करेंगे। जैसा भगवान् व्यास कह गये हैं उनका अवतार दुष्टों का वध करने के लिए होगा।

8. **कलेरन्ते तु संप्राप्ते कल्किनं ब्रह्मवादिनम्।**
अनुप्रवश्यि कुरुते वासुदेवो जगद्स्थितम॥

—विष्णुधर्मोतर पुराण

जब कलियुग समाप्त होने लगेगा तो सर्वव्यापी भगवान् पृथ्वी पर 'कल्कि' रूप में प्रकट होंगे और ईश्वरीय सत्ता (धर्म) की स्थापना करेंगे।

**9. दुराचार संसार संहारकारी भवत्यश्चार कृपाणप्रहारी।
मुरारिर्दशााकार धारीह कल्कि करोतु द्विषां ध्वंसनं वः स कल्कि ॥**

—श्रीमद्शंकराचार्य

भगवान् कल्कि, जो दश अवतारों में से हैं, हमको भीषण संसार–सागर से पार करें और कृपाण से दुष्टों का नाश करके हमारे कष्टों को मिटायें।

**10. तस्मिन काले निरा लोके पाप तमोदये।
उत्पत्स्य तेऽर्क संकाशः शिशुर्कर्किकुले द्विजः ॥
विष्णुर्भूभार शान्त्यर्था सोऽथ विष्णुयशः क्षिती।
चरिष्यत्यश्र्वमारुह्य म्लेच्छ संक्षय दीक्षितः ॥**

—क्षेमेन्द्र रचित दशावतार चरित्रं

उस अन्धकार युग में जब कि लोग पाप–कर्मों में लिप्त होंगे, विष्णुयश नामक प्रमुख ब्राह्मण के घर में सूर्य के समान तेजस्वी एक बालक जन्म लेगा। वह 'कल्कि' नाम वाला भगवान् का अवतार होगा और पृथ्वी को भारमुक्त करके सुखी बनायेगा। वह अश्व पर सवार होकर सर्वत्र दुष्टों का नाश करता हुआ फिरेगा। (क्षेमेन्द्र ने 'कल्कि' के लिये 'कर्कि' शब्द का प्रयोग किया है)।

**11. मुक्तिंगते महावीर : प्रतिवर्ष सहस्रकम्।
एकैको जायते कल्कि जैनमत विरोधकः ॥**

—जैन हरिवंश, 10.2.52

जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी के निर्वाण के पश्चात् प्रति एक हजार वर्ष पर एक 'कल्कि' प्रकट होता रहेगा, जो जैन मत का विरोधी होगा।

12. **Nine Times have Brahma,s wheels of lightning hurld.
His awful Presence o'er the alarmed world.
Nine times hath guilt, through all his giant frame. Convulsive trembled, as the mighty came.**

Nine times hath Suffering, Mercy spead in vain. But heaven shall burst her starry gates again! He comes! dread Brahma shakes the sunless sky, With murmuring wrath and thunders from on high. Heaven's fiery horse, beneath his warrior form, Paws the light clouds and gallops on the storm. Earth, and her trembling isles in oceans bed, Are shook, and Nature rocks beneath his tread. The tenth Avtar comes! at heaven's command, Shall Sarswati wave her hallow'd wand.
Come heavenly Powers! Prisneval peace restore Loves!-Mercy!-Wisdom!-rule for ever more.

—Thomas Cambell, Pleasure of Hope, 1799

परमात्मा के रथ के विद्युत चक्र नौ बार घूम चुके हैं और भयभीत संसार उसकी दारुण सत्ता का अनुभव कर चुका है। नौ बार जब वह शक्तिशाली सत्ता प्रकट हुई संसारव्यापि दुष्टता का विशालकाय ढाँचा काँप उठा और अस्त-व्यस्त हो गया। नौ बार उस सत्ता ने जो दया दिखाई निरर्थक सिद्ध हुई, पर अब वैकुण्ठ का नक्षत्र-मंडित द्वार फिर एक बार खुलने वाला है। 'वह' आ रहा है। उसके भय से आकाश हिलने लगता है, दिशाओं में सन्नाटा छा जाता है और एक महा भयंकर गर्जना ऊपर से आती है। वैकुण्ठ लोक के अग्निमय अश्व पर आरूढ़ होकर वह दैवी योद्धा (कल्कि) बादलों पर कदम रखता है और तूफानों में कूद पड़ता है। तब समस्त पृथ्वी और महासागरों में स्थित बड़े-बड़े टापू कम्पायमान हो उठेंगे और प्रकृति के शक्तिशाली चरण उनकी जड़ तक को हिला देंगे। दशवाँ अवतार महाकाल के आदेश से आ रहा है। भगवती सरस्वती अपने पवित्र हस्त-दंड से उसका अभिवादन करेगी। हे दिव्यलोकवासी सर्वशक्तिमान्! प्रकट होकर फिर से शान्ति को प्रतिष्ठित करो, जिससे संसार में एक बार पुनः प्रेम, करुणा और ज्ञान का राज्य स्थापित हो जाये।

SAMBHAL
District Moradabad
Uttar Pardesh (India)

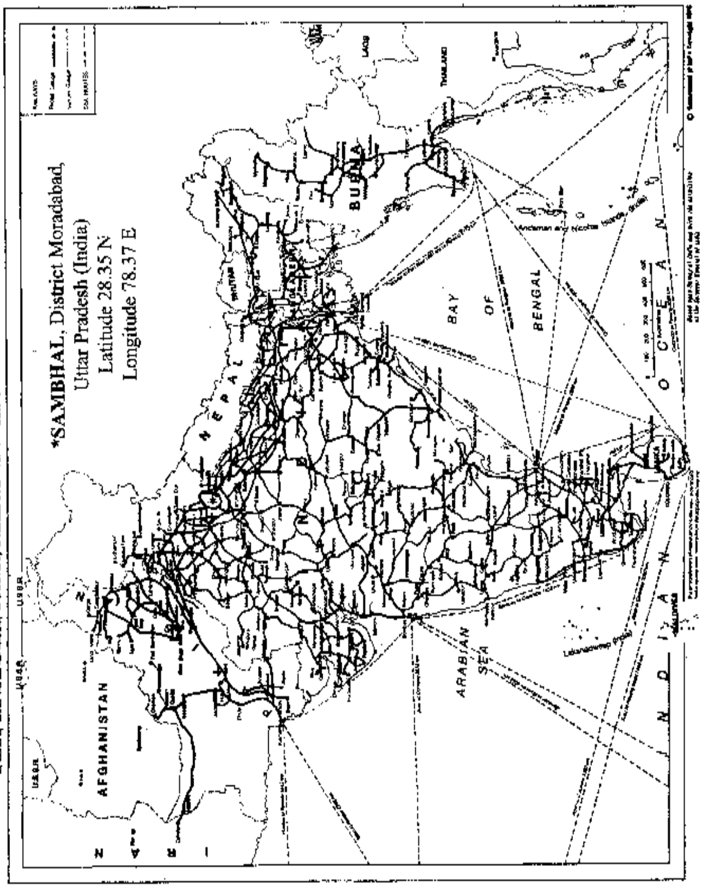

कलियुग में तीर्थ-शिरोमणि

भगवान श्री कल्कि की जन्मभूमि संभल

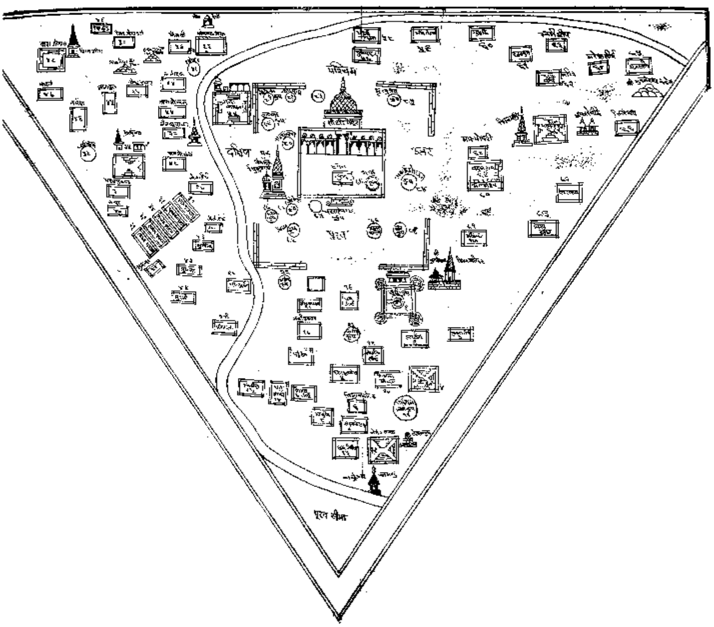

स्कंद पुराण के भूमि वाराह खंड में संभल महात्म्य का वर्णन विस्तार से मिलता है। जिसमें 68 तीर्थों व 19 कूपों का निर्माण विश्वकर्मा जी ने सृष्टि के आरंभ में ही कर दिया था।

चित्रावली के अन्तर्गत

बहुरंगे चित्र

1. भगवान श्री कल्कि मुख पृष्ठ
2. महर्षि वेदव्यास जी, भीष्म पितामह
3. श्री जगद्गुरू शृंगेरी, श्रीमद् भारती तीर्थ स्वामिभिः एवं शुभांशसा
4. श्री जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी एवं शुभांशसा
5. श्री जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी माधवाश्रम एवं शुभांशसा
6. श्री किशोर म. व्यास एवं शुभांशसा
7. श्री हनुमान जी
8. भगवान विष्णु के 24 अवतार
9. बाल श्री कल्कि
10. भगवान राम माँ वैष्णवी के साथ
11. श्री रामकृष्ण परमहंस, श्री कल्कि जी
12. कलियुग भगवान श्री कल्कि पद्मा जी सहित
13. श्री कल्कि बाल वाटिका के बालक व बालिकायें प्रेरणादायक हास्य लघु नाटिका में
14. श्री लक्ष्मी नारायण जी
15. भगवान श्री कल्कि
16. म्युजिक डायरेक्टर श्री रवि शंकर श्री कल्कि भजनामृत कैसेट का विमोचन करते हुए
17. श्री कल्कि विष्णु मन्दिर (रानी वाला), सम्भल
18. श्री हरि मन्दिर (सम्भल)
19. सूर्य कुण्ड (सम्भल)
20. यम तीर्थ (सम्भल)
21. मृत्यु तीर्थ (सम्भल)
22. कुरूक्षेत्र तीर्थ (सम्भल)
23. श्री प्रगटेश्वर महादेव मन्दिर (सम्भल)
24. अनुभवगम्य सत्युग तक बना रहने वाला श्री कल्कि विष्णु मन्दिर

भगवान् श्री कल्कि का 24वाँ अवतार

भगवान् ही सद्गुरु हैं। वे साधु-सज्जन पुरुषों के धर्म की रक्षा के लिए, उनके कर्म का बंधन काटकर उन्हें जन्म मृत्यु के चक्कर से छुड़ाने के लिए अवतार ग्रहण करते हैं।

अभी तो कलि का प्रथम चरण* है। कलि के पाँच सहस्र से कुछ ही अधिक वर्ष बीते हैं। इतने दिनों में मानवजाति का कितना मानसिक ह्रास एवं नैतिक पतन हो गया है, यह सर्वविदित है। यह स्थिति उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी।

यदा देवर्षयः सप्त मघासु विचरन्ति हि।
तदा प्रवृत्तस्तु कलिर्द्वादशाब्दशतात्मकः॥

परीक्षित्! जिस समय सप्तर्षि मघा नक्षत्रपर विचरण करते रहते हैं, उसी समय कलियुग का प्रारम्भ होता है। कलियुग की आयु देवताओं की वर्ष गणना से बारह सौ वर्षों की अर्थात् मनुष्यों की गणना के अनुसार चार लाख बत्तीस हजार वर्ष की है।***

ज्यों-ज्यों कलियुग आता जाएगा, त्यों-त्यों धर्म सत्य, पवित्रता, क्षमा, दया आयु बल और स्मरणशक्ति—सबाका उत्तरोत्तर लोप होता जाएगा। व्यावहारिक सत्य और ईमानदारी समाप्त हो जाएँगे; छल-कपट-पटु व्यक्ति ही साधु माने जाएँगे। घोर दम्भी और पाखण्डी ही सत्पुरुष समझ जाएगें। धर्म, तीर्थ, माता-पिता और गुरुजन उपेक्षित और तिरस्कृत होंगे। मनुष्य-जीवन का सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ होगा—उदर-भरण। धर्म का सेवन यश के लिए किया जाएगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्रों में जो शक्ति सम्पन्न होगा, वही शासन करेगा। उस समय के नीच राजा अत्यन्त दुष्ट एवं निष्ठुर होंगे। लोभी तो वे इतने होंगे कि उनमें और लुटेरों में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। उनसे भयभीत होकर प्रजा वनों ओर पर्वतों में छिपकर तरह-तरह के शाक, कंद-मूल, मांस, फल-फूल और बीज-गुठली आदि से अपनी क्षुधा मिटायेगी। समय पर वृष्टि नहीं होगी; वृक्ष फल नहीं देंगे। भयानक सूखा, भयानक सर्दी और भयानक गर्मी पड़ेगी। तब भी शासक कर-पर-कर लगाते जायेंगे। प्राणिमात्र धर्म की मर्यादा त्यागकर स्वच्छन्द मार्ग का अनुसरण करेंगे।

मनुष्यों की परमाणु बीसवर्ष**की हो जाएगी।

कलि के प्रभाव से प्राणियों के शरीर छोटे-छोटे, क्षीण और रोगग्रस्त होने लगेंगे। वेदमार्ग प्रायः मिट जाएगा। राजा-महाराजा, डाकू-लुटेरों के समान हो जाएँगे। वानप्रस्थी, संन्यासी आदि विरक्त-जीवन व्यतीत करने वाले गृहस्थी की भाँति जीवन व्यतीत करने लगेंगे। मनुष्यों का स्वभाव गधों—जैसा दुस्सह, केवल गृहस्थी का भार ढोनेवाला हो जाएगा। लोग विषयी हो जाएँगे। धर्म-कर्म का लेश भी नहीं रहेगा। लोग एक-दूसरे को लूटेंगे और मारेंगे। मनुष्य जपरहित, नास्तिक और चोर होंगे।

पुत्रः पितृवधं कृत्वा पिता पुत्रवधं तथा।
निरुद्वेगो बृहद्वादी न निन्दामुपलप्स्यते॥
म्लेच्छीभूतं जगत् सर्वं भविष्यति न संशयः।
हस्तो हस्तं परिमुषेद् युगान्ते समुपस्थिते॥

(महा., वन. 190128, 38)

'पुत्र पिता का और पिता पुत्र का वध करके भी उद्विग्न नहीं होंगे। अपनी प्रशंसा के लिए लोग बड़ी-बड़ी बातें बनायेंगे, किंतु समाज में उनकी निन्दा नहीं होगी। उस समय सारा जगत् म्लेच्छ हो जाएगा-इसमें संशय नहीं एक हाथ दूसरे हाथ को लूटेगा-सगा भाई भी भाई के धन को हड़प लेगा।'

अधर्म बढ़ेगा, धर्म विदा हो जायगा। स्त्रियाँ अपने पतियों की सेवा छोड़ देंगी। वे कठोर स्वभाववाली और सदा कटुवादिनी होंगी। वे पति की आज्ञा में नहीं रहेंगी। पति को माँगने पर भी कहीं अन्न-जल या ठहरने के लिए स्थान नहीं मिलेगा। सर्वत्र पाप-पीड़ा, दुःख-दरिद्रय, क्लेश-अनीति, अनाचार और हाहाकार व्याप्त हो जाएँगे।

उस समय सम्भलग्राम में विष्णुयशा नामक एक अत्यन्त पवित्र, सदाचारी एवं श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे। वे सरल एवं उदार होंगे। वे श्रीभगवान् के अत्यन्त अनुरागी भक्त होंगे। उन्हीं भाग्यशाली ब्राह्मण विष्णुयशा के यहाँ समस्त सद्गुणों के एकमात्र आश्रय, निखिल सृष्टि के सर्जक, पालक एवं संहारक परब्रह्म परमेश्वर भगवान् कल्कि के रूप में अवतरित होंगे। उनके रोम-रोम से अद्भुत् तेजोमयी किरणें छिटकती रहेगी। वे महान् बुद्धि एवं पराक्रम से सम्पन्न, महात्मा, सदाचारी तथा सम्पूर्ण

प्रजा के सुभैषी होंगे।

मनसा तस्य सर्वाणि वाहनान्ययुधानि च॥
उपस्थास्यन्ति योधाश्च शस्त्राणि कवचानि च।
स धर्मविजयी राजा चक्रवर्ती भविष्यति॥
स चेमं संकुलं लोकं प्रसादमुपनेष्यति।
उत्थितो ब्राह्मणो दीप्तः क्षयान्तकृदुदारधीः॥

(महा., वन. १९०।९४-९६)

(विष्णुयशाके बालक के) चिन्तन करते ही उसके पास इच्छानुसार वाहन, अस्त्र-शस्त्र, योद्धा और कवच उपस्थ्ज्ञित हो जाएँगे। वह धर्मविजयी चक्रवर्ती राजा होगा। वह उदारबुद्धि, तेजस्वी ब्राह्मण दुःख से व्याप्त हुए इस जगत को आनन्द प्रदान करेगा। कलियुग का अन्त करने के लिए ही उसका प्रादुर्भाव होगा।

भगवान् शंकर स्वयं कल्कि भगवान् को शस्त्रास्त्र की शिक्षा देंगे और भगवान् परशुराम उनके वेदोपदेष्टा होंगे।

वे देवदत्त नामक शीघ्रगामी अश्व पर आरूढ़ होकर राजा के वेष में छिपकर रहने वाले, पृथ्वी में सर्वत्र फैले हुए दस्युओं एवं नीच स्वभाव वाले सम्पूर्ण म्लेच्छों का संहार कर डालेंगे। वे परम पुण्यमय भगवान् कल्कि भूमण्डल के सम्पूर्ण पातकियों, दुराचारियों एवं दुष्टों का विनाश कर अश्वमेघ नामक महान यज्ञ करेंगे ओर उस यज्ञ में सम्पूर्ण पृथ्वी ब्राह्मणों को दान में देंगे।

भगवान् कल्कि दस्युवध में सदा तत्पर रहेंगे। वे जिन-जिन देशों पर विजय प्राप्त करेंगे, उन-उन देशों में काले मृगचर्म, शक्ति, त्रिशूल तथा अन्य अस्त्र-शस्त्रों की स्थापना करेंगे। वहाँ उत्तमोत्तम ब्राह्मण उनका श्रद्धा-भक्तिपूर्ण स्तवन करेंगे और प्रभु कल्कि उन ब्राह्मणों का यथोचित सत्कार करेंगे।

वीरवर श्री कल्कि भगवान् के कर कमलों से पृथ्वी के सम्पूर्ण दस्युओं का विनाश और अधर्म का नाश हो जाएगा। फिर स्वाभाविक ही धर्म का उत्थान प्रारम्भ होगा।

स्थापयित्वा च मर्यादाः स्वयम्भुविहिताः शुभाः।
वनं पुण्ययशः कर्म रमणीयं प्रवेक्ष्यति॥

तत्छीलमनुवर्त्स्यन्ति मनुष्या लोकवासिनः।

(महा., वन. १९१/२-३)

'उनका यश तथा कर्म-सभी परम पावन होंगे। वे ब्रह्माजी की चलाई हुई मंगलमयी मर्यादाओं की स्थापना करके (तपस्या के लिए) रमणीय वन में प्रवेश करेंगे। फिर इस जगत् के निवासी मनुष्य उनके शील-स्वभाव का अनुकरण करेंगे।'

मंगलमय भगवान् कल्कि के अंगराग को स्पर्शकर बहनेवाली वायु ग्राम, नगर, जनपद एवं देश की सारी प्रजा के मन में पवित्रता के भाव भर देगी। उनमें सहज सात्विकता उदित हो जाएगी। फिर उनकी संतति पूर्ववत् हृष्ट-पुष्ट, दीर्घायु एवं धर्मपरायण होने लगेगी।

इस प्रकार सर्वभूतात्मा सर्वेश्ववर भगवान् कल्कि के अवतरित होने पर पृथ्वी पर पुनः सत्युग प्रतिष्ठित होगा।

एवं तु प्रथमे पादे कलेः कृष्णविनिन्दकाः।
द्वितीये तन्नामहीनास्तृतीये वर्ण संङ्कराः।
एकवर्णाश्चतुर्थे च विस्मृताच्युतसत्क्रियाः॥

- श्रीकल्कि पुराण 1.1.37-38

कलियुग के पहले चरण में मनुष्य श्रीकृष्ण भगवान् की निंदा करेंगे, उन्हें अपना सा मनुष्य बतायेंगे। दूसरे चरण में कृष्ण का नाम जपना छोड़ देंगे। तीसरे में वर्ण संकर होंगे और चौथे में एक वर्ण होना चाहेंगे। भगवान् और सत्कर्म को भूल जाएँगे।

**सरकार के गर्भ निरोधक कानून का फायदा उठाकर जो अजन्मे बच्चों के गर्भपात करवाए जा रहे हैं यदि इन हत्याओं को जोड़कर औसत मृत्यु दर निकाली जाए तो कलियुगी मानव की औसत आयु बीस वर्ष से कम ही है।

***यदि कोई व्यक्ति अपने व्यापार के कार्य के लिए 10 दिन को मुम्बई गया है और वहाँ पर 6 दिन में उसका कार्य पूरा हो जाता है तो 6 दिन बाद घर लौटने पर क्या उसकी पत्नी यह कहकर दरवाजा नहीं खोलेगी कि आप तो 10 दिन का का कह कर गए थे जल्दी क्यों आ गए?

इसी प्रकार भगवान को भी धर्म और भक्त प्यारे हैं वह उनकी रक्षा के लिए समय की सीमा में नहीं बंधे हैं आज जबकि कलियुग के चौथे चरण के सभी लक्षण पूरे हो चुके है तो भगवान श्री कल्कि का जल्दी आना स्वाभाविक है।

तुम मेरा कहा मानों तपस्वी हो वैभवशाली रहोगे बस कल्कि जी से संबन्ध (link) रखो

संकलनकर्ता—**अंकुर गोयल (जेमोलोजिस्ट)**

1989 बैच के बालक बालिकाएं (अब जिनके बालिकाएं बालक हैं) एवम् वहाँ उपस्थित कुल 98 सदस्यों को मामा जी ने सम्बोधित करते हुए एक गडरिया और राजा के नाटक कि प्रस्तुतिकरण व आपबीतियों द्वारा समझाने का प्रयास किया कि उनका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। वह इस नॉवल्टी वाले मकान में मात्र 23 रुपये महीने में रहते थे। आठवीं कक्षा में उनके पिताजी का स्वर्गवास हुआ। कॉलेज की त्रिमासिक फीस मात्र 45 रुपये वह चांदनी चौक से अपने नाना जी की दुकान से लाते थे। वह बचपन से भगवान श्री कृष्ण, श्री हनुमान जी, श्री दुर्गा जी, की उपासना करते थे। जैसे ही उन्होंने भगवान श्री कल्कि रूपी गंगाजल अपनी पूजा में मिलाया अर्थात उनका सम्बंध (Link) भगवान श्री कल्कि जी से जुड़ा। उनके जीवन की टेढ़ी डगर और टेढ़ी हुई लेकिन बस कमाल यह हुआ कि उन्हें स्वप्नानुभवों द्वारा रास्ता मिलना शुरु हो गया।

बचपन में जो वह कल्पना करते थे वह अब उन्हें भूल चुके थे। आश्चर्य है कि उन्हें अब उनके लिए भी रास्ता मिलने लगा और वह साकार होने लगी।

मना तेरी बन जाएगी बनाले कल्कि नाम से,
वे बातें सूझेंगी तुझे जो नहीं सुझाई देती हैं।

गुरुवर लक्ष्मीनाराण जी (2 इन 1 भजन न.13)

सो उनकी स्थिति तो एक ऐसे बौराए हुए व्यक्ति की तरह हो गई मानो सेर के लोटे में कई अदृश्य शक्तियाँ सवा सेर पदार्थ उढ़ेल रही हैं। कॉलेज में वो प्रथम सत्र एवम् द्वितीय सत्र में प्रथम आए और उन्हें केन्द्रीय मंत्री वाई.बी.चौहान एवम् श्री श्याम नाथ गुप्ता से पुरस्कार मिले। 9 भाई बहनों के परिवार में जब नानाजी से 45 रुपये फीस के लाते थे तो घर पर ट्यूशन लगाना तो उनके लिये ख्वाब था।

बी.ए. के बाद नौकरी की तलाश की लेकिन श्री कल्कि जी से सम्बंध (Link) ने शादी की तरह उनका हाथ एक सज्जन के हाथ में

अनुभव में पकड़ाया। आगे चलकर उनके साथ उनकी पार्टनरशिप हुई और वही काम आज आप देख रहे हैं। जैसे कॉमर्स में उन्होंने पढ़ा था कि बैंकों में रुपया उद्यमियों के लिए होता है ऐसे में श्री कल्कि जी के सम्बंध (Link)ने उन्हें 1967 में बैंक से जो रुपया दिलवाना शुरु किया था वह आज दिन तक मिल रहा है। उन्हें यह मकान मजबूरन 1972 में छोड़ना पड़ा।

श्री कल्कि जी का लिंक

43/1 राजपुर रोड वाले मकान में ले गया, इस पर उनकी माता जी और पाँचों भाई राजपुर रोड जाने को तैयार नहीं हुए कि जंगल में कौन जाए दूसरा कारण 23 रुपये से एकदम 2100 रुपये महीना मकान का किराया।

श्री कल्कि जी के सम्बंध (Link)ने उन्हें केन्द्र व दिल्ली सरकार से 11 निर्यात पुरस्कार दिलवाए जो आज भी आहूजा रेडियोस के अलावा किसी भी पी.ए. सिस्टम निर्माता के पास नहीं है। साथियों जो जो स्वप्न अनुभव व चमत्कार उन्हें हो रहे थे वह वो रामकृष्ण परमहंस के अवतार गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी द्वारा बताए तरीके से लिखते गए। कॉलेज लाईफ व इंडस्ट्री से आठ वर्ष वह प्रायः प्रतिदिन अजमेरी गेट श्री गुरु जी के निवास पर सत्संग करने जाते थे और उनसे अनुभव के अर्थ भी पूछ कर लिख लेते थे।

चमत्कारी श्री कल्कि जी ने उन्हे व उनकी गोलोकवासिनी सरला बहन जी (बाबा छाप तम्बाकू—रजनीगंधा—तुलसी) को क्या क्या दिया वो गूंगे का गुण है।

उन्होंने आप सब को 1989 में श्री कल्कि बाल वाटिका के रूप में इसलिये इकट्ठा किया कि उन्हें जो दोनो गुरुवर श्री हनुमान जी व श्री रामकृष्ण परमहंस द्वारा मिला है उसे वह पाँच साल से ग्यारह वर्ष तक के बच्चों को समझाकर व लिखित रूप में दे दें, **पता नहीं काल भगवान कब गला दबा दें और यह सारे रहस्य (चमत्कार) रजिस्टर के पन्नों में ही पड़े रह जाएंगे।**

सो साथियों आप सब उन से बहुत अच्छी स्थिति में हैं। आप भाग्यवान

हैं। जब उन्हें सोचने मात्र से भी असम्भव सम्भव में मिला, तो आप सब जो चाहते हैं आप सब को श्री कल्कि जी से नाता (Link) बहुत कुछ दे सकता है। आपकी जानकारी के लिये भगवान विष्णु का सिर्फ यही ऐसा (कल्कि) अवतार है जिसके प्रकट होने से पहले उसकी पूजा हो रही है और मूर्तियाँ लग रही हैं। यह अवतार अदले का बदले वाला (Tit for tat) है। यह अवतार भूमि भार उतारने के लिए गऊ, विप्र, धर्म की रक्षा के लिए है। यह उन पर सुख बरसाऐंगे जो इनको मानेंगे। जब तुम इन्हें मानोगे, यह तुम्हारे साथ हैं। वैभवता पाने पर जब आप इन्हें भूल जाएंगे तब यह भी तुम्हें भूल जाएंगे। ऐसा मेरे साथ कई बार हुआ।

निष्कर्ष : मामाजी की बात पर विश्वास करो वह आपकी झूठी तारीफ नहीं कर रहे हैं। आप भाग्यवान हैं कल्कि जी से सम्बंध (Link) बनाए रखो, हर अवस्था में प्रतिदिन महामन्त्र **जय कल्कि जय जगत्पते। पद्मापति जय रमापते॥** की 2 घन्टे नहीं तो कम से कम 20 माला– हवन–साहित्य पाठ अवश्य करें। भगवान श्री कल्कि जी को इस समय प्रचार की आवश्यकता है। विश्वास रखते हुए उनके प्रचार के काम में अधिक से अधिक सहयोग दो आप भी मामाजी की तरह निहाल हो जाओगे। उन्होंने आप सब को 1989 में श्री कल्कि बाल वाटिका के रूप में इसलिये इकट्ठा किया कि उन्हें जो दोनो गुरुवर श्री हनुमान जी व श्री रामकृष्ण परमहंस द्वारा मिला है उसे वह पाँच साल से ग्यारह वर्ष तक के बच्चों को समझाकर व लिखित रूप में दे दें, **पता नहीं काल भगवान कब गला दबा दें और यह सारे रहस्य (चमत्कार) रजिस्टर के पन्नों में ही पड़े रह जाएंगे।**

असंभव को संभव कराने का स्त्रोत

कल्कि जी के शुभ/धर्म का खजाना

आपकी जो भी आमदनी, बिक्री (प्रतिदिन की सेल्स कम हो, मुनाफा ठीक हो तो) हो उसका 1 प्रतिशत (अर्थात् 100 रूपए में से 1 रूपया अधिकतम 100 रूपए में से 10 रू तक) भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें। भगवान श्री कल्कि की पूजा, हवन करने का सारा खर्चा उस खजाने में से लें। जैसे—पोशाक, फूल, घी, जोत, प्रशाद, माला, आसन इत्यादि। भगवान श्री कल्कि के विविध कार्यों के लिए भी (साहित्य, कीर्तन, भोजन, गऊ, ब्राह्मणों, मंदिर प्रभु के कार्य के लिए धर्म के कार्यों व मंदिर जाने का किराया) इस शुभ के खजाने से लें। अपने जीवन की परेशानियों से निकलने के लिए स्वपनानुभव में यदि दैवीय अथवा पितृ शक्तियाँ आपसे कुछ भी भुगतान माँगती हैं अथवा अपनी परेशानियों से निकलने के लिए किसी भी देवी देवता के निमित्त कुछ भाग निकालना है या उन्हें प्रसाद दक्षिणा चढ़ानी है तो वह सब खर्च कल्कि जी के शुभ के खजाने से ही होगा।

99 रू से 90 रू तक का परिवार का खजाना इसे घर के आवश्यक खर्चे, व्यापार में पुनः लगाने के लिए, भविष्य के खर्चों के लिए, समाज सेवा में लगाने के लिए रखें। समाज सेवा के लिए स्वेच्छा से आप धन खर्च करके कृप्या फल की कामना न करें

कुपात्र* दाने भवे दरिद्री, दरिद्र प्रभावेण करोति पापम्
पाप प्रभावेण भवेत कुबुद्धि सदा दरिद्री पुनरेव रोगी

— *धर्म का रूपया समाज सेवा (गरीबों की मदद, अनाथालाय, अंधविद्याालय, बाढ़पीढ़ितों की मदद बीमारों, हस्पतालों, गरीब विद्यार्थियों, आदि की मदद) में लगाने से मनुष्य दरिद्र होता है

अगर सामाजिक कार्यों में रूपया लगााते हुए फल की इच्छा रखी तो पशु, पक्षी योनी में जिन्हें वैभव मिलते हैं आपको भी वही वैभव मिलेंगे। जैसे कुत्ते का एयरकंडीशन कार में घूमना, तोते का सोने के पिंजरे में घर के आंगन में टंगे रहना आदि। इसलिये बन पड़े तो समाज की सहायता को दान न समझें न उसका फल चाहें।

भगवान् श्री कल्कि के प्रमुख दिव्य मन्दिर

28 वें कल्प के कलियुग में महाविष्णु का (24 अवतारों में अंतिम, प्रमुख में दसवाँ) चमत्कारी अवतार भगवान श्री कल्कि जिनकी प्रगट होने व पराधाम गमन से पहले भाग्यवान राजा रानियों द्वारा सिद्धपीठों व शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और पूजा हो रही है—दिव्य चैनल

इस सत्य का रहस्योद्‌घाटन शिव पुराण में इस प्रकार है—सत्युग में ध्यान से, द्वापर में यज्ञ करने से ज्ञान की सिद्धि होती है, परंतु कलियुग में प्रतिमा (भगवद् विग्रह / भगवान की मूर्ति) पूजन से ज्ञान लाभ होता है। —संक्षिप्त शिवपुराण, विद्येश्वर संहिता, पृष्ठ सं.–39 —गीताप्रेस, गोरखपुर

दानघाटी मुखारविंद मंदिर, गिरिराज जी, गोवर्धन

भारतवर्ष का एकमात्र ऐसा मंदिर जो सातों दिन 24 घंटे खुला रहता है। यहाँ द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) श्री गिरिराज जी पर्वत को उठाने वाले कान्हा पर दुग्ध चढ़ाकर परिक्रमा शुरू करते हैं और यहीं पूरी करते हैं। वहीं कान्हा ने अपने बराबर मात्र डेढ़ फुट की दूरी पर बलराम-कृष्ण की तरह कमर से कमर मिलाए कल्कि जी को बुलाया है जहाँ कल्कि-कृष्ण आने वाले भक्तों की कामना पूरी कर रहे हैं।

श्री कल्कि मंदिर, श्री गौरीशंकर मंदिर, लाल किले के सामने, दिल्ली-6

सवाई राजा जय सिंह की तरह औरंगजेब के सिपासलाहकार आपा गंगाधर ने लाल किले के सामने यमुना नदी के आर पार बसे शहरों में प्राचीन गौरी शंकर मंदिर का स्थान प्राप्त किया। लगभग 400 वर्ष पुराने इसी प्राचीन मन्दिर जहाँ 800 वर्ष पुराना पीपल (इसमें सभी देवी देवताओं का वास होता है) का वृक्ष है। में ग्यारह वर्षों के लंबे इंतजार के बाद सन् 2008 में भगवान

श्री कल्कि की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा से पहले ही न केवल भगवान के प्रचार कार्यों को प्रगति मिली अपितु इस दौरान असंभव कार्य भी संभव हुए। अब ऐसा प्रतीत होता नजर आता है कि भगवान श्री कल्कि की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैलना शुरू हो चुका है। विश्व में जो गम्भीर परिस्थितियाँ चल रही है और भारतवर्ष में जो उथल-पुथल हो रही है, उसको देखते हुये दुनिया के लोग मानने लगे हैं कि अब मानवता की रक्षा स्वयं भगवान के आए बिना कोई नहीं कर सकता।

कनॉट प्लेस एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में 20 जून, 2011 को एक ही दिन एक ही नक्षत्र में भगवान श्री हनुमान जी के दो सिद्ध पीठों में श्री कल्कि की दो मूर्तियों की स्थापना

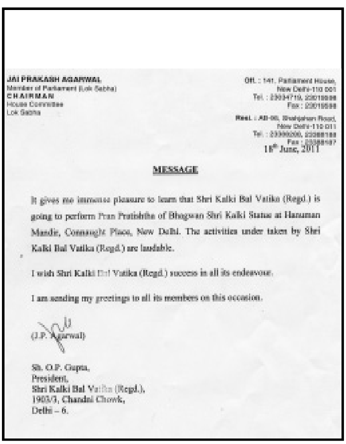

JAI PRAKASH AGARWAL
Member of Parliament (Lok Sabha)
CHAIRMAN
House Committee
Lok Sabha

Off. : 141, Parliament House,
New Delhi-110 001
Tel. : 23034719, 23019698
Fax : 23019698

Resi. : AB-66, Shahjahan Road,
New Delhi-110 011
Tel. : 23386200, 23388188
Fax : 23388187

18th June, 2011

MESSAGE

It gives me immense pleasure to learn that Shri Kalki Bal Vatika (Regd.) is going to perform Pran Pratishtha of Bhagwan Shri Kalki Statue at Hanuman Mandir, Connaught Place, New Delhi. The activities under taken by Shri Kalki Bal Vatika (Regd.) are laudable.

I wish Shri Kalki Bal Vatika (Regd.) success in all its endeavour.

I am sending my greetings to all its members on this occasion.

(J.P. Agarwal)

Sh. O.P. Gupta,
President,
Shri Kalki Bal Vatika (Regd.),
1903/3, Chandni Chowk,
Delhi – 6.

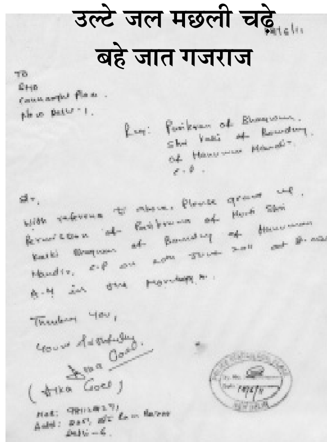

To
Connaught Place
New Delhi-1.

Thanking you,
Yours faithfully

श्री कल्कि मंदिर, बड़े हनुमान जी, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1

दिल्ली में श्री हनुमान जी का यह मंदिर बड़े हनुमान जी के नाम से जाना जाता है। मंगलवार व शनिवार को यहाँ विशेष भीड़ होती है। प्रत्येक मंगलवार को लगभग 60 हजार दर्शनार्थी दिल्ली व दिल्ली के बाहर से यहाँ दर्शन करने आते हैं। मंगलवार को यहाँ वाहनों

की लगभग 5 कि.मी. लंबी कतार देखने को मिलती है।

श्री कल्कि मंदिर, श्री हनुमान मंदिर, किरोड़ीमल कॉलेज परिसर, छात्रा मार्ग, दिल्ली-7

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना यहाँ नई पीढ़ी को निर्भीकता से आगे बढ़ते रहने का संदेश देती है।

कालीघाट मंदिर, कोलकाता (विश्व प्रसिद्ध सिद्ध पीठ जहाँ माँ सती की उंगुली गिरी थी।)

राणी सती मंदिर, काकुड़ गाची कोलकाता

श्री कल्कि मन्दिर, काली मन्दिर, ए जी ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता-64

ठाकुर रामकृष्ण परमहंस की तपोभूमि कोलकाता में भगवान श्री कल्कि को मानकर नहीं जानकर पढ़े लिखे कुलीन परिवारों ने भगवान श्री कल्कि द्वारा दिए गए स्वप्न जागृत वाणी अनुभवों व उनके उपचारों (दान, पुण्य, शुभकर्मों) की वजह से गंगा जी के शहर कोलकाता के माँ काली के सिद्ध पीठ व माँ राणी सती के मंदिर, आलीशान इलाके साल्ट लेक, में श्री कल्कि जी की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करवाई जो कुलीन परिवारों को रास्ता देते हुए उनकी मनोकामनाएँ पूरी कर रहे हैं।

श्री कल्कि मन्दिर, योगमाया मन्दिर, महरौली, नई दिल्ली-30

औरंगजेब के योगमाया मन्दिर विध्वंस करने के आदेश देने के बाद—उसे स्वप्न में एक कन्या दिखी जो बोली यदि तू अपने निर्णय पर अटल रहा तो मैं तुझे तहस-नहस कर दूँगी। तब अत्यन्त घबराए हुए औरंगजेब ने अपने दरबारियों से सलाह मशविरा करके मन्दिर को उजाड़ने का निर्णय वापिस ले लिया और एक पंखा योगमाया मन्दिर में विजय की कामना के साथ चढ़ाया। ऐसा करने से उसका मनोरथ भी सफल हुआ। तभी से आजतक

विभिन्न राज्यों से पंखा चढ़ाने की परम्परा यहाँ पर चली आ रही है।—

इसी सिद्धपीठ के लिए श्री कल्कि भगवान की मूर्ति का आर्डर देने के बाद जब जयपुर से मूर्ति लेने गए तो सब मूर्ति की गर्दन टेढ़ी देखकर सकते (अचम्भे) में आ गए लेकिन जैसे ही निगाह चेहरे पर लगाई तो लगा कि मूर्ति हंसी, वह मुस्कुराए और हंसे। टेढ़ी गर्दन का रहस्य स्थापना के बाद खुला कि यहाँ दोनों भाई-बहन एक दूसरे को देख रहे हैं। आज भी सीधे नहीं टेढ़े खड़े होकर आप मूर्ति की सौम्य हँसी का आनन्द ले सकते हैं। (पढें लेख योगमायाः दिव्य शक्तिपीठ-प्रेरणादायक कहानियाँ पृष्ठ-50)

श्री कल्कि मन्दिर, श्री कालका जी मन्दिर, नई दिल्ली-65

महादैत्य रक्तबीज के संहार के बाद महाकाली/चामुण्डे के क्रोध को शान्त करने के लिए भगवान शंकर तथा सभी देवताओं ने आद्याशक्ति माँ काली की स्तुति की, इससे प्रसन्न होकर भगवती, कल्याणी माँ काली ने उन्हें मनोवांछित वर दिया और कहा, ''जो भी भक्त इस स्थान पर भक्ति भाव और श्रद्धा से मेरी पूजा अर्चना करेगा उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होगी'' तभी से यह स्थान मनोकामना सिद्धपीठ के नाम से भी विख्यात है। यहीं लोकड़े बाबा के बराबर 2004 में भगवान श्री कल्कि विराजे उसके उपरांत माँ ने अपना चोला बदला(पुनः शक्ति अर्जित की)

श्री कल्कि मन्दिर, श्री लक्ष्मीनारायण संस्थान, बसंत विहार नई दिल्ली-57

एक ऐसा अनुभवगम्य दिव्य मंदिर जिसे भगवान श्री कल्कि ने प्रत्यक्ष अनुभव दे देकर बनवाया। किस प्रकार मात्र 101 रुपए से शुरुआत डी.डी.ए से संपर्क करके हुई और आज यह मंदिर

भाग्यवानों द्वारा हजारों, लाखो, करोड़ों की सीमा को लांघ कर अरबों की सीमा में आ खड़ा हुआ है। (पढ़ें लेख- अनुभवगम्य श्री कल्कि मंदिर प्रेरणादायक कहानियाँ पृ. 87)

ईस्कान टैम्पल, वैदिक एक्स्पो, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-65

श्री कृष्ण-राधिका, निमाई-निताई की सात्विक भक्ति की प्राचीन वैदिक ज्योति जगाये भविष्य का पल्ला पकड़े हुए दूरदर्शिता में भी ईस्कान टैम्पल औरों से आगे रहा। इसने वैदिक एक्सपो में दूसरी मंजिल पर भगवान श्री कल्कि की 5 फुट की मूर्ति दुष्टों का हनन करते हुए लगाई है—जो केशव के कल्कि रूप में अश्व पर चढ़कर आने का संकेत संजोए हुए है।

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर (रानी वाला), पूर्वी कोट, सम्भल-244302

महारानी अहिल्या बाई द्वारा निर्मित श्री कल्कि पदमा मंदिर जहाँ दक्षिण भारत के मन्दिरों की तरह मूर्ति का स्पर्श वर्जित है। स्कन्द पुराण के भूमि वाराह खण्ड में सम्भल (भगवान श्री कल्कि की जन्म भूमि) का वर्णन विस्तार से मिलता है, जिसमें 68तीर्थों व 19 कूपों का निर्माण विश्वकर्मा ने सृष्टि के आरम्भ में किया है। इस मन्दिर की शिखर में तोते रहते है जिनकी चहल-पहल भी भक्तों को मोहित करती है।

श्री कल्कि जी महाराज मन्दिर, गुप्ता कॉलेज, जयपुर (राजस्थान)

सवाई राजा जय सिंह ने 280 वर्ष पूर्व जयपुर शहर के अन्य मंदिरो के साथ साथ श्री कल्कि महाराज मन्दिर एवं श्री कल्कि अश्व मन्दिर की नींव रखी। वह ''जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते'' महामंत्र का जाप करते थे और उनका मानना था कि जो भी भगवान श्री कल्कि को प्रत्येक 3 घण्टे के

बाद नमस्कार करेगा (तरीका इसी लेखनी के आखिरी पृष्ठ पर देखें) इससे उसकी सभी मनोकामनायें पूरी होंगी। श्री कल्कि अश्व मन्दिर में अश्व के दाएँ पैर में घाव/गड्ढा सा है जो स्वतः भर रहा है। लोगों की ऐसी मान्यता है कि जब यह गड्ढा भर जाएगा तब भगवान श्री कल्कि प्रकट हो जाएंगे।—आजतक न्यूज चैनल- जुलाई 2008

श्री कल्कि मन्दिर, अमृत परिसर शिवगंगा पुरम, बृजघाट, गढ़ गंगा, उत्तर प्रदेश

ब्रजघाट पर पतितपावनी, ममतामयी, ज्ञानमयी कृपालु गंगा के तट पर करोड़ों की सम्पदा के बीच अमृत परिसर में अनुभवगम्य श्री कल्कि भगवान की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा 15 जुलाई, 2007 को हुई।

शिव मंदिर (प्राचीन पांडव कालीन), मादीपुर, वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

पांडवों के समय का प्राचीन मंदिर जहाँ उनकी माता माद्री अपने बालकों के साथ शिव पूजा के लिए आती थीं। उन्हीं के नाम पर इस गाँव का नाम मादीपुर पड़ा। मंदिर की दिव्यता एवं सिद्धता का प्रमाण भक्तों के स्पर्श से मूर्ति (शिवलिंग) के बढ़ती ऊँचाई से मिलता है जबकि अन्य मंदिरों में शिवलिंग भक्तों के स्पर्श अथवा रगड़ने से घिसता है। ऐसे दिव्य चमत्कारी मंदिर में भगवान श्री कल्कि हजारों भक्तों को प्रतिदिन सुगमता से दर्शन देने के लिए विराजमान हुए है।

श्री कल्कि मंदिर, श्री रघुनाथ मंदिर, लाल क्वाटर, कृष्णा नगर, दिल्ली-52

चार एकड़ के विशाल भूखण्ड पर हिन्दू संस्कृति को संजोय

श्री रघुनाथ मंदिर जहाँ लगभग 1400 बालक बालिकाऐं श्री सनातन धर्म प्राथमिक सैकण्डरी स्कूल व भृगु ऋषि स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते विद्यार्थियों के बीच सत्य सनातन धर्म के स्वामी श्री कल्कि भगवान यहाँ के समाज एवम् दूर दूर से आनेवाले श्रद्धालुओं की मनोकामना पूरी करते हैं।

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, 815, चौक श्री कल्कि मन्दिर, कुण्डेवालान, श्री कल्कि मार्ग, अजमेरी गेट, दिल्ली-6

कल्कि नाम से उपजी सभी कोपलों को संजोए अपने देवता की इन्तजार में खड़ा, सत्युग तक बना रहनेवाला अनुभवगम्य श्री कल्कि विष्णु मन्दिर। इस कलि काल में जो भगवान श्री कल्कि के कार्य में लगा रहेगा भगवान उसे चारों युगों में अपने साथ रखेंगे।—स्वामी रामकृष्ण परमहंस के अवतार गुरुवर लक्ष्मी नारायण

विष्णुपाद मन्दिर

गया धाम, गया (बिहार)

गयासुर राक्षस की घोर तपस्या के बाद मांगे गये वरदान के अनुसार भगवान श्री विष्णु का चरण चिन्ह यहाँ है, भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा हुई। गया ऐसा पुनीत स्थल है, जहाँ अतृप्त पित्र सदैव वास करते हैं। हरदम वह यह आस करते हैं कि हमारे कुल में कोई ऐसा उत्पन्न हो जो यहाँ आकर पिण्ड दान दें और हमारी मुक्ति हो। गया में पुत्र के जाने से और फल्गु नदी में स्पर्श करने मात्र से पित्र स्वर्गलोक को चले जाते हैं।

श्री कल्कि मंदिर वसुंधरा, कल्कि चौक, धापासी गाविस-9, काठमांडू (नेपाल)

(2) सम्भल पुरी कल्कि तीर्थधाम, नेपाल प्रजापति अंचल, जिला प्यूठान सारी

गाविस-1, काठमांडू (नेपाल)

विश्व का एकमात्र हिन्दू देश जहाँ गौहत्या निषेध है। ऐसी भगवान पशुपतिनाथ की पावन भूमि पर मौनीबाबा द्वारा लगभग दस वर्ष पूर्व की गई प्रतिज्ञा कि, ''जब तक यहाँ भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना नहीं होगी वह नहीं बोलेंगे।''

अपने भक्तों की भगवान श्री कल्कि ने हरयुग की भांति-लाज रखी और एक नहीं अपितु तीन मूर्तियों की स्थापना अब तक हो चुकी है भगवान श्री कल्कि के नाम पर विश्व का पहला सरकारी बैंक श्री कल्कि बैंक के नाम से नेपाल में खुल गया है।

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, मनोकामना, पूर्वी कोट, सम्भल-244302,

माँ पार्वती एवं भगवान शिव विचरण करते समय माँ पार्वती की मणिकर्णिका (कानों का आभूषण) खो गया जिसे ढूँढ़ते हुए शंकर जी संभल के दक्षिण में पहुँचे तभी से इस तीर्थ का नाम मणिकर्णिका या मनोकामना तीर्थ पड़ा यहाँ एक बार नाम जाप करने का भी दस हजार गुना फल मिलता है। यहीं माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध किया और राजा पृथ्वीराज ने यज्ञ करके संयोगिता को पाया था। इसी दिव्य तीर्थ में संभलाधीश भगवान श्री कल्कि जी विराजे हैं।

श्री कल्कि मन्दिर, नैमिषारण्य तीर्थ (लखनऊ से मात्र 30 कि.मी. पहले) जिला सीतापुर

सत्यनारायण व्रत कथा जिसका उद्‌भव नैमिषारण्य तीर्थ से हुआ उसमें जिस प्रकार साधु नाम के वैश्स को भगवान ने समय समय पर स्वप्न वाणी अनुभव देकर उसकी गल्तियों को क्षमा करते हुए उसको परेशानियों से निकलने का रास्ता दिया, उसी प्रकार भगवान श्री कल्कि अपने भक्तो को स्वप्न, जागृत, वाणी अनुभव देकर परेशानियों से निकलने का रास्ता दे रहे हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण नैमिषारण्य तीर्थ में माँ ललिता मंदिर में लगी भगवान श्री कल्कि की मूर्ति है। यह मंदिर भारत सरकार के अधीन

है। इस विशाल मंदिर में 26.10.2009 को इसकी शुरूआत हुई। बसंत पंचमी 20.10.2010 को श्री कल्कि जी की मूर्ति प्रतिष्ठित हो गई। मात्र तीन महीने में यह असंभव कार्य विभिन्न स्वप्नानुभवों व उनके उपचारों द्वारा संभव हुआ।

An application has been received from Shri Kalki Bal Vatika through Pradhan Sri Om Prakash Gupta, V-2, Bahadur Apartment, 9, Raj Narain Road, Civil Line, Delhi-54, for seeking permission to install temple of Lord Kalki. It is averred that in several parts of India in different places, temple of Lord Kalki have been installed. The oldest one is of year 300-400 years. This process is repeatedly increasing in recent times. Installation of temple of Lord Kalki in the compound of ~~reknown~~ Maa Lalita Devi in Naimisharanya will inevitably be in the interest of Deity, as it will augment the income and will add to the improvement of the temple of Maa Lalita Devi. Further the probability/chances of illegal encroachment by the intruders would be avoided, as reported by the Manager of temple of Maa Lalita Devi.

After considering the entire facts and circumstances and the interest of Deity, I hereby accord permission to construct temple of Lord Kalki in the verandah situated towards left of the eastern gate of the temple in front of Hawan Kund. After the temple is constructed and Deity is vivified, the whole of the temple of Lord Kalki shall vest in Maa Lalita Devi and all the offerings, gifts, income, donations etc. of every kind shall be the part and parcel of the temple of Maa Lalita Devi.

Inform all concerned.

(N.L.Agrawal)
District Judge,
Sitapur.
25.11.2009.

काशी विश्वनाथ शंभु की नगरी वाराणसी में दुर्गा कुंड मंदिर परिसर में सिद्ध श्री हनुमान जी के बराबर भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 19 अक्टूबर 2012 को

दुर्गा कुंड मंदिर काशी वाराणसी में स्थित है यहाँ 18 वीं शताब्दी में माँ दुर्गा की मूर्ति स्वयं प्रगट हुई थी। साल में दो बार आने वाले नवरात्रों में इस मंदिर की आभा देखते ही बनती है। संभल व काशी स्वयं भगवान शंकर द्वारा बसाई गई नगरी है अत: यह दोनों नगरियाँ मोक्षधाम का खुला हुआ द्वार हैं। यह अद्भुत संयोग है कि सन् 2004 में 19 जनवरी को कल्कि जी माँ कालका के मंदिर नेहरू प्लेस नई दिल्ली में विराजे, 19 जनवरी 2010 को कल्कि जी माँ ललिता के मंदिर में नैमिषारण्य में विराजे और अब 19 अक्टूबर 2012 को माँ कूष्मांडा के मंदिर दुर्गा कुंड, काशी वाराणसी में विराजे।

श्री कल्कि मन्दिर, दूधिया भैरों मन्दिर, पुराना किला, दिल्ली

श्री कल्कि मन्दिर, वैष्णों देवी मन्दिर, गुलावी बाग, दिल्ली

दयानंद विहार श्रीरघुनाथ मंन्दिर, दिल्ली • 23 जनवरी, 2011

मंदिर गिंदोड़ियान अग्रवाल, सदर बाजार, दिल्ली • 8 फरवरी, 2011

.श्री महाशक्ति दुर्गा मंदिर, गगन विहार, दिल्ली • 12 फरवरी, 2011

श्री कल्कि हनुमान मन्दिर, चंदौसी • 11 मार्च, 2011

कोलकाता में राणी सती मंदिर, काकुड़ गाची • 4 अगस्त 2011

शुभ मूर्ति माँ का मंदिर, चावड़ी बाजार • 6 मई 2011

करावल नगर में श्री गौरी शंकर मन्दिर • 10 अप्रैल 2011
गिरिराज जी में दानघाटी मुखारविंद मंदिर • 21 नवंबर 2011
श्री सनातन धर्म मन्दिर, यमुना विहार • 1 अप्रैल, 2012
श्री हनुमान मंदिर, मॉडल बस्ती, फिल्मिस्तान के सामने,21 जून, 2012
श्री राधा मंदिर, श्री निवास पुरी, आश्रम चौक, नई दिल्ली 21 जून, 2012
श्री हनुमान मंदिर, मैट्रो गेट नं. 2 के सामने, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली 27 जून, 2012
श्री शिव मंदिर गली पासवान, चर्खे वालान, बल्ली मारान, दिल्ली

माँ चामुंडा मंदिर, मौहल्ला हल्लू सराय, संभल (यू.पी)

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति उनकी ही जन्मस्थली संभल में माँ चामुंडा के मंदिर पदमा जी व रमा जी सहित शीघ्र स्थापित होने जा रही है। सिद्धी विनायक गणपति जी के दोनों तरफ जिस प्रकार ऋद्धि सिद्धि विराजती हैं इसी प्रकार माँ रमा व माँ पदमा का श्री विग्रह कल्कि जी के सहित स्थापित होगा।

प्रस्तावित मन्दिर—

1. भगवान् श्री कल्कि का एक भव्य एवं विशाल मन्दिर 4 एकड़ में दिल्ली-जयपुर हाईवे पर मानेसर (गुड़गाँव)
2. मरघट वाले हनुमान जी रिंग रोड, यमुना बाजार, दिल्ली-6

(इन कुछ प्रमुख स्थानों के अतिरिक्त मथुरा, वृंदावन, काशी, प्रयाग, महाराष्ट्र दक्षिण आदि के समस्त मुख्य तीर्थों में भगवान् श्री कल्कि के विभिन्न मुद्राओं में चित्र उत्कीर्ण हैं।)

श्री कल्कि साहित्य, ऑडियों-विडियों कैसेट सी.डी., लॉकेट व चित्र प्राप्ति स्थान

वितरक

1. **चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**
38, यू.ए., बंगलो रोड, हंसराज कॉलेज के पास
पो.बा. न. 2113, दिल्ली-7 ☎ 23856391

2. **डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स**
110, चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार
पो.बा. न. 2037, दिल्ली-6 ☎ 23251630, 23273220

3. **अरोड़ा पुस्तक भण्डार**
तहसील रोड, सम्भल-244302 ☎ 09412140553

4. **रेनवो कैसेट्स**
चक्की का पाट, सम्भल-244302 ☎ 09927355618

5. **श्री लोक नाथ पुस्तकालय**
173, महात्मा गाँधी रोड, कोलकता-7
☎ (033) 22687722, 09339099939

7. **ड्रेपस एवन्यू**
डोवलानी टावर, 27/28, 31 राधा कृष्णा सलाई
चैन्नई-4 ☎ (044) 2811141

8. **श्री कल्कि विष्णु मन्दिर**
815, चौक कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006

9. **औलगामाईन सोनो इंडस्ट्रीज (कैन कैन)**
1903/3, पहली मंजिल, गुरुद्वारे के सामने, चाँदनी चौक, दिल्ली-6
☎ 23866646, 23866661

10. **आदर्श कार्डस मैन्यूफैक्चर्स**
9/72, चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006 ☎ 23261601

11. **कुलदीप गुप्ता**
बहजोई रोड, पुराना टेलीफोन एक्सचेंज, ट्यूबवैल के बराबर, सम्भल-

244302 ☎ 05923-234355

12. **कैलाश बुक डिपो**
श्री कल्कि महाराज मन्दिर परिसर, सिर ढ्योडी गेट के सामने,
हवा महल बाजार, जयपुर-302001 (राजस्थान)
दूरभाष : (दुकान) : 0141-2614625, (निवास) : 2316130

13. **हरिश शर्मा** (कल्कि वाले)
गीता सोसाईटी, कॉलेज कम्पाउन्ड, पालनपुर-385001 (गुजरात)
फोन : 02742-258068

14. **श्री लक्ष्मीनारायण संस्थान** (श्री कल्कि मन्दिर)
बसन्त विहार सनातन धर्म सभा, पश्चिम मार्ग,
बसन्त क्लब के बराबर, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57
☎ 26140981

15. **लाला जी जनरल स्टोर**
एल-2/53, न्यू महावीर नगर, नई दिल्ली-110018
दूरभाष : 65373796, 9910291711

16. **सनातन धर्म संस्थान** (श्री कल्कि मन्दिर)
विद्युत परिसर, राजपुर रोड, ट्रांसपोर्ट अथॉर्टी के बराबर, दिल्ली-54

17. **औलगामाईन सोनो इंडस्ट्रीज** (नोएडा)
बी-6, सैक्टर-3, टोल ब्रिज के पास, नोएडा-201301
दूरभाष : 9312533445

18. **श्री महावीर प्रसाद चौधरी** (कोलकाता) ☎ 09830334519

19. **श्री वरुण चौधरी** ☎ 0933105650

20. **सुश्री प्रतिभा अग्रवाल** (कोलकाता) ☎ 09831193821

श्री कल्कि बाल वाटिका के प्रभारी प्रोजेक्ट में

मासिक पत्रिका कम्पोजिंग, सम्पादन प्रभारी : श्री राजेश गुप्ता-9811658415, सुश्री पूजा गुप्ता-9811858723, सुश्री मेघना गोयल-9968066625, सुश्री श्रुति सर्राफ-9830157545, सुश्री उपासना गोयल-7503215553

साहित्य सलाहकार समीति : श्री ओ.पी. गुप्ता-9212533445, सुश्री अलका गोयल-9811281271, सुश्री मेघना गोयल, सुश्री इंदु बंसल-9818416191, सुश्री रश्मि गुप्ता-9873345859, सुश्री संगीता गर्ग-9873349478, सुश्री रश्मि गनेरीवाल 9831273015, श्री हेमंत गुप्ता 9321128789, श्री वेद प्रकाश गुप्ता 9810000012, श्री महावीर चौधरी 09830334529

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना : श्री अनिल गड़ोदिया 9810025302, श्री योगेश गुप्ता-9311033445, श्री विपुल गुप्ता

सांस्कृतिक कार्यक्रम (नृत्य, कीर्तन व नाटक लीला) : श्री अंकुर गोयल-9818522778, सुश्री गरिमा गोयल 9999133046, सुश्री शलभ गोयल 9910066506

श्री कल्कि कीर्तन एवं व्यवस्था : श्री पदम गोयल 9910291711, कुमार अक्षय गड़ोदिया 9958161610, चंद्र मोहन राजपूत 9873434237, कुमार महावीर

तीर्थों पर आने-जाने की व्यवस्था : श्री नवीन गुप्ता 9971193344, श्री मनोज पाण्डे 9212703815

मूर्ति, शृंगार, पोशाक व लाईट व्यवस्था : श्री हर्षित गुप्ता 9999885277, अंकित गड़ोदिया 9812539397

श्री कल्कि साहित्य व्यवस्था : पं. अनिल कौशिक 9873091036, श्री लव जेटली 9899095693

वेबसाईट प्रभारी : सुश्री श्रेया चौधरी, श्री विष्णु गोयल 7503215553

श्री कल्कि हवन व्यवस्था : सुश्री अलका गोयल 9811281271, श्री रमेश चंद्र

श्री कल्कि मंदिर अखण्ड ज्योत एवं रख रखाव : श्री राहुल अग्रवाल 9891879718, श्री अनिरुद्ध गुप्ता 9873523985, श्री रोहित गुप्ता 9899499848

प्रसादम् व्यवस्था (अब अन्य मंदिरों में भी) : सुश्री वीना गर्ग 9899774568, श्री अमित गर्ग, श्री प्रेम शर्मा 9953048408

रामलीला सवारी व्यवस्था : श्री हितेश गुप्ता 9891248888, श्री आदर्श सिंघल, 9818525601

कानूनी सलाहकार : श्री अमित तिवारी 9310810888 (एडवोकेट दिल्ली हाई कोर्ट)

मानेसर मंदिर निर्माण : श्री सुभाष गुप्ता 9810300045, श्री राजीव गुप्ता 9818000012, सुश्री रेनू बंसल 981000012

मंत्र बॉक्स प्रभारी : श्री आनंद अग्रवाल 9891748188, श्री संतोष वैद्य

गौ सेवा भोजन प्रभारी : सुश्री पूर्णिमा गुप्ता 9810135805, श्री अजय गुप्ता

भक्ति की दो बहिना : सुश्री संजू गड़ोदिया 9312539397, सुश्री रमा गड़ोदिया 9313040701

इंग्लिश हिंदी दुभाषिया : कुमारी साक्षी गड़ोदिया 9868250570

प्रिंटिंग डिजाइनिंग पेपर सलाहकार : श्री अशोक सिंघल, श्री आदर्श सिंघल

श्री कल्कि बाल वाटिका

२-बी, ६ राज नारायण रोड, दिल्ली-११० ०५४.

श्री राजीव जी
सर्व श्री धर्मपाल सत्यपाल
नोएडा उत्तर प्रदेश

मान्यवर,

जय श्री कल्कि नारायण की

सर्वश्री धर्मपाल सत्यपाल, नोएडा, उत्तर प्रदेश की ओर से इस वर्ष आपने भी दिल्ली क्लाथ मिल्स, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली, की तरह भगवान् विष्णु के भव्य-चित्रों एवं भगवान् श्री राम, श्री कृष्ण तथा श्री कल्कि के विवरणों से सुसज्जित वर्ष 1995 का जो कलेण्डर निकाला है और जिसमें कलाकारों ने हमारे साथियों को प्रोत्साहित कर उनकी भावनाओं को जो मूर्त रूप दिया है वह देश विदेश सर्वत्र विद्यमान धर्म प्रवण समाज की दृष्टि में परम पुनीत एवं सर्वथा अनुकरणीय कार्य संपन्न हुआ है। एतदर्थ आपका प्रतिष्ठान सब तरह से साधुवाद का पात्र है। भगवान् कृष्ण के महाभारत वीडियो कैसेट में भी इस बात का अनुमोदन किया गया है कि भाग्यशाली वस्तुतः वही है जो स्वयं महान होते हुए समाज को भी ऊपर उठाने का कार्य करता है।

अपने उत्कर्ष के लिये ऐसे कार्य करने वाले कम नहीं हैं जिससे समाज भले ही पतन के गर्त में गिरे। उन्हें तो इसकी भी परवाह नहीं कि उनके पितर स्वर्ग से नरक में जा गिरें। पर आपके समान उपकारी भी है जो जग में भगवान् की भक्ति जगाकर समाज उत्थान् का कार्य करते हैं।

हम तथा हमारे सभी संख्या सदस्य आपके इस पुनीत कार्य से अत्यन्त प्रभावित हैं और अपने भगवान् कल्कि से आपकी संस्था की उत्तरोत्तर वृद्धि की प्रार्थना करते हैं तथा आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप इसी प्रकार के पुनीत कार्य करते रहें जिससे समाज का नैतिक और आध्यात्मिक स्तर उच्च से उच्चतर उठ सके जिससे सभी लोग भगवान की कृपा के परम सुख के भागी हों अपना जीवन कृतार्थ कर सकें।

योगेश गुप्ता | रश्मि गोयल | रितेश गुप्ता | गौरव गुप्ता | अर्पित गुप्ता

श्री कल्कि बाल वाटिका

२–बी, ६ राज नारायण रोड, दिल्ली–११० ०५४.

अंकुर गोयल	स्वाति गुप्ता	सौरभ गोयल
गरिमा गोयल	भावना अरोड़ा	संगीता अग्रवाल
राहुल अग्रवाल	राहुल गुप्ता	निधि गुप्ता
स्वाति गुप्ता	गीतांजलि तिवारी	गोल्डी तिवारी
शिवानी तिवारी	रिचा गोयल	गौरव तिवारी
सोनू तिवारी	राघव कुमार	रविन कुमार
हितेश गुप्ता	गौरव अरोड़ा	अविनाश गुप्ता
अलका गोयल	रचना गोयल	श्वेता गोयल
कनिका गोयल	सौरभ गुप्ता	पूजा मोदी
कविता अग्रवाल	अर्चना तिवारी	विपुल गुप्ता
सुरुचि गुप्ता	नलनि गुप्ता	अश्वनी शर्मा
तुषार शर्मा	मीनाक्षी गुप्ता	रोहन कुमार
	दिनेश गोयल	

कांवेंट एजूकेशन के साथ संस्कार देने वाली श्री कल्कि बाल वाटिका की 8 वर्कशॉप

श्री कल्कि बाल वाटिका, चाँदनी चौक

संरक्षक : श्री ओम प्रकाश गुप्ता 9312533445
संचालक : श्री योगेश गुप्ता 9311033445
भैया : श्री राहुल गोयल, **दीदी :** सुश्री अल्का गोयल

पटपड़गंज

संरक्षिका : सुश्री पूजा गुप्ता 9811858723,
संचालक : श्री रवि अग्रवाल 9873606251
भैया : कुमार अनिरूद्ध, **दीदी :** कुमारी मनस्वी

उस्मानपुर

संरक्षिका : सुश्री मेघना गोयल 9911830603
संचालिका : सुश्री शालिनी पांडे 9582143784
भैया : कुमार उज्जवल पांडे, **दीदी :** कुमारी पूजा

पंजाबी बाग

संरक्षिका : सुश्री मीनाक्षी गुप्ता 9811242748
संचालिका : सुश्री नलिनी गुप्ता 9818647564
भैया : कुमार तनिष्क, कुमार सार्थक, कुमार शुभ

गगन विहार

संरक्षिका : सुश्री इंदू बंसल 9818416191
संचालिका : सुश्री संगीता रस्तोगी 9911453848
भैया : कुमार शौर्य **दीदी :** कुमारी हिना

नोएडा

संरक्षिका : सुश्री मुक्ता शर्मा 9811134378
संचालिका : सुश्री प्रतिभा शर्मा 9717417753
भैया : कुमार देव, **दीदी :** कुमारी अंबिका

किरोड़ीमल कॉलेज

संरक्षिका : सुश्री संजू गड़ौदिया 9312539397
संचालिका : सुश्री इंदू गुप्ता 9891085091
भैया : कुमार श्रेयांस, **दीदी :** कुमारी साक्षी
संरक्षिका : सुश्री सपना खन्ना 9953989891,
संचालिका : सुश्री पूर्णिमा अग्रवाल 9810135085
भैया : श्री अंकुर गोयल, **दीदी :** सुश्री गरिमा गोयल